ISSN 2229-547X VIDEHA

𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯 𑓓𑓕𑓘 𑒧 𑒁𑓀𑒏 𑓑𑓕 𑒢𑒫𑒧𑓂𑒥𑒩 𑓒𑓐𑓒𑓒 (𑒫𑒩𑓂𑒭 𑓑𑓕 𑒧𑒰𑒮 𑓑𑓗𑓙 𑒁𑓀𑒏 𑓓𑓕𑓘)

(𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯 www.videha.co.in)

𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨 𑒂𑒢𑓂𑒠𑒼𑒪𑒢𑓁 𑒧𑒰𑒢𑒳𑒭𑒲𑒧𑒱𑒯 𑒮𑓀𑒮𑓂𑒏𑒵𑒞𑒰𑒧𑓂



𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯- 𑒣𑓂𑒩𑒟𑒧 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒣𑒰𑒏𑓂𑒭𑒱𑒏 𑒃-𑒣𑒞𑓂𑒩𑒱𑒏𑒰

𑒮𑒧𑓂𑒣𑒰𑒠𑒏𑓁 𑒑𑒖𑒹𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒚𑒰𑒏𑒳𑒩।


Videha
e-Learning
Gajendra Thakur

 भालसरिक गाछ जे सन २००० सँ याहूसिटीजपर छल http://www.geocities.com/.../bhalsarik_gachh.html , http://www.geocities.com/ggajendra आदि लिंकपर आ अखनो ५ जुलाइ २००४ क पोस्ट http://gajendrathakur.blogspot.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html केर रूपमे इन्टरनेटपर मैथिलीक प्राचीनतम उपस्थितक रूपमे विद्यमान अछि *(किछु दिन लेल http://videha.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html लिंकपर, स्रोत wayback machine of https://web.archive.org/web/*/videha 258 capture(s) from 2004 to 2016- http://videha.com/ भालसरिक गाछ-प्रथम मैथिली ब्लॉग / मैथिली ब्लॉगक एग्रीगेटर)।*
ई मैथिलीक पहिल इंटरनेट पत्रिका थिक जकर नाम बादमे १ जनवरी २००८ सँ 'विदेह' पड़लै। इंटरनेटपर मैथिलीक प्रथम उपस्थितिक यात्रा विदेह- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका धरि पहुँचल अछि, जे http://www.videha.co.in/ पर ई प्रकाशित होइत अछि। आब "भालसरिक गाछ" जालवृत्त 'विदेह' ई-पत्रिकाक प्रवक्ताक संग मैथिली भाषाक जालवृत्तक एग्रीगेटरक रूपमे प्रयुक्त भऽ रहल अछि।

 रचनाकार/ संग्रहकर्त्ता अपन मौलिक आ अप्रकाशित रचना/ संग्रह (संपूर्ण उत्तरदायित्व रचनाकार/ संग्रहकर्त्ता मध्य) editorial.staff.videha@gmail.com केँ मेल अटैचमेण्टक रूपमेँ पठा सकैत

छथि, संगहि ई अपन संक्षिप्त परिचय आ अपन स्कैन कएल गेल फोटो सेहो पठेबथि। एतऽ प्रकाशित रचना/ संग्रह सभक कॉपीराइट रचनाकार/ संग्रहकर्त्ताक लगमे छन्हि आ जतऽ रचनाकार/ संग्रहकर्त्ताक नाम नै अछि ततऽ ई संपादकाधीन अछि। सम्पादक: विदेह ई-प्रकाशित रचनाक वेब-आर्काइव/ थीम-आधारित वेब-आर्काइवक निर्माणक अधिकार, ऐ सभ आर्काइवक अनुवाद आ रिप्रिंट आ प्रिन्ट वेब-आर्काइवक निर्माणक अधिकार; आ ऐ सभ आर्काइवक ई-प्रकाशन/ प्रिंट-प्रकाशनक अधिकार रखैत छथि। ऐ सभ लेल कोनो रॉयल्टी/ पारिश्रमिकक प्रावधान नै छै, से रॉयल्टी/ पारिश्रमिकक इच्छुक रचनाकार/ संग्रहकर्त्ता विदेहसँ नै जुड़थु। विदेह ई पत्रिकाक मासमे दू टा अंक निकलैत अछि जे मासक ०१ आ १५ तिथिकेँ www.videha.co.in पर ई प्रकाशित कएल जाइत अछि।

Videha e-Journal: Issue No. 358 at www.videha.co.in

समानान्तर परम्पराक विद्यापति-
चित्र निषाद सम्मानसँ सम्मानित श्री पनकलाल मण्डल द्वारा

मैथिली भाषा जगज्जननी सीतायाः भाषा आसीत्। हनूमन्तः उक्तवान- मानुषीमिह संस्कृताम्।

अक्षर खम्भा (आखर खाम्ह)

तिहुअन खेत्तहि काञि तसु कित्तिवल्लि पसरेइ। अक्खर खम्भारम्भ जउ मञ्चो बन्धि न देइ॥ *(कीर्तिलता प्रथमः पल्लवः पहिल दोहा।)*

मात्र आखर रूपी खाद्य निर्माण कऽ अध्ययन (*गद्य-पद्य रूपी*) संग ऊँ नै बाह्ल जाय तँ ओ त्रिभुवनक उत्तम ठाकुर कीर्तिक रूपी कहा परत।

अनुक्रम

ऐ अंकमे अछि:-

२.४.कल्पना झा- मैथिली साहित्यक सेवक नहि, मैथिली भाषाक सेवकः शरदिन्दु चौधरी

२.५.राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर'- हमर स्मृति-पिपासाक स्रोत: शरदिन्दु चौधरी

२.६.जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'- उहिना नहि गमसाइत छथि शरदिन्दु चौधरी

२.७.विभा रानी- शरदिंदु भाइक गम्भीर सिद्धांतप्रियता!

२.८.डा. नारायणजी- विसंगतिक विरुद्ध प्रतिरोधक-स्वर

२.९.मुन्नी कामत- भाषाविद् श्री शरदिन्दु चौधरी

२.१०.गोपीनाथ- शरदिन्दु चौधरी हवाक मार

२.११.जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'- कथ्य, तथ्य आ सत्यक चिन्तन

२.१२.अजित कुमार झा- 'समय-साल' कँ अकानैत: शरदिन्दुजीक संपादन आ संपादकीय

२.१३.अशोक- रवीन्द्र जी

२.१४.शिवशंकर श्रीनिवास- जरल मरल गरल दृश्य

२.१५.कदान कानन- हमर रवीन्दु भैया

२.१६.आशीष अनचिन्हार- मैथिली साहित्यमे रवीन्द्र चौधरी केर योगदान

२.१७.गजेन्द्र ठाकुर- रवीन्द्र चौधरीक संस्मरणमे साहित्य [बाल-बालकन बाल (I-IV)]

२.१८.गजेन्द्र ठाकुर- रवीन्द्र चौधरीक संस्मरणात्मक हास्य-व्यंग्य संग्रह- 'ऊँ हम जनिगहुँ'

२.१९.गजेन्द्र ठाकुर- रवीन्द्र चौधरीक गीतटा ग्रंथ संग्रह- 'व३ अजगुत देखल..', 'गोवनगणेश' आ 'कनिया कक्काक कानामिन'

२.२०.लक्ष्मण झा सागर- खाँटी मैथिलीक रवन्दु जी!

२.२१.जगदानन्द झा 'मनु'- सत्य देखल

२.२२.श्रीधनम- शनदिन्दु कुमान चौधनीक साहित्य : 'स्वानथ लागि कनहिं सव ग्रीगी'

३ अंकक अध्याय नवना

३.गद्य खण्ड

३.१.नाम विलास साल्क ५ टा कथा- कथा-१ अध्ययन सम्यादकीय समीज्ञा अंग्रेजीम सम्यादकीय पृष्ठ यन

३.२.नाम विलास साल्क ५ टा कथा- कथा-२ अध्ययन सम्यादकीय समीज्ञा अंग्रेजीम सम्यादकीय पृष्ठ यन

३.३.नाम विलास साल्क ५ टा कथा- कथा-३ अध्ययन सम्यादकीय समीज्ञा अंग्रेजीम सम्यादकीय पृष्ठ यन

३.४.नाम विलास साल्क ५ टा कथा- कथा-४ अध्ययन सम्यादकीय समीज्ञा अंग्रेजीम सम्यादकीय पृष्ठ यन

३.५.नाम विलास साल्क ५ टा कथा- कथा-५ अध्ययन सम्यादकीय समीज्ञा अंग्रेजीम सम्यादकीय पृष्ठ यन

३.६.कुमार मनोज कश्यप- १ टा लघुकथा- धनिष्ठाविजय

३.७.जगदीश प्रसाद मण्डल- थाहल संग

३.८.जगदीश प्रसाद मण्डल- माउयन (धारावाहिक उपन्यास)

३.९.रमाकर चौधरी- मधुमह

३.१०.रवीन्द्र नारायण मिश्र- मातृभूमि (उपन्यास)- १७म खण्ड

३.११.जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'- बिना बहर आ काफिया गजल कोना हेतै

३.१२.निर्मला कर्ण- अग्नि शिखा (भाग- ९)

३.१३.डा. विपिन कुमार झा- महाकवि भास प्रणीत कर्णभारम् मैथिली अनुवाद (भाग-६)

४.पद्य खण्ड

४.१.राज किशोर मिश्र- कलक' अह

७.संस्कृत खण्ड

७.१.३. दीपिका- चम्पूसाहित्यस्य विलासः (पञ्चमोच्छ्वासः)

८. विदेह सूचना संपर्क अन्वेषण



ऐ अंकमे अछि:-

१.१.गजेन्द्र ठाकुर- नूतन अंक सम्पादकीय

१.२.अंक ३५७ पर टिप्पणी

१.१.गजेन्द्र ठाकुर- नूतन अंक सम्पादकीय

१

एहि अंक शचीन्द्र चौधरी पर विशेषांक अछि। साहित्य अकादमी, ललित कला अकादमी आ संगीत नाटक-अकादमीक सम्मान/ पुरस्कारसँ वंची महत्वपूर्ण विदेहक जीवित रचनाकार/ कलाकर्मी पर विशेषांक देल गेल अछि, से उद्देश्य पाठक लोकनि सामिल मीतियायन व्यक्त कएलन्हि अछि। सभ सहयोगी आ पाठकगणकेँ धन्यवाद।

२

राम विलास साहुक ७ टा कथापर गजेन्द्र ठाकुरक टिप्पणी

Parallel Literature and Videha Maithili Literature Movement

1

The Book of Bihari Literature (Abhay K. Editor)

This book contains five translations from

Maithili into English by Vidyanand Jha. Nagarjun (Maithili's Yatri) and Usha Kiran Khan are from the Hindi quota though both got the Sahitya Akademi prize from the Maithili quota. Vibha Rani and Rajkamal Chaudhary are from the Maithili quota though both wrote in Hindi also.

This book is edited by Abhay K. who has read Samskrit only upto high school. Yet he pretends to translate Arthashastra directly from Samskrit into English. I am Kovid in Samskrit and from the quality of the translation, I can presume that he has used some intermediary language in translating Samskrit texts into English. It is a matter of ethics to acknowledge the source.

Vidyanand Jha's translation is below par, for example, he has no inkling what would be the English word for 'olak sanna', and there are plenty of such instances. I have some suggestions for him. First, read A Bird's Eye View on Mithila by Rajnath Mishra, it mentions all the terms for which you could not find English equivalents. Then go to the Videha archive (www.videha.co.in) and

look for Umesh Mandal's Picture Dictionary containing vegetation, animals and skill sets of Mithila, here you will find the actual photographs too. Further, under A Parallel History of Maithili Literature (Videha www.videha.co.in) you will find sample English translations of some Maithili short stories. Therefore, what Vidyanand Jha is presenting as exotic is the original thing of Maithili Language (but not that of Maithili literature, as was two decades ago). Interestingly his choice of short stories reminds me of Contemporary Maithili Short Stories (Maithili short stories translated into English) edited by Murari Madhusudan Thakur and published by the Sahitya Akademi in 2005. It seems that the stories in this selection are leftover material of that collection. Rip Van Winkle awoke after two decades but Vidyanand Jha is still in slumber not realizing the changes that have happened during the period.

If you compare the translation of this selection vis a vis the English translation of Latin American Spanish literature, you would be able to

understand the difference.

But these types of selections are not known for their literary excellence, Harper Collins publishes these types of selections for five-star hotels and Airport lounges. The publishers made the announcement for this book on March 22, 2022. So in 6-7 months you will get old materials only.

2

The Bride: The Maithili Classic Kanyadan by Harimohan Jha (1908-1984) translated into English by Lalit Kumar (Assistant Professor, Department of English, Deen Dayal Upadhyaya College, University of Delhi)

I have pre-ordered the book. I will comment on it after the book is delivered to my kindle account on the 1st of December 2022.

3

Bharti's Cat: Translation of Braj Kishor Varma 'Manipadma's original Maithili novel Bhartik

Biladi- by Yogendra Pathak Viyogi (available on Amazon Kindle).

Yogendra Pathak Viyogi has done a wonderful job. The translation seems to carry the soul of the original language.

Folktales of Mithila & Gonu Jha of Mithila: (Tales of wit and humour) both by Yogendra Pathak Viyogi (both are available on Amazon Kindle).

4

The Short-Stories by Ram Vilas Sahu

Now come to the exciting world of parallel literature.

In 'Kamtia Haveli' the story teller explains the oral history. The Haveli's were just the outposts. In Mithila the Cornwallis appointed permanent settlement award holders are called Maharajadhiraj etc. Actually, the chain of rent collectors was all over Mithila and they made their posts for farming as well as collecting

rent. So the Madina Didi explains it to Janaki. And while all these are going on the nuances of village life are depicted in a language that seems exotic to those people who stopped reading Maithili literature two decades ago.

In second short story 'Dudhbechni' depicts the sacrifice of Rita who donates all her land and property for building scholl and cow-shelter.

In 'Swargak Sukh' the story of the family of Bauku Saday, a family from the Mushhar community (called deridingly as rat-eaters by some part-time field workers turned litterateurs) ravaged by flood has been told intricately.

In 'Ghusha Ghar' you will find mention of the corruption in Indira Awas Yojana.

In 'Shikshak Mahat' the flood-ravaged village leading to migration, the importance of education and the mean-mindedness of the elite all has been interwoven into a single thread.

३

गाम-गामक सत्यकथा आ रूढ़ि

एकर अन्तर्गत गाम-नूनपुर, जिला मधुबनीक सत्य कथा देल जा रहल अछि जे ओतुका गामक लोकक कण्ठमे आइयो बसल अछि।

(सूत्र आ वर्णन- श्री श्रीमोहन चौधरी- गाम नूनपुर।)

मंगनिया मायक गीत (कनु गीत)- नूनपुरक सभ जातिक सभ गोटेमे पीढ़ी रूढ़ि बनि गेल अछि।

मंगनिया- जातिक गुआर। गाम नूनपुर, मधुबनी, ८०-९० वर्ष पूर्वक घटना जखन सोना ६० रुपयाक एक भरि (१० ग्राम) होइत छलै। मंगनिया वृद्ध छल, बड़ मेहनति आ मितव्ययी। अपन मेहनतिसँ धीरे धीरे पैघ होइत १० बीघा खेत किनलक, ३-४ बजे भोर उठि सभटा काज सम्पन्न कऽ लैत छल आ जखन रहनाइ लेल जाइ छल तँ लोक पूछै छलै तँ कहै छलै, मालिक डाइनेम सूतबाक लेल जाइ छी। ३-४ घण्टा सूतायब (रहनाइ करबकेँ सूतनाइ कहै छल, रहनाइमे कान भीड़ दाइ छी।)
ओकर टाकुरक बाप घरक टाकुर- रामानन्द **(जाति- ब्राह्मण)**।
भोर भोर मंगनिया माय घरक टाकुरक रामानन्द जाइत आ

उपनाग देत।

“उे हो, गुँ कगक गल दु याञ्क दलँ ज कनियटा जिगनाहुनकँ चढलिउे आ वव्राक (मंगनियाक) यजनम लगेलिउे, आ यहुनाकँ गनूआ गनि कs दलिउे। आ नागिम श्रीसीक मून्ना ज खूजल नहि गेलै स वांगमनना कूकूउ नागिम गुगुआ-गुआ कs यीलक। दु याञ्म कगवी गल दलs ज जक्का दिनम जगवी काजम सO गेल।“

हकउ

ज वउ घंघाहि स वउ वउकी दाञ्।

अपन मंगव्य editorial.staff.videha@gmail.com **यन यOउ।**

१.२.अंक ३७१ यन टिप्पणी

मनोज पाठक

सादर नमन, सम्पादक महोदय। जखन लिंक आयल छल तऽ वेबसाइट पर जा कऽ देखल नहि। नीक अंक बनल अछि। पढ़ल जँ कि दुइये टा आलेख नहि, श्री आशीष जीक आ कुमार रैयाक। आब पीडीएफ प्रति मोबाइल संग संग घुमैत रहत आ पुना अंक पढ़ि टिप्पणी करब। अहाँक माध्यमसँ मैथिली साहित्य जगतमे व्यापक परिवर्तन अयलैक अछि। तथाकथित आलोचक आ विद्वान एकरा नहि मानैत मुदा मैथिली भाषा आ साहित्य अपन डिजिटल स्वरूपमे जे एखन घनगर भेल अछि ओहिमे अहाँक एकान्त अनवरत तपक प्रभाव सर्वाधिक छैक। विदेह संख्यात्मक आ गुणात्मक दुनू तुला पर प्रचुर साहित्य रचलक। एकर निरन्तरता आ नव नव संभावना लेल सदैव खुजल अबाधित मंच मीलक पाथर अछि मैथिली भाषा आ साहित्यक लेल। सम्पादक।

शुभ नारायण झा

सभ पढ़लौं। सबहक आलेख। बहुत नीक लागल। अपने सब एत पुष्ट कायल जे कोना रंगकर्मी हेतु विशेषांक निकालल । भेल हुनक साहित्यिक प्रतिभा क ध्यान राखि अपने ओही अंक निकालने छी। बहुत बहुत धन्यवाद।

(शुभ नारायण जी- ओना तँ प्रेमलता मिश्र प्रेम विशेषांक हुनकर साहित्यिक नै मात्र रंगमंचीय प्रतिभाकेँ ध्यानमे रखैत निकालल गेल अछि, मुदा हुनकाम साहित्यिक प्रतिभा मूल धाराक बहुत साहित्यकारसँ बेसी छन्हि, खास कऽ हुनकर संस्मरणात्मक साहित्य, संजोग देखू जे ओ वर्खक साहित्य लेल नावल एकटा महिलाकेँ मात्र

सम्पादक लिखबा लेल तैयार छथि। मूल धाराक रंगमंचकर्मीमे मूल धाराक साहित्यकार सभ बहुत नाम कमेने छथि मुदा ओ मूलधाराक साहित्यकार सभ कोना हालहिमे अकर्मण्य भै छथि।- सम्पादक)

ग्रुप कैप्टन (डॉ) शिवकान्त झा

उमा कान्त गजेन्द्र बाबू ! कत टा विज्ञान आ औषधि शास्त्र की पढलहुँ कि मैथिली साहित्य सँ वंचित भऽ गेल छी। ३० वर्ष क वायुसेना सेवा आ १ वर्ष क वैज्ञानिक अनुसंधान आ विकास कार्य हमरा साहित्य सँ बहुत दूर पहुँचा देल अछि। हमर मैथिली साहित्यिक ज्ञान बड़ ओछ अछि। संलग्न विषय वस्तु हमर समझ क परे अछि, कोना मंतव्य देब मे असमर्थ छी। उमा कान्त।

आशीष अनचिन्हार

"मैथिलीपुत्र प्रदीप" जीवन कथित मानाग्रह आ प्रशंसक सा "पवन" द्वारा लिखल जा रहल अछि तकर स्वागत। आगू ओ कहल रहत तकर उत्सुकता बनल अछि। जेना कि मानाग्रह प्रामाणिक हाँसिल छी तँ पवनजीसँ उम्मेद अ जे ओ हुनक तथ्यकँ लिखत, हुनकर हुनक पोथीक चाहे ओ प्रकाशित हो कि अप्रकाशित ओकर सूची जरूर देताह। हुनकर जीवन कर ओहन पक्ष जे जखन धरि नै आएल समाजक सामनमे सेहो ओ देताह। आगूक अंश आ पूरा मानाग्रह पढबाक लेल जल्दी रहत से उम्मेद अछि।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

शरदिन्दु चौधरी विशेषांक

२.१.प्रस्तुत विशेषांकक संदर्भमे

२.२.शरदिन्दु चौधरीक परिचय - (प्रस्तुति श्री जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल')

२.३.शरदिन्दु चौधरी जी सँ साक्षात्कार जगदीश चंद्र ठाकुर 'अनिल' द्वारा

२.४.कल्पना झा- मैथिली साहित्यक सेवक नहि, मैथिली भाषाक सेवकः शरदिन्दु चौधरी

भाग (I -I V)]

२.१८.गजेन्द्र ठाकुर- शरदिन्दु चौधरीक संस्मरणात्मक हास्य-व्यंग्य संग्रह- 'ॐ हम जनिताहुँ'

२.१९.गजेन्द्र ठाकुर- शरदिन्दु चौधरीक गीतटा व्यंग्य संग्रह- 'बड़ अजगुत देखल..', 'गोबरगणेश' आ 'कनिया कक्काक कानामिन'

२.२०.लक्ष्मण झा सागर- खाँटी मैथिलीक शरदु जी।

२.२१.जगदानन्द झा 'मनु'- सत्य देखल

२.२२.श्रीधरम- शरदिन्दु कुमार चौधरीक साहित्य: 'स्वान्त लागि करहिं सब प्रीती'

२.१.प्रस्तुत विशेषांकक संदर्भ

विदेह द्वारा 'जीवेत मुदा उपेक्षित' शृंखला केर अंतर्गत अगस्त 2022 केँ विदेह "शरदिन्दु चौधरी" विशेषांक प्रकाशित करबाक सार्वजनिक घोषणा कएलक आ प्रस्तुत अछि ई विशेषांक। एहि सूचनाकेँ एहि लिंकपर देखि सकैत छी-घोषणा।

एहि विशेषांकसँ पहिने विदेह 7 टा विशेषांक प्रकाशित कऽ चुकल अछि आ एहिठाम आब हम कहि सकैत छी जे ई एकटा चुनौतीपूर्ण काज छी। अनेक संकट केर सामना करए पड़ैत अछि हमरा लेख एकट्ठा करएमे। मुदा संगहि ईहो हम कहब जे संकटसँ बेसी हमरा लग समर्थन अछि। हँ, ई मानएमे हमरा कोनो दिक्कत नहि जे जतेक लेख केर उम्मेद केर रहैत छी हम ततेक नै आबैए, जतेक लोक लिखबाक लेल तैयार छथि से सभ अंत- अंत धरि आबि चुप्प भऽ जाइत छथि। आ एकर कारणो छै, किनको ई लागै छनि जे आनपर लिखब से हम अपन रचना किए ने लीखि लेब, किनको लग पोथिए नै रहै छनि, कियो विदेहक समालोची रूपसँ दुखी छथि, तँ किनको मित्रकेँ विदेहसँ दिक्कत छनि तँइ ओ नहि देता। एकरा हम संकट बूझै छिऐ जे सभ फेसबुकपर लंबा-लंबा लेख वा कमेंट टाइप कऽ लै छथि सेहो सभ विदेह लेल हाथसँ लिखल पठाबैत छथि। जे सभ कहियो फेसबुकपर टाइप कऽ लीखै छथि तिनकर आलेख हम सभ टाइप करैत छी। खएर पहिने कहलहुँ जे संकटसँ बेसी समर्थन अछि तँइ आइ पहिलसँ लऽ कऽ आठम विशेषांक धरि पहुँचलहुँ हम। 2015 सँ लऽ कऽ 2022 धरि 8 टा विशेषांक प्रकाशित भेल मने वर्षमे एकटा। निश्चित समर्थन बेसी भेटल हमरा। जखन कि विदेहक ई आठो विशेषांक

केर अलावे आनो विषयपर विशेषांक प्रकाशित भेल अछि। एकर अतिरिक्त स्त्रीवाद साम्प्रदायिक अछि जे विदेहक हरेक विशेषांक अभिनंदनग्रंथ हेबासँ बाँचि गेल अछि। मुख्यधारा जकाँ विदेहकेँ अभिनंदनग्रंथ नहि चाही। अभिनंदनग्रंथ अहू दुआरे नै चाही जे ओहिसँ लेखक वा जिनकापर निकालल गेल छनि तिनकामे सुधारक गुंजाइश खतम भऽ जाइत छै। तेँए विदेहक विशेषांकमे आलोचना-प्रसंशा सभ भेटत।

शरदिन्दु चौधरी मैथिलीक मुख्यधारामे नहियेँ उपेक्षित छथि आ एकर कारण जातिवाद लेल पाठककेँ हुनकर पोथी पढ़ए पड़तनि हुनकर आलोचना ओ लेखन केर संबंध देखए पड़तनि। मैथिलीमे किछुए लेखक छथि जिनकर लेखन ओ आलोचना एकसमान छनि जाहिमेसँ शरदिन्दुजी एकटा सेहो छथि। एहन नै छै जे शरदिन्दु जीपर लिखल नै गेलै मुदा ओ सभ एकदम नै भऽ सकल छै तेँए ओकर प्रभाव हेरा गेल छै। एहि संदर्भमे हम कहि सकै छी जे विदेहक ई प्रस्तुत विशेषांक एहन पहिल प्रयास अछि जाहिमे ई बूझबाक प्रयास कएल अछि जे शरदिन्दु जीक रचना केहन छनि। ई अलग बात जे हम सभ काजक सफल वा असफल भेलहुँ से पाठक कहता। एहि विशेषांक केर शुरुआत विदेहक आन विशेषांक जकाँ अछि। संगे-संग ई क्रम न तँ उम्रक वरिष्ठता केर पालन करैत आ न रचनाक गुणवत्ताक। हँ, एकर ध्यान जरूर राखल गेल छै जे पाठकक रसभंग नहि होइन आ से विश्वास अछि जे रसभंग नै हेतनि।

पाठक जखन एहि विशेषांककेँ पढ़ताह तँ हुनका वर्तनी आ मानकताक अभाव लगतनि। वर्तनीक गलती जे थिक से ठाम-ठाम हमर सभहक गलती थिक जे हम सभ संशोधन नै कऽ सकलहुँ मुदा ई ध्यान राखबाक बात जे विदेह शुरुएसँ हुनक वर्तनी बला लेखककेँ स्वीकार करैत एलैए। तेँ मानकता अभाव स्वाभाविक। एकर बाद बहुत वर्तनीक गलती रहल गेल अछि जे कि हमर सभहक गलती अछि। मैथिलीमे किछुए एहन पत्रिका अछि जकर वर्तनी एकरंगक रहैत अछि आ ई हुनक खूबी छनि मुदा जखन ओहो सभ कोनो विशेषांक निकालै छथि तखन वर्तनी तँ ठीक रहैत छनि मुदा सामग्री अधिकांशतः बासिये रहैत छनि। ऐतिहासिकताक दृष्टिसँ कोनो पुरान सामग्रीक उपयोग वर्जित नै छै मुदा साबिये जे 72-80 पन्नाक कोनो प्रिंट पत्रिका होइत छै तहिमे लगभग आधा सामग्री सारान रहैत छनि, तखन आगम लेखक कोन किछु नवका रहैत छनि आ बाकिमे आगम किछु नव सामग्री रहैत छनि। मुदा हमरा लोकनि नव सामग्रीएपर बेसी ध्यान दैत छी। एकर मतलब ई नहि जे वर्तनीमे गलती होइत नहि। हमर कहबाक मतलब ई जे संपादक-संयोजककेँ कोनो ने कोनो स्तरपर समझौता करए पड़ैत छै से चाहे वर्तनीक हो कि, मुद्रणक हो कि विचारधाराक हो कि सामग्रीक हो। हमरा लोकनि वर्तनीक स्तरपर समझौता कऽ रहल छी मुदा कारण सहित। प्रिंट पत्रिका एक बेर प्रकाशित भऽ गेलाक बाद दोबारा नै भऽ सकैए (भऽ तँ सकैए मुदा हुए पाइक लागत जेतै) तेँ ओकर वर्तनी यथाशक्ति सही रहैत छै। इंटरनेटपर सुविधा छै जे बीचमे (इंटरनेटसँ प्रिंट हेबाक अवधि) ओकरा सही कऽ सकैत छी मुदा सामग्रिए बासिया रहत तँ सही वर्तनी रहितो

नव अध्याय मे खुजि सकत तैँ हमरा लोकनि वर्तनी वला मुद्दापर समझौता कएलहुँ। हमरा लोकनि कएलनि, कयलनि आ केलनि तीनू शुद्ध मानैत छी, ओना शुद्ध मानैत छी ओकरे नवनाम तीनू रूप रहि जाएत। आन शब्दक लेल ओहिना बूझू।

उम्मेद अछि जे पाठक विदेहक आन विशेषांक जकाँ एकरो पढ़ताह आ यदि एकर टीका-टिप्पणी अपन सुझाव देताह। विदेह अनिरुद्ध ठाकुर विशेषांक कर पोथी रूप "स्वर्णरेखा" कर नामसँ प्रकाशित हएल उम्मेद जे [illegible] केन्द्रित ओहि विशेषांक कर पोथी रूप सेहो आएत।

विदेह द्वारा 'जीबैत मुदा उपेक्षित' शृंखलामे प्रकाशित हएल आन विशेषांक सभहक लिंक एना अछि जाहिठाम जे अंकक लिंक देल गेल अछि ताहि अंकपर क्लिक करबै तँ ओ अंक खुजि जाएत-

1) अनिरुद्ध ठाकुर विशेषांक 189 म अंक 1 नवम्बर 2015 (ई विशेषांक 2020 मे पोथी रूपमे सेहो आएल अछि)

2) जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल विशेषांक 191 म अंक 1 दिसम्बर 2015

3) रामलोचन ठाकुर विशेषांक 319म अंक

4) राजनन्दन लाल दास विशेषांक 333म अंक

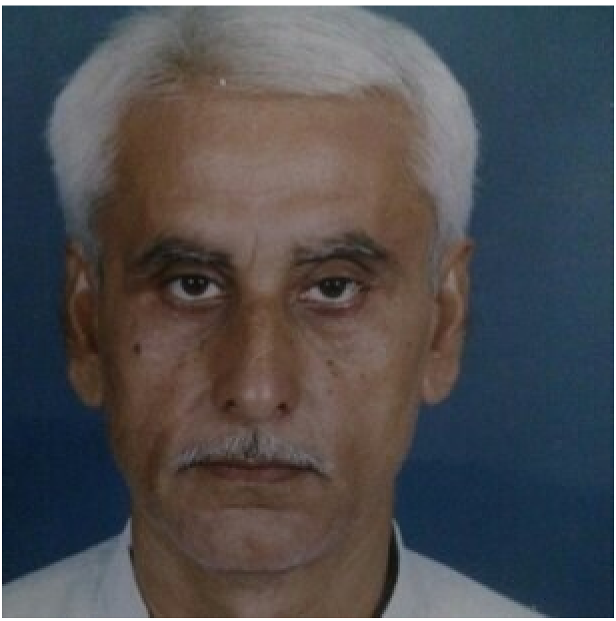
5) रवीन्द्र नाथ ठाकुर विशेषांक 15 जून 2022

6) केदारनाथ चौधरी विशेषांक 15 जून 2022 अंक 352

7) प्रेमलता मिश्र 'प्रेम' विशेषांक 1 नवम्बर 2022 अंक 357

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.२.श्री शरदिंदु चौधरी क परिचय- (प्रस्तुति श्री जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल')



नाम-शरदिंदु चौधरी

माता : स्व.मती देवी

पिता : पं.सुधांशु शेखर चौधरी

स्थान : मिश्रटोला, दरभंगा, बिहार

जन्म तिथि : 7-10-1956

शिक्षा : एम॰ए (राजनीति शास्त्र) पटना विश्वविद्यालय, एल॰एलबी (मगध विश्वविद्यालय, गया)

वृत्ति- पत्रकारिता :

1981-84-मिथिला मिहिर,साप्ताहिक

1984-86-मिथिला मिहिर, दैनिक

1987-89-मिथिला मिहिर,मासिक

1995-2002-आर्यावर्त, हिन्दी दैनिक,(जीवन संपादक)

2000-2014-समय-साल, मैथिली त्रैमासिक

पूर्वोत्तर मैथिल, गुआहाटी, 2015-16

मैथिली-हिन्दीमे लेखन

व्यवस्थापक,संचालक ----शेखर प्रकाशन,पटना (मुद्रक,प्रकाशक एवं पोथी विक्रय केन्द्र)

शरदिन्दु चौधरीक परिवारक अन्य सदस्य :

पत्नी : श्रीमती चित्रा चौधरी

पुत्री :

1.श्रीमति शेखर (पत्नी श्री सुशील मिश्र)

२.श्रीमति शेखर (पत्नी विनय आनन्द ठाकुर)

३.सुश्री दीप्ति शेखर

सूत्र : नागशेखर

प्रकाशित कृति मौलिक: (शेखर धरि शनदिल्लीक जतेक मौलिक पोथी प्रकाशित हएलनि से विदेह पोथी डाउनलोडपर राखल गेल अछि आ ओहिठाम जे पोथीक लिस्ट देल गेल अछि ताहिमे पोथीक नामपर क्लिक करबै तँ ओ पोथी खुजि जाएत)

ॐ हम जनितहुँ (२००२)

बड़ अजगुत देखल (२००३)

गोबरगणेश (२०११)

कनिया कक्काक कानामिन (२०१६)

बाल-बालपन बाल खण्ड-१ (२०१९)

मर्मान्तक-शब्दानुभूति (बाल-बालपन बाल खण्ड-२) (२०२०)

हमर अपराध: हुनक नहि दोष (बाल-बालपन बाल-३) (२०२१)

साक्षात् (बाल-बालपन बाल-४) (२०२१)

प्रकाशित कृति सम्पादन:

मैथिली पत्रकारिता-दशा आ दिशा

साक्षात्कार दर्पणमे-सुधांशु शेखर चौधरी

निश्चायति गीतिका (दू भाग)

मैथिली गद्य गौरव (दू भाग)

अस्मिता (हिन्दी)

बीससँ बेसी स्मारिकाक सम्पादन, जाहिमे चेतना समितिक स्मारिकाक 9 बेर, रंगिमाक 3 बेर, अरियनक 2-3 बेर।

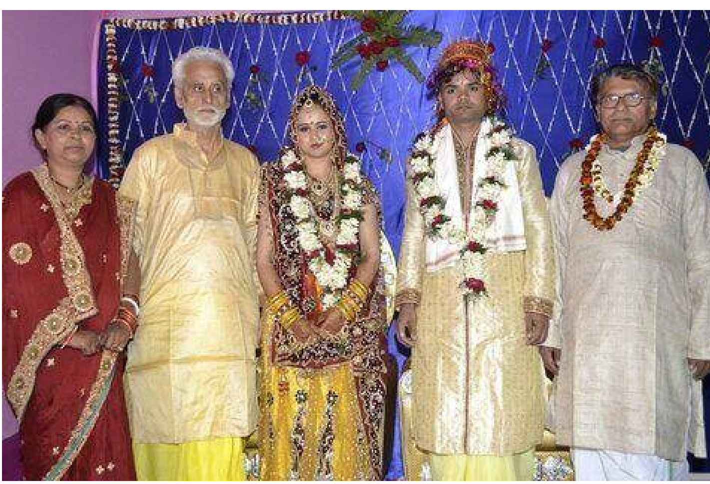
अन्य प्रकाशन-प्रसारण: आकाशवाणी आ दूरदर्शन,पटनासँ दर्जनो वार्ता प्रसारित, मैथिली तथा हिन्दी पत्र - पत्रिका सभमे सयसँ बेसी रचना प्रकाशित आर्यावर्त, हिन्दुस्तान,प्रदीप,नव भारत टाइम्स आदि दैनिक समाचार पत्रमे सम्पादकीय पृष्ठपर साठिटासँ बेसी राजनीतिक आलेख प्रकाशित।

पत्रिका सभमे व्यंग्य लेखन: मिथिला मिहिर, देश-कोस, अंतिका, घर-बाहर, समय-साल आदिमे।

शेखर-सम्मानक संचालन: साहित्यकार आ सम्पादक पिता स्व. सुधांशु शेखर चौधरीक स्मृतिमे साहित्यसँ ज्ञान उत्तम उल्लेखनीय योगदान हेतु उपयुक्त व्यक्तिकेँ पुरस्कारक रूपमे एगारह हजार टाका,शाल आ प्रशस्ति पत्र देल जाइत छनि। वर्ष 2004सँ 2008 धरि आ 2019

तथा 2022 मे निम्नलिखित व्यक्ति सभकेँ पुरस्कार देल गेल छनि: श्री पंचानन मिश्र, नरेन्द्र झा, राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर', विद्यानाथ झा, रमण कुमार झा और शुभा झाकेँ क्रमशः अनुसंधान एवं ज्ञानवर्धक गैर-साहित्यिक आलेख हेतु, मिथिलाक आर्थिक स्थिति आ सुधारपर आलेख हेतु, पत्रकारिता हेतु, मिथिलाक जैविक सम्पदा माछ,मखान,पान आदिक प्रासंगिक आदि विषयपर रोचक आलेख हेतु, मैथिलीक विद्यार्थीकेँ प्रतियोगी परीक्षाक तैयारी हेतु उपयुक्त पोथीक लेखन हेतु आ टीवी पत्रकारितामे प्रशंसनीय विश्लेषणात्मक प्रस्तुतिकरण हेतु देल गेलनि अछि।

विशेष: बी पी एस सी और यू पी एस सीक प्रतियोगिता परीक्षाक तैयारीमे प्रतियोगी सभकेँ मैथिली विषयक लेल समुचित मार्गदर्शन आ पोथी उपलब्ध करबैत छथि।



एहि फोटोमे बामासँ (श्रीमती चित्रा चौधरी, श्री शरदिन्दु

चौधरी, प्रीति शेखर, निशांत आनंद ठाकुर डा श्री जगदीश चंद्र ठाकुर अनिल)



ओहिमे बामसँ दहिन छथि सुशीम मिश्र (आत्मज सुकान्त साम आत्मज यात्रीजी), दीप्ति शेखर(आत्मजा शशिन्दु चौधरी), शशिन्दु चौधरी,प्रीति शेखर (आत्मजा शशिन्दु चौधरी),निशांत आनन्द (आत्मज जगदीश चन्द्र ठाकुर)नाजा शेखर(आत्मज शशिन्दु चौधरी),श्रीमती चित्रा चौधरी(पत्नी शशिन्दु चौधरी)आ स्वाती शेखर(पत्नी सुशीम मिश्र)

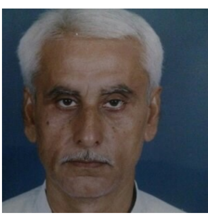
अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.३.शरदिन्दु चौधरी जी केर साक्षात्कार जगदीश चंद्र ठाकुर 'अनिल' द्वारा

मैथिली आ मिथिलाक लेल निर्भीक, स्वाभिमानी, जागरूक, ज्ञानी आ दृष्टि-संपन्न पत्रकार चाही - शरदिन्दु चौधरी



जगदीश चंद्र ठाकुर 'अनिल' : भाषा आन्दोलन एवं साहित्य आन्दोलन कोन दिशा मे छै?



शरदिन्दु चौधरी : मारिपन काज कहाँ भ' रहल अछि ! काज छै, गाम-गाममे मैथिलीक प्रति लोककें जागरूक बनेबाक, मैथिली पढ़बाक आ पढ़एबाक लेल उचित व्यवस्था करब, पोथी पुस्तकक प्रकाशन आ लोक लग ओकर उपलब्धता सुनिश्चित करब त लोक दिल्ली जाक' फोटो खिचएबामे लागि जाइत अछि, आन्दोलनक नामपर अपनाकें प्रदर्शित करबामे लागि जाइत अछि। जन सामान्यसँ कोनो सरोकार नहि, ए सीमे बैसिक' सर्वहारा आ जन सामान्यक बात करैत लोक अपन व्यवसाय चलबैत अछि। मिथिलामे पान दोकानबला, चाह दोकानबलासँ मैथिलीमे नहि गप करैत अछि, कतहु साइन बोर्ड मैथिलीमे नहि अछि, के देखत?

अधिकांश मैथिल मैथिली भाषाक प्रयोग छोड़ि चुकल छथि, न पढ़ैत छथि,न लिखैत छथि मात्र भाषण दैत छथि- हुनक परिवारमे देखू, हुनक साहचर्यमे रहिक' देखू मैथिल समाजकें मार्गदर्शन करबाक लेल मैथिली पत्रकारिताकें समृद्ध होयब आवश्यक अछि। मैथिलकें, मिथिलाकें आ मैथिलीकें अपन अस्मिताक रक्षा करैत अपन भूभागकें सुसंपन्न बनयबाक लेल पत्रकारिताक धारकें, स्वरकें तेज करहि पड़तैक आ ताहि लेल निर्भीक,स्वाभिमानी, जागरूक,ज्ञानी आ दृष्टि-संपन्न पत्रकार चाही, पत्रकारिता समाजकें प्रभावित करयबला सशक्त माध्यम अछि, पत्रकारिताक काज होइछ समाजकें साकांक्ष राखब आ नीक बाटपर ल' जयबामे मार्गदर्शन करब, गलत अथवा खराब काजक निन्दा करब आ नीक काज करबाक लेल प्रोत्साहित करब, समाजमे पसरल ईर्ष्या,द्वेष,साम्प्रदायिकता,भेद-भाव,जातीयता आदिक चातुर्यपूर्ण ढंगसँ विरोध करैत समाजमे सौहार्द बनौने रहब, शिक्षा, स्वास्थ्य आ समाजोपयोगी सभ सुविधा बहाल रहय ताहि हेतु तथा जनोपयोगी विषयक संचालन,देख-रेख ठीकसँ भ' रहल अछि कि नहि ताहिपर नजरि रखैत ओहि विषयक प्रति जनमानसकें आकृष्ट करब। मैथिलीमे सशक्त दसटा पत्रकार तैयार होथि त मैथिली आ मिथिलाक कल्याण भ' सकैत अछि

जगदीश चंद्र ठाकुर 'अनिल' : मैथिलीमे पुरस्कारक राजनीतिपर अपनेक कि कहब अछि?

शरदिन्दु चौधरी : राजनीतिक पुरस्कारक माध्यम बनि गेल अछि। साहित्य पुरस्कार नहि देल जाइत अछि। जिनका साथी नीक छनि, हुनका राजनीतिक मजबूतीसँ पुरस्कार भेटैत छनि। यदि तय भ' जाइ छै जे पुरस्कार किनका देबाक अछि, शेष प्रक्रियाक औपचारिकता मात्र होइत अछि। एकटा पैघ विद्वान सम्पादकीयमे लिखने छथि जे मैथिलीक सभसँ पैघ पुरस्कार कीनल जाइत अछि, अगिला बेर हुनका पुरस्कार द' देल जाइत छनि, ओ खुशीसँ ल' लैत छथि आ चुप भ' जाइत छथि

जगदीश चंद्र ठाकुर 'अनिल' : की पुरस्कार प्रदान करब अथवा स्वीकार करब अपराध थिक?

शरदिन्दु चौधरी : हमर अभिप्राय अछि साहित्य पुरस्कारक निर्णय हो, व्यक्तिपरक नहि, चयन प्रक्रिया स्वस्थ हो से लोककेँ लगबाक चाही,जूरीमे उपयुक्त लोक रहथि आ हुनकापर कोनो दबाब नहि होनि।

रचनाकर्मक उत्कृष्टता सुनिश्चित करबाक बदला साहित्यकार लोकनि पुरस्कार लुझबाक लेल गोल-गोलैसीमे लागि जाइत छथि आ उपकृत करबाक लेल पुरस्कार देल जाइत अछि,से अनुचित अछि।

संस्था सभ सेहो एहि खेलमे शामिल भ' गेल अछि, 'अहाँ हमरा अपन संस्थामे सम्मानित करू, हम अहाँकेँ अपना संस्थामे सम्मानित करब' पैघ खेल चलि रहल अछि, ई उचित नहि अछि।

जगदीश चंद्र ठाकुर 'अनिल' : मैथिलीमे वर्तमान ग्रंथ कम्हर जा रहल अछि?

शरदिन्दु चौधरी : ग्रंथ त आब लिखा रहल अछि, यद्यपि त ग्रंथक नामपर एकटा खास वर्गक खिधांसमात्र लिखाइत छल। एम्हर सक्रियता कम भेल अछि। बटुक भाइ नहि रहलाह, ओहो किछु सालसँ सक्रिय नहि छलाह, मन्त्रेश्वर बाबू, बैद्यनाथ 'विमल', धीरेन्द्र नारायण झा आ हमरा सक्रियता कम भेल अछि एम्हर नवकृष्ण ऐहिक, राज कुमार मिश्र छथि, हिनका लोकनिसँ बेसी आशा कयल जा सकैत अछि

जगदीश चंद्र ठाकुर 'अनिल' : मैथिलीमे अकादमी ओ वै, संस्था, पत्रिका सभपर सत्ता बनि देबाक राजनीति छै, एहिपर अपनेक की कहब अछि?

शरदिन्दु चौधरी : सभ ठाम 'ग्रुप' बनि गेल छै। मैथिली आ मिथिलाक कल्याण लक्ष्य नहि तखन अनियमितता हुन भ' सकैत अछि, अतः लेल सक्षम पत्रकारिताक आवश्यकता अछि।

जगदीश चंद्र ठाकुर 'अनिल' : मैथिलीमे प्रकाशनक स्थितिपर अपनेक की विचार अछि?

शरदिन्दु चौधरी : प्रकाशन त बहुत भ' रहल अछि,किन्तु सार्थक प्रकाशन बीस प्रतिशत मात्र अछि। भाषाक विकास लेल विद्यार्थी आ मैथिली पाठ्यक्रमक अनुरूप पोथी छापल जयबाक चाही। मैथिली

पाठ्यक्रमक पोथी विद्यार्थी वर्गकें उपलब्ध नहि भ' रहल छनि। साहित्यकार आ प्रकाशक दुनूक दायित्व छनि जे पाठकक संख्या निरंतर बढ़य, से सोचथि। लेखनक उत्तम अनुवादक लेल सबसँ पहिल शर्त अछि भाषाक ज्ञान आ शब्द सामर्थ्य, शुद्ध आ प्रांजल भाषा त लेखनक लेल आवश्यक अछिये। मैथिलीक दुर्भाग्य अछि जे जिनका शब्दक ज्ञान नहि छनि, सेहो महान साहित्यकारक कोटिमे आबिक' बैसि जाइत छथि आ हुनक चाटुकार भ' क' ज्ञानी लोक उत' उपस्थित रहैत छथि। एकटा लेखक जखन गुट बना सकैत छथि, गुट बदलि सकैत छथि, पाइ खर्च क' क', पैरवी क'क' पुरस्कार-सम्मान पाबि सकैत छथि त ककर मेहनति क'क' अपन शब्दकें सम्मान नहि द' सकैत छथि? शब्द सामर्थ्यक धनीक साहित्यकारक संख्या आंगुरपर गनबला अछि तखन एतेक रास प्रकाशन कोन काजक?

जगदीश चंद्र ठाकुर 'अनिल' : शेखर प्रकाशन की सब कयलक आ वर्तमानमे की सब क' रहल अछि?

शरदिन्दु चौधरी : शेखर प्रकाशन प्रकाशक आ मुद्रक दुनू रूपमे काज करैत आयल अछि, 52 टा महत्वपूर्ण पोथी अपना दमपर छपलक, आधा-आधी खर्चपर लगभग तीन दर्जन पोथी छपल अछि।

एकर महत्व भाषा संस्थान,मैसूर,साहित्य अकादमी,दिल्ली आ मैथिली अकादमी, पटना जनैत अछि। प्रतियोगी परीक्षा सभमे मैथिली विषयक संग सफल रहनिहार विद्यार्थी लोकनि जनैत छथि।

साहित्यसँ हुनक उत्तम उल्लेखनीय योगदान हेतु उपयुक्त व्यक्तिकेँ पुरस्कारक रूपमे एगारह हजार टाका,शाल आ प्रशस्ति पत्र देल जाइत छनि। वर्ष 2004सँ 2008 धरि आ 2019 तथा 2022 मे अनुसंधान एवं ज्ञानवर्धक गैर-साहित्यिक आलेख हेतु, मिथिलाक आर्थिक स्थिति आ सुधानयन आलेख हेतु,

पत्रकारिता हेतु, मिथिलाक जैविक सम्पदा माछ,मखान,पान आदिक प्रोसेसिंग आदि विषयपर केन्द्रित आलेख हेतु, मैथिलीक विद्यार्थीकेँ प्रतियोगी परीक्षाक तैयारी हेतु उपयुक्त पोथीक लेखन हेतु आ टीवी पत्रकारितामे प्रशंसनीय विश्लेषणात्मक प्रस्तुतिकरण हेतु क्रमशः श्री पंचानन मिश्र, नरेन्द्र झा,राम स्नेह कार्यी 'अमन',विद्यानाथ झा,नमन कुमार झा और श्वेता झाकेँ ई पुरस्कार देल गेलनि अछि।

जगदीश चंद्र ठाकुर 'अनिल' : अपनेक घरमे मैथिलीक की स्थिति अछि?

शरदिन्दु चौधरी : हमरा सभ धिया-पुता मैथिली बजैत अछि, मैथिली विषय राखि शिक्षा पढैत स पढाइ ठीकसँ नहि होइत छलै।

जगदीश चंद्र ठाकुर 'अनिल' : राज्य सरकार द्वारा पत्रकार लोकनि लेल जे पेंशन योजना स्वीकृत भेल ताहि लेल अपनेकेँ किए नहि प्राप्त भेल?

शरदिन्दु चौधरी : हम जखन बुझलिऐ आ आवेदन प्रस्तुत करितहुँ त कहलक समय समाप्त भ' गेलै।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

२.४.कल्पना झा- मैथिली साहित्यक सेवक नहि, मैथिली भाषाक सेवकः शरदिन्दु चौधरी



कल्पना झा

मैथिली साहित्यक सेवक नहि, मैथिली भाषाक सेवकः शरदिन्दु चौधरी

एही वर्ख (२०२२)१६ सँ १९ अप्रैल धरि, तृतीय "चानना रंग उत्सव"क आयोजन चानना समिति पटना द्वारा विद्यापति भवनमे कएल गेल छलए,जे सुधांशु शेखर चौधरी जीकेँ समर्पित छलनि। एहि आयोजनक प्रचार-प्रसार किछु साहित्यिक ह्वाट्सएप समूह सभमे देखलहुँ,त' हमरा मोन लागएल। सुधांशु शेखर जी द्वारा रचित नाटक सभक मंचन सेहो होएबाक घोषणा छलैक। एही "रंग उत्सव"मे हमरा पहिल बेर शरदिन्दु सरकेँ दर्शन भेल। फेसबुक पर मित्र-सूचीमे छलाह,शेखर प्रकाशनमे कएल परिकल्पन पोथीक उपलब्धता

अछि वा नहि,मुदा संदर्भमे गप्प सप्प भेल छलैक मुदा दर्शन नहि भेल छलैक।

ओहि संग उमेश आ गजेन्द्र ठाकुरक "उपमान" पत्रिकाक विमोचनक अवसर पर,आ भेंट एक-दू बेर विद्यापति भवनमे दर्शन भेल,शरदिन्दु सरकेँ। जेना काल देखलियनि,सुनलियनि,एकटा बात ध्यान करलहुँ हम,जे शरदिन्दु सर बाजैत कम छथि,सुनैत बेसी छथि। सामाँ बैसल लोकक आ नव-सिखिनिक □उत्साहवर्धन करैत रहैत छथि आ सभ किछु जेना मान-मर्यादाक ध्यान करैत जाइत छथि। एकदम साधारण पहिरन-ओढ़न। कोनो गपक दिखावा नहि,न ब्रांडेड कपड़ा-लत्ताक,न अपन ज्ञान-बुद्धिक। जखन कि एहि कलयुगमे जेना रहैत छै,मुदा सँ बेसीक दिखावा करबाक चलन छै,चाहे ओ धन-दौलत होअए कि ज्ञान-बुद्धि।

एमहर जखन शरदिन्दु चौधरी जी पर विशेषांक निकालबाक घोषणा सामाँ आएल(फेसबुक पर),त' हुनकर रचना सभ ताकि ताकि पढ़ब शुरू करलहुँ। एहिलेल 'विदेह' टीम साधुवादक पात्र छथि,जे उपेक्षित रचनाकार सभपर विशेषांक निकालबाक प्रयास करैत अछि। एहि सँ लोक ताकि ताकि क' ओहन रचनाकार लोकनिक रचना सभ पढ़ए लागैत अछि। हुनकर रचना पर किछु लिखथि वा नहि लिखथि,से बादक बात।

हँ,त' कहि रहल छलहुँ जे शरदिन्दु जीक सभटा रचना,बात- बात पर बात(१-४),बड़ अजगुत देखल,जेँ हम जनितहुँ,कनिया कक्काक कारामिन,गोवरगणेश, बना-बनी पढ़ि गेलहुँ। हुनकर रचना सभ

यळलाक उयनान्द हुनकन उाहुन ब्यक्तिण्वक मलक र्एटल,जहुन हुनकन दर्शन क' मानम धानधा वनल छलओ। शनदिंहु जीक अधिकांश नवना चूँकि संम्मनधात्मक छनि,गँ सत्य यन आधानित छनि आ हुनकन ब्यक्तिण्वक यनिचय सहा देग छनि।

यथार्थ लिखव मान सत्य लिखव,वउ कOिन काज छै,कानध सत्य अधिक काल कटुओ हाळ्ग छै। आ गँ ळी काज वहुग कम लाक कर्नेग छथि। शनदिंहु सन अयन संम्मनधात्मक याथी "वाग-वाग यन वाग" चानु रागम आ हाय्य ब्यंग्य "ऊँ हम जनिाहुँ"म समाजसँ झउल(विशेष नूयसँ साहित्यिक जगाक) सत्यकँ ग' उजागन कओनहि छथि,काना ब्यक्ति विशेषक नामक संग हुनकन कुकृत्यकँ दखान कनवाम सहा संकाच नहि कओलनि अछि। आ ओाव नहि,अयना विषयम सहा सरएटा स्पष्ट कहि दलनि अछि, "साज्ञाग्" शीर्षक याथीम। अयन दिनचर्या यर्यन्द वमिसक याOकक सामाँ कहि दलनि अछि, घनक साह-सहाळ्क वाग हाअओ, कि गंदा वनगन सिंकम नाखि साह कनवाक वाग,किछु सार्वजनिक कर्नेग संकाच नहि कओलनि अछि। ओहुन स्पष्टवादी लाक रएटव कOिन नहि असंरव वाग छै ओखनूक दिखानायूक्त समयम।

शनदिंहु जी नविग सरएटा याथी यळलाक उयनान्द सावम यउ गलहुँ, ज कान याथी यन समीज्ञात्मक आलख लिखल जाओ। यथार्थ लिखैग वहुग नास नहस्याद्घाटन सहा कओल गल अछि याथी सरएम,जाहि यन वहुग किछु लिखल जा सकैछ। मैथिली संस्था सरएक याल खालल गल अछि,महान साहित्यकान लाकनिक किनदानीक चर्चा रएल

अछि। ओकर नाम मुद्रा देखि/पढ़ि मोन उलबुका सन भेल। अंततः हम निर्णय नहि कऽ सकलहुँ आ शनदिहु सनकेँ जनबा बूझि सकलियनि,हुनक लेखनीक माध्यमसँ आ हुनका साक्षात् देखि/सुनि,ताहि आधार पर अपन मोनमे आएल भावक अभिव्यक्ति कऽ रहल छी, संक्षेपमे।

"बात-बात पर बात-१"मे मैथिली-भाषा,साहित्य आ प्रकाशनसँ अपन बात शुरू करैत अपन मान्यता स्पष्ट रूपेँ रखलनि अछि,जे-"मैथिल मैथिलीक बाधक अछि-दुनू क्षरण,भाषाक क्षरण आ साहित्यक क्षरण।"आ हमर मान्यता अछि जे हिनक एहि मान्यतासँ बहुत लोक सहमति रखताह,हम तँ पूर्णतः सहमति राखैत छी।

तहिना "मूर्खक लाठी माझ कपार"मे मैथिली साहित्यक दुर्दशाक समीचीन विवरण देलनि अछि आ एकर कारण ओ निदान पर सेहो विचार कयलनि अछि। अक्षरशः सत्य लिखलनि अछि-"हमर मैथिलीक दुर्दशा अछि जे जकरा शब्दक ज्ञान नहि छैक सेहो सभ महान साहित्यकारक कुर्सीमे आबिकऽ बैसि जाइत छथि आ हुनक चारण भऽ कऽ ज्ञानी लोक सभ ठाढ़ उपस्थित रहैत छथि।"

मैथिली साहित्यक एहि दुर्गतिक कारणेँ प्रायः हुनक भाव किछु एना बहार भेल छनि-"हमरा एकर कोनो कचोट नहि अछि जे हम मैथिली साहित्यक सेवक नहि छी। हमरा गर्व अछि जे हम मैथिली भाषाक सेवक छी।"

राजनीतिमे जेना राजनीति नहि होइत छै,तेना राजनीति मैथिली साहित्यिक जगतमे व्याप्त छै,पूर्वाग्रह लोलुपतामे कते तरहक खेल सब होइत छै,से सब बहुत लोक देखैत-सुनैत-बुझैत तैयो मौन रहैए। मुदा शरदिन्दु सन ओहो सब देखि/सुनि चुप नहि रहि सकलाह। किंवा ओहो सब देखि/सुनि आहत भेल हेताह,तखनहि एना लिखबाक लेल विवश भेल हेताह। असहनीय स्थिति भ' जाइत छै,तखन मोनक बात स्वतः बहरा जाइत छै। बुद्धिजीवी लोकक संकीर्ण मानसिकताकेँ देखार करैत लिखैत छथि- "सौतिया डाह सँ ग्रसित एक-दोसराकेँ देखबाक प्रवृत्ति, अपन रचनाकेँ मीठ,अनकर रचनाकेँ तीत कहबाक नीति आ गोधियाँबाद,संबंधबाद,गुटबाद एत साहित्यकेँ गीजबाक-मथबाक जे नीति चलल अछि, से साहित्यक संग संग समाजकेँ सेहो पाताल दिस ल' जा रहल अछि।"

ओना एहन बात मर्यादित भाषामे,ककरो अपमानित नहि करैत लिखब कठिन छै,तथापि भाषाकेँ संयमित रखबाक प्रयास कयलनि अछि शरदिन्दु सन,से सराहनीय। मुदा संयमित भाषाक प्रयोगक प्रयास रहितहु कतहु कतहु किछु अमर्यादित भाषाक प्रयोग भ' गेल छनि,जकरा नजरअंदाज नहि कएल जा सकैए। बुद्धिजीवी लोकक द्वारा एहन भाषाक प्रयोग अशोभनीय छै। गारि आ मारिकेँ गप्प मूर्ख लोककेँ शोभा दैत छै। हम क्षमायाचनाक संग ओहो बात लिखि रहल छी। आदरणीय छथि आ सबदिन रहताह शरदिन्दु सन हमरा लेल।

"ओँ हम जनितहुँ"क "ईहो पुरुष अरविन्द"म देखल जाए-"कत महानुरागक दावी रहैत छनि जे नेह टा दुखक खोखल छथि आ शेष सभ पातकी। हुनका सँ गप्प होएत त' ओ एक्क लाइनिए अपना छाटि सभ वर्गक लोककेँ भ्रष्ट प्रमाणित क' देताह। गप्पक क्रमम हुनक वाक्पटुता, दलक संचालन आ विषयक प्रस्तुति देखि होएत, जे वस्तुतः महान छथि आ हुनक आक्रोश उचित छनि। मुदा ओ हुनक खोखल चरित्रक पता लागि जाएत,त' स्वतः थूक फेका जाएत...."सभटा गप्प सत्य लिखल अछि। वास्तवम एहन लोक बहुत छथि मुदा "थूक फेका जाएत..."कनि असहज सन लागल हमरा।

तहिना "हमर आरोप:हुनक नहि दोष"क "ईर्ष्या, द्वेष नहि समन्वय चाही"म ई लिखब कनि अमर्यादित सन लागल-"अहाँकेँ एहिठाम बाँसम बान्हिक' पीटी त' कोना हर्ज नहि ने।"

व्यंग्य वा कटाक्ष रूपम ककरो किछु कहब उचित छै,मुदा स्पष्ट रूपेँ ककरो नाम उजागर करैत एना पिटबाक बात कहब/लिखब एकदमे अशोभनीय कहल जाएत।

"साक्षात्" बात-बातयन बात-४ एकटा नव प्रयोग सन लागल। स्वयं द्वारा स्वयंकेँ साक्षात्कार लेब पाठक सेहो अछि। एकर भूमिकाम लिखने छथि - "कहैत छथि विद्वानक अंग्रेजी पत्रकारिताक भीष्म पितामह पंडित स्व. दीनानाथ झा-ईरबन्धु लेनिहारकेँ बाद देबए पड़ैत छैक। जहन बात गहन माछ।" एहि हिसाबेँ,स्वयंकेँ देल बात सँ स्वयं माछ सन हँसब,पाठक। आगाँ एही भूमिकाम ईहो बात कहने छथि - "प्रस्तुत साक्षात्कार स्वयं हम अपन लेल छी साक्षात्कार

लवाक अनुरक्तक कानमे। देखी सुनैत अछि कि नहि।" खूब सुनल अछि सभ। एकदम बवाक ऊँटनब्बू अछि।

एहि भूमिकामे एकटा निवेदन करनि अछि जे सभ पत्र-पत्रिका मे एकटा साक्षात्कार अवश्य राखल जाए।

ऊपी दर्पण जकाँ हाऊत ठीक। से सभ।

हिनक निवेदनकेँ गम्भीरतासँ लेल जाए से हमर निवेदन ।

आ शिवदित्त सभसँ निवेदन जे एहिना निर्भीकतापूर्वक आगाँ सेहो नव-नव संस्मरण लिखि पाठकक सामाँ परसैत रहथि। साहित्यिक जगतमे व्याप्त राजनीति,पुरस्कार लोलुपताक खिस्सा सभसँ पाठकगणकेँ अवगत करबैत रहथि,जाहिमे मैथिलीक प्रतिष्ठित संस्था सभक सेहो संलिप्तता रहैत छै।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

२.७.नाम स्नेह कार्यी 'अमन'- हमर स्नान-पियासक स्वर: शिवदित्त चौधरी



नाम रमेश कार्कि 'अमन'

हमर ज्ञान-पिपासाक स्रोत: शरदिन्दु चौधरी

हमरा मोन नहि अछि- शरदिन्दु चौधरीसँ कहिया भेंट भेल, हेल-मेल बढल आ बादमे अन्तरंग भऽ गेलहुँ। हम नेपालमे, जनकपुरधाममे मैथिली भाषा, साहित्यक एकटा जिज्ञासु पाठक रहलहुँ अछि। किछु पढबाक, जानबाक ललक हमरा मैथिली पुस्तक विक्रेताक पाछाँ बेहाल करौने रहल। ई आदति हमरा हाइस्कूलक पढाइसँ लागि गेल रहए।

डॉ. धीरेन्द्रक सान्निध्यमे मैथिली पुस्तक, विक्रेता आ भेटबाक स्थान सेहो स्रोत होइत रहल आ हम ओकरा लेल उपयोग होइत रहलहुँ। पहिने ओ दनरंगाक टावर चौक लग ग्रन्थालय प्रकाशन हमर स्रोत रहए। जे पुस्तक खोजी ओ सेहो उपलब्ध करबैत रहलाह। ओकरा बाद मिथिला पुस्तक भण्डार आ सेहोसँ बेसी स्रोत बनलाह आदरणीय रमानन्द रेणुजी।

हम आगाँ बढैत गेलहुँ। कैम्पसमे गेलहुँ। ओकरा बाद पढाइक संगहि हमर लेखन सघन रूपसँ आगाँ बढल। सन् १९६४ मे छपल

हमन वालकथा 'ञ्ञमाख्यान वालक' सँ मिहिनक लखक वनलहुँ आ गकना वन्न हाउवा धनि दर्जनां लख-नचना प्रकाशित हाञ्ञा नहल। गाहू वीच अनकां जिज्ञासा उठेग नहल आ गकना शान्द कनवा लल पूस्तक निक्रगा आ एश्चानकँ खाजैग नहलहुँ।

गाही खाजीक क्रमम हमना शनदिहुजी सँ ऐंट एल। हमना लगैग अछि यनिचय मिहिन कार्यालयसँ एल छल। आभियगा हुनका घनम सजायल पूस्तक सरक वीच वठल ज हमन ज्ञानयियाशाक महत्वपूर्ण स्राग छल।

मैथिलीक ननप्रकाशन हाञ्ञक, शब्दकाष हा अथना काना संग्रह शनदिहु चौधनीसँ हम प्राप्त कनैग नहलहुँ। हम अयन पूस्तक सहा हुनका निक्रयक हगु दैग नहलहुँ। ओहिम दुनू दिश ओकटा सम्बन्ध निकसित एल ज़ा ओखन धनि वहन अछि।

पूस्तकक निक्री-निगनक्षम ओकटा सरसँ यैघ अननाध हाञ्ञछ- किगाव लs कs- निक्रगाक गकन याञ्ञ सास एs नचनाकानकँ दवs नहि चाहवा। ञ्ञी दुर्गुण लगरग सर निक्रगाम दखल गेल अछि। जहाँ धनि शनदिहु जीक सवाल छैक हमना कठिनाञ्ञी नहि एल। सामान्यगः हम अदला-वदलीक नुयम पूस्तकक लन-दन कनैग नहलहुँ अछि। हमन आनश्यक पूस्तक हुनक 'शेखन प्रकाशन'सँ लs लैग छी, गहिना अयन प्रकाशन दs दैग छियनि। ओहिसँ काना कठिनगा नहि हाञ्ञग अछि।

शनदिहु चौधनीक नाम वहुगा मैथिली सनीक लल अनान लागि सकैग छैक। गकन कानक छैक हुनक लखनी। ज़ा सामान्यगः मालाहिजा कs ककना कृगि, व्यक्तित्व ना काननामाकँ लिखवाक जनूनगि नहि वूसलनि। ज कही ठाँउ यटाका। ओहिसँ सम्वन्धिग यउकँ छनछना कs

लागब अस्वाभाविक नहि। ई काज हुनकर नीक छन्हि से हमरा कहब नहि, तखन सत्य बात अवश्य लिखी मुदा कोनो रोषा आ साहित्यक हल लिखी तकर स्थान हयब जरूरी। आ कखन किछु लिखी तकरा महत्त्व कएल जएबाक चाही। तकर विचार नहि तखन ओ अनेर विवादित भऽ जाइत छथि। जखन कि हुनक उद्देश्य प्रायः ककरो चोट पहुँचाएब नहि रहैत छन्हि, अनटोटल बातकेँ मात्र विरोध करब रहैत छन्हि।

जहिया मधुकान्त जीक सहयोगे ओ समय-साल निकालैत छलाह तहिया अपन कटाक्षपूर्ण टिप्पणीसँ कतेकोकेँ नजरिमे खटकैत रहलाह। हम यद्यपि नियमित हुनक आग्रहपर लिखैत रहलहुँ समय-सालमे। कहियो कोनो तरहक असुविधा नहि भेल।

हुनक टिप्पणी सदे अबैत रहैत अछि। खास कऽ ग्रंथ विश्लेषण हुनक कलम नीक चलैत छन्हि। मुदा ग्रंथ जतऽ विवाद उत्पन्न करैत छैक, हुनक ग्रंथ कतेकोकेँ सुहाइत जकाँ लगैत छैक आ तेँ अनदिहुजी कतेकोकेँ नजरिमे खटकैत रहलाह अछि।

ओ किताब लिखैत छथि, पुस्तकक सम्पादन करैत छथि, पत्रिका सभक सम्पादन करैत रहलाह अछि- एहि मानेमे ओ साहित्यकार, पत्रकार आ नीक सम्पादक छथि। मनुक्खकेँ चिह्नबाक हुनक नजरि 'ताकहुनक आँखि' जकाँ तेज थिक। आ हुनक ईएह नव आ ग्राह्य शैलीक कारणेँ हमहूँ एक बेर उपकृत भेल छी।

मोन पड़ैत अछि २००६ साल नवम्बर ३ क ओ दिन जखन हमरा 'लेखन सम्मान' भेटल छल। आवश्यक नहि साहित्य अकादमी, प्रबोध साहित्य सम्मान अथवा आन कोनो कथित प्रतिष्ठित सम्मान सम्मान मात्र होइत अछि। कोनो संघ-संस्थाक निष्ठापूर्वक देल

आएल सम्मान आन कोनो विवादित सम्मान-पुरस्कारसँ बेसी महत्व रखैत अछि।

ई लेखन प्रकाशनसँ प्राप्त हुनक ओ सम्मान ई पूर्व मुख्यमंत्री जगन्नाथ मिश्रक हाथे देल छल जाहिमे उद्धृत वाक्य हुनकर ऊर्जा उत्पन्न करैत छल- आखिर हुनक काजकेँ एहि तरहेँ मूल्यांकन तँ देल अछि। निश्चय एहि प्रक्रियामे गठित चयन समितिक हाथ रहि सकैछ, मुदा शरदिन्दु चौधरी सँ हुनक एतेक नजदीक सम्बन्ध, हुनक साहित्य, हुनक पत्रकारिता (३९ वर्षसँ गामघर साप्ताहिकक निरन्तर प्रकाशन)क वास्ते हुनका सम्पर्क कोनो मानदण्ड बनएबामे सहायक देल हेतैक। कहबाक अर्थ- मात्र कहू बात नहि, प्रतिष्ठाक मूल्यांकनक नजरि आ परिवार सदा छथि शरदिन्दुजीमे ई हुनका आनसँ फूट बनबैत अछि।

शरदिन्दु चौधरी विभिन्न परीक्षामे शामिल होइ बला परीक्षार्थी लोकनिक हेतु सन्दर्भ सामग्री सेहो उपलब्ध करैबाक काज करैत आएल छथि ई महत्वपूर्ण देल करैत अछि। एखन मैथिली साहित्यक विक्री वितरणक काजमे लेखन प्रकाशनक माध्यमसँ करैत ओ रहल हुनक काज सराहनीय मात्र नहि बहुतोकेँ लेल सन्दर्भ ग्रन्थक उपलब्धिक स्रोत उपलब्ध करैबाक काज थिक जाहिसँ हिनक प्रतिष्ठा बढ़ल अछि।

एहिठाम एकटा आन घटनाक चर्चा करब ई हमरा बड्ड प्रासंगिक लगैत रहए। नेपालमे मधेश आन्दोलन जोरीमे रहैक। लगभग डेढ़ दशक पूर्वक बात छी। स्थानीय मिडियामे एहि आन्दोलनकेँ नेपालसँ फूट होएबला आन्दोलन बता एकटा भ्रम सृजन कयल जाइत रहै। अथवा कहि सकैत- स्थानीय मिडिया एहि आन्दोलनकेँ

गम्भीरतासँ बूझि नहि पौने रहए। एखन ओएह नियार भेलै जे स्थानीय मिडियाकेँ मधेश आन्दोलनक वास्तविकतासँ अवगत कराओल जाए। आ साथी लोकनि ओहि काजमे हमरा चुनलनि। हुनका सभकेँ ई विश्वास रहनि जे पटनामे हमरा नीक सम्बन्ध अछि, ताहिसँ पत्रकार लोकनिक ध्यानमे आ बातकेँ बुझबाक गम्भीरतामे ई सहायक होयत।

हम सभ पटना गेलहुँ। हमर लक्ष्य रहए- शरदिन्दु चौधरी, जनिक सहयोगसँ पत्रकार सभकेँ भेटाओल जा सकैछ। रातिमे २ बजे उरायन पहुँचलहुँ। घनघोर वर्षा। दोसर दिन कार्यक्रम रखबाक नियार। समयक निर्धारण भेल। जे स दिनसन भेल तँ भोर शरदिन्दुजीकेँ सभ बात कहलियनि। ओ हमरा निश्चिन्त कयलनि, हम सम्पर्क करै छी। हम संतुष्ट तँ भेलौं मुदा निश्चिन्त नहि। कारण ओतेक कम समयमे पत्रकार लोकनि की आबि पओताह। तेँ ओकरा कोठरीमे पाँच-छबटा कुर्सी लगा। अन्दाज करए लगलहुँ। प्रायः ६ बजेक समय रहैक। कहबाक जरूरति नहि- समयपर पत्रकार सभक जे भेटब शुरू लागल तँ अगल-बगलसँ कुर्सी आदि खोजि बैसबाक व्यवस्था करए पड़ल रहैक। प्रिंट आ इलेक्ट्रानिक मिडियाक पत्रकारसँ कोठरी भरि गेल रहैक। मोन प्रसन्न भए गेल रहए। एखन हम मधेश आन्दोलनक सत्य सभक सामने रखने नहिऐक जे दोसर दिनक भोरका संस्करणमे लगभग सभ अखबारमे छपल छल। ओतहु हमरा शरदिन्दु चौधरीक आपस्ता नीक सहयोग करैत रहए। अर्थात् ओ मात्र कथाकार नहि, मित्र सभक हेतु खूब बनि जाइत छथि।

ई सभ छै जे मैथिली साहित्य हुनका ओतेक महत्व नहि देलकनि जकर ओ हकदार रहलाह अछि। एखनो हुनक एकांत सेवा मैथिली

प्रकाशन उत्तम सदैव प्रशंसित रहलनि- रहबाक चाही। हम हुनक सभाक अभिनन्दन निष्ठानक कामना करैत छी।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.६.जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'- उहिना नहि गमसाइत छथि शरदिन्दु चौधरी



जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'

उहिना नहि गमसाइत छथि शरदिन्दु चौधरी

आर्यावर्त बंद भऽ गेलै.

नोकरी छूटि गेलनि.

दिल्ली, मुंबइ कि कोलकाता नहि गेलाह.

पटनेमे रहिकऽ जीविकोपार्जनक लक्ष्य बनौलनि,

लेखन प्रकाशनक कलनि स्थापना

आनन्द कलनि मैथिलीक सत्ता

पोथी प्रकाशन आ पोथी विक्रयक काज

साहित्यकार लोकनिसँ छलाह परिचित

सबहक सहयोगक नहि प्रयास

किछु गोटे कनवा कलखिन

निष्ठापूर्वक सहयोग

किछु गोटे छपा लेलखिन पोथी

द'क' किछु पाइ

गेलखिन से घुमिक' फेर नहि एलखिन

नै देलखिन शेष राशि

नै ल' गेलखिन शेष किताब

किछु त ल' गेलखिन सस्ता किताब

द'क' मात्र आश्वासन

शीघ्र राशि पठयबाक

ताकित नहि गेलाह हुनक वाट

मासक मास आ सालक साल

एहन स्थिति कहु त तामस काना न हतनि !

एकटा सज्जन

हिनका याथी

दव न कलखिन

आ मंचयन वाजि दलखिन

ज हल्लाँजी एखन तक याथीक दाम नै दलनि

एहन स्थिति कहु त तामस काना न हतनि !

निशेषांक लल एकटा संस्थाक काज कलनि

यानिश्रमिकक वदला योलनि

दु सय अस्सी टाकाक चक

एहन स्थिति कहु त तामस काना न हतनि !

एकटा संस्था कलकनि

यूनस्थान दवाक घाषणा

𑒏𑒯𑒪𑒐𑒱𑒢 𑒁𑒡𑓂𑒨𑒏𑓂𑒭

𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒠𑒹𑒥𑒢𑒱 𑒣𑒳𑒩𑒮𑓂𑒏𑒰𑒩 𑒞

𑒧𑒰𑒯𑒳𑒩 𑒐𑒰𑒏' 𑒧𑒩𑒱 𑒖𑒰𑒨𑒥 𑒯𑒧

𑒍𑒯𑒢 𑒮𑓂𑒟𑒱𑒞𑒱 𑒏𑒯𑒴 𑒞 𑒞𑒰𑒧𑒮 𑒏𑒼𑒢𑒰 𑒢 𑒯𑒼𑒢𑒱 !

𑒗𑒰 𑒁𑒣𑒢 𑒩𑒔𑒢𑒰𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒬𑓀𑒮𑒰

𑒚𑒮𑓂𑒧 𑒞𑒰𑒧𑒮𑒿 𑒏𑒩𑒟𑒱 𑒮𑓂𑒫𑒨𑓀

𑒗𑒰 𑒁𑒣𑒢 𑒣𑒰𑒟𑒲𑒮𑒿 𑒫𑒮𑒲

𑒧𑒯𑒞𑓂𑒫𑒣𑒴𑒩𑓂𑒝 𑒢𑒰𑒧𑒯𑒱 𑒏𑓀 𑒥𑒴𑒗𑒟𑒱

𑒍𑒯𑒢 𑒮𑓂𑒟𑒱𑒞𑒱 𑒏𑒯𑒴 𑒞 𑒞𑒰𑒧𑒮 𑒏𑒼𑒢𑒰 𑒢 𑒯𑒼𑒢𑒱 !

𑒣𑒞𑓂𑒩𑒏𑒰𑒩𑒱𑒞𑒰- 𑒡𑒩𑓂𑒧𑒏 𑒣𑒰𑒪𑒢 𑒢𑒻 𑒏𑒩𑒞𑒰 𑒗𑒰

𑒮𑒧𑓂𑒣𑒰𑒠𑒏𑒲𑒨𑒧 𑒯𑒼𑒙𑒰 𑒪𑒹𑒏𑒱𑒢 𑒩𑒏𑓂𑒭 𑒁𑒫𑒬𑓂𑒨

𑒬𑒳𑒠𑓂𑒡-𑒬𑒳𑒠𑓂𑒡 𑒪𑒱𑒐𑒥𑒰 𑒏𑒩 𑒥𑒠𑒪𑒰

𑒏𑒩𑒟𑒱 𑒑𑒼𑒪𑒻𑒮𑒲

𑒣𑒳𑒩𑒮𑓂𑒏𑒰𑒩 𑒪𑒴𑒙𑒥𑒰 𑒏𑒩 𑒐𑒰𑒞𑒱𑒩

𑒢𑒏𑒪 𑒩𑒯𑒟𑒱 𑒗𑒰

ओहेन स्क्रिगिम कहु ग गामस कांना न हगनि !

क्षा जीनिग अयना नामयन

चलावथि यूनस्कान

क्षा नवना नहि छयलायन

ए जाथि

मानि कनवाक लल गैयान

किया अयन अयकर्मक

मानथि सदाचान

ओहेन स्क्रिगिम कहु ग गामस कांना न हगनि !

मिथिला आ मैथिलीक वाटयन काँट वहुग अछि

स क वूसग ! स क दखग ! कहिया दखग !

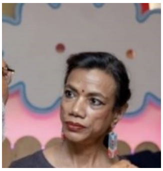
वहुग वाग अछि शेष वढावय नक्क चाय ज

उहिना नहि गमसाञ्ज्ञग छथि शनदिहु चौधनी !

-संयर्क-8789616115

अयन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **यन यठाउ।**

२.१.विभा रानी- शरदिंदु भाउजीक गप्पीन सिद्धांतप्रियता!



विभा रानी

शरदिंदु भाउजीक गप्पीन सिद्धांतप्रियता!

मैथिली हमर भाषा नहिं छल. हमरा घर म सब किओ हिंदी बाजै छल. हमर मोहल्लावाला सब बच्ची- बलिया स' माउण्टेन क' क आएल छल. ओ सब भोजपुरी बाजैत छल. हमरा कान म मात्र हमर घर म पूजा करावए लेल आवएवाला पंडित जी बड़का मा छलखिह, जिनका स' हम सब शुद्ध मैथिली सुनैत छलहुं.

बीए म गेलाक बाद बोध भेल जे मैथिली सीखबाक चाही. असल म, जखन हम आनक कॉलेज म गेलहुं त' टीचिंग स्टाफक अधिकतर सब किओ मैथिलीए म बाजय छलखिह. आब हुनका हिंदी म जवाब देनाई अथवा हुनका सब स' हिंदी म गप्प करनाई हमरा बड़ अजूर लागै छल. अही अजूरक चक्कर म हम भोजपुरी सीखि गेल छलहुं. कलकत्ता म बांग्ला सीखि गेलहुं. महाराष्ट्र म मराठी नहिं सीखि सकलहुं, कियेक त' ओहि ठां लोग आउत हिंदी- अंग्रेजी म गप्प करैत रहलथि आ हमहु एक गोट सूरीनामन कोना पाकि क' अजगर बनि यति नहि गेलहुं.

मुदा उा कॉलजक दिन छलै. गैं हम गय कएल ज हम आव मैथिली सीखव. टूटल- फूटल मैथिली वाज' लागल छलहुं. आव जहन वाज' लागलहुं, त' दिमागी कीडा काटय लागल. एक गोट कथा सहो लिखि ललहुं. मुदा, एाक ट्यास नहिं छल अपन मैथिली यन. साउान क जनमल वंग हादा म कहल ज एहन दाही त' हम कहिया दखव नहिं कएल. यादि हमन स्थिति छल. मान हूदवूद क' नहल छल ज की कनी? घन म आर्यावर्त अवैत छल. उाही म एक गोट विज्ञायन दखल- मिथिला मिहिनक ननानिया लखन अंक लल. आव हूदवूद्धी कश्मश्री म वदलि गेल. हम त' हाञ्जी ननानिय छी. हमन ञ्जी यहिल कथा अछि. उमिन म सहो नव छी. एम ए म यदि नहल छी. त' सरु मामिल हिट. कथा लिखि लन छलहुं. की लिखन छलहुं, सहो नहिं वूसल छल. मात्र ञ्जीयाहि टा वूसल छल ज हम मैथिली म एक गोट कथा लिखि नन छी.

हून सएह यउ प्रश्न! दखावी ककना स'? वह्रा मा यंती जी त' अहि म सहायक नहिं हगाह. मान एलाह दासन मा जी. संद्रल वैंक □ह ञ्जतिया म काज कनै छलाह. वउ गर्व स' अपना क कहैत छलाह ज हम CBI म काज कनै छी. लाक सरु चौंक जाए छलै- आंय! CBI ? मान संद्रल वूना □ह ञ्जवस्तिगेशन?' उा शुद्ध मैथिली वाजै छलखिह यूना यनिनान सहित. हमन घनक साम म आएल छलाह किनाया यन. ननयूवक. तुनंत वियाह हल छलहि. कनिया सहो खांटी मैथिली वजै छलखिह. कॉलजक स्याह क वाद मा जीक कनियां स' हमन स्याकन मैथिलीक अप्यास चलि नहल छल.

𑒋𑒏 𑒠𑒱𑒢 𑒮𑒰𑓀𑒗 𑒧 𑒖𑒐𑒢 𑒍 𑒥𑒻𑓀𑒏 𑒮' 𑒒𑒴𑒩𑒪𑒰𑒯, 𑒯𑒧 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒍𑒯𑒱 𑒚𑓀 𑒣𑒯𑒳𑓀𑒔𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒯𑒳𑓀. 𑒍 𑒔𑒳𑒞𑒰 𑒯𑒳𑓀𑒖𑒰𑒏 𑒢𑒰𑒬𑓂𑒞𑒰 𑒏' 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒪𑒰𑒯. 𑒯𑒧 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒮' 𑒏𑒯𑒪𑒱𑒨𑒢𑓂𑒯𑒱 𑒖𑒹 𑒯𑒧 𑒋𑒏 𑒑𑒼𑒙 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒧 𑒏𑒟𑒰 𑒪𑒱𑒐𑒪𑒯𑒳𑓀𑒋. 𑒁𑒯𑒰𑓀 𑒏𑒢𑒏 𑒍𑒏𑒩𑒰 𑒖𑒰𑓀𑒔𑒱 𑒠𑒹𑒥𑒻?'

𑒍 𑒏𑒯𑒪𑒢𑓂𑒯𑒱- '𑒯𑒧 𑒞' 𑒢𑒰𑒏𑒢𑒱𑒨𑒰, 𑒥𑒻𑓀𑒏 𑒫𑒰𑒪𑒰 𑒂𑒠𑒧𑒲 𑒕𑒲. 𑒥𑒻𑓀𑒏𑒱𑓀𑒑𑒏 𑒣𑒢𑒲𑒖𑒰𑒏 𑒢𑒲𑒖𑒢𑒱𑓀𑒑 𑒙𑒮𑓂𑒙 𑒣𑒴𑒕𑒥 𑒞' 𑒥𑒞𑒰 𑒠𑒹𑒥. 𑒄 𑒐𑒱𑒮𑓂𑒮𑒰- 𑒏𑒯𑒰𑒢𑒲 𑒮𑒦 𑒯𑒧 𑒏𑒲 𑒖𑒰𑒢' 𑒑𑒹𑒪𑒯𑒳𑓀?

𑒯𑒧 𑒯𑒱𑒧𑓂𑒧𑒞𑒱 𑒢𑒯𑒱𑓀 𑒯𑒰𑒩𑒪. 𑒏𑒯𑒪- '𑒏𑒟𑒰 𑒢𑒯𑒱𑓀, 𑒁𑒯𑒰𑓀 𑒏𑒢𑒏 𑒩𑒰𑒭𑒰 𑒔𑒏 𑒏' 𑒠𑒱𑒨𑒆.'

𑒯𑒳𑒢𑒏𑒢𑒰 𑒮𑒖𑓂𑒖𑒢𑒞𑒰: 𑒯𑒱𑒧𑓂𑒧𑒞𑒱 𑒥𑒜𑒪𑒢𑓂𑒯𑒱. 𑒮𑒏𑒰𑒢𑒱 𑒪𑒹𑒪𑒢𑓂𑒯𑒱. 𑒯𑒧 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒁𑒣𑒢 𑒯𑒮𑓂𑒞𑒪𑒱𑒐𑒱𑒞 𑒏𑒟𑒰 𑒠' 𑒠𑒹𑒪𑒱𑒨𑒻. 𑒞𑒯𑒱𑒨𑒰 𑒏𑒰𑒢 𑒏𑒧𑓂𑒣𑓂𑒨𑒴𑒙𑒩 𑒂 𑒙𑒰𑒃𑒣𑒱𑓀𑒑𑒏 𑒫𑓂𑒨𑒫𑒮𑓂𑒟𑒰? 𑒠𑒴 𑒠𑒱𑒢 𑒥𑒰𑒠 𑒤𑒹𑒩 𑒮𑒰𑓀𑒗 𑒧 𑒯𑒧 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒍𑒯𑒱 𑒚𑓀 𑒣𑒯𑒳𑓀𑒔𑒪𑒯𑒳𑓀. 𑒏𑒯𑒪- '𑒏𑒟𑒰 𑒠𑒹𑒐𑒱 𑒢𑒢 𑒯𑒰𑒨𑒥 𑒞' 𑒠' 𑒠𑒱𑒨𑒾. 𑒯𑒧 𑒍𑒏𑒩𑒰 '𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰 𑒧𑒱𑒯𑒱𑒩' 𑒧 𑒣𑒚𑒹𑒥𑒰𑒏 𑒮𑒼𑒔𑒢 𑒕𑒲. 𑒞𑒰𑒩𑒲𑒐 𑒠𑒹𑒪 𑒕𑒻. 𑒋𑒐𑒢𑒱 𑒯𑒧 𑒋𑒏𑒩𑒰 𑒯𑒨𑒢 𑒏𑒩𑒥, 𑒞𑒐𑒢 𑒣𑒚𑒰𑒨𑒥. 𑒞𑒰𑒏 𑒮' 𑒧𑒡𑒳𑒥𑒢𑒲 𑒮' 𑒣𑒙𑒢𑒰 𑒣𑒯𑒳𑓀𑒔' 𑒧 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒮𑒧𑒨 𑒪𑒑𑒞𑒻.'

𑒂𑒥 𑒪𑒼𑒏 𑒮𑒦 𑒪𑒼𑒏 𑒏𑒲 𑒯𑒹𑒪𑒰𑒯 𑒖𑒹 𑒁𑒢𑒳𑒫𑒰𑒠 𑒏𑒩𑒲 𑒂 𑒞𑒏𑒩 𑒏𑒰𑒖 𑒏' 𑒠𑒻𑒟. 𑒧𑒳𑒠𑒰, 𑒍 𑒯𑒧𑒩 𑒙𑒰𑒃𑒧 𑒪𑒰𑒃𑒢 𑒮𑒳𑒢𑒪𑒢𑓂𑒯𑒱 𑒂 𑒍𑒯𑒱 𑒯𑒱𑒮𑒰𑒥 𑒏𑒩𑓂𑒖𑒰𑒢 𑒏' 𑒠𑒹𑒪𑒢𑓂𑒯𑒱. 𑒯𑒧 𑒏𑒢𑒏 𑒂𑒬𑓂𑒔𑒩𑓂𑒨 𑒯𑒹𑒪𑒯𑒳𑓀 𑒖𑒹 𑒪𑒰𑒪 𑒣𑒹𑒢 𑒮' 𑒣𑒖 𑒮𑒦 𑒔𑒱𑒢𑓂𑒯𑒲- 𑒔𑒰𑒟 𑒢𑒯𑒱𑓀 𑒯𑒹𑒪 𑒕𑒪. 𑒏𑒰𑒙𑒴- 𑒏𑒰𑒙𑒴 𑒢𑒱𑒬𑒰𑒢 𑒪𑒰𑒑𑒪 𑒕𑒪𑒻.

से त' एखनो लोक सभ निशान साधि दैत छथि आ हम तकरा लेल तैयार सेहो नहि छी.

कथा चयन कएल आ 'शुरु सँ शुरु' कथा 'मिथिला मिहिर' के पठा देलियैक. कोनो जबाब नहिं आयल. हमर हुदबुद्दी बढ़' लागल छल. मुदा कहै त' ककरा से कहै? ककरो कह' मे सेहो संकोच होइत छल जे कहीं जे हम कथा लिखलहुँए. ओना हिंदी मे लिखबाक शुरुआत भ' गेल छल. मुदा लिखबाक काज कोनो नोटिस करबाला काज त' होइत नहिं छै.

आ एक दिन डाक सँ हमर नाम सँ डाक पहुँचल. पहिया अपना नाम चिट्ठी सेहो एक गोट अजगुत घटना होइत छलै. पहिया चिट्ठी सेहो कयन □रु क' क अबै छलै. हमर डाक सेहो आएल. पता चलल जे 'मिथिला मिहिर'क 'नवतुरिया लेखक विशेषांक'क पहिल अंक मे हमर कथा 'कौआरंकनी' छपल अछि. हम त' मारे खुशी के बताह भ' गेलहुँ. सांझ मे मा जी के देखेलहुँ. ओहो बड़ प्रसन्न भेलाह आ हमर मैथिली लेखनक यात्राक शुरुआत भ' गेल.

आब कहै छी जे एतेक बेघ नाम कहानी हम कियैक लिखलहुँ? 'जाना था जापान, पहुँच गए चीन, समझ गए ना!' लिख' आएल छलहुँ हम शरदिंदु शेखर चौधरी पर आ लिख' लगलहुँ अपन कथा पर. मुदा से नहिं छै. शरदिंदु शेखर चौधरी पर लिख' लेल आ हमरा संग हुनकर कोन नाता छलै, से बुझबा लेल एतेक बेघ भूमिका सँ पास होयब जरूरी छै.

शरदिंदु शेखर चौधरी ओहि समय 'मिथिला मिहिर' मे छलाह. मैथिली मे लिखबाक संकट कोना आइका संकट नहिं छै. ओहु समय मे नवतुरिया लोक सभक आगम कम छलै. एकरा बढ़ावा देब' लेल 'मिथिला मिहिर' केँ योजना निकाललक आ एकर जिम्मा शरदिंदु शेखर चौधरी आ टीम पर द' देल गेलै.

हालहुँ छै स्वाभाविक रूपें जे कोना योजना निकलला पर ओही बहाने रचनाकर्म स' जाहुँ छै, जेना कथा- लेखन कम रहला पर प्रभास कुमार चौधरी आन- आन लोक सभ संगे मिलि क' 'सगर राति दीप जरय' केर आंदोलन शुरू कलहि, एखनि श्रीधरम आ अंतिका प्रकाशन उपन्यास लेखन के बढ़ावा देब' लेल 'लक्ष्मी- हरि स्मृति उपन्यास लेखन' योजना कार्यान्वित क' रहल छथि. 'मिथिला मिहिर' मे सेहो नवतुरिया लेखन अंक लेल बहुत रास कथा सभ पहुँचल छलै.

हमरा बहुत बाद मे पता चलल जे हमर कथा 'कोआरकनी' कोना क' पहिल अंक मे छपलै. आब हम कहब जे ओहि समय कोना साहिल मीडिया त' छलै नहिं जे लोक आओर पता क' लेथु जे हमलां व्यक्ति के छै? सम्पादक लग मात्र रचनाकारक रचना छलै. आ तेँ त' नवतुरिया लेल छलै, तेँ आओर पता लगायब मुश्किल जे के सभ के आ की छथि.

हमर कथा शरदिंदु राहुँ के बहुत पसंद पड़लनि. हुनका संगे समूहतः अग्निपुष्प जी सेहो छलखिह. आओर एक दू गोट सेहो, जिनकर नाम हमरा मोन नहिं. सम्पादक मंडलक पैघ- पैघ लोक सभ लेल तेँ छलै जे तेँ कोन विशेष बाती? कोना सनसन नहि.

काना क' वूमल जाउा ज ॐ्ी क छथि? शनदिंदु राॐ्ी कल्ललखिह्न ज अह्लां सर ब्यक्ति आ ल्लनक सननम क छाय' चाहै छी अथना नवना क? ब्यक्तिक सननमक गुधनन्धा चाही अथना नवनाक गुधनन्धा?

माणवन लाक सर गैया थथमथ छलाल्ल. शनदिंदु राॐ्ी अंग म कल्ललखिह्न ज'ॐ्ी कथा वल्लग नीक छै. ॐ्ी कथा रनिम्र म मीलक याथन साविग र्ली. वल्लग सम्मानननानान कथा छै.' ल्लनका ल्लन कल्लल (गलै ज'ठीक छै. ओगव अह्लांक जिद अछि ग' ओकना दासन अंक म छायि लव.' शनदिंदु राॐ्ी ल्लन कल्ललखिह्न ज'नहिं, नवना छयगै ग'ॐ्याहि अंक म. आ यदि ॐ्ी नवना अहि अंक म नहिं छयगै, गल्लन ल्लम अयना क अहि याजना स अलग कनै छी.'

ल्लम वगाल्ल सन लाक. आॐ्या उाल्लन वगाल्ल छी. रिगुनका गद्य स' काना सनाकान नहिं नाखयनाली. 'कौआल्लंकनी'क ग' ज प्रसिद्धि रंटलै, गकन ग' काना चर्च नहिं. ल्लम नागानागि जना मैथिलीक सलव नाॐ्टन र' (गलहूं. ल्लमना लग याठकीय यत्रक ढनी लागि (गल. सर किउा खाज यूछानी कन' लागलै ज ॐ्ी निरा नानी क? ल्लमना लग सर ठाम स नवना यठवाक यत्र आव' लागल. ल्लमन मास्नन (वैंकनाला मा जी)जीक जिम्मदानी आउान वढि (गलै.

मिथिला मिहिन म ल्लमन छयव वढि (गल. उाही छयवाक क्रम म ल्लमन यनिचय रल मैथिलीक अन्यान्य दिग्गज सामदन जी, जीनकांग राॐ्ी, मायानंद मिश्र, उषाकिनध खान, माल्लन रानद्वाज, नाजमाल्लन मा, कूधाल राॐ्ी, अग्नियुष्य राॐ्ी, निरुगि आनंद जी, अशाक, शिन

शंकर श्रीनिवास, रमेश, तारानंद वियोगी सहित अनेकानेक लेखक सभ स'.

शरदिंदु चौधरी स' हम एखनो बहुत प्रभावित छी. ओ बहुत गम्भीर रहै छथि, हम जेना हुनका परिलक्षित कएलहुँ. बहुत कम, जरूरति भरि बाजै छथि. बहुत कम बाजयवाला स' हमरा ओहुना बड्ड भय होइत रहैय. 'मिथिला मिहिर' बंद होइत धरि ओ ओत' रहलाह. तकर बाद 'समय-साल' पत्रिका स' जुड़लाह. बाद म हुनक लेखन प्रकाशन भेलै. हम एक बेर पटना गेलहुँ त' हुनक प्रकाशन म सेहो गेलहुँ आ हुनक मैथिलीक प्रति प्रेम आ निष्ठा देखि अभिभूत भ' गेलहुँ. एतेक निस्वार्थ भाव स' किताबक प्रकाशन आ बिक्री म लागल छथि. किताब स' वास्ता राखनिहार आब कमेक लोक छथि, सभ किओ जनैत छथि. मुदा शरदिंदु चौधरी जेना संकल्प लेने होथु मैथिलीक सेवा करबाक. ओ मैथिली प्रकाशन क उपयोगी सेहो बनलन्हि. बीपीएससी आ अन्य परीक्षा म काज आबयवाला किताब सभक प्रकाशन, उपलब्धता आदि म ओ लागि गेलाह. हम जेहि काल ओत' रहलहुँ, देखल जे छात्र सभ आबि क' किताब सभ पुछैत गेलाह आ कीनैत गेलाह. कोनो कोनो किताब नहिं रहला पर ओ कहलथि जे किताब नहिं अछि, अहां फोटोकॉपी करा लिय'. छात्र खुशी- खुशी किताब ल' क' चलि गेलाह फोटोकॉपी कराब' लेल. हम पुछबो कलियन्हि, जे 'एना नहिं घुमाबय?' ओ अपन दाढ़ीक बीच स' मंद मुस्कान स' कहलथि- 'जायत कत'? मैथिली किताब सभ ओकरा आउर क आउर देतै कत' स'? आखिर चलि जायत त' काल्हि ओकरा

ओवाक मुँह नहि आ यदि आबिया गेल त' की ओकना स' हुन माँगव यान लागै?'

हमना जनिताव, ककना स' किछु करवाक, मंगवाक हुनक स्वभाव नहिं छै. अयन सिद्धांत यन ओ काना व्यवस्था स' रीति जायवाला लोक छथि, चाहे ओ हमन कथा छायवाक समय छल अथवा घटनाक आन- आन महत्वपूर्ण संस्था सभ स' लिखवाक. कृणाल जी कहै छथिन्ह जे 'ओ अयन प्रतिबद्धताक धनी छथि.' मैथिली मे एहन सिद्धांतवाला लोक सभ त' दीया ल' क' ताक' जाउ, तहना मुश्किल स' भेटायत. हुनक लेखन प्रकाशन एक गोट स्तम्भ छै मैथिलीक छात्र- छात्रा लेल, मैथिलीक आन- आन लोक सभक अगुवाजी लेल सेहो. सुनल, जे एखनि हुनक मान वसी खराव नहै छै. हम फोन कएल. ओ फोन नहिं उठौलन्हि. लागल, जे ई खवन सत्य छै. शारीरिक अस्वस्थता मनुष्य के जीवन स' उदास आ अवसन्न करै छै. लेखन रोई जल्दी स्वास्थ्य लाभ करथु, ई हमन कामना. अयन सिद्धांतक दीप चतुर्दिक लेसथु, ई हमन कामना!

-संपर्क-मुंबई

अयन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **यन पठाउ।**

२.६.डा. नारायणजी- विसंगतिक विरुद्ध प्रतिरोधक-स्वर



डा. नारायणजी

विसंगतिक विरुद्ध प्रतिरोधक-स्वर

श्री शरदिन्दु चौधरी, ई व्यक्ति छथि, आ जिनका मैथिली साहित्यसँ, प्रकाशन, विपणन आ सम्पादनसँ आइयो प्रगाढ़ प्रेम छनि, हुनका हम थोड़ जनैत छियनि। तकर कारण अछि, ई हम सदिखनसँ गाममे रहैत छी आ ओ राजधानी पटनामे। आ तहन नहि काज रहबाक कारणेँ, अथवा रहला पर अपन असमर्थताक कारणेँ हम पटना थोड़ गेल -आएल छी। तेँ व्यक्ति भाइ शरदिन्दु चौधरीकेँ थोड़ जनैत छियनि।

मुदा, जेँकि मैथिलीक आधुनिक दृष्टि -सम्पन्न कवि -कथाकार श्री युधेन्दु चौधरीक मातृक हमर गाम छियनि आ ओ शरदिन्दु चौधरीक पितियौत भाए छथि, तेँ से हुनकासँ भेट होइत छल आ, अपन भेटमे एकदिन ओ गपक क्रममे कहलनि जे हम शरदु (शरदिन्दु चौधरी)केँ कहने रहियनि जे मैथिली साहित्यक संरक्षण आ सम्पादनमे रुचि राखह, मुदा ताहि लेल शहीद होनि हेउ जाह। से सुनि निश्चिन्ततयसँ

हालहि शरदिन्दु चौधरीक एक टा निर्लोभी आत्मासमर्पित व्यक्तिक स्वरूप आ स्वभाव हमरा सामाँ उजागर भेल छल,जाहिमे मैथिली साहित्यकेँ समर्पित करबाक सदिखन निष्ठा आ संकल्प देखाएल छल,आ से हुनकर छवि हम आइ धरि यादि रखने छी।

श्री शरदिन्दु चौधरीक संस्मरणात्मक निबंधक पुस्तक - 'हमर अनुराग : हुनक नहि दोष' हमरा सामाँ एखन अछि। महाकवि विद्यापतिक उक्ति यौकि कृष्णक प्रति गोपीक आत्मव्यथाकेँ प्रकट करैत अछि,जाहिमे कृष्णक प्रति गोपीक सम्पूर्ण समर्पण छनि। मुदा,हालहि शरदिन्दु चौधरीक चर्चित उक्तिक अर्थमे मैथिली साहित्यक सृजनसँ जुड़ल विभिन्न प्रक्रिया आ ओहि प्रक्रियासभमे व्याप्त ओहि विसंगतिसँ परिचय कराओब थिक,जाहि मानवता नष्ट होएबाक नहि मात्र मंद हाहाकार अछि, अपितु,मानवता जगएबाक तीव्र प्रहार अछि। आ से एहि सम्पूर्ण पुस्तकमे लेखकक एहन विशिष्ट दृष्टि -कोण अभिव्यक्ति प्रशंसनीय थिक।

श्री शरदिन्दु चौधरी एहि पुस्तकक भूमिकामे अपन विसंगति -बोधक दृष्टिक अभिव्यक्तिक चयन लेल जे निर्णय लेलनि,ताहि सम्बन्धमे स्पष्ट करैत कहैत छथि, '..लेखनकालमे जिनकापर हमर कलम चलैत अछि, तिनक व्याप-पढ़ायन कोनहुत अवश्य रहैत अछि,मुदा हुनका अपमानित करब चेष्टा कथमपि नहि।'

श्री शरदिन्दु चौधरी अपन एहि पुस्तकक 'नव घर उठय - पुरान घर खसय' शीर्षक निबंधमे नव वर्षक आब होइत आयोजनमे विसांस्कृतिकरणक चिन्ता जतबैत रचनासभमे प्राचीन आ अपन

यानस्थनिक मूल्यक स्थान दवायन वल दलनि आछि,गँ 'दमन अराग : दूनक नदि दाष'म माथ्र सादित्यकानक अपोारनीय मदाल्लाकांआकँ दखवैग छथि। संगदि,'सम्यादक आ याOकीय यत्र' शीर्षक निवंधम गँ सादित्य अकादमी यूनस्थान प्राप्त कनवाक लल सादित्यकानक घान लिष्ठाकँ आ आवनधकँ निस्संकाव उजागन कनेग दखाछ्छग छथि। उा कटूकि संग मैथिलीक सादित्यकानक उादि स्थानक उयदास कनेग नदि थकैग छथि जिनका कौमा आ यूर्ध लिनाम धनिक स्थान नदि छनि,स स्थान वघानेग दखल जाछ्छग छथि। याथीक ' येघन्नक अकानध प्रदर्शन...' दाअय अथना 'वछ्छमान दायवाक घाषधा 'शीर्षक निवंध यठि गखन आन वसी कवाटैग अछि, जखन सुनिवानिग काना स्थानिकासँ काना आलख प्रायः स्फनदीन वूमि अस्वीकानि दल जाछ्छग अछि,मुदा,जखन नैद आलख कागदू दासन OIम छयि जाछ्छग अछि,गखन नदि अत्यन्त मूल्यनान वूमल जाछ्छग अछि,अयिगु, यूयीधसरी लल सदा अत्यन्त उययागी सिद्ध दाछ्छग अछि। यूस्फकक अन्तिम निवंध 'छ्छीर्घा ह्रष नदि - समन्वय वादी'क लिवान अनश्य मैथिली रखा आ सादित्यक समूचिग लिकास लल समयक आनश्यकगाक अनूनाध कनेग अछि।

मुदा,समग्रगाम यूस्फकक सम्यूर्ध कर्ह्रीय स्वन मैथिली सादित्यक आजक लिकासक क्रियाकलायम व्याप्त लिसंगगिक प्रगि लिर्भीकगायूर्वक उदादनध सदिग प्रगिनाधक -स्वनकँ दखान कनव थिक,जादि स्वनकँ लिवनसँ अकानल जधवाक वादी।

- संपर्क-9431836445

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

२.९.मुन्नी कामत- रामानन्द श्री शनदिहू चौधरी



मुन्नी कामत

समाजिक् श्री शरदिन्दु चौधरी

सत्यक बाट पर पाथर हजार,

हजार-हजार मठाधिस बनल

सत्य केँ टारैय संसार।

आय हम बात कऽ रहल छी पत्रकार,संपादक एवं साहित्यकार,ओना ओऽ कतेको साहित्यक रचना करैयक बादो स्वयं केँ साहित्यकार नै मानैत छथि से हिनकर बड़प्पन अछि। नाम - शरदिन्दु चौधरी,गाम - मिश्रटोला दरभंगा।

श्री शरदिन्दु चौधरी जी अपन लेखनक जादूगरी लेल जानल जाइत अछि। हिनकर कलम कहियो हिनका मन सँ समझौता नै कलक आऽ सत्यक ख्याति संग दौड़ैत रहल। माँ सरस्वती के उपासक

हिनकर समस्त यनिवान स्नान अर्जन कS सवसँ येघ धन मानलक। हिनकर वावूजी यंडित सुधांशु शेखर चौधरी ज अयन लखन सँ मैथिली साहित्य कS विविध विधा सँ समृद्ध कलैथ। हिनकर वावा यंडित शशि नाथ चौधरी ज मैथिली कँ येघ विद्वान छलैथ। तँ हम निश्चक कहि सकैत छी ज साहित्यक रुची सहज हिनका विनासत मS देल छैथ।

श्री चौधरी जी यॉलिटिकल साइंस सँ एम ए कलखिन आS नकालनक डिग्री हासिल कलैथ। मुदा ज खून मS नहैत अछि सामाँ जविड जैत अछि। साहित्य हिनका खून मS सनल छल अहि सँ लाख कोशिश कS वादो ओ अहि सँ मुक्त नै दS यौलखिन।

नकालनक यढौनी कनैक वाद जखन ओS अहि ओत्र मS अयन किस्मत अजमावैय लल दु - चारि दिन कोट गेलखिन तँ हिनका दान देल ज अहि येसा मS मुOक सिवा किछ नै अछि। हिनका जेहन मुOक खल नै खलवाक छल। ज सत्य आS ग्रस्ताचार्य कS तान -तान कनैय लल अयन देल नौकनी कS इंटनव्यु काल मS घंट देव दलक स शनदिन्दु जी नकालत काना कनैथ। हिनकर ओी सत्यक सिनह हिनका वन -वन यिछा धकलैत नहल, मुदा ओS अयन वाट नै वदललैथ। न सत्यक लाट छाडलैथ। हीनकर लखन हिनकर सत्यताक प्रमाण अछि।

हिनकर प्रसिद्ध ग्रंथ संग्रह अछि *वड अजगुत दखल* , *कनिया कक्का कानामिन* , *गोवन गणेश*

संस्मरणात्मक रचना अछि *बात -बातयन बात* ,*हमर अपराध: हुनकर नहि दोष* ,*मर्मान्तक शब्दानुभूति*

आकाशवाणी दूरदर्शनसँ दर्जनों वार्ता। मिथिला मिहिर पत्रिका साप्ताहिक, दैनिक, मासिक केर संपादक। आर्यावर्त हिन्दी दैनिक पत्रिका केर जीवन संपादक।

तीन दशक सँ साहित्यिक गतिविधि मे सक्रिय रहला। हिनका वडी मंच सँ अलग - थलग देखल गेल। हिनकर विचार समाजक व्यवस्थाक विपरित अछि जे ओहि व्यवस्था कँ बदलबाक लेल क विरुद्ध अछि जे हिनकर ग्रंथ संग्रह मे सहज देखल जा सकैत अछि। अपना केर पाग आर दायरा सँ स्वतंत्र रखबाक लेल ओ आजिवन कोनो संस्था सँ सम्मानित नै होवाक सपथ लेने छैथ।

स्वतंत्र रहि बिना किछु लेबाक इच्छा सँ अपन सम्पूर्ण मिथिला आर मैथिली लेल अपन लेखन सँ काज करैत रहलैथ। उद्देश्य मात्र अपन जे अपन धरोहर केर मिथिला मैथिल नामक खाल पहिर दिमक केर नै खा सक। अहि लेल ओ अपन लेखनी सँ अहि दिमक सभ कँ चेतौनी दैत रहैत छैथ।

चौधरी जी अहि समाज सँ नै समाजक व्यवस्था सँ व्यथित छैथि। साहित्यिक गतिविधि जे वर्तमान मे चैल रहल अछि ओहि गतिविधि पर क्षुब्ध छैथि। जिनका भाषा केर स्थान नै से मठाधिस अछि आर जे ओहि भाषा केर गरहैत छैथ से अभिनन्दन अछि।

वर्तमान मे मैथिली भाषा सँ पढ़ौनी कनिहार विद्यार्थी सब लग लेखन प्रकाशन कँ व्यवस्थापक एवं संचालक श्री शरदिन्दु चौधरी क नाम सबसँ ऊपर अछि। ओ विद्यार्थी सबहक मन मे हिनका प्रति जे सम्मान अछि से बनावटि नै अछि। ई सम्मान हिनकर हक अछि जे हिनकर काज हिनका दियौलैथ। हिनकर स्मारिका, ग्रंथ, संस्मरण जखन पढ़ब तँ किछु काल लेल एकटा नूतन जीव आ भाव पहन जे शरदिन्दु जी गढ़न काज कहलैथ। हिनकर पेह कला हिनकर रचना क अमर बनौने अछि।

- संपर्क- साहिबाबाद (गाजियाबाद)

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.१०.गोपीनाथ- शरदिन्दु चौधरी हबाक मान



गोपीनाथ

शरदिन्दु चौधरी होबाक माने

शरदिन्दु चौधरी। जिनकर बात मे नोनक कमी आ मिरचाइक तासीर खूब कड़गर आ माँसिगर लागि सकैत अछि, मुदा मिठास तकै लेल बड़ परिश्रम कर' पड़ैया। कतेको गोट लेल मारुख चढ़ाउल व्यंग्य-वाण जेना हुनक जिह्वा पर सदति तैयार रहैत छनि! ई नइँ जे दुर्वासा महाराज जाइत-जाइत अपन तामसक बाना वृद्धमार्गक कारा गाछ पर सँ हुनक माथ पर उझलि गेल छलाह! साफ-साफ बात करयबला ओहुना सहृदय आ सहयोगी मानुस पटनाक मैथिली-परिसर मे कम भेटताह। विद्यापति भवनक विद्यापति बाबाक बर्खी मे अबैत-जाइत मैथिलीक साहित्यकार लोकनि भले हुनका सँ चिढ़ैत होथि आकि कड़ा-कड़ा आरोप लगबैत होथि जे शरदिन्दु जी "साहित्य अकादमी, मैथिली अकादमी आ चेतना समिति कँ हथियौने क' "कमाइत छथि!... मुदा सत्य त' ई अछि जे शरदिन्दुजी अपन परिश्रमक कमाइ धरि कातक मिठबोलिया मैथिली साहित्यकारक उत्थान खाता मे बहबैत रहलाह अछि। अहाँक तीत आ तीख बजैत-बजैत

हुनक स्नास्थ्य ताँ खनाव ह' गेलनि जे वसी काल वीयी वठल नहि छनि, मुदा मैथिलीक तथाकथित साहित्यकान लोकनि ललधनसन! ओहुन काय टा स्ननामधन्य कवि-साहित्यकान हलाह जे एक निश्चित नाशि तय क' हिनका सँ किताव छया ललनि आ याॅ्ॅ हव' वन म अयन मैथिली सवी हवाक वखान कनैत हिनका 'चुना'लगा गेलाह। ओहुन-ओहुन अनक लखक सँ यीतित शनदिष्ठु जी मैथिलीक खाँटी याठक आ छात्र-छात्रा लाकनिक प्रिय छथि ताँ अयन श्रम, लगन आ ॅ्ॅीमानदानी क वल यना मैथिली याथीक प्रकाशन आ वितनणक अव्यवस्थित दुनिया म हिनक याेगदान कँ हननहि मैथिलीक साहित्यकान लाकनि नॅ्ॅस्नीकान कनथि, छात्र-छात्रा आ खाँटी याठकक मन म हिनका लल हम वड आदन अनुहन कयलहुँ अछि। दुन-दुन सँ कडा काना दुर्लभ याथीक खाज कनैत अछि, ताँ हुनका वस एक टा व्यक्तिक नंवन देत छी- शनदिष्ठु जीक। किछु दिन वाद याथी प्राप्त क' चुकल डा व्यक्ति धन्यवाद-ज्ञायन कनैत हिनक तानीक जाहि हानना सँ कनैत अछि, डाकन मर्म सव नॅ्ॅ वुझि सकैत अछि।

"वालयन म हनि यट अन्न लल तनसव, किशोनानस्था म ज्ञुनिसी सन वीमानी सँ ग्रस्त हायव, एम.ए. म यढैत काल मायक हहान्तक मर्माँतक यीडा हागव, 34-35क वयस म नाकनीक छुटव, वकानी-लवानीक समय म यिताक संसान सँ डठि जायव, चानि गाट संतान आ यत्नीक संग साला-साल आर्थिक कष्ट सँ जुझव आ आव वुढानी म जीवन-यायन लल संघर्ष कनैत-कनैत यनीडाक अर्थ की हाॅ्ॅत छै स वुझय लगलहुँ अछि। शेष जीवन म आन काेक यन-ॅ्ॅश्राक

पालन करय पड़त से कुशल नहि अछि मुदा हम सदा प्रयत्न छी अग्रिम पीढ़ीकें देबाक हेतु आ से पूर्ण मनोबलक संग।" 14 अप्रैल, 2020 कँ 11.20 बजे राति मे कोरोना लॉकडाउनक बीच लिखल हुनक ई डायरी-अंश हुनक मनोदशा साफ-साफ बतबैत अछि। ई एक टा संघर्षशील मनुक्खक मनोव्यथाक अभिव्यक्ति थिक।

शरदिन्दु जी कँ विगत पैंतीस वर्ष सँ हम बहुत निकट सँ देखैत आबि रहल छी। खासक' किछु पुस्तक मेला सभक क्रम मे दस-बारह दिनक निरंतर संगसाथ सेहो रहल, प्राण सँ साँस धरि। हम हुनक दैनिक जीवनक उतार-चढ़ाव आ मनःस्थिति कँ ओहि क्रम मे बेसी निकट सँ अनुभव क' सकलहुँ। घनघोर अर्थ-संकट आ कैक तरहक शारीरिक परेशानीक बादो ओ अपन नैतिक-आत्मबल पर सदा अडिग देखाइत रहलाह अछि। सदा-प्राण सँ स्वच्छ। विचलन कहियो नहि। संघर्ष-यातना प्रिय जे कखनो काल हालति मे हुनका अभावक संग दैत नहि देखलहुँ। 'अंतिका' मे प्रकाशित हुनक रिपोर्ट सब सेहो तकर गवाह अछि जे ओ जाहि व्यक्ति आ संस्थाक काज अपन आर्थिक लाभ लेल करैत छलाह, तकरा विरुद्ध कलम चलबैत ओ कोनो संकोच कहियो नहि कयलनि।

एखन हमरा सामने मे शरदिन्दु चौधरीक संस्मरणात्मक निबंध 'बात-बातपर बात' आ एकर दोसर खंड 'मर्मान्तक-शब्दानुभूति' अछि। बहुत सुसुआन सन कायाक पोथी। मैथिली प्रकाशन जगत, मैथिल संस्था सभक किरदानी आ एकर साहित्यकार लोकनिक गतिविधि मादे शरदिन्दु जीक जे विस्तृत जानकारी आ अनुभव-संसार रहलनि

अछि, तकरा देखैत तँ एहि पोथीक काया आ आत्मा निराश करैत अछि। एहि पनिसोहक जे जानकारी हिनका लग छनि, से अन्यत्र कतहु नहि। ओ ओही निष्ठा सँ लिखैत छथि तँ कतबा मुँहपुरुख कँ मुँह नुकब' पड़ैत छनि, कतबा तथाकथित सम्मानित साहित्यकार अपन सम्मानक पगड़ी बान्हि पटी म नुकब' लगैत छथि। मात्र नाम ओहुन सम्पर्क सरक सामाँ अबैत जाहि सँ मैथिलीक अधिकांश लोक अनभिज्ञ छथि। मुदा से नहि भेल अछि!... हम जखन छी, हिनका लग से सभ ओहीनाम सँ लिखबाक गतक पलखति नहि छनि। गजेन्द्र जी कँ अनेक ठाकुर साहित्यकारक अशुद्ध पाण्डुलिपि कँ शुद्ध क' छपबाक छनि जिनका ओही सँ पुरस्कारक लाइन म लगबाक होइत रहैत छनि, बीएसी-एमएसीक छात्र-छात्रा लेल किताबक पैकेट बान्हि क' पास करबाक रहैत छनि। ककरो स्मारिका, ककरो किताबक भूमिका म लगबाक रहैत छनि। अपन लोक कँ मैथिली पोथी आ प्रकाशन पाछू तिल-तिल गलबैत रहल एहि व्यक्तिक मन दुन बैसल कारा छात्र-छात्राक सहलता सँ पुलकित होइत अछि। प्रकाशन-व्यवसाय आ पोथी दोकान सँ धन-गृहस्थी चलबा लेल हिनक नाम-गलक जागल तँ जनुन होइत छनि, मुदा एतबा बचत नहि भेलनि जे बेटी व्याहक अवसर पर पिताक अनजल जमीन बचबाक तकलीफ सँ बाँचल रहितथि। हिनक ओहन-ओहन मात्र नाम दुख बुझबाक लेल एहि पोथी कँ बहुत बानीकी सँ पढ़ब जरूरी अछि। अपन व्यथा-कथा कहैत कोक OIM हिनक नामस तना लहनि जाइत छनि जे ओही निष्ठान सँ कारा बात नाहि नहि पबैत छथि। विना निष्ठान म लोन, बहुत मंडी-मंडी छोट-पातर सूत्र कँ पकड़ि क' हिनक बात कँ बुझब तखन

हिनका ढंग सँ जानि सकै छियनि। जँ स धैर्य नञि तँ ई पोथी अहाँ लेल कोनो काजक नञि हैत।

कओ कहि सकै छथि जे शरदिन्दु चौधरी सन एक टा मामुली प्रकाशक आ किताबक छोटछिन दोकान चलब'बला कँ जानि क' की लाभ? तहुन कोचिंगल लेल ई किताब दुइया काजीक नञि अछि आ हुनका बुझायब सेहो कठिन! मुदा जिनका एहि दुर्लभ कोटिक मनुक्खक प्रति कनका जिज्ञासा होनि, ओहि व्यक्ति लेल एहि दुनु किताबक बड़ महत्त्व अछि। संजय म बहुत काजक बात कहल गेल अछि। आबयबला समय म एहन पुस्तकप्रेमीक घनघोर अभाव हैत। मिथिला-मैथिली क नाम पर जय-जय करयबला बहुत भेटत, मुदा एतक कम लाभ पर जीवन-यापन करयबला शरदिन्दु चौधरी सन दोसर कओ नञि भेटत।

शरदिन्दु चौधरी मैथिलीक ख्यात साहित्यकार आ 'मिथिला मिहिर'क संपादक सुधांशु शेखर चौधरीक पुत्र छथि जिनक जन्म 07 अक्टूबर 1956 कँ दरभंगाक मिश्रटोला म भेलनि। ओ पटना विश्वविद्यालय सँ राजनीति शास्त्र म एमए आ मगध विश्वविद्यालय सँ एलएलबी कयने छथि। कतेक साल विभिन्न पत्र-पत्रिका आ अखबार म पत्रकारिता कयने छथि। ई सब हुनक ओ परिचय छी जे प्रायः सब जनै छथि। एकरा बाद लोक बस एतब जनै छथि ओ शेखर प्रकाशन नाम सँ एक टा प्रकाशन आ किताबक दोकान चलबै छथि। बड़ तीत आ कटु लगैबला भाषा म बजै छथि आ संस्था सभक असलियत जनै क कारणेँ ओकर भयादोहन करै छथि! एकरा बाद आन्याय-दर-अन्याय कि जकरा किताब छपै छथि तकरा नाँगट करै

छथि। कथी लल गँ कखना वकियोगा या्ू लल गलेदा क' दै छथि, कखना अशुद्ध लिखै लल वाकियवे छथि।... ओहन लाक कँ ऱ्ी यगा नॅू हगानि आ नॅू स यगा कनवाक उहि हगानि ज ऱ्ी ब्यकि टा-निक्षा चलव'नला ओक टा मजदून काटिक लाक लल गहन खगना माल ल' सकैग अछि जहन स्थिगि म सहादनाक प्रगि कगक क उगा याछ्र ए' जायगा। जखन अहाँ हिनक जीवन म नीक जकाँ उगनव आ हिनक संघर्ष कँ दखव-गमव गखन वुमि सकव ज शनदिहु् वौधनी हवाक मान की हा्ूग छै।...

अयन मंगव्य editorial.staff.videha@gmail.comयन यठाउ।

२.११.जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'- कथ्य, तथ्य आ सत्यक चिन्तन



जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'

कथ्य, तथ्य आ सत्यक चिन्तन

बात-बातपर बात सीरीजक अंतर्गत 63 ,48,40 आ 32 पृष्ठक चारिटा पोथीक कुल 183 पृष्ठमे लेखकक जीवनक व्यथा-कथा अथवा संस्मरणात्मक निबंध अछि.

शास्त्र कहैत अछि, ज्ञानी लोकनि कहैत छथि जे जीवनमे जेना दुख हम सभ भोगैत छी से अपन अज्ञानताक कारणे आ जेना सुख पबैत छी से परमात्मा अथवा अदृष्टक प्रसाद अछि.

पोथी पढ़ैत काल कतेक ठाम किछु प्रश्न मोनमे उठैत अछि.

किछु बात पढ़िकए लगैत अछि जे एना कोना भए सकैत छैक,अवश्य कतहु सम्पादकीयताक स्थिति आएल हेतैक, कतहु-कतहु लगैत अछि जे अतिशयोक्ति अलंकारक प्रयोग भेल अछि. एहन-सन किछु प्रसंगक उल्लेख एकटा पाठकक रूपमे हम करए चाहैत छी.

1, अपन बाल्यावस्थाक चर्चा करैत कहैत छथि जे पिताजीकें मिथिला मिहिरक व्यस्तता ता रहैत छलनि जे हमरा सभकें प्रातःकाल जगबासँ पहिने निकलि जाथि आ रातिमे जखन सुति रही तखन डेरा घर आबथि, हम सभ हुनका नितदिन किछु काल देखियनि. (पृष्ठ : IV / 26)

पटनामे आवास आ कार्यालय दुनू रहनि तखन कहियो-कहियो एहन स्थिति आएब स्वाभाविक भए सकैत छैक मुदा तीन बरख धरि एहन स्थिति रहब अस्वाभाविक लगैत अछि.

2. एकठाम कहल गेल अछि जे पेट नहि रहितैक त मनुष्य व कोनो जीव-जंतु संघर्ष नहि करैत,कोनो काज नहि करैत. (पृष्ठ : II / 42)

देखल गेल अछि जे जकरा रोजगार समस्या नहि छैक,सेहो बिना कोनो काज करय नहि रहि सकैत अछि.रोजगार मात्र जीवनक खगता नहि छैक.

3.एक प्रश्न कएल गेल अछि जे हमरासँ सृजल 95 प्रतिशत लोक हमरासँ घृणा करैत अछि. (पृष्ठ : II / 41)

ताहि प्रश्न ओहि कएल गेल अछि 'हम अपना जकाँ ककरा विषयमे न खराब सोचैत छी आ न अपन क्रियासँ ककरा अहित करैत छी'. (पृष्ठ : II / 41)

ई दुनू बात परस्पर विरोधी अछि.

शास्त्र कहैत अछि, चिन्तक लोकनि कहैत छथि जे जँ अहाँ ककरा विषयमे न खराब सोचैत छी, न करैत छी त अहुँक लेल ककरा मोनमे खराब रहबा नहि आबि सकैत छैक. तँ हमरा जनैत ई 95 प्रतिशतक गणना अशुद्ध अथवा अतिशयोक्ति अछि.

4.एक प्रश्न कएल गेल अछि 'हमर प्रयास रहैत अछि जे शान्ति रहनमे रही, मनोबल उच्च बनल रहय, सकारात्मक भाव बनल रहय, सुखक अभिलाषा नहि,सुविधाक पाछाँ भागब स्वभाव नहि तैयो शान्ति दूर अछि, ई किए अछि? ई ककरासँ युद्ध ? (पृष्ठ : II /40)

एहन प्रश्न कुरुक्षेत्रक मैदानमे अर्जुनक मनमे उठल रहनि आ आइयो सब मनुष्यक अथवा अधिकांश लोकक मनमे ई प्रश्न

उत्तर ठीक, एकर समाधान गीतामे भगवान द्वारा देल जा चुकल अछि.

5.कहल गेल अछि जे अनुचितक प्रति क्रोध उत्पन्न होइछ. (पृष्ठ : II / 30)

प्रश्न उठैत अछि जे अनुचित की अछि ?

की हम जकरा अनुचित बुझैत छी सेह अनुचित अछि ?

भ' सकैत ठीक, हम जकरा अनुचित बुझैत छी से दोसराक लेल उचित होइ.

शास्त्रमे त क्रोधक कारण कामनाक पूर्तिमे उत्पन्न बाधाकेँ कहल गेल अछि.

6. कहल गेल अछि जे हम अपन अधिकारसँ बेसी कर्त्तव्यकेँ श्रेष्ठ मानलहुँ अछि तेँ प्रायः आजुक समाजमे अपनाकेँ अनफिट पबैत छी आ बनल रहल असहज स्थितिमे आबि जाइत छी. (पृष्ठ : II / 26)

कर्त्तव्यकेँ श्रेष्ठ मानब आ अपनाकेँ अनफिट अथवा असहज स्थितिमे पायब दूनू एक दोसरक विरोधी लगैत अछि.

असहज स्थितिमे अयबाक दोसर कोना कारण भ' सकैत अछि.

7. कहल गेल अछि जे एकटा पड़ोसी निशाबला टेम्पू लए चालैत छल, उकरा बैंकसँ लोन नै भेटलै त अपना नामपर लोन लक' □टा

निक्षा उकना दिया दलिउ उकन उपयाग कनवाक लल आ गीन सालम लान चुका दवाक लल, मुदा दु सालक वाद उा लान चुकयवाम आनाकानी कनय लागल, उहि लल उटलिउ ग गमसाक' □टा हमना दलानयन लगाक' चल गल आ अंगाः हमना एक लाखसँ वसी लान चुकाव' यउल. (पृष्ठ : II / 22-23)

कान याजनाम ऊी लान नन नहथिन स लीखल नहि छैक, ऊँ शासकीय याजनाक अंगगंग नन हथिन ग वैंकक नियमानुसान ऊी अनुचिग अछि, गँ यनिणाम मनानुकूल नहिए हवाक छलनि.

ऊँ गैन-शासकीय याजनाम लान नन हथिन, ग एहिम व्यवसायक नुयम अगिनिक्त सावधानी, दख-नख आ नियंत्रणक आवश्यकगा छलै ज नहि ए सकल हगनि !

जकना प्रगि सहानुभूगि नखैग मदगि कलखिन आ उा विश्वासक नउा नहि कलकनि, उकना अयन कृत्यक हल एटिए गलै ज उा हन निक्षा चलव' लागल.

8. कहल गल अछि ज विद्यायगि सना संस्थान, दनभंगा यत्रकानिगाक उत्रम सवाक लल हमना नामक घाषणा कलक,प्रस विज्ञप्ति जानी हलै, सए अखवानम सम्मानक लल चयनिग लाक सवहक नाम छयलै, गकन वाद अखउ महादय कहलखिन ज सम्मानक सूचीसँ ऊँ शनदिंदु चौधनीक नाम नहि हटाउल जाएग ग हम जहन खा लव आ हानिक' सचिव महादय ह्वाना नाम वायस ल' लल गल. (पृष्ठ : I / 31-32)

ओहि कथ्यन जखन निवान कनैछी त प्रश्न उठैत जे बिना अध्यक्षक सहमतिसँ सम्मानक सूची कोना अखबारमे प्रकाशित भ' गेलै.

ओहिना प्रश्न उठैत जे अध्यक्ष महोदय जे मैथिलीक एकटा प्रतिष्ठित व्यक्ति छलाह से एहन बात किए कहलखिन जे हम जहन खा लव !

लगैत अछि जे तथ्य आ सत्य किछु दोसर छल हो जे प्रकाशमे नहि एलै.

9.कहल गेल अछि जे पुरस्कार आ सम्मानक लोरमे एहना लोक शामिल भ' गेलाह जिनका योग्यताक आगाँ साहित्य अकादमी पुरस्कार तुच्छ अछि.(पृष्ठ:I /56-57)

सुनैछी दत्ता सर रानक अर्थात सम्मानक भूखल होइत छथि, तँ योग्य व्यक्तिकँ एकर लोर होयब अनुचित नहि कहल जा सकैछ, यद्यपि ई त अतिशयोक्ति लगैछ जे पुरस्कार व सम्मान नहि भेटबाक कारणें उ मैथिली वजनाइ छोड़ि देलनि आ कहैत रहल घूरथि 'मैथिली वर्तमाना की भाषा है !'

10. धार्मिक पत्रिका 'कामाख्या सन्देश'क तीनटा अंकक छपाइ आदिक खर्च तीस हजार नहि भेटलनि. (पृष्ठ : I /59)

पहिल अंकक बकायाक बाद सावधान होयब आवश्यक छलनि. तीन अंक तक बकाया रहबाम व्यवस्थापकीय असावधानीकँ स्वीकार करबाक चाही.

बकायाक वसूली हेतु शासन व्यक्तिक माध्यमसँ नहि, सम्बंधित व्यक्तिसँ प्रत्यक्ष पत्राचार करबाक प्रक्रियाक अनदेखी भेल.

11. एकटा साहित्यकारसँ (जे साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त छथि) एकटा पोथीक प्रकाशनमे 1675 टाका प्राप्त नहि भेलनि. (पृष्ठ : I /61)

शासन व्यक्ति द्वारा कर्तव्यपालक स्थानपर जँ स्वयं हुनकासँ पत्राचार कएल गेल रहितनि त हमरा नै लगैत आ समाधान नै भेल रहितनि,

बकाया रहबाक आन किछु उदाहरण सबमे [illegible] लगैत अछि आ व्यवसायक किछु नियमक पालन नहि भेलासँ परिणाम अप्रिय भेल.

12. मैथिली अकादमीमे एकटा विशेषांकक प्रकाशनक समय दू टा प्रिय लोकक कल्याण सम्पादनक काज देखलनि लेकिन ने नाम भेलनि ने उचित पारिश्रमिक भेटलनि. (पृष्ठ : III /12)

संस्थाक काजमे मौखिक नहि, लिखित सेहो किछु होइ छै, अकादमी पत्रिकाक सम्पादनक काज बिना कोनो अधिकारीक आदेशपर करबाक परिणाम ई भ' सकैत छैक सेहो भेलनि.कोनो कर्मचारीक व्यक्तिगत अनुरोधक सरकारी काजमे की महत्व भ' सकैत छनि ! 280 रू.क चेक भ' सकैत मात्र व्ययक नामपर द' देल गेल छलनि.

13.एकटा प्राध्यापक मैथिली निराग हेतु 5000 रू. क याथी लऽक विल यन नाभि यानकीक नूयम हिनक हस्फाउन लऽक गेलखिन ळ्ळी कहिक ज गुनग नाभि य०। हव, मूदा विसनि गेलखिन. (पृष्ठ : III /39)

एाक उत्र यदयन आसीन व्यक्तिस नसूली नहि हलनि स आश्चर्यजनक वाग लगैग अछि. यह्वह साल वाद हंट हलायन स्मनध कनौलाक वाद्य नाभि नहि प्राप्त हलननि . हाळ्ळग अछि ज हुनकासँ लगागान यत्रावान कयल गेल नहिगनि ग उा अवस्र य०। दन नहिगथिन. ह' सकै छै दु वन अथवा गीन वन यत्रावान कनय यतिगनि.

एक गनहुक गलगी वन-वन कयल गेल आ गँ आना कय ०।म वकाया नाभि वढैग चल गेलनि. (III /25)

यहिल वन वकायाक अनूहनसँ आगाँ वढल नहिगथि ग वकाया एाक नहि वढल नहिगनि.

14. कहैग छथि : लखन कालम जिनकायन हमन कलम चलैग अछि हुनक थाम यउयन कड्डिग अनथ्य नहैग अछि मूदा हुनका अयमानिग कनवाक चेष्टा कथमयि नहि.हम मुद्रा आधानिग विनाध कनैग छियनि चाहे किया हाथि. जीनिग छथि गिनकन साव,ब्यनहान-ब्यसनयन अनथ्य लीखल जयवाक चाही जाहिसँ उा अयन श्लेग आ थाम दुनू यउ अयन आँखिए दखि सकथि आ अन्दिमा समयम सन्मार्गक अनुगनध क' सकथि. (पृष्ठ : III / 8)

थाम यऊ रुल नागि, ञ्ह्वान, निन्नम चल जायव, सुगि नरुव. ऊँ समययन यग्रावान ह्वाना ञथवा ब्यक्तिगग संयर्क ह्वाना ञयन प्रिय ग्राह्क साहित्यकान लाकनिकं जगौन नहिगथि ग काना साहित्यकान-ग्राह्कसँ शिकायग नहि नहिगनि.

लखक ञयनाकं यग्रकान मानैग छथि, यग्रकानक काज हाय्ह्छ लाककं समययन जगयवाक. यदि ह्मयं समययन ञयन चूककर्गा साहित्यकान-ग्राह्क लाकनिकं ञयन प्रहगनी यग्रावान ह्वाना जगौन नहिगथि ग ञयना हानिसँ ववि जैगथि ञा ह्नका लाकनिकं ओकटा कलंकसँ ववा लीगथि.

काय वनखक वाद ओहि वागकं प्रकाशम ञनवाक मगलव रुल संख ह्फुकिक' लाककं जगायव. ऊँ ओखना किनका निन्न नहि टूटलनि ग मान' यञगनि ज यछिला काना जन्मम हिनका लाकनिसँ किछु कर्ज नन छल हथिन ज चूका दलनि !

-संयर्क-8789616115

ञयन मंगव्य editorial.staff.videha@gmail.com यन यठाउ।

२.१२.अजित कुमार झा- 'समय-साल' केँ अकानैत: अनदेखीक संपादन आ संपादकीय



अजित कुमार झा

'समय-साल' केँ अकानैत: अनदेखीक संपादन आ संपादकीय

मैथिलीक त्रैमासिक पत्रिका 'समय-साल' केर जून- जुलाई 2004 अंक मे प्रतिक्रिया स्तंभ मे 'एकटा उपनाम: संपादकक नाम' छपल छल। उपनाम एहनहि छल जे ओहि लेखक केर कोनो एकटा कथा केँ अहि पत्रिका मे स्थान नहि भेटल छलै। लेखक केँ ओहि कथाक भविष्यक चिन्ता छलनि। खैर किछु हद तक स्वाभाविको छैक ई चिन्ता किएक त' ओहि लेख केँ स्थान नहि भेटैत छैक ओकरा

𑒪𑒾𑒙𑒰𑒥𑒨 𑒏𑒹𑒩 𑒣𑓂𑒩𑒟𑒰 𑒢𑒯𑒱 𑒁𑒕𑒱। 𑒐𑒻𑒩 𑒣𑒳𑒢𑓁 𑒍𑒯𑒱 𑒅𑒣𑒢𑒰𑒧 𑒠𑒱𑒮 𑒂𑒥𑒲 𑒖𑒹 𑒏𑒱 𑒣𑒴𑒩𑒰 𑒋𑒏 𑒣𑒵𑒭𑓂𑒚𑒏 𑒕𑒪 𑒂 𑒁𑒑𑒱𑒪𑒰 𑒣𑒢𑓂𑒢𑒰 𑒧𑒹 𑒮𑓀𑒣𑒰𑒠𑒏 𑒖𑒲 𑒁𑒩𑓂𑒟𑒰𑒞𑓂 𑒬𑓂𑒩𑒲 𑒬𑒩𑒠𑒱𑒢𑓂𑒠𑒳 𑒔𑒾𑒡𑒩𑒲 𑒖𑒲 𑒏𑒹𑒩 𑒖𑒥𑒰𑒥 𑒕𑒪𑒢𑒱। 𑒍𑒯𑒱 𑒧𑒹 𑒮𑒿 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒣𑒰𑒿𑒞𑒲 𑒅𑒠𑓂𑒡𑒵𑒞 𑒏𑒩𑒨 𑒔𑒰𑒯𑒥:

'𑒁𑒣𑒢𑒹𑒏 𑒅𑒣𑒢𑒰𑒧 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒣𑓂𑒩𑒹𑒩𑒱𑒞 𑒋𑒫𑓀 𑒅𑒞𑓂𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞 𑒏𑒨𑒪𑒏 𑒁𑒕𑒱 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒯𑒧𑒩 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒫𑒱𑒫𑒬𑒞𑒰 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒁𑒕𑒱।..............

𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒥𑒰𑒞 𑒄 𑒖𑒹 '𑒮𑒧𑒨-𑒮𑒰𑒪' 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒱𑒏 𑒣𑒞𑓂𑒩𑒱𑒏𑒰 𑒢𑒯𑒱 𑒟𑒱𑒏 𑒮𑒹 𑒋𑒏𑒩 𑒧𑒳𑒐𑒣𑒵𑒭𑓂𑒚 𑒏𑒯𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒞𑒟𑒰𑒣𑒱 𑒁𑒣𑒢 𑒪𑒼𑒏𑒢𑒱𑒏 𑒋𑒏𑒩𑒰 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱 𑒁𑒑𑒰𑒡 𑒣𑓂𑒩𑒹𑒧 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒹 𑒣𑓂𑒩𑒹𑒧𑒫𑒬 𑒅𑒣𑒢𑒰𑒧 𑒠𑒻𑒞 𑒕𑒲। 𑒅𑒣𑒢𑒰𑒧 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒢𑒲𑒏 𑒪𑒑𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒞𑒿 𑒋𑒏𑒩𑒰 𑒯𑒧 𑒮𑒰𑒩𑓂𑒫𑒖𑒢𑒱𑒏 𑒏' 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒲।

𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲𑒏 𑒪𑒹𑒐𑒏-𑒣𑓂𑒩𑒰𑒡𑓂𑒨𑒰𑒣𑒏 𑒮𑒩𑓂𑒫𑒖𑓂𑒘, 𑒮𑒩𑓂𑒫𑒑𑒳𑒝 𑒮𑒧𑓂𑒣𑒢𑓂𑒢 𑒋𑒫𑓀 𑒮𑒩𑓂𑒫𑒏𑒰𑒪𑒱𑒏 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒕𑒟𑒱 𑒂 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒨𑓁 𑒞𑒿 𑒮𑒳𑒩𑒏𑓂𑒭𑒰𑒞𑓂𑒧𑒏 𑒂𑒮𑒢 𑒮𑒳𑒪𑒦 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒣𑓂𑒞 𑒏𑒩𑒨 𑒔𑒰𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒣𑒞𑓂𑒩𑒏𑒰𑒩𑒱𑒞𑒰 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒋𑒯𑒢 𑒫𑒱𑒡𑒰 𑒕𑒻𑒏 𑒖𑒰𑒯𑒱 𑒧𑒹 𑒥𑒛𑓃 𑒞𑓂𑒨𑒰𑒑 𑒞𑒣𑒮𑓂𑒨𑒰 𑒂 𑒅𑒣𑒹𑒏𑓂𑒭𑒰 𑒮𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒻𑒏। 𑒋𑒯𑒲 𑒏𑒰𑒩𑒝𑒹 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒡𑓂𑒨𑒰𑒣𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒫𑒩 𑒪𑒼𑒏𑒢𑒱 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒏𑒰𑒩, 𑒪𑒹𑒐𑒏 𑒞𑒿 𑒯𑒼𑒨𑒥𑒰𑒏 𑒮𑒐 𑒣𑒼𑒮𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒁𑒣𑒢 𑒥𑒪𑓀 𑒣𑒞𑓂𑒩𑒱𑒏𑒰 𑒔𑒪𑒨𑒥𑒰𑒏 𑒮𑒰𑒯𑒮 𑒢𑒯𑒱 𑒏' 𑒣𑒥𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱। 𑒁𑒞𑒱𑒟𑒱 𑒮𑓀𑒣𑒰𑒠𑒏 𑒥𑒢𑒱 𑒮𑒧𑓂𑒧𑒰𑒢 𑒣𑒰𑒥𑒱 𑒑𑒠𑓂𑒑𑒠𑓂 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱। 𑒋𑒯𑒴 𑒮𑒥 𑒣𑒩 𑒮𑒼𑒔𑒲 𑒮𑒹 𑒂𑒑𑓂𑒩𑒯। 𑒁𑒣𑒢𑒹𑒏 𑒏𑒟𑒰𑒏 𑒧𑒰𑒠𑒹 𑒏𑒱 𑒏𑒯𑒲 - 𑒁𑒣𑒢 𑒪𑒼𑒏𑒢𑒱𑒏 𑒏𑒟𑒰 𑒮𑒿 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒏𑒟𑒰𑒏 𑒮𑒧𑒵𑒠𑓂𑒡 𑒦𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱 𑒮𑒹 𑒏𑒱 𑒏𑒟𑒰𑒏 𑒃𑒞𑒱𑒯𑒰𑒮 𑒢𑒯𑒱 𑒏𑒯𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱?'

वास्तव मे कोनो पत्रिकाक संपादन बड़ दुरूह कार्य थिक ओहु मे मैथिलीक। हमरा पास कोनो आँकड़ा त' नहि अछि मुदा जतेक बुझबा मे अबैत अछि ताहि कें आधार पर कहि सकैत छी जे मैथिली मे कथा, कविता, गीत, गजल, नाटक एवं आलेख पर पोथी त' धुरझार छपि रहल अछि मुदा पत्रिका आँगुर पर गनय लायक। मैथिली पत्रिका सब विशेष रूप सँ अल्प जीवी होइत अछि। पाठक पर संख्या लगातार नगण्य कहल जाय। ओहि सँ बेसी संख्या लेखक पर भेल अछि। पत्रिका छपैत त' अछि मुदा बिकाइत नहि अछि। एहन मे आखिर कोना कोना पत्रिका दीर्घ जीवी होयत? अपन संतुष्टि हेतु अपन पोथी त' लोग बिलहैत छथि मुदा पत्रिका कोना बिलहल जाओ। मंगनी मे देबैक आ लोग पढ़ि लेताह सेहो नहि होइत छैक। जें संग्रह होइतैक त' एकटा सर्वे करबा क' देखबाक चाही जे शताब्दी मे मैथिलीक कतेक पाठक छथि आ छोट छिन सँ ल' क' नामी गिरामी कतेक लेखक मैथिली कें ओहि मे कार्य क' रहल छथि? ओहि सँ बेहतर जानकारी प्राप्त करबाक अछि जे कि अपन सबहक कोना टी मैथिली पत्रिका पर ओतेक प्रति बिकाइत छैक कि? नगण्य ही सही किछु त' विशुद्ध रूप सँ पाठका पर संख्या होइक? हमर कहबाक तात्पर्य बेहतर अछि जे पत्रिकाक संपादन निश्चित रूप सँ बड़ कठिन कार्य अछि आ ओहि कठिन कार्य कें तन्मयता सँ करैत रहलनि हेँ श्री शरदिन्दु चौधरी जी। एहन नहि जे ओ अपन पोथी नहि लिखलनि।

हिनकर प्रकाशित पोथी पर नाम छन्हि 'जँ हम जनितहुँ' , बड़ अजगुत देखल, गोबरगणेश आ कनियाँ कक्काक करामात'। बस

ग्रंथ संग्रह " कनिया कक्काक कानामिन' हमरा पढ़बाक अवसर भेटल। श्री शरदिन्दु चौधरी जी सन् 1981 सँ निरन्तर पत्रकारिता क्षेत्र सँ जुड़ल छथि। 'मिथिला मिहिर' लेल कार्य कयलनि एवं ओहि कँ पश्चात हिन्दी दैनिक 'आर्यावर्त' मे जीवन संपादक कँ रूप मे कार्य कयलनि। एखनधरि लगभग बीसटा सँ बेसी स्मारिकाक संपादन कयलनि अछि। गुवाहाटीक मिथिला सांस्कृतिक समन्वय समितिक पत्रिका 'पूर्वोत्तर मैथिल' केर संपादन सँ जुड़ल रहलाह। आजुक चर्चाक हमर मुख्य विषय अछि मैथिली त्रैमासिक पत्रिका 'समय-साल' जकर संपादक छलथि श्री शरदिन्दु चौधरी जी। एक तरहेँ कहल जाय त' संपादन कला हिनका विरासत मे भेटल छन्हि। 10 फरवरी 2000 कँ मैथिली त्रैमासिक पत्रिका "समय-साल' केर पहिल अंक केर प्रकाशन केर साथ मैथिली पत्रकारिता मे एकटा नव अध्याय जुड़ि गेल छल। सन् 2003 सँ ल' क' 2008 धरि अहि पत्रिकाक हम नियमित पाठक छलहुँ। प्रतिक्रिया, संपादकीय, यत्र-तत्र-सर्वत्र, समसामयिक, खेल, सिनेमा, पोथी परिचय एवं स्थानीय आलेख सब अहि पत्रिकाक मुख्य आकर्षण छल। मैथिली मे सामाजिक एवं राजनैतिक घटनाक संवाहक छल ई पत्रिका। एहन नहि छैक जे अहि पत्रिका मे हमरा सब किछु नीक बुझायल मुदा तखन एहेन सही छैक जे नीक बेजाय किनका व्यक्तिगत स्वाद होइत छैक। जे हमरा नीक लगैत अछि से सबकेँ नीक लगतनि आ जे हमरा बेजाय लगैत अछि से सबकेँ बेजाय लगतनि से त' संभव नहि छैक। मुदा एतेक हम अपना नजरि मे जे नीक बुझायल तकरा नीक कहब आ जे बेजाय बुझायल तकरा बेजाय कहब। विभिन्न तरहक कथा-कहानी, गीत-गजल, समसामयिक

निषय यन आलख आ संयादकीय अङ्कग लागल। गखन नाजनीगिक नूय सँ ७कटा यार्टी कन ग्रगि मूकान सहा वूसायल। ग्रगिक्रिया म किछ अछि निषय यन यत्र सहा समय-समय यन अरनल। हम 'समय-साल' कँ मात्र सामाजिक ७वं नाजनैगिक खगनाक संनाहकटा नहि मूदा ७कटा यानिनानिक यत्रिका सहा वूसैग छी आ हमना ख्याल सँ ७हन यत्रिका म नि(धाख र' क' अश्लील छनि ग' नहिग छल मूदा अंगिम यृष्ठक आलख सहा अश्लीलगा सँ रनल नहैग छल। 'लगिका' संरनाः छद्म नाम नहल हायग जाहि नाम सँ ऊ्ी आलख अवैग छल। ऊ्ी आम याठक कन यसङ्ख छल आ कि ७हि गनहक नियमिग स्फंर काना मजवूनीनश छल स नहि जानि। हमना ख्याल सँ ७हन सामग्री ७वं छनि अछि यत्रिकाक मान-सम्मान कन अनूनुय नहि छल। ऊना नीँक अथना वजाय ऊ्ी किनका री व्यक्तिगग साव हाङ्ग छैक।

संयादकीय निम्संदह समसामयिक निषय यन नि(धाख लिखलनि अछि। संवंधिग व्यक्ति कँ (Oस ग' यहूँचल हागनि मूदा ७कटा संयादक जौँ उचिग वाग कँ नि(धाख र' क' नहि लिखगा ग' हून काहन यत्रकानिगा? जहाँ मैथिली यत्रिका कँ अल्य जीनी हायवाक श्राय छैक ऊाफह लगागान चौदह नर्ष धनि 'समय-साल' कन प्रकाशन विन् लगन आ महनग कन काना संरन हाङ्ग? अछि दूनूह काज लल हिनक जाक प्रशंसा कयल जाय स (था७व हायग। निहिन्न अनसन यन निहिन्न निषय सँ संवंधिग हिनकन संयादकीय कन किछ अंश वानगी क नूय म अयन सवहक समऊ प्रस्तुग क' नहल छी आ आशा कनैग

छथि जे विविध विषय पर हिनक बहुतो टिप्पणी हृदय केँ संस्पृश अवश्य क' देत।

साहित्य अकादमी पुरस्कार सेहो एहन किछु गीत, किछु मीत बात ल' क' अबैत मुदा अछि हिनक पुरस्कारक क्रम मे जे बात सेहो सामां आयल अछि से स्पष्ट क' दैत अछि जे पुरस्कारक प्रतिस्पर्धी सँ ल' क' निर्णायक मंडलक सदस्य लोकनि एक एक रंग मे रंगल सियान छथि जे साँप डेग चलिए न सकैत छथि।

फरवरी-मार्च 2003

प्रायः क्रिकेट छोड़ि आन कोनो खेल नहि अछि जाहि मे कर्म सँ पहिने देशक एतेक अद्भुत घोषणा होइत हो। लाखक टाका केँ क पुरस्कार कतेक कतेक राज्यक विभिन्न कम्पनी आ सरकार देशक घोषणा पहिने क' देने छल। परिणाम भेल जे निर्णायक मैच मे बेसी खेलाड़ी गेन्द नहि देखि कतेक नाचि देखय लागल छलाह मुदा जखन सपना टुटलनि तँ गेन्द विकेट उखाड़ि लेने छलनि आ ओ लोकनि अपन राष्ट्र समेत राष्ट्रीय दर्शकक अनुगुंज 'कम आन इंडिया' सुनि बिना कय मन वापस आबि गेलाह।

अप्रैल-मई 2003

जहिया-जहिया जनता जागल अछि तहिया-तहिया सरकार उलटल-पलटल अछि, प्रशासन नतमस्तक भेल अछि। सामाजिक परिवेश मे राजनीतिक गुंडागर्दीक विरोध मे जनता स्वयं जनता ठाढ़

नहि हायय गोबर अहिंसा लाठी पर गेल पिपरौन सरकार पर बैसल एहन-एहन नेता जनता केँ अपन सुख-सुविधा जुटयबा लेल ठगबैत रहल आ शासन पर बैसि कुहरैत रहल।

जून-जुलाई 2003

बिहार मे नेताक कमी नहि, अभिनेताक कमी नहि, चिकित्सक आ अभियंताक कमी नहि, बुद्धिजीवी महंथक कमी नहि अछि। मुदा कर्मठ लोकक बीच मे मनुक्खक कमी भ' गेल अछि जे अपन मातृभूमि, जन्मभूमिक विषय मे सोचि सकय, किछु क' सकय, ओकर रक्षा क' सकय।

अक्टूबर-नवम्बर 2003

ई कोनो नव घटना नहि अछि जाहि मे बिहारीक सभ गरहुँ मान-मर्दन भेल अछि, आगि भेल अछि, बिहारी लोकक बलिदान भेल अछि। ओ बिहार सरकार अपन नागरिकक सुरक्षा अपन देश मे करबाक लेल सक्षम नहि भ' सकल, बिहारी अस्मिताक रक्षा नहि क' सकल, अपन युवा सदकिक मान-अपमानक अनुरूप नहि क' सकल तँ अहि सँ दुखद विषय की भ' सकैछ?

दिसम्बर-जनवरी 2003-04

ध्यान देबाक बात ई थिक जे जे नेता लोकनि पाँच वर्ष धरि जातिवाद, सम्प्रदाय, हिंसा, भ्रष्टाचार, वंशवाद आदिक विरुद्ध विषवमन कएने नीति, सिद्धांत, लोकाचार, विचारक बात एवं समाज

सभा अपना केँ सर्वश्रेष्ठ घोषित करैत छलाह से चुनावक देखनि न अधिकाहि देश, समाज, उनक मान-सम्मानक परवाहि करय बिना दल बदल सँ ल' क' सभ तरहक छल-छद्म अपना नीति-सिद्धांत केँ त्यागि विजय श्री पएबा लेल उताहुल छथि।

अप्रैल-मई 2004

अपन भाषिक परिचिति बनल रहय ताहि हेतु हमरा लोकनि कनिकों चिन्तित नहि रहलहुँ, आ वा नहि छी। परिणाम सभकेँ बूझल अछि। मिथिलाञ्चल लुप्त भ' गेल आ सभ निश्चिंत छी। मैथिलीक साहित्यकारगण, प्राध्यापक लोकनि, शिक्षक लोकनि अथवा ई कही जे मैथिली लेखन सँ जुड़ल समाज मात्र साहित्य अकादमी, मैथिली अकादमी, भारतीय भाषा संस्थान आ अन्य मैथिली संस्था दिस चकराउन दैत निश्चिंत भ' जाइत अछि। ....

मैथिली बेर-बेर जे संकट मे पड़ैत अछि, सीता जँका कहिया अपहृत होइत अछि तँ कहिया वनवास भोगैत अछि तकर मूल कारण ई अछि जे मैथिली भाषी अपन मैथिली केँ हृदय सँ लगा क' रखबा मे अक्षम रहल अछि, लाभ लेबा लेल एकर उपयोग कयलक अछि, एकर परिचिति सँ अपन परिचिति बनयबाक प्रयास नहि कयलक अछि।

अप्रैल-मई 2006

सवाल उठैत अछि जे सरकार बेर-बेर एहि आरक्षणक मामिला ल' क' देशोद्धारक प्रयत्न किएक करय चाहैत

अछि? जातिहीन, वर्गहीन आ धर्मनिरपेक्षताक असूल पर चलनिहारि सभ लोकनि किछुक सार्वजनिक संस्थान मे जातिक आधार पर नामांकन अथवा नोकरीक चर्चा करबाक लेल उताहुल रहैत छथि। आइुक प्रतिस्पर्धात्मक युग मे विकासक एकटा मार्ग सुनिश्चित छैक - महिला शक्तिक सम्मान। आ ई से नहि कयल जायत तँ स्त्री शक्ति नकारात्मक पथक अनुसरण करत आ परिणाम होयत हिंसा, अशांति आ कानूनक उल्लंघन।

जून-जुलाई 2006

विकासक आड़ि मे प्रकृति सँ छेड़छाड़ करबाक कारणे आइ वर्षा ऋतु अपन चक्र बदलि रहल अछि, पानि पातालोन्मुखी भ' गेल अछि, जंगल आ पहाड़ अपन प्रवृत्ति, प्रकृति आ स्वरूप त्यागि रहल अछि, सूर्य अपन ताप मे वृद्धि कयलक अछि तथा भूमि अपन उर्वरता केँ गमौने जा रहल अछि।

अप्रैल-मई 2007

आब प्रश्न उठैत अछि जे जाहि देशक राष्ट्रपति महिला होअय, प्रधानमंत्री-मुख्यमंत्री सहित अनेक पद केँ महिला सुशोभित करय ताहि देशक युवती सामाजिक-पारिवारिक जीवन प्रारंभ करबाक पहिने अपना केँ मात्र एकटा वस्तुक रूप मे 0।८ पाबय ताहिठाम स्त्री दंभ भरब जे नारीक उत्कर्ष चरमोत्कर्ष पर अछि, नारी शक्ति अलौकिक रूप मे प्रतिबिम्बित भ' रहल अछि - कतेक हास्यास्पद लगैत अछि।

अगस्त-सितम्बर 2007

- संपर्क-9472834926

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.१३.अशोक- शरदिन्दु जी



अशोक

शरदिन्दु जी

वर्ष १९८१ ई. क गप छी। शरदिन्दु जी ओहि समय मिथिला मिहिर मे उपसम्पादक रहथि। हम एकटा कथा मि. मि. मे प्रकाशन लेल पठौने रही। शरदिन्दु जी कहने रहथि जे ओ कथा छपि रहल अछि। मुदा ओ कथा हमरा दीगर एखन चलिए रहल छल। लगैत

रहए जे कथाक अन्त ठीक नहि भेल अछि। ओहि सँ हम चारि-पाँच पाँती आर जोड़बाक निर्णय लेलहुँ। एक दिन हम ओ पाँती सभ लीखि कऽ मिथिला मिहिर कार्यालय पहुँचलहुँ। शरदिन्दु जी बैसल रहथि। हुनका कहलियनि तऽ ओ तत्काल लेल गुम भऽ गेला। कहलनि जे, 'आब तऽ पूरा अंकक प्रूफ फाइनल भऽ गेल अछि। छपै लेल चल गेल अछि।' हम हुनकासँ कोनो उपाय निकालबाक अनुरोध कएलहुँ। जँ कोनो गुंजाइश होइ तऽ देखिऔ। ओ तत्काल सोचलनि आ कहलनि, 'ठीक छै। चलू प्रेसमे नीचाँ। जँ छपबाक प्रक्रिया शुरू नहि भेल हेतै तऽ ओहीठाम करेक्शन कऽ देबै।' हम सभ नीचाँमे प्रेसमे गेलहुँ। बड़का-बड़का मशीन सभ रहै। घर्र-घर्र आवाज भऽ रहल छल। ककरो आवाज सुनबामे दिक्कत होइत रहै। ओही बीचमे ओ कोनो कर्मचारी सँ बात कऽ देखलाहा प्रूफ के कागज हमरा आनि कऽ देलनि। देखलहुँ प्रूफ मे संशोधनक हिसाबसँ कम्पोजर द्वारा करेक्शन सेहो भऽ चुकल छैक। छपबाक प्रक्रियामे आब अगिला काज बाँकी रहै। हम ओहीठाम ०३-०४ कथाक अन्तमे पाँच-छहटा पाँती जोड़लहुँ। कम्पोजर लगले कम्पोज कयलनि। शरदिन्दुजी प्रूफ देखि कऽ ओ.के. कयलनि। ओ कथा रहए 'नवनियाँ', जे मिथिला मिहिरमे एहि प्रकारेँ प्रकाशित भेल।

शरदिन्दु जी सँ एहि घटनाक पूर्वसँ परिचय-पात रहए। हमरा हुनकर सान्निध्य आ बात-विचार नीक लगैत रहए। ओ एक पत्रकार के रूपमे साँच-साँच बात कहबाक आ लिखबाक पक्षधर रहथि। ककरो ठकुरसुहाती करब, जेना ओ सिखनहि नहि छथि। साफ-साफ, साँच-साँच गप बाजब हुनका पसिन्न छनि। एहि कारणेँ ओ बहुधा विभिन्न लोकक द्वारा निन्दा-आलोचना सुनैत रहला आ सहैत

रहला अछि। कतेक लोक हुनकासँ दूरी बना लेने रहल। मुदा शरदिन्दु जी छथि जे बात हुनका अनसोहाँत लगैत छनि, एकरा ओ व्यक्त करैत रहैत छथि।

बाद क समयमे ओ इण्डियन नेशन संग निकलैत आर्यावर्त दैनिक अखबार आ मिथिला मिहिर मे सेहो काज कएलनि। मिथिला मिहिर मे ओ अन्त धरि रहलथि। ओकर बन्द होएबाक कारण सभसँ क्षुब्ध छला। अन्ततः हुनकर नोकरी सेहो एहि क्रममे छुटि गेलनि। वस्तुतः हुनका संग मैथिली साहित्य, ओकर विकासमे योगदानक जीवित इतिहास आ व्यक्तिक रूपमे स्पष्टवादिताक विरासत छलनि। एहि बात क ओ कहियो नै बिसरला। मैथिली साहित्यमे साहित्यकारक बहुत कम परिवारमे दोसर पीढ़ीक लोक सहज रूपमे ओहि विरासत पर गौरव-बोध करैत, ओकरा सम्हारि कऽ रखबाक लेल आ आगू बढ़बाक लेल प्रतिबद्ध रहला। शरदिन्दु जी एहन व्यक्ति छथि जे नहि केवल ओकरा सम्हारि कऽ रखलनि अपितु मनोयोगसँ ओकरा व्यापक बनेबाक लेल सचेष्ट रहला अछि। शेखर प्रकाशन ओकर प्रतिफल छी। मैथिली मे ई एक विरल उदाहरण थिक जे अपन पिता सुधांशु 'शेखर' चौधरीक बाद एक सुयोग्य पुत्र रूपमे शरदिन्दु जी समय क चिन्हैत, मैथिलीक प्रयोजन क बुझैत तदनुसार काज करबाक लेल अपना क सौंपि देलनि। हुनकर आर्थिक स्थिति सुदृढ़ नहि रहनि। बहुत अभाव सेहो रहनि मुदा बिना कोनो समझौता क ओ परिवारक भरण-पोषण संग मैथिलीक काजमे लगातार लागल छथि। से सभ अपन शर्त पर।

शेखर प्रकाशन नामसँ ओ पटनामे मैथिली पोथीक दोकान सेहो खोललनि स्टेशन लग। एहि व्यवसायमे ओ सम्पूर्ण निष्ठाक संग लागल

छथि। पोथी सभक प्रकाशन कएलनि। विभिन्न प्रकाशक सभक पोथी क बिक्री कएलनि। जखन यू.जी.सी. आ बी.पी.एस.सी. मे मैथिली साहित्य सम्मिलित भेल तँ ओकर सिलेबस क अनुसार पोथी सभ प्रतियोगी छात्र सभ क उपलब्ध करौलनि। सिलेबसक हिसाबेँ पोथी सभ लिखबा कऽ वा सम्पादित करा कऽ ओकर प्रकाशन कएलनि। जे पोथी 'आउट आफ प्रिंट' भऽ गेल छल, ओकर फोटो कॉपी बना क छात्र सभ क उपलब्ध करौलनि। कतेको छात्र सभ क उपयोगी सुझाव सभ दऽ अथवा मार्गदर्शन कऽ परीक्षाम सफल होयबाम मदति कएलनि। एहन किछु छात्र सभ केँ हम हुनका ओहि लेल अपूर्व सम्मान दैत देखने छी।

शरदिन्दु जी मैथिली सँ जुड़ल सरकारी आ गैरसरकारी संस्था सभक अनर्गल बात सभ पर व्यवस्था सम्बन्धी कुप्रबन्ध सभ पर सदैव लिखैत रहला अछि। से चाहे साहित्य अकादमी हो वा मैथिली अकादमी अथवा चेतना समिति, लेखक संघ हो। हुनकर तर्क सभ अचूक होइत छनि। ओ कोनो व्यक्तिक पाखण्ड वा अनर्गल काज पर निष्पक्ष सँ लिखैत रहल छथि। से चाहे पत्रकारक रूपम अथवा व्यंग्यकारक रूपम। ओहि सँ कखनहुँ क हमहुँ नहि बँचल छी। हमर एक लेखम चौवालीसटा सन्दर्भ-संकेत रहय। ओहि पर ओ चारि पाँतीक आलोचनात्मक कविता लीखि ओही पत्रिकाम पाठकीय पन्नाम छपौलनि। चेतना समितिक कोनो काजक क्रमम जेँ हमर कोनो क्रियासँ हुनकर असहमति रहलनि तऽ अपन लेखम ओकर चर्च कएलनि। झूठ करब जे ओहिसँ हमरा कोनो दुख नहि होइत छल तऽ से बात नहि, दुख कनेकाल लेल अवश्य होइत छल। मुदा शरदिन्दु जी क हम विरोध नहि केलियनि, ओहिमे हुनकर कोनो अन्यथा भाव नहि रहल

करनि, ओ हुनका संग वाद-विवादमे कोनो अन्तर कहियो नहि आयल। ओ हुनका कामक अवसर पर सहायता सेहो खूब कर छथि। सुभाओ देर छथि। से बिना कोनो लाग-लपेट के हुनका लगैत छल जे ओ उचित कहि रहल छथि। हुनक मान-सम्मान लेल सेहो ओ गुरु रूपसँ सक्रिय रहला अछि। अपना प्रसंगक ई सभ बात एहि कारणे कहि रहल छी जे एहि सँ शरदिन्दु जी केँ बूझल जा सकैत अछि।

ओ समाचार-विचारक पत्रिका 'समय-साल'क कतेको वर्ष धरि सम्पादन कयलनि। मैथिली पत्रकारिता कहल जाऽ सकैत अछि, से उदाहरण एहि सँ ओ कायम कयलनि। ओ पोथी सभक सम्पादन कयलनि। व्यंग्य सेहो लिखलनि। अपन जीवनानुभव क छोट-छोट टिप्पणीक रूपमे दर्ज कऽ किताब छपौलनि। बहुत दिन धरि हिन्दुस्तान अखबारमे 'ठाँहि-पठाँहि' कालममे मैथिलीमे व्यंग्य लिखैत रहला। एही संग ओ मैथिलीमे पत्रकारिता लेल नीक योगदान करबाक हेतु पत्रकार क सम्मानित करबाक उद्देश्यसँ 'लेखन पत्रकारिता सम्मान' सेहो दैत रहला अछि।

एम्हर ओ किछु दिन खूब अस्वस्थ रहला। कठिन परिश्रम नहि कयल होइत रहनि, तथापि जखन स्वस्थ रहलनि मैथिलीक काजमे संलग्न रहब करलाह। प्रयत्नशील रहला। हुनकर लेखन प्रकाशन सभ दिन साहित्यकार सभक लेल, पाठक ओ छात्र सभ लेल उपयोगी रहल अछि। पटनाक एकमात्र मैथिली लेल महत्वपूर्ण स्थान अछि लेखन प्रकाशनक ओ स्थान जतऽ शरदिन्दुजी बैसल रहैत छथि। बहुधा समय भेटला पर अथवा कोनो प्रयोजन भेला पर हम ओहिठाम जाइत रहल छी। गति-विधि सभ बूझैत रहल छी। शरदिन्दु जी क

मनोयोगसँ सुनैत रहल छी। लेखन प्रकाशनक एहन महत्वाक श्रेय शरदिन्दुजीक एहन व्यक्तित्व के जाइत छनि। हुनका संग चलैत निवासी के जाइत छैक। पटनाक जीवनमे, मैथिलीक कार्यकलापमे बहुत व्यक्ति सभक सहयोगिता-सहयोग हमरा रहैत रहल अछि, से एक उदाहरणक मित्र नूतन शरदिन्दुजी सँ सदा लगातार रहैत रहल अछि। से हमरा लेल एक महत्वपूर्ण बात छी।

संपर्क-8986269001

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.१४.शिवशंकर श्रीनिवास- जहन मधुर गहन दृढ



शिवशंकर श्रीनिवास

जहन मधुर तहन दृढ़

ओहि दिनमे शरदिन्दु चौधरी मिथिला-मिहिरक संपादक मंडलीमे रहथि।

१९८२-८३ केर गप्प छियै। तहिया मिथिला-मिहिर साप्ताहिक प्रकाशित होइत रहै। ओहि समयमे मिहिर कथा विशेषांक प्रकाशित करैत रहए। दु-तीन मास पहिनहिँ ओहि विशेषांक लेल प्रचार-प्रसार होइत रहै। कथाकार लोकनि कथा पठबै जाथिन। ओहि विशेषांकमे कथा प्रकाशित हएब बड़ी बात ओहि काल हमरा सन कथाकारक लेल बड़का प्रसन्नताक विषय रहै। एकटा उत्कंठा पहिने होइ जे हमर कथा आबि रहलैए कि नहि।

हम पटना गेल रही। मिथिला-मिहिरक कार्यालय गेल रही। देखलहुँ गोर-नार छरहरा सुंदर युवक बैसल किछु लिखैत हमरा दिस तकैत कहलनि- "आउ श्रीनिवासजी"। ओ युवक आन केओ नहि शरदिन्दु चौधरी रहथि।

ओना हमरा शरदिन्दुजीसँ भेंट-घाँट छल। हमरा चिन्हैत छलाह। किछु-किछु कहलाक बाद पुछलियनि-कथाक अंक आबि गेलैक? ओ उत्तर देलाह- हँ अगिला सप्ताह देखा जाएत। मुदा, एखन ई नहि कहब जे कोन-कोन आ किनकर-किनकर कथा आबि गेलैक।

"नहि कहू", हम पुनः पुछलियनि- हमर कथा गेल की? ओ विहुँसि उठलाह। शरदिन्दुजीक विहुँसब ई सहजहि प्रतीत करा दैत जे ओ अपन रंगिमासँ स्नेह प्रकट कऽ रहलाह। आ तेहन रंगिमासँ कहलनि-नीक कथा अछि। कथाक कथ्य सेहो मार्मिक अछि "आ...."। हमरा हुनक एहि "आ.."पर अटकब हमर उत्कंठा बढ़ा देलक। हम पुछलियनि-की? ओ कहलनि-"जाहि कथाक प्रत्येक पंक्ति कथाकेँ आगू बढ़ाएब ओ कथा पढ़बामे ओतेक रुचि दैत अछि। तेहन कथाक पाठकीयता बढ़ि जाइत अछि। से अहाँक कथामे अछि। हमरा नीक लागल"।

शरदिन्दुजीक उक्त उक्ति हमरा बहुत मार्मिक लागल। ओ बात-बातमे कथाक विशेषताक बहुत बात कहि गेलाह। हम आगू कथाक उक्त बात धेआन रखैत रहलहुँ। कथा लिखैत काल अनायास हमरा हुनक ओ "बात" आ "ओ" मोन पड़ि जाइत रहलाह।

हमरा लगैत ई आलोचना विधामे जँ लिखितथि तँ मैथिली आलोचना साहित्यकेँ बहुत लाभ होइतैक। एक बेर नहि अनेको बेर ओ तेहन गप कहने हेता जाहि आधारपर हम ई कहै छी।

एक वन ओ कहलनि ज काका लखककँ एक वन सुझा याठक नुयम अयन नवनाकँ यढक चाही, ओ यढलाक वाद अयन अयन नवनाक प्रति निर्णय कनथि।

शनदिहु सदा हमना गंरीन आ सवान लगलाह।

एक वन हमना ओ कहलनि ज अहाँ गोविन्द दासक जेक यद छनि ओकन व्याख्या कऽ कऽ दिअ। याथी नुयम आवि जौ गँ छात्र सरकँ व७ ओयकान हगौ।

ओकन किछु दिनक वाद हम स कनऽ लगलहुँ। किन्तु किछु दिनयन किशोन कशन कहलनि ज "गोविन्द दासयन लीखि कऽ दिअ"। शनदिहुजीसँ हमना गय एल अछि अहाँ लिखै छी"। हम कहलियनि- हँ, किन्तु हम गँ हुनक प्रथक यदक व्याख्या कनौ नहल छी। किशोन कहलनि- नहि एखन आलख दिअ। आ स हम हुनका लीखि यठा दलियनि आ ओ अजुन-युनषम छयल, किन्तु ओ व्याख्या अनठा गेल। शनदिहुजीसँ अहाँक कनवा मधुन संवंध अछि, यदि अहानक नवना नीक नहि अछि गँ ओ नहि छयताह। जखन ओ "समय साल" कन संयादक नहथि गँ कनका नवनाकान अयन नवना नहि छयवाक कानणे हुनका यत्र लिखथिन। ओहि यत्रकँ ओ याठकीय कॉलमम प्रकाशित कनथि आ ओकन उत्तन सेहो दथि। अयन निर्णययन ओ सदा दृढ नहऽ वला लाक नहलाह। काका स्वार्थसँ उयन ओ साहित्य ओ साहित्य जगत कार्यकँ नखलनि। हिनक सरसँ खुबी अछि ज हिनकासँ जँ काका चुक एलनि गँ ओ ओहि चुककँ सार्वजनिक कनौ ओमा माँगेम सेहो ओ नहि हिचकता।

ओहन काका उदाहरण देखल-सुनल अछि। हिनक पोथी " हमर अपराधः हुनक नहि दोष" पढ़ि सहज ई बात बूझि सकै छी।

एक बेरक गप्प कहै छी, हिनक संपादित पोथी "मैथिली गद्य गौरव" हम एकटा विद्यार्थीक हाथमे देखलियै। ओ लऽ हम पढ़ऽ लगलहुँ तँ देखलहुँ कथापर एकटा आलेख अछि। लेखक एकटा प्रसिद्ध लेखक छथि। ओ लेख पढ़ैत लागल जे ई तँ हमर लेख छी। हम तत्काल शर्मदिदूजीकेँ कहलियनि जे ई की एक?

ओ कहलनि अहाँक लेख छी तकर प्रमाण?

"हमर ई लेख नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडियासँ प्रकाशित पोथीक संपादकीय अंश थिक" ओ कहलनि- हम थोड़ कालमे ध्यान करै छी, एखन जाउ।

किछु कालक बाद हुनक ध्यान आएल जे "ठीक अहीँक रचना छी। हमरासँ गलती भेल. जे कहै।

हम कहलियनि- गलती एहिना भऽ जाइ छै। कोनो बात नहि। एकरा ठीक कऽ दियौ।

"ओ ठीक भऽ जेतै। किन्तु जाहि व्यक्तिक नाम एहियन छनि हुनका पोथी देलियनि तँ धन्यवाद देत नवना देखलौह आ पोथी राखि ललनि। किछु कहलनि नहि। अद्भुत अछि"।

हमरा हँसी लागल।

ओ कहलनि- अहाँ हँसै छी श्रीमान। हम तँ लज्जित छी।

नहि ई कहि हम गपे बदलि देल किन्तु ओ बेर-बेर एही गपपर अड़ल रहलाह।

एक सप्ताहक बाद हम हुनक प्रकाशन गेलहुँ तँ देखल जे हमर नाम छापि पोथीक ओहि आलेखक लेखक क्रमसँ साटि देने छलाह। बादक संग्रहमे तँ सहजहिं हमर नाम आबि गेल। कहबाक जे एतेक तत्पर आ उचित निर्णयकेँ कार्यान्वित करबाक क्षमता जे हुनकामे छनि से कदाचित लोकमे भेटत।

शेखर प्रकाशन कहु वा हुनक पोथी बिक्रय केन्द्र, ओतऽ जहिया गेलहुँ तहिया ओ तपाक हुलसि कऽ स्वागत कएलनि जे बूझाएल हमहुँ लेखक छी। अद्भुत स्नेह आ से तेहन जे सभक सृजनक बाध हटाओत रहल। ई असलमे हुनक भाषा-साहित्यक प्रति प्रबल प्रेम अछि।

हुनका जीवनमे नीक नोकरी भेल रहनि किन्तु ओ नहि गेलाह, ओ अपना लेल एक बाट (आर्थिक दृष्टिएँ) नीक नहि कएलनि किन्तु मैथिली साहित्यिक विकास लेल हुनक ओहि नोकरीमे नहि जाएब बहुत फलदायी रहल। खास कऽ कऽ छात्र सभहक लेल हुनक प्रकाशन जतेक कार्य कएलक अछि ओ प्रसंशनीय अछि।

शरदिन्दु चौधरी मात्र स्नेहसँ भरल लोक। एकटा एहन लोकजँ अपन भाषा-साहित्य संवर्धन लेल अपन भविष्यकेँ बिसरि अपन पूरा जीवन लगा देलनि।

एहन सत-पुरुषकँ अभिनंदन करैत हुनक स्वस्थ जीवनक शुभकामना करैत छी।

- संपर्क-9470883301

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.१७.कदान कानन- ह्मन शनदु रैया



कदान कानन

ह्मन शनदु रैया

क लिखगाह अहाँ यन शनदु रैया? सवहक गँ (थोआ उ(Oॉन ढिये अहाँ। विढनीक खगा आ सांयक विल म जानि-वुमि कँ क हाथ दगे। सरक रीगन उन... साहिय म ज सर अयन कल्ला अल(गोन ढथि, व७का-व७का मO यन सँ ज उकनि दS नहल ढथि आ%, अहाँ उकन आदि अन्द कँ जनेग ढी। सवहक वान म खल्लम-खल्ला लिखन ढी, जगS वजवाक अनसनि रटल, गगय Oांहि-यOांहि कहन ढी।

गँ क लिखगाह अहाँ यन। अयन ययन यन कृ७हनि वलोन ढी। हम की कहव आ की लिखव?

ओ कहैत छथि, राम-राम! की शरदु-हरदु पर लिखब अहाँ? कोनो दोसर काज नहि अछि अहाँ कें?

नहि बाबू, एखन कोनो दोसर काज नहि अछि हमरा। शरदु भैया पर जँ नहि लिखब, तँ आत्मा धिक्कारैत रहत हमरा। तँ हुनका पर लिखब हमरा लेल आवश्यक अछि।

आइ भोरम अपन मित्र आ ग्रंथकार वैद्यनाथ विमल जी सँ भेंट होइत छल। हम कहलियनि जे शरदु बाबू पर लिखलहुँ? ओ कहलनि जे ओ हमर परम आत्मीय स्वजन छथि जे हमरा सँ लिखल नहि हैत। कागs सँ शुरू करब, कलम खतम करब। एक तरहेँ बात ओ ठीक कहैत छथि।

मोन पडैत अछि जे १९६०-६१ क आसपास हुनका सँ परिचय भेल छल। जखन पटना म पढैत रही। कहियो काल ओ अबैत रहथि। ओना सघन-सामीप्य तँ बहुत बाद म भेल। आ जखन भेल तँ हुनक सुधीरत्व अह्वान म डूबल सीढी पर सँ होइत जखन ऊपर जाइ तँ लेखन प्रकाशन सँ पहिने सिलाइ मशीनक घर्र-घर्र म खोंटल दु-तीन टा मानुष कें देखी। ओ सब अपन मूडी निहुरौने सिलाइ-कढाइक काज म लागल रहै छल। ठीक तकर बाद बला कोठली म लेखन प्रकाशनक बात।

अह्वान म डूबल ओहि सोपानक टा सीढीकेँ पार करैत ऊपर म बजाए-बजाए सँ अहाँक भेंट होइत। स्वान आ विद्या-वैभवक बजाए। बानुकाप किताबक ढेर आ बीच म कुरसी पर उजान दाढी-मोंछ म बैसल शरदु बाबू। आउ, आउ- कहि स्वागत करैत।

आत्मीयता मे बाजल शब्द, मिठास भरल। बिस्कुट-चाह मंगबैत छी। चटकी सँ उठि ओहि काठी सँ लागल दातन काठीक रेलिंग पर सँ बिस्कुट-चाहक आर्डर।

एकटा दुब्बर-पातर सनक छौंड़ा चाह आ बिस्कुट लेने हाजिर। पहिने, बहुत पहिने शीशाक गिलास मे चाह अबैत छल बाद मे कागत बला कप मे आबऽ लागल।

जहिना-जहिना साँझ गहराइ, लेखक लोकनिक (जिनक संख्या कम होइ) अबरजात शुरू होइ। ओतहि हमरा अनेक खेप भाइ वैद्यनाथ विमल, डॉ. योगानन्द झा, बबुआ ठाकुर जी, जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल जी सँ भेंट होइ। बबुआ ठाकुर जी बनमहल भेटैत छलाह। ओ लगभग प्रतिदिन अबैत छलाह। हुनक ओजस्वी भाषण हिन्दी, मैथिली, अंगरेजीमे धाराप्रवाह। बीच-बीच मे संस्कृतक पुट। हम चकित रही, हुनका ओहि चारू भाषाक कतेक रास कविता याद रहनि। ओ कतहु अटकैत-रुकैत नहि छलाह। अलबत्त।

ई सब किछु शरदु भाइक सान्निध्य-लाभक सौजन्यसँ हमरा सहजहि प्राप्त भऽ जाइत छल।

प्राथमिक शिक्षा प्रशिक्षण महाविद्यालय, बाढ़ मे कार्यरत रही। प्रतिदिन बाढ़-पटना आ पटना सँ बाढ़। दू-अढ़ाइ वर्षक अबरजात। पटना रेलवे स्टेशन पर उतरि सोझ लेखन प्रकाशन पहुँचैत रही। लगभग प्रतिदिन। शनि-रवि केँ गाम चलि जाइत रही।

ओम्हि एकदिन साँझ मे पहुँचलहुँ तँ शरदु भाइ सूचना देलनि जे महाप्रकाश जी अस्वस्थ भऽ कऽ एकटा प्राइवेट अस्पताल मे भर्ती छथि। हम ओम्हिसँ, हुनक संग महाप्रकाश जी केँ देखय गेल छलहुँ।

मोन पड़ैत अछि मायाबाबूक अस्वस्थताक खबरि सेहो देने रहथि। हुनक हृदयक तार सब लेखक सँ जुड़ल रहैनि। हुनक संवेदनशीलताक अनेक खिस्सा मोन पड़ैत अछि। ओ सबहक लेल हिहिरिया करैत रहथि।

सुनल अछि जे मार्कण्डेय प्रवासीजीक स्थायी अड्डा शेखर प्रकाशन छलनि अन्तिम समयमे। हुनका लेल शेखर प्रकाशनक दोसर कोठलीमे बजाप्ता एकटा खटिया आ ओछाओनक प्रबन्ध शरदु भाइ कऽ देने छलाह, जतय दुपहरक बाद हारल-थाकल प्रवासी जी आबि कऽ आराम करैत छलाह।

शरदु भाइ सबहक साह रखैत छथि। वैचारिक भिन्नताक बात अलग थिक, ओतय ओ कोनो प्रकारक समझौता नहि करताह। हुनका दिमागमे जे बात सही लगतनि, ओ सैह करताह। एकदम अडिग-अविचल। हुनक रीढ़क हड्डी तनल रहतनि, झुकबा लेल तैयार नहि।

कतेक रास मैथिलीक लेखक हुनक पाइ मारि लेलकनि, पोथी छपबाय पाइ नहि देलकनि। चालीस-पैंतालीस फर्मा टाइप करबा लेलकनि, भुगतान नहि केलकनि। किछु गोटकेँ जीवनक तल्लूक उद्यम बढ़ि-चढ़िकेँ सहयोग केलनि, मुदा सहयोग लऽ कऽ ओ सब विमुख

रहि गेलाह। आब शरद् राज्ञकँ के पूछैत अछि? ओ अपन घर, ई अपन घर।

मुदा, सहयोग करबाक जकरा लूरिक लागल छैक, ओ मानय बला नहि। ओकरा सहयोगक मुद्रा मे ओ बैसल रहैत छथि।

ओ एकान्त सेवक जकाँ मैथिलीक सेवा मे अहर्निश लागल छथि। शरीर आ स्वास्थ्य संग नहि दैत छनि मुदा तखनो ओ मैथिलीएक चिन्ता मे अपस्याँत रहताह।

मैथिली पढ़ए बला लेल, बी.पी.एस.सी.; यू.पी.एस.सी.क तैयारी करए बला छात्र सबहक लेल ओ ठीक सब सँ बेसी सोचैत आ करैत छथि।

हुनक नगर सब सँ आहत रहल, सभक उद्घाटन करैत नगर सँ पीड़ित अनेक संस्था आ लेखक-मित्र लोकनि केँ ओ फूटलीयो आँखि नहि सोहाइत छथिन। मुदा, ताहि सँ की? ओ अपन अनुरूप मे कोनो हिस्सेदारी नहि चाहैत छथि।

कर्जा सँ लदल रहितो ओ अपन पिताक लगभग सबटा कृति केँ नव साज-सज्जा मे प्रकाशित करौलनि। अनेक अप्रकाशित कृति केँ मैथिली पाठक लेल प्रकाश मे अनलनि। ई हुनक महत्त्वपूर्ण योगदान थिक।

अपनहुँ अनेक ग्रंथ रचना लिखलनि। प्रकाशन जगतक स्याह आ अज्ञात दुनिया केँ प्रकाश मे अनलनि। अपन जीवनक कटु-मधु अनुभवकेँ बेबाकीसँ लिखलनि। ई सब हुनक साहसक परिचायक

थिक। ज काज आन नहि कs सकैत अछि, एकरा ओ सहजतापूर्वक कयलनि।

हुनक व्यक्तिगत दुनिया आ जीवन अद्यान म तुवल छनि मुदा ओ सबहक लेल प्रकाशक संधान म लागल छथि।

कएक नास वाग मान म डौनाञ्ज्ञ अछि। कएक नास वाग (0ान यन आवि-आवि हुलकी मासैत अछि। मुदा, एकरा रहन लिखव रहैया।

ओखन ओतव करुव ज दुनिया रनिक मंमट सँ अनथक संघर्ष कसैत अहाँ ज प्राप्त कयलहुँ अछि, स दासनाक लेल चुनौती जकाँ 0ाछ नहुगै। अहाँक संघर्ष आ अहाँक समर्पणक प्रति नत रहल छी।

-संपर्क-7004917511

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.१६.आशीष अनचिन्हार- मैथिली साहित्यम शरदिन्दु चौधरी कन योगदान



आशीष अनचिन्हार

मैथिली साहित्यमे शरदिन्दु चौधरी केर योगदान

जखन कोनो नौकरी करए वला, वा कि बिजनेस करए वला वा कि घूस लेबए वला सरकारी अफसर सभ रचना लीखि कऽ लेखक कहबै लगैत अछि ठीक तखन पोथी केर मुद्रण, प्रकाशन आ वितरण करए वला शरदिन्दु चौधरीक रचनाकेँ कात कऽ ई कहि देल जाइत छै जे साहित्यमे हिनकर योगदान किछु नै छनि मुदा पोथी जेहो उपलब्ध करबा दै छथि। तखन हम ई सोचबा लेल बाध्य भऽ जाइत छी जे आखिर लेखक हेबाक परिभाषा की छै?

आ शरदिन्दु चौधरीक साहित्यिक योगदान किछु नै छनि से हमरा स्थापित लेखक सभ कहलाह जखन हम ओहि विशेषांक लेल हुनकासँ शरदिन्दुजीपर लेख माँगलियनि। ई आन बेसी खतरनाक प्रवृत्ति छै। तेँ हम आन विषयपर लीखब छोड़ि मात्र ई जे लीखब जे मैथिली साहित्यमे शरदिन्दु चौधरी केर योगदान की छै आ से हम बुन्दा- वारि प्रस्तुत करब।

1) मैथिली साहित्यमे नव प्रवृत्तिकेँ जन्म देनाइ- प्रायः साहित्यिक रचनामे पात्र केर असल नाम दऽ ओकर खंडन नै कएल जाइत

छै। संस्मरणमे असल नाम देल जाइत छै मुदा ओहिमे जिनकापर संस्मरण छै जिनकर नकारात्मक पक्ष नै लीखल जाइत छै। शरदिन्दु चौधरी अपन पात्र केर असल नाम रखलाह अपन संस्मरणमे आ जिनकापर संस्मरण छनि जिनकर श्यामपक्षकेँ खूब लिखने छथि। एकरा बेमानी हम उजागर कऽ रहल छी एहि संदर्भमे। २००४ मे हिंदी भाषामे काशीनाथ सिंह केर पोथी छपलनि "काशी का अस्सी", एहि पोथीक सभ पात्र असल नामक संग छल आ सभ वास्तविक भाषा ओ वास्तविक करनी संग। आ ई छपिते हिंदीमे अनघोल मचि गेलै। एकरा नव प्रवृत्ति मानल गेलै आ मानए बलामे मैथिलीक लेखक आ हिंदी-मैथिलीक उभय लेखक सभ छलाह वा छथि मुदा काशी का अस्सीसँ ठीक दू वर्ष पहिने २००२ मे शरदिन्दु चौधरी केर पोथी आएल "ओँ हम जनितहुँ" मुदा बएह मैथिल लेखक सभ चूप रहल छथि। काशीनाथ सिंह जे प्रयोग हिंदीमे केलाह से प्रयोग मैथिलीमे शरदिन्दु चौधरी पहिनहि केलथि। श्रेय देबाक बदला मैथिली आ मैथिली-हिंदीक उभय लेखक सभ शरदिन्दु चौधरीक योगदान मानबासँ अस्वीकार कऽ रहल अछि। जेना बहुत मामिलामे मैथिली हिंदीसँ आगू अछि ठीक अहू तरहक साहित्यमे मैथिली आगू अछि आ एकर एकमात्र श्रेय शरदिन्दु चौधरीकेँ जाइत छनि।

२) सच ओ साहस केर दुर्लभ संयोग-साहित्यमे सच ओ साहस गँ हेबाक चाही। मुदा दिक्कत ई जे एहि सच ओ साहसकेँ नपबाक एखन धरि कोनो मापदंड नै अछि। शरदिन्दुजीक सच ओ साहस जनबाक लेल हम एकरा नव फर्मूला (सूत्र) दऽ रहल छी। ई

सूत्र मात्र गजेन्द्र ठाकुरजी नै सभ लेखक केर रचना लेल समान रूपसँ काज करत। एहन अहि सूत्र लेल तीन टा तत्व रहत, पहिल) ओ रचना व्यक्ति केन्द्रित अछि, दोसर) ओ रचना काल विषय केन्द्रित अछि, तेसर) ओ रचना तथ्य केन्द्रित अछि। आब अहि तीनू तत्वकेँ फरिछाबैत छी-

अ) व्यक्ति केन्द्रित रचना केर दू भाग भेल पहिल समकालीन व्यक्ति आ दोसर पूर्वज। समकालीन मने ई लेखन कालमे आ ओकर बादो जिंदा छथि। ओ रचना समकालीन व्यक्ति केन्द्रित छै तखन ओही देखल जेबाक चाही ई लीखए वला लेखक आ जकरापर लीखल गेल छै तकर दूनी कारक छै, दूनी मानल प्रभाव पड़बाक संदर्भमे। कम दूनी वला लेखक बेसी दुर्दशा भोगत आ बेसी दूनी वला दुर्दशा नै भोगत। उदाहरण दैत छी मानि लिअ लेखक लिखलाह ई पुलिसपर हमला अमाननीय छै आ पुलिस खलनायक अछि। आब सोचियौ ई अहि प्रकारक रचनासँ पुलिसकेँ की फर्क पड़तै? किछु नै। लेखक तँ ओही लीखि अपनाकेँ साहसी साबित करबा लेल। मुदा जखन पुलिसपर लीखए वला बढ़ैत लेखक लिखता ई प्रमाणित 0ाक्न ना कि अशोक अनिचल केर समयमे खराब यावी चुनल गेलै तँ लेखक अकादमीसँ बहिष्कृत कs देल जाए कारण ओहिमे कम दूनी छै। ओकर दोसर उदाहरण अछि हमर 0ाम पत्रकारक हत्या। ओहन हत्या बिहारमे भेल छै। किएक? ओकर एक मात्र कारण छै ई पत्रकार ई सब छलै आ जकरापर लीखल गेल रहै तकर दूनी कम रहै। ओही 0ाम दक्षिण आ महाराष्ट्रमे किछु लेखक केर सेहो हत्या भेलै। बिहारमे ओकरा लेखक केर हत्या नै भेलै आ ओहिमे मैथिली केर

लखक सहा अछि। गँ जाहि नवनाम लखक उा जकनायन लीखल (गल छै उाहिम जँ दुनी कम छै गँ लखककँ साहसी उा सव लीखउ वला मानल जवाक वाही, आ जँ दुनी वस्तु छै गँ उाकना मात्र राँज यूना लव मानल जवाक वाही। जँ काना लखक अयन यूर्नजयन लीखि नहल छथि गँ जँ उा प्रमाण दऽ कऽ लीखै छथि गँ हूनका साहसी उा सव लीखउ वला मानल जानि।

आ) जँ नवना निषय कँद्रित छै-- जँ काना लखक अयन रोषाम अप्रवलित निषय वा निधाकँ प्रमाणिक उा लाकप्रिय वना दलकै गँ उाकना साहसी मानल जवाक वाही। जँ उा उाहिम तथ्य नाखि दकलै गँ उाकना सव लीखउ वला सहा मानल जवाक वाही।

ऽऽ) जँ नवना तथ्य कँद्रित अछि-- उहि कारिम प्रमाण उा असल नाम दुनू महत्वपूर्ण छै। जँ उकीटा गाउव गँ साहस उा सव कन असान मानल जाउत।

ऽी तन्न सर लखन कन हनम माध्यम जना प्रिंट, ऽऽटननट आदि लल समान नूयसँ लागू अछि। संग-संग नवनाम कथित माननातानाद नयवाक लल ऽऽउह सूत्र काज कनत।

आव हम शनदिहूजीक नवना सरकँ उयनम दल (गल तन्नसँ जाँव कऽ नहल छी। "जँ हम जनिताहूँ" नामक याथीम शनदिहूजी प्रायः अयन समकालीन लखक सरहक नाम लौत लिखन छथि आ उाहिमसँ अधिकांश उखना जिवैत छथि। मालव उहि तन्नम "साहस उा सव कन उहि मायदंत" शनदिहूजीक नवना यास रल अछि। संम्मनण

विधाकेँ प्रामाणिक बनबाक श्रेय हिनके छनि आ ई एकटा कठिन काज छलै। मैथिलीमे गँ संस्मरणक रूप एहन बना देल गेल छलै जेना कोनो काल्पनिक कथा लिखा रहल हो। संस्मरणक बहन्ने अपनाकेँ महान करबाक प्रचलन बढ़ि गेल। मुदा शरदिन्दुजी संस्मरण विधाकेँ मर्यादामे अनलाह। एहू आधारपर शरदिन्दुजीक रचना "साहेब ओ सब कोना एहि मापदंड"पर पास रहल अछि। संस्मरण शरदिन्दुजीक मूल विधा बनि कऽ आएल अछि ओ जकरा ग्रंथ कहैत छथिन सेहो सेहो अपन-आप संस्मरण बनि गेल छै आ एहि संस्मरण सभमे शरदिन्दुजी असल नामक संग पूरा तथ्य अपन समकालीन सभहक नाम लैत लिखने छथि। के पोथी छपा कऽ पाइ नै देलकनि आ के कोन घात कलकनि से सभ किछु। "साहेब ओ सब कोना एहि मापदंड" शरदिन्दुजीक रचना सभ पास रहल अछि। अधिकांश लेखक कोना रचनामे सब ओ साहेब कोना अभाव रहैत छै। मैथिलीक ई सौभाग्य जे एकरा शरदिन्दु चौधरी सन लेखक रहल छै जिनकामे सब ओ साहेब दुनू छनि आ से पहिल दिनसँ लऽ कऽ एखन धरि। पत्रिकानिगममे गँ शरीरक हवा रऽ जाइत छै। साहित्यमे शरीरक नहि पाथना, बाजिब चर्चा कोना हवा हाइत छै आ शरदिन्दुजीक पाथना, बाजिब चर्चा कोना हवा रहल अछि।

उपरमे जे हम सूत्र देलहुँ तकरासँ पाठक आना लेखक कोना रचनामे सब-साहेब तका से हमरा विश्वास अछि। ओना फेसबुकपर मजाक-मजाकमे हम एहि सूत्रकेँ अपन नामपर "अनचिन्हार फर्मूला" देलहुँ मुदा पाठक एकर जे नाम देबए चाहथि से दऽ सकै छथि।

३) समानान्तर धाराक संवाहक- हमर समाज, हमर भाषा, हमर साहित्यमे सदा पक्ष कर सामने एकटा समानान्तर धारा रहैत छै आ से मैथिलियोमे रहलैक अछि। ओना तँ समानान्तर धारा शब्द विदेह पत्रिका (२००८) संग समानान्तर धाराकेँ पुष्ट करबाक काज विदेह द्वारा भेल अछि। मुदा जहाँ धरि प्रवृत्तिमे समानान्तर धारा तकबै से मैथिलीमे विदेहसँ पहिनेसँ छै। बल्कि मैथिली भाषाक जन्मसँ। आ ताही समानान्तर प्रवृत्तिक संवाहक छथि शरदिन्दु चौधरी। समानान्तर धाराकेँ अहाँ विपक्षी बुझि सकै छी कारण साहित्यमे राजनीतियोसँ बेसी राजनीति होइत अछि। आ विपक्षी भेनाइ अपना-आपमे एकटा साहित्यिक योगदान छै। कारण विपक्षी हेबाक लेल साहस चाही आ जाहि लेखकमे साहस होइ से बहुत नव-नव आयाम जोड़ि सकै साहित्यमे।

४) सनातन धर्ममे नारीकेँ पापक खान कहल गेल छै। नारीक प्रति ई द्वेष मात्र सनातन नै कबीर सन दलित ओ समानान्तर धाराक कवि सेहो कर छथि। कबीरक रचनामे नारीक प्रति भक्ति आ द्वेष दुनू छै। सनातनमे सेहो नारी लेल आदर ओ घृणा छै। की तुलसी, की कबीर सभ अपना-अपना ढंगे नारीकेँ कखनो नीक आ कखनो खराप कहने छथि।

पुरुष स्त्रीसँ जन्मैत अछि मुदा नारीकेँ अपवित्र मानैत अछि तहिना लेखक पोथीक प्रकाशन लेल मुद्रक, प्रकाशक लग जाइत, पाठक धरि पहुँचबाक लेल वितरक लग जाइत आ अंतमे कहैत जे मुद्रक-प्रकाशक-वितरक कोन साहित्यमे की योगदान छै। शरदिन्दु चौधरी जँ

लखन नहिया कन नहिाथि गँ हुनकन निानध प्रधालीसँ मैथिलीक कााक या0क वढलै सञ्ह साहित्यिक यागदान मानल जञ्ञ्ो। ञा स शनदिहुञ चौधनी किञक मैथिलीक याथीक मुद्रध, प्रकाशन ञा निानधम ज-ज लागल छथि गिनका साहित्यिक यागदान नहुव कनानि।

कुल मिला कs मैथिली साहित्यम शनदिहुजीक ञाव यागदान छनि जाक यागदान काना मौलिक ञा विना सांगन वला लखक कन हाञ्ञ्ा छै। काना सांगन वला लखक कि गुट ञा कि काना म0-म0ाधीश हुनका ञ्ञ्ग्रान कs सकैञ मुदा शनदिहुजी लखन हुनका सन लल सूर्यक समान नहुा जकना ञा सन साँयि न सकाहा।

-संपर्क-8876162759

ञयन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com**यन यठाउ।**

२.११.गजह्ल 0ाकुन- शनदिहु चौधनीक संस्मनध साहित्य [वाा-वाायन वाा (I-IV)]



गजेन्द्र ठाकुर

शनदिहु वैधनीक संस्मरण साहित्य [बाग-बागयन बाग (I-IV)]

"बाग-बागयन बाग खण्ड-१"; "मर्मान्तक-शब्दानुभूति (बाग-बागयन बाग खण्ड-२)"; "हमन अराग: हूनक नहि दाब (बाग-बागयन बाग-३)" आ "साञाग् (बाग-बागयन बाग-४) ऽ्ौ बानिटा यूक्तिका शनदिहु वैधनीक संस्मरणात्मक निवन्धक संग्रह छहि, यहिल २०१९म दासन २०२०म आ गसन आ बानिम २०२१म प्रकाशित हला।

संगहि २००२ म प्रकाशित "ॐ हम जनिगहुँ" हूनकन हास्य-व्यंग्य यूक्त संस्मरणात्मक निवन्धक संग्रह छहि ज यूनस्थान-लालुप मूल-धानाक साहित्यकानक नामसँ यूक्त अछि आ हूनकन सत्क किनदानी गँ गहन छहिय ज ञा संस्मरण हास्य-व्यंग्यक संग्रह अनायास वनि जायग, मूदा ऽ्ौ याथी शुद्ध संस्मरणक याथी नै थिक, ञेम नान-मिर्च सहा अछि मूदा कम मात्रामा। ञगऽ ऽ्ौ संगाषक निषय अछि ज शनदिहु ञी कँ समानान्तन धानाम ञक्काटा लालुप व्यक्ति नै हटलहि।

ञकन अगिनिक्त २००७ म प्रकाशित "वञ अजगुग दखल", २०११ म प्रकाशित "गोवनगणेश" आ २०१६ म प्रकाशित "कनिया कक्काक कानामिन"कँ कनिया कक्का व्यंग्य शृंखला कहि सकैग छी, कानण ञे गीनू याथीम खडन कक्का सन कनिया कक्का विनाजमान हटगा, मूदा ञगौ किछु आलखम कनिया कक्का नै छथि, जना गोवनगणेश संग्रहक 'गानग काल','गोलैसी- अर्थाग्' आ 'सीठी समीञा '। मूदा

ई तीनू संग्रह सेहो माटा-माटी संम्पनक आधारित अछि मुदा तान-मिर्चक सेठ आ सेहो पृष्ठसँ एतऽ 'कनिया कक्काक कानामिन' क लेखकीय म उ लिखै छथि जे (कनिया कक्का)कँ 'जे हुनलनि सेहे कयलनि मुदा ई ध्यान अवश्य रखलनि जे... अश्लीलताक आभाय नहि लागय..." मुदा ओ पाथीसँ ग साल पूर्व प्रकाशित 'गोवनगोछेश' क 'सीठी समीक्षा ' म साहित्य अकादमी द्वारा कथित लिटनी एसोशियशन सह द्वारा चयनित मैथिली परामर्शदात्री समितिक अध्यक्ष विद्यानाथ झा 'विदित'क सम्बन्धमे लिखल गेल अछि, '.. ओ नै स्वयं नसिया छथि। प्रवासीजी संग संध्यावंदन करताह, ठकुनाइन संग युगलवंदी करताह...'। ओही पाथीक 'तारा काल' आलेखमे लिखल गेल अछि- 'एहन सन प्रयाग साहित्य अकादमी सेहो कयलक जे जकरा हाटल नहोक सेहो परामर्शदातृ समितिक सदस्य बनि सकैत छथि। " तारा काल कत नर्तन अश्लील नै अछि मुदा सीठी समीक्षाक विवरणक स्पष्टतया अश्लील अछि। ई स्पष्ट अछि जे साहित्य अकादमी द्वारा कथित लिटनी एसोशियशन सह द्वारा चयनित मैथिली परामर्शदात्री समितिक सह अध्यक्ष मैथिलीकँ नसालत पहुँचवाक काज कलहि अछि मुदा एकटा महिला उम्मीम छथि नै उ सत्य हनिश्चद्ध किए बनथु? आ उम्मीपन संक्षिप्त कमश्च ईएह देखवैत अछि जे लेखक वा सम्पादक साहित्यमे आ सार्वजनिक स्खलयन महिला वा पुरुषक्त लिंगक प्रति सम्वेदनशील नै छथि। 'कनिया कक्काक कानामिन'म 'सनकानक लिंग परीक्षा' म सेहो ई असम्वेदनशीलता देखल जा सकैए जतऽ 'स्त्री-गुप्तसँ परिपूर्ति सनकान' विनाद कुमान झा *[देखू 'ईर्ष्या ढ्वेष नहि- सम्बन्ध वाहो'- 'हमन अराग: हुनक नहि दाष (वात-वातपन वात-*

*३)' याथीम- सनकान (निनाद कुमान मा, आव कनि सम्राट)]*लल प्रयुक्त कएल गेल अछि।

१

वाग-वागयन वाग खण्ड-१

"वाग-वागयन वाग खण्ड-१" क "श्रेय आ प्रेय" म मैथिलीक यून: विहान लाक सना आयागम प्रवेश आ उाकन याथ्यक्रमक सम्बन्धम श्यामानन्द चौधनीक यागदानक उा चर्चा कलन्हि। शनदिन्दु जी उा याथ्यक्रम ज आयाग कार्यालयम हना गेल नहि, आयागक गेटयन स्थित "मा जी वुकसलन की दुकान" क नामसँ दाकान चलवैला स्व. चौधनी जी सँ लऽ कऽ श्यामानन्द चौधनीजी (तत्कालीन निशेष अधिकानी, विहान लाक सना आयाग)कँ दलन्हि। श्यामानन्द चौधनी जी २० दिसम्बन २०१८ कँ कहलनि ज काना संस्था (मैथिलीक) उ सम्बन्धम सनकानकँ काना लिखित प्रस्ताव नै दलकै। मूदा चयना समिति निधिनत एकन श्रेय लैत प्रसन्नता व्यक्त कलक! "हम आहाँनी छी"म वैद्यनाथ चौधनी 'वैद्य' द्वाना प्रस निलीज/ घाषणाक वाद २०१० क 'मिथिला नत्न' सम्मान सूचीसँ शनदिन्दु चौधनीक नाम वादम हटा दवाक चर्च अछि। ओ संस्था छल साहित्य अकादमी द्वाना कथित लिटनेनी एसाशियशन नुयम मान्यता प्राप्त निद्यायति सना संस्थान, सम्मान निर्णायक मण्डलम नहथि डॉ. दीमनाथ मा, डॉ. फूलचन्द्र मिश्र 'नमण' आ कमलाकान्त मा, आँ शनदिन्दु चौधनीकँ सम्मान दल जायत ताँ उा जहन खा लगा, ओ धमकी दलन्हि साहित्य अकादमी

द्वारा कथित लिटरेरी एसोसियेशन रूपमे मान्यता प्राप्त विद्यापति सेवा संस्थानक अध्यक्ष पं चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'। "हम नहि कहि सकैत छी..." ई साहित्य अकादेमी द्वारा कथित लिटरेरी एसोसियेशन रूपमे मान्यता प्राप्त करबा लेल उसरल भेल संस्था 'मैथिली लेखक संघ ' आ विनोद कुमार झा केर राजनीति केर चर्चा अछि। पंजीयनमे ओना विनोदजीक अलावे सभक बबुआन बनल रहबाक चर्चा अछि। मंत्रेश्वर झा पर मीटिंगमे अनेक आरोप लगाओल जयबाक, प्रेमलता मिश्र 'प्रेम', [illegible] झा आ पन्ना झा केर मूर्ति सन व्यवहार (बुद्धिजीवी बनबाक लौलमे) केर चर्चा अछि। मैथिली लेखक संघमे आब स्थायी अध्यक्ष आ स्थायी सचिव छथि मुदा संघ स्वयं विलायल अछि। से अकादेमीक कथित लिटरेरी एसोसियेशन सेहो पजेह खरहा छै। विद्यानाथ झा 'विदित' तत्कालीन साहित्य अकादेमीक ७ साल धरि रहल मैथिली पदाधिकारी सेहो शरदिन्दुक 'सक्रिय सहयोग'(!)क अभिलाषी रहथि। "हमर दुर्गुण आ क्रोधक दुष्प्रभाव"मे लहेरियासरायक एकटा युवा लेखक/पत्रकारक छद्म नाम अखबारमे लिखबाक चर्चा अछि जे शरदिन्दु साहित्य अकादेमी, मैथिली अकादेमी आ चेतना समितिकेँ हथियौने कऽ कमौने छथि। चेतना समितिक सम्बन्धमे ओ लिखै छथि- "...हम पत्रकार नहि रहितहुँ तँ हमरा संग किछु गोटे मारपीट सेहो करितथि। समितिक एकटा पूर्व सचिवक विरोध कयलापर हुनक केना अभद्र रूप गंजन भेल छल से लोककेँ बूझल छैक तथापि से स्थिति हमरा नहि भेल।"

"समय-सालक जन्म आ साहित्यिक-राजनीतिक कुचक्र"मे विनोद बिहारी लालक पत्रक चर्चा अछि, ओ लिखलखिन्ह जे चलू 'सम्पादक नूतन इतिहासमे अहाँक नाम अयबाक सख पूरा भऽ जायत।' २००१ ई.मे स्व. बबुआजी झा अज्ञातक 'प्रतिज्ञा पाण्डव' महाकाव्यपर साहित्य अकादमी पुरस्कारक निर्णयमे राजमोहन झा द्वारा अरियान आ मूO प्रचार जे ओ पोथी छपल नै कएल अछि, ओहि हस्ताक्षर अरियानमे भीमनाथ हस्ताक्षर नै कलन्हि आ तैयो राजमोहन झा 'आँगिका'मे अनाय-शनाय लिखलन्हि तकर चर्च अछि। ओतऽ ई बात दी जे भीमनाथ ओ छपलाहा पोथी जमा कलन्हि आ पटनाक अपन दोकानमे ओकरा प्रदर्शित कलन्हि। मुदा हुन राजमोहन झाक चूक मानबाक आ भीमनाथक हुनका प्रति मान हुनसँ निर्मल होबाक चर्चा अछि। "नोकरी नहि करबाक निर्णय"मे अग्निपुष्पक चर्चा अछि, "ओहुना काज तँ अग्निपुष्प सन-सन पत्रकार कऽ सकैत छलाह जे आर्यावर्तमे हाथि करबाक धमकी देनल स्वन निकालथि आ जागरणमे नांगति सूटकाकऽ सनातिवृति धरि काज कयलनि।" अहीमे प्रसंग मैनेजर सह कम्पाजीटर शिव कुमार ठाकुरक चर्चा अछि- "जे-से, ओ कम्पाजिटरसँ मालिक भेलाह- हमरा पैद प्रसन्नता अछि।" हमरा विचारे ओ शिवकुमार ठाकुरक प्रति कम बसी 'हार्श' भऽ गेल छथि, पटना समितिक विद्यापति भवन, बहुत गोट मात्र हुनक (शिवकुमार ठाकुरक), पोथीक दोकान दूआरे जाहि छल, पटना समितिकेँ सहा नै अनघलै, अपन तँ ओ मैनेज हॉल बूक करैमे लागल रहैत, से पोथी कित बचत, मुदा शिवकुमार ठाकुरक दोकान बन्न करबा दलकै। जे.. से..। "जीवन युद्धक भूमिका"मे मित्र दिलीप, अजित आजाद, अरुण झा, पं. गोनाकान्त झा, मंत्रेश्वर

भा, वासुकी बाबू क सहयोगी, मदति केनिहार आ परामर्श देनिहारक रूपमे चर्चा अछि। "सम्मानक सुख"मे मूलधाराक पुनस्थान लोलुप साहित्यकारक वर्णन भेल अछि- "आदरणीय गोविन्द बाबूक खिस्सा प्रायः लोककेँ बूझल छैक जे पुनस्थान नहि भेलापर मैथिली बाजब छोड़ि हिन्दीमे बाजल करथि जे 'मैथिली बड्डीमारा की भाषा है'। "मैथिलक अविश्वसनीयता"मे मैथिल तांत्रिक बटेश महराज जीक 'कामाख्या संदेश'(मासिक) छपवइया कs ३० हजारसँ बेसी टाका नै देबाक चर्चा भेल अछि। "तीत लागय ना कटू"मे उदयचन्द्र झा 'विनोद' १७१७ टाका नै देलखिन्ह मात्र ११०० टाकामे २०० पोथी लs गेलखिन्ह शेष न पाइ देलखिन्ह न पोथीये लs गेलखिन्ह, तकर चर्चा अछि।

२

<u>मर्मान्तक-शब्दानुभूति (बात-बातपर बात खण्ड-२)</u>

"मर्मान्तक-शब्दानुभूति (बात-बातपर बात खण्ड-२)"क "महाकालक वज्राघात' कोरोना लोकडाउनमे २६.०३.२०२०केँ लिखल गेल ४१ वर्ख पूरान घटनाक वर्णन अछि, मिश्रजीक बैंकक पाइक उनटहनमे हँसब, नोकरी जायब, मायक मानसिक स्थितिक खराप हएब आ हुन हुनकर मृत्यु। "शेखर"क अवसानमे पिताक चर्च अछि, प्रभासजी, मुखियाजी, बटुक भाइ कर बनमहल सुधांशु शेखर चौधरीजी सँ भेँट करबा लेल अयबाक चर्चा अछि मुदा "हँ, ओ अंतिम साल रहि प्रवासी जीसँ गप्प करय चाहथि मुदा से सम्भव नहि भेलनि। हमरा कहलापर प्रवासीजी भेँट नहि कयलथिन अन्त

धरि। "माताक मृत्युक वर्षदिनक अगिला संस्मरणमे पिताक मृत्युक ई दिनमे कोरोना लॉकडाउनमे २१.०३.२०२०केँ लिखल गेल। "अप्रलेखसँ रंग"मे मिथिला मिहिरमे शरदिन्दुजीक आगमन (ओना नियुक्ति आर्यावर्तमे) आ एकरा भीमनाथ झा द्वारा अपन पदोन्नतिक मार्गमे बाधक बूझल जयबाक चर्चा अछि आ भीमनाथ झा जेना 'लंगूर' कविता लिखलन्हि जे सुधांशु शेखर चौधरी आ शरदिन्दु चौधरीकेँ वधलकन्हि। भीमनाथ झाकेँ लगलन्हि जे हुनकासँ जूनियर गोकुल बाबूकेँ भीमनाथ झासँ टपा कऽ सहायक सम्पादक बना देल गेल आ सुधांशु शेखर चौधरी अपन पुत्र शरदिन्दु चौधरीकेँ नोकरी दिआबय खातिर से बर्दाश्त कलन्हि, जखनकि गोकुल बाबूक पैरवीकार रहथि कुमार साहेब (अखबार-प्रेसक मालिक)क नाना आ गोकुल बाबू रहथि कुमार साहेबक मौसा। एम्हर गोकुल बाबू धोती-कुर्ता छोड़ि सफारी सूटमे आबय लगलाह, से भीमनाथ झाकेँ आर असह्य भऽ गेलनि, मुदा रहन हुनकर नोकरी मिथिला विश्वविद्यालयमे लागि गेलनि। सुधांशु शेखर चौधरी (शरदिन्दुक पिता जिनका ओ लालकक्का कहैत छला) २ अक्टूबर १९८२केँ सेवानिवृत्त भऽ गेलाह आ शरदिन्दु आ दिलीप (दिलीप सिंह झा) गोकुल बाबूक खास बनि रहि गेलाह। *(आर्यावर्त, इण्डियन नेशन आ मिथिला मिहिरक राजनीति आ कोना ई राष्ट्रीय अखबार सभक घटना आगमनक बाद धराशायी भऽ गेल! सूनै छिऐ राढ़ घाटल जाइ छलै ओतऽ बनू पहुन, किछु आर संस्मरणमे जेना एबाक चाही!)* "सहला ओ निहलाक कारणे" मे पं दीनानन्द झा शास्त्री आ स्व. गजेन्द्र नारायण चौधरीसँ हटल सम्पादकीय दायित्व आ अधिकारक स्थान हटबाक चर्च अछि। मैथिलीक लेखक आ हिन्दीक पत्रकारक बेइमानीक चर्च

अछि ई साहित्य अकादमीक गोष्ठीमे मैथिली पत्रकारिताक श्रेय दसकास आ विनोद कुमार झा केँ देलनि आ मिथिला दैनिकक बरमे 'ईँ ओकरा दैनिक मानि लेल जाय' कहि ओकर उपलब्धिकेँ शून्य कऽ देलथिन। पाखण्डी युगक प्रतिनिधि रचनाकारक रूपमे वैद्यनाथ विमल केर चर्चा अछि आ कोना ने कोना सांगरपर चारपरला आलोचक/ सम्पादकक रूपमे रमानन्द झा 'रमण'क।

३

हमर अराग: हुनक नहि दोष (बाग-बागपर बाग-३)

'भूमिका- श्यामपऊ ओ हमर लेखन' मे ओ लिखैत छथि "हम ई लिखैत छी से प्रायः क्यो नहि लिखैत छथि। हँ कहियो काल लक्ष्मण झा 'सागर' क किछु-किछु ओही गद्यक आलेख पढ़बाक सौभाग्य भेटैत अछि।" "हमर अराग: हुनक नहि दोष" मे 'मैथिलीपुत्र प्रदीप प्रभुनारायण झा' पर निकलल मैथिली अकादमी पत्रिका विशेषांकक चर्चा अछि, काज सरदा शरदिन्दु जी केलन्हि सम्पादकमे नाम दिनेशचन्द्र झा केर छपलनि आ मेहनति केर माल २८० टाका शरदिन्दुजीकेँ भेटलन्हि। "सम्पादकीय आ पाठकीय पत्र"मे बिनु नाम लेने रमेशक चर्चा अछि ई अबोध आ दुर्बोध मिश्रक नामसँ पाठकीय पत्र पठबथिन आ शरदिन्दु आ हुनकर पिताक विषयमे अनाप-शनाप लिखैत छलाह कारण शशि बोध मिश्र 'शशि'क रचना समय-सालमे छपलासँ ओ आहत छलाह। बादमे कोना ओ कदाम काननक पैनीसँ पूर्णेन्दु मैथिलमे (जखन शरदिन्दु ओतऽ सम्पादक

करलाह) छायल गेलाह, ".. आब.. ई जमीनपर छथि। नीक लिखैत छथि।" मधुकान्त झासँ प्राप्त पैरवीक आधारपर कहला प्रारम्भ साहेबक कविता समय-सालमे छायलखिन्ह मुदा ओही नामसँ सेहो नीक नै लिखैत छथि, बड़ ढेर कविता लिखैत छथि मुदा साहित्य अकादेमीक पुरस्कारक अन्तिम राउण्ड धरि गेल रहल पहुँचलाह- शरदिन्दु चौधरी करैत छथि। "मैथिलीक बदलैत स्वरूप"मे ध्यान देनिहारक पहिने अपन, हुनका पाछाँ आ अन्तमे मैथिलीकेँ स्थान देबाक चर्चा अछि। "पोथीक प्रकाशन प्रदर्शन किएक"मे कीर्तिनारायण मिश्र द्वारा 'अर्थान्तर' पोथी छपयबाक आ मात्र राजस्थानक सामाँ मात्र ९००० टाका देबाक आ शेष ३७०० टाका नै देबाक चर्चा अछि जखनि कि सरकारी पोथी हुनका घरपर पहुँचबा देल गेलन्हि। अन्तिम साहित्य अकादेमीक 'मीट द ऑथर्स' कार्यक्रमक चर्चा अछि जे ओकरा द्वारा मात्रा प्राप्त कथित लिस्टमे ओसामियसँ वाला समितिक प्रकाशनमे आयोजित रहल। "कीर्ति बाबू सहो हिन्दी-मैथिलीमे बजलाह। दावी जे हिन्दी-मैथिली दुनूक हम लेखक छी मुदा राजकमल-यात्री छाड़ि ककर हिन्दीमे कोन स्थान रहलैक से देखल-बूझल अछि। ... हमर बेधक आ सटीक प्रश्न छल- अपन एहन श्रेष्ठ साहित्यकार छी जे आइ अपनहि साहित्य अकादेमी सन शीर्ष संस्था ओही कार्यक्रम आयोजित कयलक अछि तखन अहाँ अपन नामपर जीवित किए 'कीर्तिनारायण मिश्र सम्मान' प्रारम्भ करौलहुँ, की अपनेकेँ भय अछि जे मरणोपरान्त क्यो स्मरण नहि करत तेँ जीवित अपन प्रचार-प्रसार देखबाक लहन्हा छल? हमर एहि प्रश्नपर ओ तिलमिला उठलाह आ बजलाह- हमर पारिवारिक सदस्यक इच्छा रहनि। .. वाला समितिक सम्पूर्ण पदाधिकारी ओकर विरोध करय लगलाह आ ओ स्वर

गुँजय लागल- ई सम्मान करा हालतिमे निरन्तर चलैत रहत। एकर कारण रहैक जे रचना समितिकेँ पुनः ३७ लाख टाका पुरस्कार राशि बढ़यबा लेल टाका लऽ कऽ आयल रहथिन।" रचना समिति द्वारा पुरस्कारक नामपर, पुरस्कार जिनका नामपर देल जाइत छैक हुनका आ हुनक परिवारसँ पाइ दाहनक ई एकटा हर्ष हेतु अकाउछ छैक, एहन आन संस्थानमे सामाँ एबाक चाही।

"वर्तमान होयबाक घोषणा"म 'साहित्यिकी ' (सरिसबपाही)पाहीक करा जगदीश मिश्रक चर्चा छैक, जे स्वयं साहित्यकार अशोककेँ १० टा पोथी शरदिन्दुजीकेँ देबा लेल कहने रहथिन्ह मुदा जे विद्यापति सेवनमे शिव कुमार ठाकुरकेँ दऽ देलन्हि आ जे पोथी बेचिकऽ पाइ हुनका दऽ देलथिन्ह। मुदा ई जगदीश मिश्र माइक पर घोषित कएलन्हि जे शरदिन्दु पोथी बेचि कऽ पाइ नहि देलनि आ ई सूचना रमानन्द झा 'रमण' शरदिन्दु जीकेँ देलन्हि। एक गोट घटना मोन पड़ैत छैक जे एक गोट रचनाकार अपन संस्थाकेँ 'साहित्यिकी' कहैत छलाह आ जखन हुनकर पोथी ई संस्था छापि देलकन्हि तखन जेकरा 'साहित्यिकी ' कहलन्हि। 'हमर अराग: हुनक सौराठ"म दीनानाथ झा द्वारा फूलचन्द्र मिश्र 'रमण'केँ लसि देबाक चर्चा छैक, कथित लिटरेरी असोसियेशन रचना समिति द्वारा करा स्थानिकाम (स्थानिकाक राजनीति!) सम्पादनामे महत्ता जी हुनकर रचना छापि देन रहथिन्ह। "मैथिलीक राजनीतिक कृया"म भारतीय भाषा संस्थानक अजित मिश्र आ अदिति मुखर्जीक वर्णन छैक। भारतीय भाषा संस्थानक 'सेमीनार सह वर्कशाप'म हिनका आ मधुकान्त झाक नामपर दासन गोट द्वारा पाइ ३०। लेबाक चर्चा

अछि आ हुनकर भाइक पुत्र गजेन्द्र झा कर सूचना जे लेखन प्रकाशनकेँ भारतीय भाषा संस्थानक अनुवाद मिशनक काज नै भेटैक से मैथिलीक २ टा विद्वान संस्थानक मीटिंगमे कहलन्हि। ९ टा पोथीक अनुवाद, प्रूफरीडिंग, प्रकाशन आ वितरणक भार लेखन प्रकाशनकेँ भेटल नहि, मुदा संस्थान एक-दू टा चमचाक कहलापर सम्पादकक चयन बिना शर्तहिसँ नाम लेल चुनि लेलक, आ डा० प्रकाशक-सम्पादकक मीटिंगमे हुनका नै बजाओल गेल। बादमे किछु काज नागेन्द्रीक नरेन्द्र कुमार झा केँ भेटलन्हि, हुन यं सीताराम झाजीक पौत्र श्री चन्द्रनाथ झा जी छिनका कहलखिन्ह जे हुनकासँ ओ अनुवाद करा लेलखिन्ह आ कनी-मनी दऽ कऽ टारि देलखिन्ह। "प्रोफेसर द्वेष नहि- समन्वय बादी"मे परमेश्वर कापड़ि द्वारा ९ हजार टाकाक किताबक लऽ कऽ नाम हेबास कापड़ि प्रमनक कहला ओम्हर पाछाँ नै देव कर चर्चा अछि। कदाचि कानमक कएकटा शिष्य सहो एहिना कहलखिन्ह। नानाजीक नियोगीक चर्चा अछि जे हुसबुकयन जाति विशेष (ब्राह्मण) लेल 'सर वायुप' शब्दक प्रयोग खुलि कऽ करैत छथि। " .. ओ जाहि पनिचर्चामे लाग लैत छथि ओहुमे १० प्रतिशत नैह लोक लाग लैत छथि (ब्राह्मण) जकर पूर्खाकेँ ओ ठकैत छथिन... हम लाल मानबनि श्री नियोगीजीक नखन जखन अपना सदृश बीसो टा व्यक्तित्वक निर्माण ओ अपना समाजसँ ०।८ कऽ देखाबथु। मात्र ठकटा पेंची कयलासँ...।" मुदा हुनकर प्रो० लिखब जे ओ परमेश्वर कापड़ि जीकेँ कहलनि- "अहाँकेँ एहिठाम बाँसमे बान्हि कऽ पीटी गेँ काना हर्ज नहि ना। ओतऽ सनकार (विनोद कुमार झा, आब कवि सम्राट- व्यंग्यात्मक प्रयोग) आ पूना कवि बालमुकुन्दजी

सहो छलाह। "- मुदा वाँसम वाझ्र कऽ यीटी गँ काना हऊ नहि न- एकन काना गनहुँ समर्थन हम नै कऽ सकैत छी।

४

साञात् (वात-वातयन वात-४)

ओम शनदिहूजी स्मनध कनैत छथि ज कना".. एक (गाटा हमना यूनस्थान प्रक्रियाक स्फनहीनताक गयक क्रमम एहिम लागल लाक सरुकँ माय-वहिनकँ गानि-यढैत कहलनि ज काना हालतिम साहित्य अकादमिय ना काना यूनस्थान हम नहि लव, मुदा लगल छउा मासक अयंान यूनस्थान ग्रहण कऽ गदगद रऽ (गलाह। हम यूछैत छी एहिसँ हुनकन उमता, विद्वताम कतक अभिवृद्धि रलनि। तखन अनन अर्न-दर्न वजन की लारु! सटिंग कनैत नहु आ गानिया यढैत चलू।" मैथिली साहित्यम हिनका किनध, मधूय, सुमन, मणियद्म, जयकान्त मिश्र, प्रराास, गुंजन, मन्त्रश्वन, अमन, जीवकान्त, (गाविन्द वावू, वासुकी वावू, प्रवासी, नाजमाहन, वज्रा 0कुन, रीम वावू, नामदन वावू,(शखनजी, हुकुन वावू, अशाक, शिवशंकन श्रीनिवास, उषाकिनध खान, (शहालिका वर्मा, श्यामानन्द चौधनी, नंगनाथ दिवाकन, कमलमाहन चून्नु, अजित आजाद, अशाक महता, सुनन्द्र नाउत, नमध कुमान मा, मुकुन्द मयंक आ वालमुकुन्द प्रशानित कलकथि। उा ॐलीह कहैत

छथि जे".. पत्रकारिता मात्र आब बलिदान बूझल जाय लगलैक अछि। ओ कहैत छथि- हमरा पत्रिका निकालबामे आठ-दस लाख खर्च भऽ गेल। पूना ललित नारायण (मिथिला मिहिर) ओही समयमे नियारिंगक क्रमसँ कहैत छथि- हम हुनी गेला नहुल छी। जखन कि हमरा हिसाबेँ ओखनसँ प्रारम्भनल पत्रकार भऽ गेलाह अछि ओ।"

ओ कहैत छथि "जे प्रकाशक ओकरा कहैत छैक जे अपन पाइसँ अनकर किताब छापय आ मुद्रक ओकरा कहैत छैक जे पाइ लऽ कऽ काज करय। आ जे ई दुनू काज करय से अपनाकेँ मुद्रक आ प्रकाशक दुनू कहबैत अछि... एखन प्रकाशन ई दुनू काज दुनू सम्पन्न कयलक अछि। हमरा जनैत ऐह काज पूर्णमे पुस्तक भण्डार आ ग्रन्थालय सदा करैत छल।... कुल ७२ पोथी अपन छपने छथि। आधा-आधी खर्चमे सदा लागत तीन दर्जनसँ बेसी पोथी छपने छी।..."

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

२.१८.गजेन्द्र ठाकुर- शरदिन्दु चौधरीक संस्मरणात्मक हास्य-व्यंग्य संग्रह- 'ऊँ हम जनिगहुँ'



गजेन्द्र ठाकुर

शरदिन्दु चौधरीक संस्मरणात्मक हास्य-व्यंग्य संग्रह- 'जँ हम जनितहुँ'

हास्य-
व्यंग्य संग्रहमे हम ई संस्मरण साहित्य कोना भेल? एकर उत्तर शरदिन्दु स्वयं दैत छथि-
"जँ हम जनितहुँ जे साहित्यिक उद्यम सेहो राजनीतिक जकाँ खेल होइत छैक तँ कथमपि एहि उद्यम दिस पएर रखबाक दुस्साहस नहि करितहुँ मुदा आब तँ फँसि गेल छी आ दुख-
माछ दुनू काँटबला यदि गर हऽ गेल अछि। न उगिलैत बनैछ आ न घोँटैत। " आ आगाँ ओ लिखैत छथि-   "... जनिक चरित्र, हमरा हास्य-व्यंग्यमे रुचि छैक से नहि बूझय देलक आ जनिक सम्भाषण हमरा लेखनक कथ्य बनल। ... हमर यत्रकार प्रवृत्ति जहिया जे देखलक से लिखलक। " से सिद्ध भेल जे ई संस्मरणक पोथी थिक आ काँमाक रीतिक देल वक्तव्यमे का ना नोन मिर्च नै-
छै, हँ संस्मरणक हर्तिगम आ ईमानदारीक काँमाक बाहर नोन-
मिर्च छै मुदा सेहो कम मात्रा।

ऐ पोथीमे ११ टा संस्मरण अछि जे पुनस्थान लालुप मैथिलीक मूल धाराक साहित्यकार, जाहिमे सभ जातिक साहित्यकार छथि, पर किछुदानीक कोर ध हास्य-
व्यंग्य संग्रह बनि गेल अछि। साहित्यकार सभक असली साहित्यिक नाम ऐ संग्रहमे देल गेल अछि जे एकर प्रामाणिकताकेँ बढ़बैत अछि, ई पा

थी २००२ म प्रकाशित भेल मुदा २०२२म सेहो उपेक्षित वंचित साहित्यकार सभक उपहास छिन्ना छथि।

१

अथ □यनशन साहित्य अकादमी

ई संस्मरणक्षम मात्र सम्वाद अछि, ॰॰नवरेत कॉमाक रीतन। स काना नान मिर्व नै, हतिंग सेहो कम नान-मिर्वक,
'अथ' संस्कृतक शब्द छिऐ, विसिम्मल्लाहक पर्याय, स 'अथ □यनशन साहित्य अकादमी'म क सभ कलाकार छथि? विवरण नीचाँ अछि-

मुख्य कलाकार- मोहन भारद्वाज (आब स्वर्गीय) आ रमानन्द झा 'रमण'

किरदारी- लाकक (साहित्यकारक साहित्यिक कुण्डली बाचब) मुदा बसी का ल आयसम टाल-गुल्ली खेलायब।

सहायक कलाकार- एकटा 'साठा गव पाठा' कवि, एकटा ससुर- जमायक जोडी।

किरदारी- पहिलुक पाथीसँ पुरान कवि सभकेँ मुक्ति करब, साहित्य अका दमीक अकासम विचरण।

टिप्पणी- एक दासानाक पाथीक हिलहो, चयन समिति जकाँ कतबा कटाउस हाउ, नाज कक्कक आकि हानिजक।

२

अपील

मुख्य कलाकार- मदन भारद्वाज (आब स्वर्गीय), वासुकीनाथ झा आ रमानन्द झा 'रमण'

कहानी- मैथिली अकादमी आ राज्य समितिक प्रकाशन गतिविधियन क व्यथा।

सहायक कलाकार- धीरेन्द्र यादव जी, दिनेशजी, श्रीकान्त जी।

कहानी- क्रमसँ क्रोधी, रागी आ लोभी।

टिप्पणी- निर्माताक उकान कनौं काठहँसी।

३

श्रीहरि युगुल अलबन्द

मुख्य कलाकार- एकटा संस्थाक उच्चाधिकारी

कहानी- काज बलदेव हाथ थलथलनाइ।

सहायक कलाकार- निक।

टिप्पणी- कलकत्तासँ प्रतिनिधि रहि समाज-
सुधार आ रोजगार उद्धारक स्वाँग।

४

देखल ओकरा शूटिंग

मुख्य कलाकार- उपेन्द्रनाथ झा 'व्यास', मधुकान्त झा, मोहन भारद्वाज, रमानन्द झा 'रमण', रामदेव झा, पूर्णेन्दु चौधरी, चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'।

किरदानी- मैथिली अकादमी आ चेतना समितिक साहित्यिक गतिविधियक कहबा। 'अंग्रेजी स्कूलक चिट्ठी' प्रसंग। रामदेव, रमानन्द रेणु आ हंसराज केँ बालिग नै होमऽ देब। चटिसारक चेला भीमनाथ, जयमन्त आ मदनेश्वर ।

सहायक कलाकार- जयकान्त मिश्र, देवकान्त झा, कुलानन्द मिश्र, राजमोहन झा, उदय चन्द्र झा 'विनोद', अशोक, अग्निपुष्प, केदार, तारानन्द वियोगी, रमेश, शिवशंकर।

किरदानी- राजमोहन झा द्वारा भीम भाइसँ पहिल पुरस्कार प्राप्ति लेल अपन कारयन्त्र अशोक, अग्निपुष्प, केदारकेँ आगाँ करब। शरदक ओकरा बालपन विजय कुमार मिश्र आ विलकान्त मैदानसँ बाहर, वीरेन्द्र झा द्वारा अपमान पाठककेँ पानि पिआयब। गोकुलनाथ द्वारा प्रवासीकेँ लुढ़कायब।

मदारी- छत्रानन्द सिंह झा (बटुक भाइ), गायत्री।

प्रथम (संरक्षक)- उषाकिरण खान आ मंत्रेश्वर झा।

अन्तिम प्रस्तोता- गुंजनजी।

ट्रिक- मोहन भारद्वाज द्वारा भीम भाइ आ रामदेव झाकेँ लगायब आ स्वयं साहित्य अकादमी परामर्शदातृ समितिमे घुसब, रमणजी द्वारा गोलि

छ झा अरविन्दक ग्रंथ सहित आन-
आन ठाम जे काठीक धान उठाह काठीमे कनव आ बाना समितिकेँ साधव।

पुरस्कार लालूपक तीर्थ स्थल (सन २००२ धरि)- पटनाक गुरुद्वारा (आर-ब्लॉक), दरभंगाक श्यामा मन्दिर (राजकुमार गंज) आ प्रयाग (पी.सी. बनर्जी रोड)।

ग

स्वास्थ्य-रजा पुरस्कार

कार्यक्रमक प्रेरणा- विनाका गीतमाला।

उद्घोषक- मैथिलीक अमीन सयानी छत्रानन्द मुदा हुनकर बट्क हवाक कारण ञ्ची हरान अशोककेँ दल गेल।

प्रश्न- गोविन्द झाकेँ साहित्य अकादमी पुरस्कार किए?

प्रश्नमंचमे क सभ शामिल छै?- रमानन्द रेणु, हंसराज, पुर्णेन्दु चौधरी, आ रहिकाक दूल्हा उदयचन्द्र झा 'विनोद'।

एक सदस्यीय निर्णायक मण्डल- सुमनजी।

क सभ बहिष्कार कलन्हि?- उपेन्द्रनाथ झा व्यास, डॉ. अमरेश पाठक आ आनन्द मिश्र (एक सदस्यीय निर्णायक मण्डलमे नै रखबाक कारणसँ)।

सुमनजी द्वारा जारी १६ सदस्यीय प्रतियोगीक सूची- सुरञ्जन झा, राजमोहन झा, मार्कण्डेय प्रवासी, मोहन भारद्वाज, भीमनाथ झा, प्रदीप कुमार चौधरी, जीवकान्त, शेफालिका वर्मा, कीर्तिनारायण मिश्र, मन्त्रेश्वर झा, अग्निपुष्प, सुभाषचन्द्र यादव, मायानन्द मिश्र, डॉ धीरेन्द्र, रामदेव आ केदार कानन।

स्वागत गीत- वृद्धिनाथ मिश्र आ शान्ति सुमन।

उद्घाटन- राजमोहन झा- गोविन्द झा द्वारा दिहीस लिखल जयवारक आशंका (धमकीक) कारण।

घोषणाक उपरान्त- विनोद कुमार झा, अग्निपुष्प आ नियोगीक राजमोहन झाक करतलध्वनिसँ झूमब। सुरञ्जन झा- हँ हम प्रतिनिधि गँ गोविन्द झा कँ पुरस्कार। रवीन्द्रनाथ ठाकुर द्वारा महेन्द्रकँ गलाक हार अशोक संग झूमब। प्रदीप कुमार चौधरी- हँ गोविन्द बाबू मानि लेलनि जे हुनकर कथा हमर आ मामा (गुंजन) सँ घटिया छनि, गँ। अध्यक्ष द्वारा-
प्रश्नक ठाढ़ होयब, लट्आ कऽ खसब। विरोधानीक आँखिसँ हटा करब, किशोर, नमन आ कुमार शैलेन्द्रक उपस्थिति। अशोक लंगूरक सीमना थकँ आकृष्ट करैत छथि।

सुमनजी द्वारा अशोककेँ कहब- जयकान्त बाबूक जमाना नहि छनि जे सब काज पाछूअयन हो, आब किछु परिवर्तन हो।

अशोक- उमानाथ बाबू, चन्द्रकान्त बाबू, सुरेन्द्र बाबूकेँ देखिकेँ उना जायब आ स्वास्थ्य नञा पुरस्कारक गप करब। ऊ उद्घाटन करत स लखनाथ मिश्र आ डॉ. वासुकीनाथ झा द्वारा पूछब। मोहन भारद्वाज द्वारा आत्मप्रशंसा

ओा सुमनजी सँ रूगुआ शिनामधिक पुनस्कान। कुलानन्द मिश्र प्रणिस्ता पुना रुलायन अयन दाढी छटयवाक लल उपस्त्र 0ाकुनक घन दिस विदा हाऽ्ण छथि।

६

धन्य लालुजी ज आऽ्..

यं. णानाकान्द मा द्वाना मैथिलीकँ विद्वान लाक सना आयागम रून सँ शामिल कनवावेल यटना उव्र न्यायालयम जीण मुदा लालुजी द्वाना णकना सर्वाव्रा न्यायालयम लसकायव।

१

सम्पादकक नाम...

रूचाँ।ऽ मिसनक यत्र

८

शकालाय

मारून राणद्वाजक साहित्य अकादमी पुनस्कान नै रुटलायन आर्फनाद- ना जमारून मा अन्हाँक नञा न गौनीनाथ न अग्निपुष्प न सुरामचन्द्र यादन क s सका।

राँग यिवेण शिष्य सर: अशोकक नापुम नमण, नियागी आ श्रीनिनास।

तारानन्द वियोगी (अशोककेँ)- लक्ष्यक दलितक अशोक शाहक अहाँ दूनू पीठाचार्यकेँ (मोहन भारद्वाज आ राजमोहन झा)।

पुनश्च: बादमे विद्यानाथ झा 'विदित'क
उपन्यास 'विप्लवी वसना'क कलमगाछ (गदगदी आ पलंगगाछ समीक्षाक पर्याय) समीक्षाक बाद ओ हुनका पुनस्थान नै दियलखिन्ह।

९

समुदायक स्थान

हलाला, पुनिया, नदीकाण्ड, पशुपालन, अलकतरा आदि घटनाक वर्णन
।

१०

जँ हम जनितहुँ

मूलधाराक मैथिलीक साहित्यकारकेँ देखबाक, चिन्हबाक आ जानबाक अवसर।

११

प्लेटोक सपना, राजा आ कौमार्य-राजनीति

प्लेटोक रिपब्लिकक फिलास्फर किंग आ आइ-
काल्हिक अविवाहित व्यक्तिक आचरणपर मनन।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

२.१९. गजेन्द्र ठाकुर- शिवदिनु बोधनीक तीनटा ग्रंथ संग्रह- 'बड़ अजगुत देखल..', 'गोबरगणेश' आ 'कनिया कक्काक कानामिन'



गजेन्द्र ठाकुर

शनदिन्नु वौधनीक गीनटा व्यंग्य संग्रह- 'वड़ अजगुत दखल..', '(गावनग(धथ' आ 'कनिया कक्काक कानामिन'

'वड़ अजगुत दखल..' प्रकाशित भेल २००७ म, '(गावनग(धथ' प्रकाशित भेल २०११ म आ 'कनिया कक्काक कानामिन' प्रकाशित भेल २०१६ मे। तीनू पोथी कनिया कक्का शृंखलाक व्यंग्य पोथी थिक आ हुनकर संस्मरण साहित्यसँ इली दु गनहँ भिन्न अछि। कनिया कक्का उरुू लालपणाक प्रतीक छथि जकरा अहाँ चीन्हि सकै छियन्हि मुदा उ कानी असली नाम नै छथि, मुदा किछु आलखम कनिया कक्का नियमा छथि आ किछुम असली नामव ला देय सर सायास प्रयन्हक वाद।
जवनदस्ती आविय जाउ छथि। मुदा लखक उ तीनू पाथीम सँ 'वड़ अजगुत दखल..'कँ व्यष्टनुयँ संस्मरण कहै छथि। 'वड़ अजगुत दखल..'म 'मुक्ति पयवाक प्रयत्न' आमुखम उ लिखैत छथि-
"हम ज नै कs पौलहुँ, ज नहि साचि पौलहुँ मुदा दखवाम आयल- सैह अछि- वड़ अजगुत दखलम। "

१

'बड़ अजगुत देखल..'

की मथै छी?

"... हमर मैथिली.. जमाय-
ससुरक बहिकिरनी बनबा लेल विवश अछि... किछु सामाजिक कार्यकर्ता क आमदनीक साधन बनल अछि। "

दर्शन-सुदर्शन

"...चलु महाकवि विद्यापतिक रचना समिति स्थित नासा...

.. 'अयं यौ क छथि नयालनला नाटककार?'

'महेन्द्र मलंगिया दिया पुछै छी सर। '

..'दऽ दियौ एही नाटककारकेँ ओहि बरुक रचना पुरस्कार। '

..'मुदा हुनकासँ सीनियर...'

'ककरा तँ दब करबै, छोट होऽऽ की पैघ। ..'

'कवि-
सम्मेलन बन्न रऽ जयबाक चाही। लोक कहैत न छैक एहिकालमे। ... हो
पबाक चाही तँ टाका झटबियौ ना। ... मैथिली अकादमी.. कवि-

सम्मेलनक नामपर पाँच हजार गछलक मुदा देलक दुइये हजार। बाँकी कऽ सँ तँहिसँ घाटा लागि गेल छल। .. छपलाहा किताब सभमे दीमक लागल छै..। "

.. नहि रामु यौ, यात्रीजी एकर स्थापना कऽ लागि गेलाह। आइयो हुनक नाम छापा टांगल छनि मुदा संस्थापकक दावेदार कैक गोटे भऽ गेलाह...

२

'गोविन्दगोष्ठी'

<u>बाति लागल टाटपर, सूतल छी खाटपर</u>

मैथिली अकादमीक दलानपर। डाह नेह फगुआ गाबि रहल छह। दूनू टा रायबहादुरमालाम अपन परामर्शीयकेँ रायबहादुर बना देलकैह आ कहाँ देन गप्पसपसँ सरस्टा पाथीक सम्पादन करा रहल अछि (अशोक, नारायण जियाग्री आ माहन रामबाबूजकेँ लक्ष्य कऽ)।

<u>गारा काल</u>

'एहन सन प्रयाग साहित्य अकादमी सेहो कयलक जे जकरा हारल रहैक सेहो परामर्शदातृ समितिक सदस्य बनि सकैत छथि। .. पटनाम खूब कचनम कूट होइत। लेखक संघकेँ सम्मानक टाटक नहि करय पड़ैक। .. मैथिली लेखक संघ.. खाली अभिनन्दन-

नहृन, न कोना स्पहृन आ न कोना गर्जन। मात्र कलहंग जकाँ अश्गनक अन ध्य-नादन। "

<u>गोलैसी- 'अर्थात्'</u>

जाहि आलोचनाक याथीकँ लोकोक्तिक वैसाखी नहि चला सकल, जाहि आ लोचनाकँ 'अखियासल ', 'वसाहल ', 'रजानल ' (नमानहु मा 'नमध'क अर्द्ध- समालोचनाक याथी सए) नहि रजा सकल गकना गोलैसीक प्रतिमान टा मानल जा सकैछ न!

सीती समीक्षा

'नमध'जी डाग्ऽ जायव जनुनी अछि, डा असक छथि... रानह्वाजजीक ल खनीकँ सक्रिय कनवा लल यंवलीटना माविल लवऽ लल घंटाजाती कयन अशोक आ गानानहु नियोगी नविकना मालिकसँ नहाना कऽ नहल छला ह मुद्दा मुंशी नामलोचन कहि दलथिन ज एक वन दलियनि *(माहन रानह्वा जकँ प्रवोध सम्मान वयन समितिम नहिगा प्रवोध सम्मान लवा/ दवाकँ लक्ष कनेगा)* गँ डग्हाल मचि गेल छल आव दवनि गँ मिथिला दर्शन लाककँ नहि कना सकवैक। .. जीनकान्दक जागीना आ अमनक निनहाक मिश्कन हायग , रीमनाथक गुलगुल्ला आ नामदनक नाङ्गप्रातछक लीला हायग आ हायग यन्ना-ङ्गह्विना-नीना- सुशीला आ नीधाक संकान.. मन्त्रश्वनजीक वाँहि यकतल- रुनव- रूलायव। मुद्दा सख- सरुन्दा नहि युनल। .. नन ङ्गष्ठ लग गेलहुँ.. मुद्दा डा गँ आन किदन नि

कललाह। ... हुनका हीना-
यन्नासँ हुनसगिछ नहि। .. ओ अग्निपुष्प थिक, एकरासँ शृंगार करू.. कुश्ल, सुकान्त आ साकरानहु.. ओ सभ समलैंगिक छथि.. विदिगजी.... ओ गाँ स्वयं नसिया छथि। प्रवासीजी संग संध्यावंदन करताह, Oकुनाहुन संग युगलवंदी करताह...'।

याहुन ओहुकान्त मा.. माजी नीरहु.. गान नयालक उयनाष्ट्रयगिसँ साम सा म ज्ञउल.. यं. यागानहु मा.. वैद्यनाथ मिश्र, गणेश मा.. हमन मान-मर्दन करैत छथि..

वड्डा Oकुनक नगृहम सुरहुनाथ, कदान कानन, रमश विचिआहुन... हुन अजित (आजाद) वाजय लगलाह-
.. जाS हाहु गाहिसँ एस.एम.एस. कS एहि सनकानक ओहिना मदति कनियनि जना नाजमाहुन मा आ प्रमशंकर सिंहकँ एस.एम.एस. क वलय न सनकानक दर्जा देत नहलियनि।

३

'कनिया कक्काक कानामिन'

<u>वृद्धिक वखानीक नगीकरण</u>

मात्र दु लोग (रानह्वाज-नमण) याँजिक लखक छाति कS, कारण ओ मैथिलीक यैथिलॉजिस्ट लगीम अवैत छथि।

<u>'लीव हुन मिलशन'सँ जनमल सुनन नना</u>

यटनाक विस्थाप समितिक विषयियडी यी.आन.डा. साहित्यकान ओहु समा चाहम शामिल ह्ऽ नयाली साहित्यकान-
समाज संग गहुन न नाजनीति कयलनि ज ज्ञुब्ब ह्ऽ डा लाकनि वटृआम आनल 'ननु'
(नयाली नूपया) सहयाग नाशि डाहिना आयस अयना संगे लऽ गेलाह
।

'सनकान'क लिंग यनीक्षण

मैथिलक एक यन्नूषनश धानीकँ अयन 'सनकान'
(विनाद कुमान मा कँ लक्ष्य कनैत) वनौलह मुदा एक्कोटा काज डा यन्नूषनला कऽ सकलथून। कहिया आचार्य अनिष्ठनमीक वहिकिननी वनि दिन काटल नि गँ आव एकटा संघम ड्रायदी वनि सौरगथनी वनल छथून।

व्यंग्य लिखवाक व्याग

आचार्य अनिष्ठनमीक चर्च एगहू हल अछि।

लूटन... आचार्य अनिष्ठनमी (वद्ध नाथ मिश्र 'अमन') क दनवानी वनि मंच सरक गिनयष्ठन कयलह। ...

कानाम नना, नगनम सान

'ऊॅ गोलैसिय न छै हो ज यूनना सनकान 0कैग-
0कैग सप्फा नूयी गाछसँ तुवि कऽ नीचाँ खसि यडल मुदा हद नहि खालल कआ आव दखह ज ननका सनकान वैह धून गावि नहल अछि।

पुनस्थान निस्थानक रुलारुल

पाताना चूटकी लैत बजलाह-

'अहाँ ताकन साहेबसँ पाथी निर्माण करबै आ मिश्रटोलाक श्रीमान् आ डा नकन डाक्टरजीक सर्वस्व स्वीकार नहि करबैक तँ गाछसँ सब नीच मुँह कि खसैत ठीक स काना बूझबै।'...

दीक्षा-

बालकक अभ्यासक संगहि 'ॐ नमः, ॐ गुरु'क सम्बोधनसँ मिश्रजी आ डाक्टरजीकेँ प्रसन्न करबाक प्रयास करथु...

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

२.२०. 𑒪𑒏𑓂𑒭𑓂𑒧𑒝 𑒗𑒰 𑒮𑒰𑒑𑒩- 𑒐𑒰𑒿𑒙𑒲 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲𑒏 𑒬𑒩𑒠𑒳 𑒖𑒲



𑒪𑒏𑓂𑒭𑓂𑒧𑒝 𑒗𑒰 𑒮𑒰𑒑𑒩

𑒐𑒰𑒿𑒙𑒲 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲𑒏 𑒬𑒩𑒠𑒳 𑒖𑒲

𑒂𑒃 𑒯𑒧 𑒋𑒯𑒢 𑒅𑒗𑒩𑒾𑒙𑒧𑒺 𑒣𑒛𑓃𑒪 𑒕𑒲 𑒖𑒺 𑒏𑒲 𑒏𑒯𑒴। 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒬𑓂𑒩𑒲 𑒬𑒩𑒠𑒱𑓀𑒠𑒳 𑒔𑒾𑒡𑒩𑒲𑒖𑒲𑒣𑒩 𑒪𑒱𑒐𑒥𑒰𑒏 𑒁𑒕𑒱। 𑒏𑒲 𑒪𑒱𑒐𑒥𑒰𑒏 𑒁𑒕𑒱 𑒮𑒺 𑒧𑒼𑒢𑒧𑒺 𑒮𑒩𑒱𑒨𑒰 𑒢𑒻 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒋𑒯𑒢 𑒮𑒢 𑒮𑓂𑒟𑒱𑒞𑒱 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒋𑒯𑒱𑒮𑒿 𑒣𑒯𑒱𑒢𑒺 𑒏𑒱𑒢𑒏𑒰𑒣𑒩 𑒪𑒱𑒐𑒥𑒰𑒏 𑒥𑒺𑒩𑒧𑒺 𑒢𑒻 𑒦𑒺𑒪 𑒕𑒪। 𑒯𑒱𑒢𑒏𑒰𑒣𑒩 𑒋𑒢𑒰 𑒏𑒱𑒌 𑒦𑓄 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱? 𑒏𑒰𑒩𑒝 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒖𑒢𑒻𑒞 𑒄 𑒦𑓄 𑒮𑒏𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒺 𑒬𑒩𑒠𑒳 𑒖𑒲𑒮𑒿 𑒯𑒧𑒩 𑒖𑒰𑒢 𑒣𑒯𑒱𑒔𑒰𑒢 𑒏𑒯𑒱𑒨𑒰 𑒦𑒺𑒪, 𑒏𑒼𑒢𑒰 𑒦𑒺𑒪 𑒂 𑒏𑒱𑒌 𑒦𑒺𑒪 𑒮𑒺 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒮𑓂𑒧𑒩𑒝 𑒬𑒏𑓂𑒞𑒱𑒧𑒺 𑒏𑓂𑒩𑒧𑒫𑒰𑒩 𑒮𑒻𑓀𑒞𑒪 𑒢𑒻 𑒁𑒕𑒱। 𑒞𑒿 𑒏𑒲 𑒯𑒧 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰𑒣𑒩 𑒪𑒱𑒐𑒥 𑒕𑒼𑒛𑓃𑒱 𑒠𑒺𑒥? 𑒢𑒻, 𑒯𑒧 𑒪𑒱𑒐𑒥। 𑒪𑒱𑒐𑒥𑒰𑒏 𑒔𑒺𑒭𑓂𑒙𑒰 𑒏𑒩𑒥। 𑒖𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒯𑒺𑒞 𑒞𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒪𑒱𑒐𑒥। 𑒖𑒺𑒢𑒰-𑒖𑒺𑒢𑒰 𑒖𑒺-𑒖𑒺 𑒤𑒳𑒩𑒞 𑒮𑒺-𑒮𑒺 𑒪𑒱𑒐𑒥।

𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲𑒧𑒺 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒋𑒯𑒢 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒏𑒰𑒩 𑒮𑒦 𑒕𑒟𑒱 𑒖𑒺 𑒥𑒰𑒥𑒰 𑒥𑒪 𑒤𑒾𑒠𑒰𑒩𑒲 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱। 𑒬𑒩𑒠𑒳 𑒖𑒲 𑒮𑒺 𑒢𑒻 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱। 𑒄 𑒥𑒰𑒞 𑒮𑒞𑓂𑒨 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒺 𑒯𑒱𑒢𑒏𑒰 𑒬𑒩𑒲𑒩𑒏 𑒩𑒏𑓂𑒞 𑒢𑒪𑒱𑒏𑒰𑒧𑒺 𑒁𑒣𑒢 𑒣𑒱𑒞𑒰 𑒮𑓂𑒫 𑒮𑒳𑒡𑒰𑓀𑒮𑒳 𑒬𑒺𑒐𑒩 𑒔𑒾𑒡𑒩𑒲 𑒖𑒲𑒏 𑒪𑒯𑒳 𑒥𑒯𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒮𑒧𑓂𑒣𑒰𑒠𑒏 𑒖𑒲𑒏 𑒢𑒰𑒧𑒮𑒿 𑒫𑒱𑒐𑓂𑒨𑒰𑒞 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰𑒏

महान व्यक्तित्व शेखर जी मिथिला मिहिर, पटनाक सम्पादनसँ आधुनिक मैथिली साहित्यक वर्तनीक एकटा एहन डोर पारि देलनि जे मैथिली साहित्यक मानक वर्तनी बनि गेल। आ मैथिली साहित्यक रचना ताहि स्वरूपमे आइ धरि दऽ रहल अछि। से नहिया दऽ सकैत छल जँ हुनका एकमात्र पुत्र रत्न शरद जी सन उत्तराधिकारी नै भेल रहैत। शरद जीक जीवनक सबसँ पैघ उपलब्धि ई छनि जे अपन पिताक अधिकांश साहित्यिक रचनाक पोथी प्रकाशित कएलनि। एखनो ताकि-हेर कइए रहलाह अछि। एहि पोथी सबकेँ एलाक बाद मैथिलीक साहित्यकार सभ केँ शेखर जीक बहुआयामी प्रतिभाक बारे विशेष परिचय भेलनि। एहि कृत्य लेल शरदजीकेँ जँ आधुनिक मिथिलाक श्रवण कुमार कहल जाय तँ कोनो विस्मय नै हेबाक चाही।

मात्र ताव नै। पिताक एहन आज्ञाकारी पुत हैब दुर्लभ नै तँ मुश्किल जरूर अछि। राजनीति शास्त्रसँ एम.ए कएलनि। सचिवालयमे सरकारी नोकरी दऽ रहल छलनि। पिता कहलखिन जे ई नोकरी नै करु। सत्य नै बाजि सकब। निर्भीक बनल नै रहि हैत। हिन्दी लिखय-बाजय पड़त। नै कएलनि से नोकरी। अपन हृदयपर हाथ राखि सब गोटे सोचु जे के गोटे छी हम सब जे मैथिली लेल अपन जीवन के दाँवपर लगेने छी। शरद जी से लगेने छथि। मिथिला-मिहिर, पटनाक सम्पादन विभागमे अपन योगदान देलनि। अपन जीवन-यापन लेल अन्य दरमाहाकेँ अपन बाइनि बूझि खूब मान लगा। कऽ सम्पादन विभागमे पहिने प्रशिक्षण आ पछाति नोकरी करय लगलाह से ताधरि कएलनि जा धरि इण्डियन नेशन प्रेस चलैत

रहल। हमर परिचय शरद जीसँ पहिलेसँ अछि। हुनु लोकक बीच खूब प्रभावशाली होइत रहैत छल।

पिता हुनक दरभंगाक ओ अपन मौरूसी जमीन-जायदाद छलनि तकरा बेचि-बिकनि कs पटनामे घर बनौलनि। पिताक देहांत क बाद शरद जी अपन घरक मुखिया भेलाह। हुनका एकमात्र पुत्र आयुष्मान राजशेखर चौधरी एखन बंगलुरुमे कार्यरत छथि। चारि टा पुत्रीमे छोटकी एखन उच्च शिक्षा ग्रहण कs रहल छनि पटनामे। लगभग सब बेटी आ पत्नी रहैत छथिन। एकटा बेटीक विवाह मैथिलीक सुनामधन्य गजलकार श्री जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल जीक पुत्रसँ भेल छनि। दोसर बेटीक विवाह मैथिलीक दिवंगत कवि सुकांत सोमक बालकसँ भेल छनि। सब लोक सुखी आ सम्पन्न छथिन। आमदनीक जरिया घरक किराया आ लेखन प्रकाशनसँ प्राप्त आय छनि। न बड सुखी आ न बहुत दैन्य स्थिति छनि। अपन सब आवश्यक खर्च ठामे जाइत छनि। शरीर आ स्वास्थ्यसँ सब दिन कमजोर रहैत आयल छथि। तीन बेर हृदयघात आघात भेल छनि। अस्पतालमे भर्ती हुअए पड़ल छनि। मुदा,अपन आत्मबल आ जीजिविषाक कारणे सब बेर स्वस्थ भs कs घर आबि जाइत छथि। बड़ साहसी लोक छथि शरद जी।

नब्बेक दशकमे हम अपन कम्पनीक काजसँ पटना गेल रही। होटलमे रुकल रही। शरदजीकें हुनकर खबरि कलियनि जे भेंट करय चाहैत छी। हमरा कहलनि जे ४ बजे जमाल रोडमे श्री विनोद कुमार झा जीक (देसकोस वाला) कानियनक दुकानमे आबि जाउ।

हम समयपर चल गेल रही। विनोद जीसँ (कलकत्तासँ परिचय रहय) गप-सप करिते रही कि देखैत छी दु गोटे आबि गेलाह। दुनू हमरा लेल अनजान। विनोद जी परिचय करेलनि। उज्जर दप-दप केश आ मूनकूट पाकल दाढ़ी वाला लक-लक पातर शरदिन्दु जी रहथि। संगमे रहथिन युवा पत्रकार अजित आजाद। गोर-नार,शुभ्र- शरीर आ आकर्षक व्यक्तित्व वला छनि। परिचय पाएक बाद शरदिन्दु जी हमरा (आग्रह आ अधिकारक मुद्रामे) कहलनि जे अजितकेँ कतहु नीक नोकरी लगा दियनु। हम अनुभव कैल जे शरदिन्दु जी मैथिलीक नव लोक लेल कतेक उपकारी छथि। आ हुनक ओ स्नेह एखनो बदस्तूर कायम अछि।

श्री उदय चन्द्र झा विनोदजीकेँ अपन पोथी प्रकाशित करबाक रहनि। पाइक अभाव रहनि। शरदिन्दु जी लग गेलाह। शरदिन्दु जी उधारी पोथी छापि देलखिन। एखनो धरि हिसाब नै फरियेलनि अछि। श्री कदान कानन कानो मुसीबतमे फँसि गेल छलाह। शरदिन्दुजीकेँ पता लगलनि। तुरत श्री मंत्रेश्वर झाजीकेँ लऽ जा कऽ न्यायाधीश श्री मति मृदुला मिश्राजीसँ पैरवी करबेलनि। मामिला रफा-दफा भेल। कदानजीकेँ राहत भेटलनि। एहि प्रकारेँ शरदिन्दुजी मैथिलीक बहुतो साहित्यकारककेँ उपकार करैत रहलाह अछि। मुदा, हुनक हस्तरेखामे यश नै लिखल छनि। हुनका लग एखन करीब १७० टा साहित्यकारक लिस्ट छनि जिनका लग हिनक पाइ बाँकी छनि। एक दिन कहैत छलाह जे हम एकटा पत्रिका निकालब। नाम रखबै पोल-खोल। सबहक नाम छापि देबैक। आइ जे सब गोटे अपनाकेँ मैथिलीक महन्थ कहैत छथि से सब कतय रहऽ क रहलाह? मुदा, से

शरदु जी करताह नै। कियैक त हुनकर हृदय जहिना उदार छनि तहिना साफ सेहो छनि।

शरदुजीकँ हम मूलतः पत्रकार मानैत छियनि। से कोनो छुट्टी-गुट्टी वाला पत्रकार नै। एकदमसँ निष्पक्ष,निर्भीक,सचेत आ प्रखर छवि वाला पत्रकार। जे किओ हिनक संपादनमे प्रकाशित समय-साल, पूर्वोत्तर मैथिल (गुवाहाटी), चेतना समिति, पटनाक स्मारिका देखने आ पढ़ने हेता से जनैत हेता हिनक सम्पादनक वैशिष्ट्य। हिनक सम्पादकीय कर धार। हिनक मानक मैथिलीक छटा। रचनाक संरचना। सामयिक टिप्पणी ओ राजशेखरक नामसँ टिपैत रहथि। मुद्दा राजनैतिक हो, मैथिलीक विकासक हो, गाम-घरक खेतीक समस्या हो, शहरक विद्रूपता हो शरदु जीक बेबाक लेखनीसँ सब गोट परिचित छीहो। हिनक मारुख कटाउ सम्फाक गलियारीमे गुँजैत रहल अछि। शरदु जी कोनो राजनैतिक दलक लोक नै छथि। एकटा तटस्थ विचारधाराक हस्ती छथि। हुनका किओ अपन सिद्धांतसँ झुका नै सकैत छथि। आ ने ओ किनको लादल विचारसँ प्रभावित होबऽ वाला जीव छथि। यदि शरदु जीक स्वभावमे कनियों लचीलापन रहितनि त आइ ओ पटनामे मैथिलीक धार भा रहितथि। मैथिलीक साहित्यकार सभक दरबार होइत हिनका लग। मैथिली सभी संस्थाक अधिकारी सभ हिनक चारण रहितनि। चेतना समिति, पटनामे जे चाहितथि से करबा सकैत रहथि। घर-बाहर पत्रिकाक सम्पादक बनि गेल रहितथि। कतेक टा सम्मान आ प्रशस्ति पत्र घरमे जमा हएल रहितनि। मुदा, से सब किछु नै भेलनि। पटनाक हनुमान जी मंदिर लग एकटा साधारण पाथिक दोकान छनि। ताहि ठाम बैसल रहैत

छथि। मैथिलीक गतिविधिकेँ अकानैत रहैत छथि। पटनाक साहित्यकारक नजरिमे उपेक्षित बनल एकात भेल नहि रहल छथि शरदु जी।

शरदु जी बनब सभक वशक बात नै अछि। समकालीन साहित्यमे अपन व्यंग्य विधाक मौलिक पोथी सभ लिखि एकटा स्तरीय साहित्यकारक श्रेणीमे हिनक नाम उल्लेखनीय रहल अछि। कनियाँ काकाक कोरामिन, ओँ हम जनितहुँ, सोझाक्कारक दर्पणमे आदि-आदि हिनक पोथी प्रकाशित छनि। सभटा पढ़बाक प्रयोजन अछि, हिनक लेखनक विशेषता के जनबाक लेल। हिनक शैली, शिल्प आ बिम्ब-विधान हिनक अपन छनि। नजरी-सजरी आ हल्लुक-उठान बात नै लिखलनि कहियो। जे लिखलनि जेना लिखलनि से समय सापेक्ष लिखलनि। समाजोपयोगी लिखलनि। अपन सम्पादनमे दु टा पोथी प्रकाशित कयलनि जे बहुत महत्वपूर्ण काज भेल अछि। एक तँ पत्रकारिताक दशा आ दिशा जे लोक सेवा आयोगक परीक्षा लेल सहयोगी पोथी अछि। दोसर मिथिलाक ज्वलन्त समस्या मिथिला राज्य लेल पक्ष आ विपक्षमे भेल परिचर्चाक संकलन। मिथिला राज्य अभियानी लोकनि लेल मीलक पाथर अछि।

हम अधिकारपूर्वक ई बात कहबा ले बाध्य भेल छी जे शरदु जी कोनो पुरस्कार आ सम्मान लेल कहियो तरसम नै रहलाह। सब दिन मैथिलीक सेवामे अपस्याँत रहैत छथि। संघीय लोक सेवा आयोग आ बिहार लोक सेवा आयोगक परीक्षार्थी सभ लेल चयनित पोथी सभक जोगार करबामे दिन राति लागल रहैत छथि। एक दिन

रातिक १२ बजे हमरा फोन कएलनि जे मणिपद्म जीक लोरिक विजय बजारमे उपलब्ध नै अछि। विद्यार्थी सभ परेशान आ चिन्तित छथि। कोर्समे लागल छैक। एहि पोथिक प्रकाशक कलकत्ताक मिथिला सांस्कृतिक परिषद अछि। अहाँक मदति चाही। तखन हम अपना लग जे एक प्रति बाँचल अछि तकर जेरॉक्स करा कऽ हम विद्यार्थी सभकेँ वितरित करए रहल छी। ओ सहीमे अपन खर्च कऽ कऽ निःशुल्क विद्यार्थी सभकेँ बँटैत छलथि। एना हम स्व किशोरीकान्त मिश्रजीकेँ आग्रह कए पोथिक दोसर संस्करण प्रकाशित करबाए दोसर सालक लेल उपलब्ध करबा देने रहियनि। माटिपरक काज करैत छथि शरद जी। एक दिन कहलनि जे हमरा एहिसँ पैघ उपलब्धि आर की हएत जे हमरा सहयोगसँ देश विदेशमे रहनिहार आइ.ए.एस, आइ.पी.एस आ आइ.आर.एस करीब १७०सँ ऊपर। ओ सभ फोनपर हमरा सर कहैत छथि आ हमर हाल समाचार पुछैत छथि। बी.डी.ओ, सी.ओ, कलक्टर आ एस.पी तँ बूझू जे हमर दोसा-दोस बनल रहैत छथि। के छथि मैथिलीमे एहन कलामी ओ हमरा देखाउ तँ।

एकटा आर बात कहि कऽ हम विराम लेब। शरद जी पराकाष्ठाक ईमानदार लोक छथि। एक बेर पूर्वोत्तर मैथिल पत्रिकाक बिक्री मूल्य सब मिला कऽ हम हुनका ७०० रुपैयाक चेक कोरियरसँ पठेलियनि। हुनका खट गेलनि ओ निस्पृही रुपैयाँ हम निर्धन भऽ गेल रही कियैक तँ पारनीमे हुनक पुत्र राजा शेखर दस्तखत कर छल। हम समय-समयपर अपन बैंक बैलेंस मिलबैत रहैत छलहुँ। हमर बैलेंस घटि नै रहल छल। जहन छह मास बीत गेलै तखन

हम सभ कऽ हुनका पुछलियनि जे एक हजार वाला बैंकमे जमा नै करियौ तँ हुनकर हमरा कहैत छथि जे प्रमकांत चौधरी जी हमरासँ माँगब नै कहलनि तँ हम काका ओ किये जमा करितहुँ। एहन अहाँ लोक मिथिलामे?

अंतमे हम अपन अनुज गुप्त शरदेन्दु जीक उत्तम स्वास्थ्य लेल माँ मैथिलीसँ मंगल कामना करैत छियनि आ विदेहक समस्त टीमकेँ हार्दिक आभार व्यक्त करैत छी जे मैथिलीक एकांत साधक श्री शरदिन्दु चौधरी जीपर विशेषांक बहार कऽ अहाँ लोकनि मैथिलीक बड़ पैघ उपकार कैल अछि।

-संपर्क-लक्ष्मण झा सागर, कोलकाता/ १३.११.२०२२ 9903879117

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.२१.जगदानन्द झा 'मनु'- सत्य देखल



जगदानन्द झा 'मनु'

सत्य देखल

श्री शरदिन्दु चौधरी जीक जीवन एकटा पत्रकारिता वा साहित्यकार विद्यार्थिक लेल मीलक पाथर साबित भय सकैत अछि। श्री शरदिन्दु चौधरी एक गोट श्रेष्ठ पत्रकार, समृद्ध लेखक आ साहित्यकार तँ छथिए संग संग ओ छथि एकटा कोमल करेजाक स्वामी। जखन ओ देखैत छथि समाजमे धर्म आ राजनीतिकेँ आड़मे लोक केहन आ कोनो व्यापार कय रहल अछि तँ ओ दुख भेटल आश्चर्य संग तमसा सेहो जाइत छथि आ ई सब हुनक मोनक भाव हुनक लेखनीसँ साक्षात्कार होइत अछि।

हुनक भाषा आ भाषाशैली चाहे ओ पत्रकारक रूप हुअथि ग्रंथकार वा साहित्यकार रूप सहज आ मधुर अछि। हमरा एहन जीवन भरि मिथिला मैथिलीसँ दूर नहि रहल विद्यार्थिकेँ करेजामे हुनक एक एकटा आखर मधु जकाँ मी0 घोलैत पसरि जाइत अछि। ओ जाए जे कहै चाहैत छथि ओ कियो सहजतासँ बूझि सकैत अछि।

ओहि गुणक कारणे भय सकैत अछि हुनक बिताओल तीन दशकसँ बेसी समय जे पत्रकारिताक मात्र सेवटा नहि रहल बरन ओ मैथिली पत्रकारिताक लेल एकटा साक्षात्कार रहल।

रहल जस अपजसक गप्प तँ ई अपन हाथमे नहि छैक। हम सभ ओनाहितो बुझै छीऐक जे मैथिली साहित्यमे गुटसँ बेसी गालबजाओन, गुटबंदी आ तँ हमरा ई हम ताना देबौक चलन बेसी छैक। मिथिला मैथिलीक समाजक एहनसन रंग देख कय शरदिन्दु चौधरीक मुँहसँ निकलल हाएत "बड़ अजगुत देखल"। शरदिन्दु चौधरीक पोथी "बड़ अजगुत देखल" कहै लेल ई व्यंग्य संग्रह अछि मुदा वास्तवमे ई कामदेवक बाण सनक अछि। जाहि बाणक घावसँ शोणित बहैत किओ नहि देखै छैक मुदा मनकेँ तार तार कय दै छैक। आओन ईहे हाल हाएत अछि एकटा सुधि आ निष्पक्ष पाठकक जखन ओ शरदिन्दु चौधरी जीक व्यंग्य संग्रह "बड़ अजगुत देखल" पढ़ैत छथि। असलमे कही तँ "बड़ अजगुत देखल" पढ़ला बाद बुझना जाइत अछि जेना सत्य देखने होइ वा सत्यसँ साक्षात्कार भेल हुए। लेखक स्वयं पोथीक भूमिका "मुक्ति पायबाक प्रयत्न"मे कहैत छथि, "ई न हास्य अछि, नें व्यंग्य अछि, हमर कहबाक एकटा ढंग अछि।"

आ जँ हम कही तँ, "ई न हास्य अछि, नें व्यंग्य अछि, शरदिन्दु चौधरीक कहबाक एकटा ढंग अछि। जाहिमे देखाइत छैक सभकेँ अपन कर्तव्य आ काज मुदा पनबट्ट जकाँ सभकिया आँखि कान केने अपन बंद अछि।

एही व्यंग संग्रहकेँ तरकशमे कुल बीस गोट व्यंग रूपी तीर राखल अछि, जे समाजक अगुआ, नेता, मठाधीश, संगठाधीश, सभक कृतकेँ देखार कय रहल अछि आ ओहिमेँ शरदिन्दु चौधरी जीक कहैक ढंग आ लेखनीक जतेक प्रसंशा कएल जाए से कम।

पहील व्यंग, "जनहित"मे कोना कनिया कक्का बाढ़ि सहाय काजमे आयल करोड़ रुपया संतोष साह द्वारा गबन कय लेलाक बादमे गमसाएल लोकसभकेँ कोना शाँत नहि कएला, संतोष साह कुकर्मकेँ संयोग अपन अपन धनकेँ रक्षैकेँ पूरा इन्तजाम कय लेला। आजुक समयमे सभटा ओहिना भय रहल छैक। तुहूँ खा हमहूँ खाइ छी, जनता जाए चूल्ही भाड़।

दोसर व्यंग "धन्यवाद ज्ञापन" कोना दुर्गा पूजाक उत्सव धूम धामसँ मनाओल गेल। रांगटा, ताँतिया, गरबा, बिहु, पहाड़ी नाच सहित दश दिवसक सांस्कृतिक कार्यक्रम बहुत नीकसँ प्रस्तुत कएल गेल। नहि प्रस्तुत भेल तँ मिथिला मैथिलीक गीत संगीत कला लोककथा आ सांस्कृतिक कोनो कार्यक्रम। सब कार्यकर्ता संयोजक आ कलाकार सभकेँ धन्यवाद ज्ञापन दै काल एकरा स्वीकार करैत कोना कनिया कक्काक गला अवरुद्ध भ गेलनि।

"माओवादक खोजमे" रक्षा: मिथिलाक बाढ़ि आ माओवादीक संकट आ सरकार द्वारा कोनो निदान नहि कय कोना शुद्ध माओवादी द क अपन इतिश्री बुझैत अछि। माओवादी सेहो की तँ पाँच सेर अनाज वा किछु सय टाका। एहि बहाने एहीठाम मिथिलाक धनी पनक लोकक मूल्य लगाओल गेल अछि। रक्षा: राबक सय,

अकल्पनीय आ विस्मयजनक। वास्तवमे शब्दहु चौधरी जीक करबाक ढंग गजबक अछि।

'की मथे छी।'

'मिथिला।'

'की बजै छी।'

'मैथिली।'

'स्कूल ?'

'नइँ।'

ई उत्कृष्ट संवाद थिक "की मथे छी ?"सँ गजबक। प्रत्येक वर्ख विद्यापति पर्वमे मिथिला मैथिली विकासक निमित्त काज आ उत्थान विभिन्न पाठकँ देखावैत "की मथे छी?" व्यंग्य व्यंग्य नहि स्पष्ट कऽ वास्तविक चित्रण अछि जकरा लेखक अपन शब्दमे कहि हुनका सबहक गालपर एकटा जोरगर थापड़ मारैत सूतल मिथिलावासीक आँखि खोलैक पुना प्रयास कएल छथि।

"दिव्य स्नानक प्राप्ति"मे स्फनयान सम्पादककँ कठिन कोनो काजक आसान शब्दमे लेखक सबहक सामने गद्य वाक्यमे सहल छथि। संग चिन्ता सहो। समाजमे स्त्रीकँ काना एकटा वस्तु बूझल जा रहल अछि। स्त्री सहो उठिमे खुस ए अपनाकँ वस्तु मानि, हुनक वस्तु नहि बनाय

ई जाइर तँ ऊर कोना बच्चाकेँ ईश्वर प्रदत्त अमृतसँ दूर राखि अपन एकटा नव प्रवृत्तिक निर्माण कए रहल छथि।

"दर्शन सुदर्शन"मे दुकान जकाँ मिथिला मैथिलीक संस्थान/ विद्यापति पर्वक संस्था, पुरस्कार वितरण, कवि सम्मेलनक वास्तविकताकेँ उजागर कएल गेल अछि। खास कए घटनाक रचना समितिक कार्य प्रणाली आ अवरुद्ध मिथिला मैथिलीक विकास कार्यकेँ कटाउ कोनो सम्पूर्ण व्यवस्थाकेँ नांगट कए देल अछि। शरदिन्दु चौधरी जीक शब्दमे एकटा निष्पक्ष आ निरगुट साहित्यकारक लेल" जाइत छी तँ जाउ, मुदा ई जानि लिअ जे कतबा लिखब, कतबा पढ़ब अहूँक वैह गति होएत जे विद्यापतिकेँ भेलन्हि। अहूँ ओहिना कोना कोनटामे मूँह नुकाने नुकायल रहब। नाम सभ अवश्य लेत, सपथ भरि अहाँक खायत, संकल्प अहींक नामपर लेत, मुदा करत बेर जे ओकरा मोन होयतैक। पढ़ाइत रहब तँ एहिना पढ़ाइत रहि जायब। "

"हम मैथिल छी" मे उजागर कर छथि देश सहित मिथिला आ खासकए मिथिलाक गामक बेरोजगारीक मार्मिक दृश्य। संग जाहि काजमे मैथिल सबसँ आँगा अछि ओकर स्थान करबैत छथि, आ ओ काज अछि राय देनाइ।

चुनावी मुद्दामे आजुक समयक राजनीति, चुनाव आ चुनाव व्यवस्था, नेता आ जनताक बीचक सम्बंध एक एक टाक खाँइचा छाना कए ओकर वास्तविकताकेँ देखार कएल गेल अछि। कोना नेता लोकनि भोटरकेँ रंगा बुझि ओकरा अपना पक्षमे करबा लेल जाति पातिक कूटनीति कए अपन लक्ष्य साधैमे निपुण छथि। ओतय जनता सदा

𑒂𑒥 𑒥𑒳𑒗𑒢𑒳𑒏 𑒫𑓂𑒨𑒰𑒣𑒰𑒩𑒏 𑒔𑒹𑒭𑓂𑒙𑒰𑒧𑒹 𑒪𑒰𑒑𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒖𑒰𑒞𑒱 𑒣𑒰𑒞𑒱𑒮𑒿 𑒅𑒣𑒩 𑒦 𑒖𑒲𑒫𑒢 𑒮𑓂𑒞𑒩𑒏 𑒥𑒰𑒞𑒣𑒩, 𑒥𑒰𑒞 𑒏𑒩𑒻𑒏 𑒪𑒹𑒪 𑒞𑒻𑒨𑒰𑒩 𑒦 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱।

𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒢𑒹𑒞𑒰𑒮𑒦 𑒏𑒰𑒖𑒏 𑒥𑒪𑒣𑒩 𑒢𑒯𑒱 𑒙𑒰𑒏𑒰𑒏 𑒥𑒪𑒣𑒩 𑒖𑒢𑒞𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒏𑒱𑒢𑒻𑒏 𑒔𑒹𑒭𑓂𑒙𑒰 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒣𑒰𑒩𑓂𑒙𑒲 𑒮𑒦𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒠𑒹𑒬 𑒏𑒰𑒩𑓂𑒨𑒰𑒪𑒨𑒧𑒹 𑒙𑒱𑒏𑒙𑒏 𑒥𑒱𑒏𑓂𑒩𑒲 𑒂 𑒍𑒏𑒩 𑒥𑒰𑒠 𑒁𑒮𑒤𑒪 𑒦𑒹𑒪𑒰𑒣𑒩 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒣𑒰𑒩𑓂𑒙𑒲𑒏 𑒁𑒠𑒪𑒰-𑒥𑒠𑒪𑒲 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒕𑒻𑒏।

𑒩𑒾𑒠𑒲 𑒠𑒰𑒯𑒲𑒏 𑒏𑒰𑒩𑒝𑒏 𑒮𑓀𑒑 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒅𑒠𑓂𑒨𑒼𑒑 𑒡𑓀𑒡𑒰𑒏 𑒢𑒯𑒱 𑒩𑒯𑒢𑒹 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰 𑒮𑒧𑒰𑒖𑒏 𑒨𑒳𑒫𑒰𑒬𑒏𑓂𑒞𑒱 𑒩𑒼𑒖𑒑𑒰𑒩𑒏 𑒐𑒼𑒖𑒧𑒹 𑒣𑓀𑒖𑒰𑒥 𑒯𑒩𑒱𑒨𑒰𑒝𑒰 𑒍𑒑𑒩𑒢 𑒕𑒟𑒱, 𑒂 𑒑𑒰𑒧𑒧𑒹 𑒥𑒔𑒪 𑒪𑒼𑒑 𑒂𑒥𑒨𑒫𑒪𑒰 𑒧𑒢𑒲𑒂𑒩𑓂𑒛𑒩 𑒣𑒩 𑒋𑒏𑒰𑒡𑓂𑒨𑒰𑒢 𑒪𑒑𑒾𑒢𑒹 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱। 𑒏𑒼𑒢 𑒧𑒴𑒿𑒯 𑒢𑒹𑒞𑒰𑒮𑒦 𑒍𑒯𑒱 𑒧𑒴𑒪𑒩𑒴𑒣 𑒂𑒫𑒬𑓂𑒨𑒏𑒞𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒢𑒯𑒱 𑒠𑒹𑒐 𑒣𑒥𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱। 𑒢𑒹𑒞𑒰 𑒏𑒲 𑒢𑒹𑒞𑒰 𑒖𑒢𑒞𑒰 𑒮𑒥 𑒁𑒣𑒢 𑒁𑒣𑒢 𑒫𑒰𑒮𑓂𑒞𑒫𑒱𑒏𑒞𑒰 𑒫 𑒧𑒴𑒪𑒩𑒴𑒣 𑒮𑒧𑒮𑓂𑒨𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒢𑒯𑒱 𑒠𑒹𑒐𑒱 𑒖𑒰𑒞𑒱𑒣𑒰𑒞𑒱𑒏𑒹𑒿 𑒩𑒰𑒖𑒢𑒲𑒞𑒱𑒧𑒹 𑒍𑒗𑒩𑒰 𑒁𑒣𑒢 𑒫𑒱𑒏𑒰𑒮𑒮𑒿 𑒠𑒴𑒩 𑒣𑒛𑓃𑒪 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒕𑒟𑒱। 𑒩𑒰𑒖𑒢𑒲𑒞𑒱 𑒣𑒰𑒩𑓂𑒙𑒲𑒧𑒹 𑒔𑒰𑒢 𑒥𑒢𑒰𑒪𑒏 𑒁𑒡𑒱𑒏𑒰𑒩 𑒂 𑒧𑒞𑒠𑒰𑒞𑒰𑒏 𑒍𑒯𑒰𑒏 𑒢𑒲𑒏𑒮𑒿 𑒪𑒹𑒐𑒏 𑒅𑒖𑒰𑒑𑒩 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱 𑒮 𑒫𑒰𑒮𑓂𑒞𑒫𑒱𑒏𑒞𑒰𑒮𑒿 𑒮𑒰𑒏𑓂𑒭𑒰𑒞𑓂𑒏𑒰𑒩 𑒏𑒩𑒥𑒻𑒞, 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒮𑒦𑒏𑒹𑒿 𑒁𑒣𑒢 𑒩𑒰𑒖𑒢𑒲𑒞𑒱 𑒂 𑒮𑒧𑒰𑒖𑒲𑒏 𑒫𑓂𑒨𑒫𑒮𑓂𑒟𑒰𑒣𑒩 𑒋𑒏𑒥𑒹𑒩 𑒤𑒹𑒩𑒮𑒿 𑒮𑒼𑒔𑒻 𑒪𑒹𑒪 𑒫𑒱𑒫𑒬 𑒏𑒩𑒨 𑒔𑒰𑒯𑒻𑒞।

"𑒯𑒧 𑒏𑒲 𑒏𑒩𑒥𑒻 𑒮𑒩𑒏𑒰𑒩" 𑒧𑒹 𑒖𑒢𑒞𑒰𑒏 𑒮𑓀𑒑 𑒮𑓀𑒑 𑒫𑓂𑒨𑒰𑒣𑒰𑒩𑒲 𑒫𑒩𑓂𑒑𑒏 𑒫𑓂𑒨𑒟𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒢𑒲𑒏𑒮𑒿 𑒅𑒖𑒰𑒑𑒩 𑒏𑒋𑒪 𑒑𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒫𑓂𑒨𑒰𑒣𑒰𑒩𑒲 𑒮𑒦 𑒧𑒯𑓀𑒑𑒰𑒃 𑒮𑓀𑒑 𑒯𑒰𑒙𑒏 𑒔𑒳𑓀𑒑𑒲, 𑒥𑒰𑒖𑒰𑒩𑒏 𑒩𑓀𑒑𑒠𑒰𑒩𑒲 𑒮𑓀𑒑 𑒮𑓀𑒑 𑒔𑒳𑒢𑒰𑒫 𑒙𑒻𑒏𑓂𑒮 𑒮𑒯𑒨 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒔𑒳𑒢𑒰𑒫 𑒙𑒻𑒏𑓂𑒮 𑒢𑒯𑒱 𑒠𑒹𑒪𑒰𑒣𑒩 𑒖𑒰𑒢𑒧𑒰𑒪𑒏𑒹𑒿 𑒮

हानि, आ ओ्ी ककनासँ छूपल नहि छैक। उयनसँ ग्राहकक चिखनायन चिखनाक मांग।

समाजक सव यऊक अध्यनस्थायन ओाक सटीक आ सूक्ष्म ध्यान दनाओ्ी ओ्ीशनदिहू वीधनी जीक कलमकँ अलाव आन OIम नहि दखा सकेंा अछि डाहा ओाक सहज आ ग्रंथक नुयम।

मिथिलाक घुनान वैसल लाकसए सदा आओ् काह्नि आर्थिक आ नाजनीगिक व्यनस्थासँ व्यथिा एय ओहन गय्यसय्य कनो छथि। मिथिलाक आमलाकँ ओखन धनि चूनानक गनमी डाोक नहि गनमा सकलै ज डा घुन छाेि चूनानक मैदानम डािन, समाजक विकास लल काज क सकै। डा गँ यवास नर्षसँ चूनान आ डाकन कार्यक्रमक आदि ए चूकल अछि। काना नाा आवैा हूनका लल सव ओकसमान जरून नागनाथ, गहून साँयनाथ। आ ओहि नागनाथ साँयनाथकँ मगाउा आ गुलनाझक अध्ययन कनो हम सवशनदिहू जीक ओहून हीनाक चमककँ नहि दखो हूनका डा मान सम्मान नहि द यओलिअनि जिनकन डा हकदान छथि। ओ्ीह नितम्बना अछि मिथिला मैथिलीक साहित्य, समाज आ नाजनीगिक, नागनाज सांयनाजम डामनाओल, डाहिसँ वाहन निकैल आगू दखेक आनश्यकाा हमना सवकँ अछि।

अयन मंगव editorial.staff.videha@gmail.com **यन यठाउ।**

२.२२.श्रीधरम- शरदिन्दु कुमार चौधरीक साहित्य : 'स्वारथ लागि करहिं सब प्रीती'



श्रीधरम

शरदिन्दु कुमार चौधरीक साहित्य : 'स्वारथ लागि करहिं सब प्रीति'

आदिकाल सँ मुख्य रूपें दू प्रकारक साहित्यकार होइत रहलाह अछि। पहिल राजा-महाराजा आदि सभक लेल चारण भाटिक साहित्य लिखनिहार आ शासित समाजक लेल जनसाहित्य लिखनिहार। ओना कलावादी ललित-साहित्यकारक सदा अपन ख्यात परंपरा रहल अछि। राजा-महाराजा सँ भेटय बला अशर्फी-तमगाक स्थान आब लोकतंत्री सरकारी पुरस्कार ल' लेलक अछि। वर्तमान मे एहन 'अवसर' लेखक-कवि सभक पैघ संख्या अछि जे सामाजिक यथार्थ आ जन-साहित्य लिखबाक स्वांग मात्र करैत छथि, मुदा भीतर-भीतर पुरस्कार-तमगा पएबाक लेल कुचक्रक नाली मे डुबकी लगबैत रहैत छथि। ओना सभ काल मे एहन लेखक-बुद्धिजीवी होइत रहलाह अछि जे 'संतन को कहाँ सीकरी सों काम?...' कहि सभक अभिमान कें मर्दित करैत रहलाह। साहित्यक इतिहास मे दूनू प्रकारक उदहारण उपलब्ध अछि। मैथिली साहित्य सदा एहि प्रवृत्ति सँ विलग नहि अछि। मैथिलीक-साहित्यक दुर्भाग्य ई छै जे जेना-जेना ई भावुकताक शिकार भ' 'मां-मैथिली' बनि किछु खास वर्ग आ जातिक चाँगुर मे फँसैत गेल, तेना-तेना एकरा सँ पाठक छिटकैत चलि गेल। आलोचना पर पुरस्कारक गोलैसी हावी होइत

चलि गेल आ साहित्य-लेखनक उद्देश्य अकादमी आ अन्य पुरस्कार पयबा लेल भाग-दौड़ धरि सिमटि क' रहि गेल। एहना मे स्वाभिमानदार साहित्यकार लेल कुंठित होयब सहज स्वाभाविक अछि।

साहित्यकारक लेल कथनी आ करनी मे एकरूपता होयब बहुत आवश्यक। ओना एहन साहित्यकार कें आँगुर पर गानल जा सकैत अछि। पाठक संख्या किंवा ओकर ओजन सँ कोना साहित्यकारक लेखनक गुणवत्ताक नहि मूल्याङ्कन कयल जा सकैत अछि। शरदिन्दु कुमार चौधरी एहन लेखक-पत्रकार छथि जिनकर लेखनक पन्ना भले कम छनि, पाठक ओजन भले बहुत कम छनि मुदा हुनकर शब्दक ओजन एतेक भारी छनि जे कहियो ओकरा मैथिली साहित्य सँ मेटायल नहि जा सकैत अछि। शरदिन्दु जीक लेखनक आत्मा व्यंग्य छनि जाहि मे हास्य रस पर अर्थ सँ पहिने बिला जाइत अछि। ताहू मे ओ व्यंग्य कें संप्रेषण आ नियोजित संग गूँथि दैत छथि। व्यंग्य लीखब अपना आप मे तलवार केर धार पर चलब होइत छै। जकरा व्यक्तित्व मे स्वाभिमानी नहि छै, कथनी आ करनी मे फाँक छै, तकरा लेल व्यंग्य लिखब असंभव अछि। व्यंग्यकार कें सब सँ पहिने अपन लेखन क कीमत चुकाबए पड़ैत छै। ई कीमत निःसंदेह ओहो लेखक सहज गमन हेतैक, ताहि मे कोनो शंका नहि। व्यंग्य मूलतः प्रवृत्तिगत होइत अछि, व्यक्तिगत नहि। व्यंग्य मे व्यक्ति-चरित्र अंततः प्रवृत्ति बनि जाइत अछि। ई अलग बात जे शरदिन्दु जीक व्यंग्य मे कतेक ठाम व्यक्ति, चरित्र आ प्रवृत्ति पर भारी पड़ि जाइत अछि।

शरदिन्दु कुमार चौधरीक चारि टा ग्रंथ-संग्रह प्रकाशित छनि- 'ॐ हम जनितहुँ', 'बड़ अजगुत देखल', 'गोबर गणेश' आ 'कनिया कक्काक कानामिन'। एहि ग्रंथ सभ मे साहित्य सँ समाज धरिक निर्बुद्धता पसरल अछि। लेखक 'ॐ हम जनितहुँ' क भूमिका मे लिखैत छथि जे ओ मैथिलीक जाहि व्यक्ति सभक संपर्क मे अएलाह सैह हुनकर ग्रंथक आलंबन बनैत गेलाह। हुनक शब्द- "हुनका लोकनिक (व्यक्तित्वक) आकलन करब जतेक कठिन बुझायल अछि ताहि सँ सरल भूसि बाजब बुझाइत अछि। दारुनी चरित्रक निर्वाह करब जतेक सरल बुझायल ताहिसँ बेसी कठिन होयत आ ग्रंथ कें रुचिगर बनायब बुझायल।" यैह कारण थिक जे हिनकर ग्रंथ मे एक सँ एक व्यक्तिचित्र भेटैत अछि से प्रतीक अथवा छद्म नाम नहि अपितु अपन मूल नामक संग मुदा असली चरित्र मे बनकाब होइत। जहिया सँ साहित्य अकादमीक पाठ मैथिली कें भेट' लागल तहिया सँ प्रायः अधिकांश पाठक उर्फ लेखक करण क्रांति एही 'पाठ' धरि पहुँचबा लल सीमित होइत गेल। एहि क्रम मे एक सँ एक प्रतिभा कें कतियाबैत एहि पुरस्कारक बन्दरबाँट होइत रहल। शरदिंदु जीक एहि पोथीक पहिल शीर्षक थिक 'अथ □यरशन साहित्य अकादमी'। ई ग्रंथ दु शताब्दीक मुहाँन पर लिखल गेल अछि जे 'साहित्य अकादमी' पुरस्कारक पाठ-जाठ आ गोलैसी कें रेखांकित करैत अछि। मैथिली मे जे व्यक्ति साहित्य अकादमीक प्रतिनिधि होइत अछि से काना ठाकना अपन बपौती मानि अपन संतति अथवा कुल-खानदान कें अकादमिया-लेखक बना दैत अछि तकर प्रमाण अछि ई ग्रंथ। एहि मे दु व्यक्ति लेखक बनबाक आ अकादमी हथियबाक प्लान बना रहल अछि- "हम आ तों, साला आ बमसाला

मिलि क' गहुन-गहुन न गेला छोटव जे वड़का-वड़का राजधानीक मुँह गोला जकाँ खुजल रहि जयतनि आ हम आ गां सभ द' आकाश चढ़ि जायब जेना ओखन ओकरा ससुर-जमायक जोड़ी साहित्य अकादमीक अकाशमे विचरैत क' रहल छथि।"

मैथिलीक नाम पर जतेक सरकारी अथवा गैर सरकारी संस्था सभ अस्तित्व मे आयल तकर कर्ता-धर्ता दिनानुदिन वर्ण-व्यवस्था जकाँ जड़ता आ मजगूत होइत गेल। वर्णव्यवस्था भले कनमन ढील भेल हो मुदा ओहि संस्था सभक व्यवस्था पर ओखनो खानदानी राज कायम छै- "जेना चाचा-भतिजि कगवा कटाउस होइ छै, तेहा ठाकुर बागडोर ओंकर (काका-भातिज) घरमे रहैत छै रहिना हमारा रहय की गाना, रहत तँ अपन घरमे ना।" अकादमी पुरस्कारक अंतर्मुह रचना पर जँ शोध कैल जाए त' ओकर माओवीसी परंपराक काका गुरु रहस्य पर सँ पर्दा उठि सकत। एही अलग बात जे काका उल्लेखनीय याथी कँ एही पुरस्कार भेटल अछि मुदा प्रश्न एही अछि जे की ओ पुरस्कार उचित आ एहीमानदार प्रक्रिया सँ भेटल आकि माओवीसक सामन्ती दंतप्रथामी सँ, स उल्लेखनीय अछि। यहिना ओहि पुरस्कारक आकर्षण नकदी छल मुदा आब मैथिलीक लेखक-कवि सभ त' अयाची, यात्री, चंद्रभानु टाइप त' रहलाह नहि, तँ कैक बेर सुनबा मे एहीहा अबैत अछि जे अयर्थी पुरस्कारक मूल राशिक त्याग करैत सूद मे होटल-बाजल आदिक बलें अकादमीक मामंटा आ प्रशस्तिपत्र पयबा मे सफल होइत अछि। ओमहर त' एहीहा सुनल गेल जे पुरस्कार पयबा लेल मृतक सेहो उठि बैसल आ याथी लिखि क' अपन मंशा पूरंद कलक। आब ओहि सँ अधिक माँ मैथिलीक सेवा की भ' सकैत अछि? असल मे

शनदिहु कुमार चौधरीक लखन एन ऊयन सँ प्रगतिगामी वृष्टिकोण अछि मुदा कन निलमि क' साबु ग' हुनका रीगनक मातृराषा प्रमक साग दखा यठग ज एकरा नीगिक आ श्रीमानदान कलम टा सँ संरल अछि।

शनदिहु जीक चिंताक कंद्र म अछि मैथिल समाज, मैथिल याठक, गँ ओ मैथिली उद्वानक नाम यन मैथिली कँ अहित कन' वला व्यक्ति आ प्रवृत्ति यन वन-वन चाट मारैत छथि आ एहि क्रम म ओ काना छद्म आवनद्ध आकि प्रतीक क सहाना नहुँ लैत छथि। मैथिलीक संस्था हो आकि मैथिलीक यत्रकानिता, अध्यायन हो आकि लखन-सव ठाम लालची आ भ्रष्ट लोकनिक शरान अछि। एक-दासनाक नचना कँ अयन मनौसी वनवाक लल उगाहुला। आ सए सँ वढ़न स्थिति गँ मैथिलीक अध्यायक-अकादमिक दुनिया क अछि जत' किछु अयवाद कँ छाडि क' एक सँ एक यांगायंथी सए एनल अछि। 'अपील' शीर्षक व्यंग्यक एही यंक्ति एहि ओत्रक वखिया छाडवाक लल कारही अछि- "जहिया मैथिली यढवा लल यटना विश्वविद्यालयम नाम लिखौलहुँ गहिय श्रीमान् याठकजी सन क्रोधी, श्रीमान् दिनशजी सन रागी आ श्रीमान् एहुकांत जी सन लाहरी गुनुजीसँ रँट एल छल। यनिश्राम एही एल ज मैथिलीक यढौनीसँ मन उचटि गेल आ मैथिली सँ प्रम ए' गेल।" शनदिहु जी मैथिलीक स्वनामधन्य नचनाकान आ सम्यादक सुधांशु शेखन चौधनीक युत्र छथि। साहित्य आ मैथिली प्रम हुनका विनासत म एटलनि। आ येह हुनकन कमजानी सहो वनि गेलनि। ओ नाजनीतिशास्त्र म स्नातकोत्तनक संग एलएलवीक डिग्री सहो लन छथि। ओ जँ चाहितथि त' काना विश्वविद्यालय म प्राहसनी क' सकैत छलाह, काना कार्ट म

वकील बनि तीन-पाँच क' सकैत छलाह। ई सब किछु छोड़ि क' मैथिली प्रकाशनक अनुष्ठान मे आबि, जीवन यापन करबाक हुनक जिद निःसंदेह मैथिली भाषाक प्रति अटूट प्रेमक परिणाम रहल हएत। मुदा ओ' आबि जखन एहि दुनियाक खुरपेंची सँ दूर अवगत रहल हएताह त' साहित्यक स्थिति भयानक अछि। एहि कारण अछि जे हुनक ग्रंथ अथवा संस्मरण यथार्थक धरातल सँ माँजल एहन नञि अछि जे कोनो बेर पाठक केँ अनसोहाँत सन बुझा सकैत छै।

असल मे पाठक जाहि रचनाकारक रचना पढ़ि हुनका अपन प्रिय बना लैत अछि, भावनात्मक रूपें हुनका सँ जुड़ि जाइत अछि, हुनकर व्यक्तित्व पर कारी दाग लगैत देखि ढाल बनि पाठक ठाढ़ भ' जाइत अछि। ओ एहन त' ओकरा घर नञि बारल गेल अछि। हमरा जनैत एहि कारण रहल हएत जे शरदिन्दु जीक रचनाक जे मूल्यांकन होएबाक चाही छल से नञि भ' सकल। सएह कथा चर्चा करब सँ कतराइत रहल हएताह। कारण समाज अथवा राष्ट्रक जनता भ्रष्ट भ' जाय त' ओकरा लेखक आ बुद्धिजीवी वर्ग रक्षा करैत अछि, मुदा जँ लेखक बुद्धिजीवी भ्रष्ट भ' जाय त' ओहि समाजक केहन अवाजक स्थिति भ' सकैत छै, एकर कल्पना कैल जा सकैत अछि। एहि कारण अछि जे शरदिन्दु जीक कलम कर नाक पर सब सँ पहिल लेखक-बुद्धिजीवी वर्ग अबैत अछि- "गुंडा-बदमाश केँ हल्ला-गुल्ला, मारि-पीटि करैत देखैत छिऐक तँ ओ भी होइत अछि जे जँ बुद्धि नहिऐक तँ ऐना नञि करितय। मुदा पढ़ल-लिखल साहित्यकार, वकील, नेता-अभिनेता, डॉक्टर, इंजीनियर, अधिकारी-पदाधिकारी आदि बुद्धिजीवी केँ जखन आपसमे कटाउझ करैत, तू-तू, मैं-मैं करैत देखैत छिऐक तँ हरान कुकुरक रंज मोन पड़ि जाइत

अछि।" आ एतय ओहि पंक्ति पर ध्यान दी- "ओतय-ओतय नारीकेँ देखैत छथि जे ओ एतय छी तँ मैथिली टिकल अछि आ संस्था चलि रहल अछि मुदा हुनका ई नहिँ सूझैत छनि जे जाहि पदपर ओ छथि ताहि सँ ओकरानी ओ जान लगा देथिन तँ ओकरा संस्था केँ के पूछय ककरो संस्था केँ उसाहि देथिन। साहित्यकारक बीच उठापटकी आ पद्मश्री-सम्मान आदि प्रवृत्तिक सम्यक विवेचन हुनक पोथी 'देखल एक शूटिंग' आ 'स्वास्थ्य नञि पुनस्थान'मे भेल अछि। 'एकालाप' शीर्षक ग्रंथ सेहो अही कोटीक निष्पात थिक। असल मे ई लेखक, बुद्धिजीवी चारित्रिक आ नैतिक पतन सँ अधिक खिन्न छथि से वर्तमान मे बहुत प्रासंगिक अछि। आइ जाहि तरहेँ बुद्धिजीवी-लेखक-पत्रकार सभ सत्ताक पाछाँ पीकदान ल' चारण परंपरा केँ चरम धरि पहुँचा क' लोकतंत्रक चरनी बना रहल छथि, ओहना मे शरदिन्दु जीक चिंता प्रासंगिक ए' उठैत अछि- "आ आब तँ ई बुद्धिजीवी वर्ग चारिम खंभा बनिक' सभ दलकान मे 'नंगा हो, नंगा हो' क ताल पर नृत्य करैत 'मदलका' मचा रहल अछि।"

शरदिन्दु कुमार चौधरीक राजनीतिक चेतना स्पष्ट छनि। ई अलग बात जे अस्मितावादी विमर्शक ओहि समय मे हुनक किछु वक्तव्य आजि 'टान' ओतय अछि जकरा पढ़ मे नहिँ ठेल जा सकैत अछि। हुनकर एक टा ग्रंथ छनि 'प्लेटाक सपना, राजा आ कौमार्य-राजनीति'। ई निबंध भेल लगभग बीस साल पूर्वक हो मुदा ओकर अनुगूँज ओखना सूनल जा सकैत अछि। ओहि आलेख सँ साम्प्रदायिकताक प्रति लेखकक आलोचनात्मक दृष्टिकोण स्पष्ट रूपेँ सामने आबि जाइत अछि। ओहिना लेखकक स्त्रीक प्रति संवेदनशील

दृष्टिकोण 'अहाँ की करबै?' शीर्षक ग्रंथ मे देखल जा सकैत अछि जे' आधुनिक सामाजिक परिवर्तनक बदलैत दाम्पत्य जीवनक ह्रास-परिहासक बीच एक टा गीतक माध्य स्त्री-वेदना कें रेखांकित कैल गेल अछि। कनिया कक्का कें काकीक ई जबाब ध्यातव्य अछि- "करइतहुँ ई जे स्त्रीगण मे जे धैर्य, काजक प्रति निष्ठा आ लगाव होइत छैक से पुरुष मे कत' सँ हैतैक जे' नै एक स्थान मे मोन लागय जकैत छैक आ से जँ नहि रहैत तँ एहिना कोना गृह्य उठाह' लगैत छैक।" मैथिली मे 'गोलैसी' शब्द आलोचनाक पारिभाषिक शब्दावली बनि गेल अछि। बिना गोलैसी क मैथिलीक पुनर्पाठ अथवा समीक्षा आदि पश्चातिताक कल्पन नहिं कैल जा सकैत अछि। अपन एही शीर्षक निबंध मे शरदिंदु जी एहि शब्द कें एहि रूपें परिभाषित करैत छथि- "जकर शाब्दिक अर्थ कें छोड़ि जँ ए०० अर्थ लगिआउल जाय तँ 'गोलैसी जाहि नीति कें कहल जाइछ जाहिमे एकटा व्यक्ति वा गुट दोसर व्यक्ति, गुट, समूह वा व्यक्तिक निंदा करैत अपन गुट अथवा अपन स्वार्थ पूर्ति लेल निर्लज्ज भ' जाहि व्यक्ति अथवा समाजक अहित करबामे आनंद अनुभव करय।" गोलैसीक एहि परिभाषा मे जे ग्रंथ लिखित अछि तकर गूंज मैथिली साहित्य मे 'अनुनाद ध्वनि' जकां सुनल जा सकैत अछि।

'बाप बाप पर बाप' चानि सीनिज मे छपल शरदिंदुजीक संस्मरण छनि। मुदा ई संस्मरण सेर पारंपरिक विधा सँ अलग टिप्पणी छनि। एहि टिप्पणी सेर लेल जे करैत छथि जे 'जेत' प्रवृत्ति दुष्प्रवृत्ति बनि प्रगट भेल हो जेत' हमर बाप कर कट अनर्थ भ' गेल अछि। जे भूमिका मे अह बाप कें रेखांकित करैत छथि

ओ "हमर बात सभ मुख्यतया अथवा पूर्णतया सत्य पर आधारित अछि तेँ किछु लोक केँ अप्रिय अवश्य लगतनि मुदा ई सत्य किछु लोककेँ प्रिय सेहो लगतनि। ई जिनका अप्रिय लागनि से अवश्ये अपन छाती पर हाथ राखि सोचथि जे हम कतहु सत्य सँ दूर त' नहि भेल छी।" शरदिंदुजीक एहि संस्मरण सभ केँ ध्यान सँ पढ़ला सँ स्पष्ट होइत अछि जे मैथिली आन्दोलन, प्रकाशन, शिक्षा, साहित्य आ समाज केँ ल' क' हुनक चिंता आ सरोकार गंभीर आ गहन छनि। ओ पत्रकार छथि तेँ एहि समस्या सभक प्रति भावुकताक शिकार नहि होइत छथि आ मैथिलीक नाम पर पसरल गोलैसी, भाइ-भतीजावाद आ व्यक्तिक गिरगिटिया-चरित्र केँ स्पष्ट रूपेँ रेखांकित करैत छथि। हुनकर चिंताक केंद्र मे मैथिलीक पाठक आ विद्यार्थी सभ अछि जाहि पर बहुत कम ध्यान देल जाइत अछि। पाठक निर्माणक लेल प्राथमिक स्तर पर मैथिलीक शिक्षा आ पत्र-पत्रिकाक प्रकाशन पहिल शर्त जकाँ छै, जाहि लेल वर्तमान मे बहुत कम प्रयास भेल आ भ' रहल अछि। जे व्यक्तिगत प्रयास एहि क्षेत्र मे भेल तकरा अपन सीमा छै। मैथिली पत्रकारिता क संदर्भ मे शरदिंदु जीक चिंता बहुत जरूरी अछि- "दुर्भाग्य मैथिलीक छै जे पत्रकारिता जगत मे पचास प्रतिशत सँ बेसी मैथिल कार्यरत छथि मुदा ओ मैथिली भाषा मे किछु नहि लिखताह। मानहानि अथवा स्तरहीनताक बोध हुनका होइत छनि। खासक' ओ मैथिली लेखनकेँ हीन बूझैत छथि। तेँ आओर स्थिति ई छनि जे ओ दोसरक रंग गबैत-कहैत छथि आ दोसर हुनकर रंगकेँ चरित्रकेँ बलि जाइत छनि।" शरदिंदु जीक एहि चिंता संग ईहो जोड़ब उचित जे ई पत्रकार सभ मैथिली मे किएक नहि लिखैत

छथि। जा धरि आर्थिक उपार्जनक साधन मैथिली पत्रकारिता नहि बनत, ताधरि एहि दिशा बनल रहत। जीवन यापन लेल श्रम सँ पहिने अर्थक आवश्यकता होइत छै।

"मैथिल संस्था : 'छौ छा' सँ 'टुन-टुन छिया-छिया' धरि" मे लेखक मैथिली संस्था सभक पोस्टमार्टम केने छथि। ओ सूचना देने छथि जे रानत रनि मे लगभग ३८ सौ मैथिली संस्था अछि मुदा सभ अपन-अपन उपानशंख फूकबा मे व्यस्त आ मस्त। विद्यापति पर्वक नाम पर गीत-नाद, नाच-गान धरि सीमित एहि संस्था सभ द्वारा समस्त नुयं उँ पोथी आ पत्रिका लेल (O)आस पहल होइत त' निःसंदेह मैथिलीक कल्याण भ' सकैत छै। मिथिला मे लाखो न्यौता लगा क' एक सँ एक पञ्च होइत अछि, श्राद्धक नाम पर लाखो खर्च होइत जाइत अछि मुदा एक टा पत्रिका अथवा पोथी कीनबाक इच्छा ककरो लोक मे होइत छै? असल मे मिथिलाक वृहत्तर समुदायक बीच 'मैथिल जातीयता'क विकासक लेल कोनो प्रयास नहि भेल, जकर परिणाम आइ सामाँ अछि।

'मर्मान्तक' मे किछु व्यक्तिगत आ पारिवारिक सम्बन्धक संग सामाजिक-सांस्कृतिक विषय सभ पर टिप्पणी कैल गेल अछि जाहि मे शरदिंदु जीक वृहत्तर सामाजिक-सांस्कृतिक सरोकारक दिग्दर्शन होइत अछि। हास अथवा मनोरंजन पर लिखब अत्यंत कठिन होइत अछि। मानव स्वभाव सँ अंतर्मुखी आ अपना प्रति व्यामोह सँ ग्रस्त रहैत अछि तँ ओ वासनाक दीपन वसी मांकैत अछि। लेखक एहि संकलन मे आस्था, भय, चित्तवृत्ति, सुख-शांति, घृणा, पीडा, इच्छा, तनाव आदि विषय पर जे टिप्पणी केने छथि से दार्शनिकता, मनोवैज्ञानिकताक संग-संग अनुभव आ मानवता

सँ उत्पन्न अछि। कोनो रचनाकार लेल अपन जातीय-धार्मिक सीमा सँ ऊपर उठि मनुष्य बनब पहिल शर्त थिक। कोरोना महामारी सम्पूर्ण दुनिया कें ठमका देलक। मंदिर, मस्जिद, गिरिजा आ गुरुद्वारा सभ पर ताला लगा देलक। मुदा की आस्थाक नाम पर समाज मे पसरल कट्टरता कें कोरोना कम क' सकल? शारदिंदु जी अपन आस्था शीर्षक टिप्पणी मे लिखैत छथि- "की आस्था मरि जायत। की आस्थाक रूप मे परिवर्तन होयत! की आस्थाक प्रति कट्टरतामे कमी आओत! की आगाँ विभिन्न सम्प्रदायमे आस्थाक टकराहटि कम होयत। कोरोना आगाँ जे करय, आस्थाकें घर-घर पसारि दिअय वा समटि क' एकठाम क' दिअय एखन तँ आस्था एकठाम ठाढ़ि अछि- कहुना हमर प्राण बाँचि जाय बादमे सोचल जायत जे कतय माथ झुकाबी।" मुदा ई देखल गेल जे जना-जना कोरोना घटैत गेल तना-तना आस्थाक नाम पर घृणा आ तकरारक खेपी पुनः शुरू भ' गेल। एहि सँ ईहो स्पष्ट होइत अछि जे आब लोक 'आस्तिक' सँ बेसी 'धार्मिक' भ' गेल अछि।

'हमर अपराध हुनक नहि दोष' मे किछु एहन व्यक्तिगत प्रसंगक चर्चा अछि जे व्यक्तिक दोहरापनक संग, लोलुपता आ 'विषकुम्भम् पयोमुखम्' बला चरित्र कें सोझाँ अनैत अछि। बिच्छू कखनो पाछाँ सँ नहि डंक मारैत अछि, आकि साँप कखनो पीठ पर नहि डसैत अछि, किएक त' एकरा सभ लग मानव जकाँ विकसित दिमाग नहि होइत छै। ई गौरव मनुष्य कें भेटल छै। आ बुद्धिजीवी लोकनि दिमाग त' सामान्य सँ किछु बेसिए विकसित होइत अछि तें हुनकर 'विष' अन्तःसलिला बहैत अछि। वर्ष 2021 मे मैथिली अकादमी अपन पत्रिकाक पूरा पन्ना लेल 280/- रुपैया दैत

अछि सेहो कामक पारितोषक बाद। ओ सरकारी संस्थाक ई आर्थिक हालत छै, तखन विद्वानक नाम सभ कँ मैथिलीक संस्था सभ कोन मुहँ पाग-डुपटा पहिरा क' मंच पर बैसा चानन-पान करैत अछि से विचारणीय अछि। एहन किछु प्रसंग सभक चर्चा एहि खंड म भेल अछि जे लेखकीय ईमानदारी आ परिस्थितिक प्रमाण थिक। एहिना 'साक्षात्' म स्वयं द्वारा लेल गेल अपन साक्षात्कार अछि। जाहि म एक टा प्रसंग एहन मार्मिक अछि जे एहि बात दिस इशारा करैत अछि जे कोना व्यक्ति ओ मैथिली सेवाक (प्रकाशन, पत्रकारिता आदि लेखन) बलें अपन जीवन यापन करए चाहैत त' ई समाज ओकरा कामक निरर्थ दैत। अपन जीवनक सब सँ पैघ गलती आ कचोट कँ अभिव्यक्त करैत ओ लिखैत छथि- "हम अपन एकमात्र पुत्र राजशेखर कँ इंजीनियरिंगक पढ़ाइक खर्च नइँ द' सकलियनि जे कि हुनकर सब सँ पैघ लक्ष्य रहनि। ओ इंटरक बाद ओहि हेतु चयनित सेहो भ' गेल छलाह मुदा...। आ एतहि सँ हमर जीवनक दिशा ओ दशा बदलि गेल, हम निर्जीव-निराकार मनुष्यक रूप म अपन काया ल' क' पृथ्वीक भार बनल जीव रहल छी। अहाँ एकरा पुत्र-मोह कहि सकैत छी, से तँ ठीक, मुदा एहि 'केस' म हम दायित्व आ कर्तव्य सँ च्युत भेल छी।"

असल म 'बाप बाप पर बाप' चानि खंड म प्रकाशित शरदिन्दु जीक संस्मरणात्मक आत्मकथा थिक जकरा पढ़ैत हृदय म एक टा टीस उठैत अछि जे मैथिली आ मिथिलाक लेल एक टा जेनुइन चिंता करए वला व्यक्ति कँ ई समाज कामक प्रतिदान करैत अछि।

'विदेह' मे अंक निकालि क' शरदिंदु कुमार चौधरीक लेखनक मूल्याङ्कन करबाक आग्रह कएलक अछि, ताहि लेल हुनक कर्ता-धर्ता लोकनि कें बहुत बहुत आभार आ धन्यवाद।

शरदिन्दु जीक रचना संसार कें पढ़ैत तुलसीदासक ई पंक्ति बेर बेर मन पड़ैत अछि किएक त' तुलसी रचना लोकनिक चारित्रिक दुर्गुण पर व्यंग्य कर' सँ नहिँ चूकैत छथि-

"सुनु नर मुनि सब कें यह रीती।
स्वारथ लागि करहिं सब प्रीती।।

सम्पर्क- डॉ श्रीधरम, असिसटेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, आत्मा राम सनातन धर्म कॉलेज, (धौलाकुँआ (दिल्ली विश्वविद्यालय),
निवास- बी-२११-७, वसंत कुंज एनक्लेव, नई दिल्ली ११००१०,
मो. ९८६९३२७८११

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

३ अंकक अन्य रचना

३.गद्य खण्ड

३.१.नाम विलास साहुक ५ टा कथा- कथा-१ अध्ययन सम्पादकीय समीक्षा अंग्रेजीमे सम्पादकीय पृष्ठ पर

३.२.नाम विलास साहुक ५ टा कथा- कथा-२ अध्ययन सम्पादकीय समीक्षा अंग्रेजीमे सम्पादकीय पृष्ठ पर

३.३.नाम विलास साहुक ५ टा कथा- कथा-३ अध्ययन सम्पादकीय समीक्षा अंग्रेजीमे सम्पादकीय पृष्ठ पर

३.४.नाम विलास साहुक ५ टा कथा- कथा-४ अध्ययन सम्पादकीय समीक्षा अंग्रेजीमे सम्पादकीय पृष्ठ पर

३.५.नाम विलास साहुक ५ टा कथा- कथा-५ अध्ययन सम्पादकीय समीक्षा अंग्रेजीमे सम्पादकीय पृष्ठ पर

३.१.नाम बिलास साहुक ७ टा कथा- कथा-१ अध्ययन सम्पादकीय समीक्षा अंग्रेजीमे सम्पादकीय पृष्ठ पर

विदेहक लेखकक आमंत्रित रचना आ अध्ययन आमंत्रित समीक्षकक समीक्षा सीरीजमे अखन धरि अहाँ पढ़लौं-

१. कामिनीक पाँच टा कविता आ अध्ययन मधुकान्त झाक टिप्पणी

Videha_01_09_2016

२. जगदानन्द झा "मनु"क "माटिक बासन"पर गजेन्द्र ठाकुरक टिप्पणी

VIDEHA_353

३. मुन्नी कामतक एकांकी "जिन्दगीक मोल" आ ओहिपर गजेन्द्र ठाकुरक टिप्पणी

VIDEHA_354

ऐ शृंखलामे आगाँ समानान्तर धाराक किछु गद्यमात्र कथाकारसँ हुनका नजरिमे हुनकर अपन सर्वश्रेष्ठ ५-५ टा कथा आमंत्रित कएल गेल अछि। कथाकार लोकनि छथि:-

१.कपिलेश्वर राउत

२.उमेश मण्डल

३.राम विलास साहु

४.राजदेव मण्डल

५.नन्द विलास राय

६.जगदीश प्रसाद मण्डल

७.दुर्गानन्द मण्डल

८.रामानन्द मण्डल

ऐ अंकमे प्रस्तुत अछि राम विलास साहुक ५ टा कथा, जकर हमर समीक्षा अंग्रेजीमे सम्पादकीय पृष्ठ पर अछि। - सम्पादक



नाम बिलास साहु केर पाँचटा कथा

कथा १

कमतिया हवेली

जानकी घालाति आ मधुमाछी जकाँ हनहनाइत नक्षा (धन घन जाइत छली। नक्ष कातम मदीना दादी वैस किनका वार जाहि नहल छली। मदीना दादी मूनकूट वृद्ध, सौंस गामक लोक दादी कहि उद्बोधन करै छैन। नजैन यतित मदीना दादी जानकीसँ पूछि दलखिन-

"जानकी कतए-सँ अबै छहक। एकटा काज कऽ दाए तखन जइहह। "

जानकी बजली-

"दादी एकटा की दु-चारिटा कऽ देब मुदा घनयन किया नइए आ उासनायन चिल्हकाकँ सूता कऽ गेल छलौं। बहुत अबेर हऽ गेल, कनैत हएत। "

𑒧𑒠𑒲𑒢𑒰 𑒠𑒰𑒠𑒲 𑒥𑒖𑒪𑒲-

"𑒯𑒿𑓄, 𑒞𑒴𑒿 𑒥𑒛𑓃 𑒯𑒛𑓃𑒥𑒛𑓃𑒱𑒨𑒰 𑒕𑒯, 𑒋𑒞𑒹𑒏 𑒠𑒱𑒢 𑒞𑒼𑒩𑒰 𑒏𑒼𑒢𑒰 𑒔𑒱𑒢𑓂𑒞 𑒢 𑒕𑒪𑒯 𑒂 𑒯𑒧 𑒙𑒼𑒏𑒱 𑒠𑒹𑒪𑒱𑒨𑒯 𑒞𑒿 𑒯𑒛𑓃𑒥𑒛𑓃𑒲 𑒪𑒑𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒯! 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒒𑒩𑒣𑒩 𑒏𑒱𑒨𑒰 𑒢𑒯𑒱𑒿𑒋, 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒔𑒰𑒯 𑒣𑒲𑒥𑒻𑒏 𑒧𑒢 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪। 𑒔𑒴𑒪𑓂𑒯𑒱𑒣𑒩 𑒣𑒰𑒢𑒱 𑒐𑒾𑒪𑒰 𑒠𑒳𑒡 𑒠𑓄 𑒔𑒰𑒯𑒏 𑒣𑒞𑓂𑒞𑒲 𑒠𑒹𑒪𑒱𑒌, 𑒔𑒲𑒢𑒲𑒏 𑒛𑒱𑒥𑓂𑒥𑒰 𑒐𑒰𑒪𑒱 𑒖𑒐𑒢 𑒔𑒲𑒢𑒲 𑒠𑒹𑒞𑒱𑒌 𑒞𑒿 𑒔𑒲𑒢𑒲𑒋 𑒢𑒯𑒱। 𑒪𑒕𑓂𑒧𑒱𑒢𑒱𑒨𑒰 𑒮𑒦 𑒛𑒱𑒥𑓂𑒥𑒰 𑒐𑒰𑒪𑒱 𑒮𑒦𑒙𑒰 𑒔𑒲𑒢𑒲 𑒐𑒰 𑒑𑒹𑒪। 𑒞𑒴𑒿 𑒏𑒢𑒲 𑒔𑒴𑒪𑓂𑒯𑒫𑒰 𑒠𑒼𑒏𑒰𑒢𑒮𑒿 𑒠𑒴 𑒙𑒏𑒰𑒏 𑒔𑒲𑒢𑒲 𑒪𑒰𑒥𑒱 𑒠𑒋𑒯। 𑒔𑒰𑒯 𑒥𑒢𑒱𑒞𑒹 𑒁𑒕𑒱 𑒯𑒧𑒯𑒴𑒿 𑒣𑒲𑒥 𑒂 𑒞𑒼𑒯𑒴 𑒣𑒲𑒥𑒱 𑒪𑒱𑒯𑒯।"

𑒖𑒰𑒢𑒏𑒲 𑒥𑒖𑒪𑒲-

"𑒠𑒰𑒠𑒲, 𑒠𑒼𑒏𑒰𑒢 𑒠𑒴𑒩 𑒁𑒕𑒱 𑒯𑒧 𑒁𑒣𑒢 𑒛𑒹𑒩𑒰𑒧 𑒖𑒰𑒃 𑒕𑒲 𑒥𑒱𑒪𑓂𑒯𑒏𑒰 𑒪𑓄 𑒪𑒥 𑒂 𑒔𑒲𑒢𑒲𑒍𑓀 𑒢𑒢 𑒁𑒥𑒻 𑒕𑒲, 𑒞𑒐𑒢 𑒥𑒻𑒮 𑒑𑒣𑓂𑒣𑒰 𑒏𑒩𑒥 𑒂 𑒔𑒰𑒯 𑒣𑒲𑒥।"

𑒧𑒠𑒲𑒢𑒰 𑒠𑒰𑒠𑒲 𑒢𑒱𑒩𑒰𑒬 𑒢𑒯𑒱 𑒦𑓄 𑒂𑒬 𑒪𑒑𑒪 𑒢𑒖𑒻𑒩𑒮𑒿 𑒢𑒱𑒯𑒰𑒩𑒻𑒞 𑒥𑒖𑒪𑒲-

"𑒖𑒰 𑒞𑒴𑒿 𑒏𑒼𑒢𑒰 𑒏𑒧 𑒑𑒯𑒲𑓀𑒩𑒑𑒩 𑒕𑒯। 𑒋𑒏 𑒞𑒲𑒩 𑒠𑒳𑒙𑒰 𑒬𑒱𑒏𑒰𑒩 𑒏𑒩𑒋 𑒔𑒰𑒯𑒻 𑒕𑒯।"

𑒖𑒰𑒢𑒏𑒲 𑒢𑒧𑒏𑒻𑒞-𑒠𑒧𑒏𑒻𑒞 𑒒𑒩 𑒠𑒱𑒬 𑒥𑒱𑒠𑒰 𑒦𑒹𑒪𑒲। 𑒒𑒩𑒮𑒿 𑒠𑒴𑒩 𑒕𑒪𑒲 𑒏𑒱 𑒥𑒱𑒪𑓂𑒯𑒏𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒏𑒢𑒻𑒏 𑒁𑒫𑒰𑒖 𑒮𑒳𑒢𑒪𑒲। 𑒁𑒫𑒰𑒖 𑒁𑒏𑒰𑒢𑒻𑒞 𑒠𑒳𑒪𑒏𑒲 𑒠𑒻𑒞 𑒂𑒿𑒑𑒢 𑒖𑒰𑒃𑒞𑒹 𑒣𑒯𑒳𑒿𑒔𑒪𑒲 𑒞𑒰𑒃𑒞𑒹 𑒥𑒱𑒪𑓂𑒯𑒏𑒰 𑒏𑒢𑒻𑒞 𑒯𑒯𑒳𑒥𑒲𑒠𑒰𑒢𑒱 𑒏𑒰𑒙𑒱, 𑒅𑒢𑒻𑒙-𑒣𑒳𑒢𑒻𑒙 𑒅𑒮𑒰𑒩𑒮𑒿 𑒢𑒱𑒔𑓂𑒔𑒰 𑒂𑒿𑒑𑒢𑒧 𑒑𑒱𑒩 𑒑𑒹𑒪 𑒕𑒪। 𑒯𑒰𑒿𑓄-𑒯𑒰𑒿𑓄 𑒢𑒴𑒢𑒴 𑒥𑒾𑒂 𑒏𑒯𑒱 𑒖𑒰𑒢𑒏𑒲 𑒏𑒼𑒩𑒰𑒧 𑒪𑓄 𑒕𑒰𑒞𑒲𑒮𑒿 𑒮𑒙𑒰 𑒠𑒴𑒡 𑒣𑒲𑒥𑒋 𑒪𑒑𑒪𑒲।

चिल्हका दूध पीबित अलसा गेल। कागतक टुकड़ीमे चीनीक पुड़िया बना ओकर हाथमे लऽ चिल्हकाकेँ कोरामे सम्हारि-पकड़ि मदीना दादीक घर दिस विदा भेली।

मदीना दादी चुल्हिपर कखनो चाह निहारैत आ कखनो रस्तापर नजरि दौड़बैत रहैथ जे जानकी कखनो चीनी लऽ कऽ आओत जे चाह बनत।

जानकीकेँ कनी देरी भेलासँ चुल्हिपर चाह उधिया-उधिया अधजरु भऽ गेल। मदीना दादी आगि लगौने ने अगुतेली आ ने घबड़ेली। ओ जनै छली जे जानकी चिल्हकोरि छी चिल्हकाक लटारममे लागि गेली।

मदीना दादीक मन खुद-बुद होइत छलनि कि जानकी हहाइत पहुँचली आ बजली-

"दादी की कहू, कनियाँ अँगना जाइमे देरी होइतै तँ हमर चिल्हका प्राण तियागि दइतै। ओकरा सम्हारैमे लटारम भऽ गेल, तेँए देरी लागल।"

मदीना दादी बजली-

"से तँ तूँ बड़ हथियानि-सुतिहारनी छह। जे मनमे आबै छह से कए कऽ दम मानै छह। लाबह चिल्हकाकेँ हम पकड़ै छी, तूँ चाहमे चीनी दऽ छानि दूटा गिलासमे ढारि आनह। चाह पीअब आ गप्प करब।"

जानकी चुल्हियन चाह देखलक तँ ओ खदैक-खदैक कऽ अधजरू भऽ गेल छल। सुगन्धा बहराइत-बहराइत, जहीसँ तीन-चारि चुटकी चीनी दऽ हिला-मिला कऽ उतारि दुटा गिलासमे लऽ मदीना दादी लग एली।

एक गिलास मदीना दादीकेँ आ दोसर गिलास अपने लेली। चाह तँ जनि कऽ जनाइत भऽ गेल छल मुदा पीबैमे सुआदगर लगैत।

दु-चारि घोंट लेलाक मदीना दादी जानकीकेँ टोकलखिन-

"जानकी तूँ एखनी काल्हि-सँ अबै छलहक से तँ ने बजलह?"

जानकी बजली-

"दादी, की कहू! अपन हालत, हालात गेल कहैमे अपन संकोच होइए। मुदा दिनका ने कहबैन से उचित हएत। जा कहब ने ता समाधानो कना हएत। बहुत दिनक बाद मालिकक हवेली गेल छलौं।"

बिचहिमे मदीना दादी बजली-

"की कोनो पैघ बात ना काज छलए की?"

जानकी बजली-

"दादी, हमनासँ तँ बसी अनुरुख हवेलीक अहींकेँ हएत।"

मदीना दादी बजली-

"हवेलीकेँ तँ हम आब नाओं धरब नै करै छी। ओकर मारल तँ तीन पीढ़ीसँ दुख काटि रहल छी। पहिने तूँ कहऽ ने ओ हवेली किए खसल छलह?"

जानकी बजली-

"दादी, अहूँ खेल-खा कऽ हमरपर लगल छी। कहुना छी तँ गामक मालिकक हवेली छी किने, ओ कनियाँ बाजबमे हुसि जाएब तँ गाममे ने बास हुअ देत।"

मदीना दादी बजली-

"ताना ने उन हाऽऽ छल, हम तँ हवेली कहियो ने मानलिऐ आ ने मानै छिऐ। ओऽऽसँ नीक तँ गामक गरीब-दुखिया जे जाऽऽत माथर टूटलाहा ओछाओन बिछा आदरसँ बैसा कऽ हाल-चाल पूछबा करैए आ एक गिलास पानि-चाह पीआ कऽ बिदा करैए। दुखा-सुखक घड़ीमे सामहा आबि मदति करैए। मुदा जकरा तूँ हवेली कहै छहक आ आना सरर कहै छै तकरा हम कमतिया बूझै छी।"

जानकी बजली-

"से कना दादी! ओ गामक मालिक जमीन्दार छैथ ओ कमतिया कना भेल?"

मदीना दादी बजली-

"तूँ बूझबहक कना, तोहर उमेर की भेलह हेन। ओ की गामक

तीहवासु छी। ओ गाँ बाहरसँ आबि गामम बसि कऽ सबहक जमीन हड़पि जमीनदार बनि गेल आ गामक लोककेँ गुलाम जकाँ दिन-राति खटबए लगल। ओकर शोषण आ दुख न कमतिया सभ समाजक लोककेँ दलकेँ ओ समाज टूटि छिड़िया गेल। एकर नाम गाँ ऊँचगर करै छह, एना अखनो धनिकय नै लगलह हुना।"

जानकीक मनमे जिज्ञासा बढ़लै आ अपनाओ सहा हलै एखन मदीना दादीसँ पूछि बैसली-

"दादी नै बुझलौं कमतिया हवेलीक किनदानी। कनी हुनिका कऽ बता दिअ।"

मदीना दादीक मनमे जेना उमकी उठलैन एहिना उमकैत बजली-

"गाँ बुझबहक कना! एनि दिन गाँ अपन दुख-धन्धाम लगल नहि छहक, ओहूसँ ओ समय एहन छह गाँ हहनदलाल मानि ओ अँगनासँ ओहू अँगना गाल बजबै छहक। कहिया ओ एलह ओ गामक बूढ़-बूढ़ीक लगम बसि गामक बितलाहा दिनक चर्च करी आ ओहन-ओहन बातक कान धरी ओ आगू काज हो।"

जानकी बजली-

"दादी, जहियासँ होश आ बाध हएत गहियसँ न सीखब-बूझब। एक दिन गाँ गनीबीउ-म दिन काटलौं, अखैन धीउ-पुताम ओसनाएल नहि छी। जहियासँ हवेली छाड़ि दूनू यनानी अपन काजकेँ गहि कऽ पकड़लौं गहियासँ मह्ड़ा दादाकेँ खाहू छी। धनवला छह मास

घनक काज करैत आ छह मास पनरह कमा लबैत, गाँव दु सन अन्ना दखे छी आ दुटा नुयेडा।"

मदीना दादी बजली-

"खेतीक काज किए छाडि देलह?"

जानकी बजली-

"की कहबैन दादी, जाब खेतीक काज करै छलौं ताब पटा न लगैत। काजक मजूरीबला काज कम, बगानीत बसी खटै छलौं। दुपहरिया लगा कऽ दुनु पहरी खटै छलौं आ बाहर गाँ दुन नहुत, पनपिआसक न लगि बूफा लटै छलत। खेतीक काज करै छलौं गाँ बाहरा ओ सालक पौंनूका, पौंनूकाबला बाहर गंसना मसमसैं दहर छलत। कहिया लागंस नै लल ज दुनु साँस बुझि पजानिगौं।"

मदीना दादी बजली-

"आहा किए, कथी-ल कमगिया ओठीम ठेगल छलहक स न कहह।"

जानकी बजली-

"दादी, अहाँसँ छाम की। हमना गाँ मन जरैत। जँ अहाँकँ कहब गाँ सुनिग अहूँकँ दहम आगि नसि दग।"

मदीना दादी बजली-

"गूँ की कहबह कमगियाक किनदानी, हम गाँ सर खल-बल दखन-

रागन ठी आ दद लगा मानन ठी। मुदा वनावद न गाना की रलद। "

जानकी वजली-

"दादी, योंनुका साल अखाढ़-सौनम हवलीवला मालिक दुहानिक माटि वूसु खाए गेल। रानम अहूनौख आबि निहाना करौ कई लगल ज हमन खा अहान नहि जाएत। गोनहा खा छी कहूना धननायनी कs दएहा। चास नहि लगा गँ वास कना हएत। सुनि हमना मन टलि गेल। हमन घनवला हन जाणि गजान-कादा कनए आ हम किछु वानिहानक संग धननायनी कs दलिऐ। एक दु दिन नै दुनु यनानी वीस दिन खटि दलिऐ। वीस दुनी चालीस यसनी वाढ़न रला। मान याँच मन रला। याँच मनम तीन मन गँ कहूना कहि-सुनि दलौन मुदा दु मन धान अखन धनि नै दलक। सालसँ वसी रs गेल। एक गँ आसीन-काणिक मास अहूना सालक गनहम मास हाएत, तहूम एाक नास यावेन-गिहान...। खर्च-खर्च...।

घनवला वाहन कमाइल जाएत। सावलों हवलीम दु मन धान कमाएल वानि अछिए, आनि कs एक यसनी धान चुडा-ल गाटि दवै आ एक यसनी धान राटि-गाटि कs मुनहीक चाउन वना लव। हाथ मुसन चुडा कुटि लव दासन दिन मुनही गुजि दवै ज घनवलाक वटखर्चा दs दवइ। ज धान वँचा गकना उसौन सुखा कुटि लव। उाइ चाउनसँ काणिक खय जाएत। "

मदिना दादी वजली-

"𑒏𑒲 𑒦𑒹𑒪𑒅, 𑒠𑒹𑒪𑒏𑒅 𑒂𑒏𑒱 𑒢𑒻 𑒠𑒹𑒪𑒏𑒅?"

𑒖𑒰𑒢𑒏𑒲 𑒥𑒖𑒪𑒲-

"𑒏𑒲 𑒏𑒯𑒴𑒿 𑒠𑒰𑒠𑒲, 𑒏𑒰𑒏𑒰 𑒏𑒲 𑒋𑒏 𑒠𑒱𑒢 𑒥𑒰𑒜𑓃𑒢-𑒪 𑒯𑒫𑒪𑒲 𑒑𑒹𑒪𑒾𑓀 𑒯𑒢। 𑒖𑒰𑒜𑓃𑒑-𑒖𑒰𑒜𑓃𑒑 𑒙𑒰𑒿𑒑 𑒙𑒴𑒙𑒱 𑒑𑒹𑒪। 𑒥𑒰𑒜𑓃𑒢 𑒗𑒰𑒐𑒻𑒧 𑒒𑒱𑒒𑒢𑒲 𑒏𑒩𑒥𑒻𑒕। 𑒁𑒐𑒻𑒢 𑒞𑒏 𑒢𑒻 𑒠𑒹𑒪𑒏। 𑒖𑒐𑒢 𑒖𑒰𑒜𑓃 𑒕𑒲 𑒞𑒿 𑒥𑒑𑒰𑒢𑒲𑒕 𑒏𑒰𑒖 𑒁𑒜𑓃𑒰 𑒠𑒜𑓃𑒕। 𑒏𑒯𑒴 𑒢 𑒯𑒧 𑒁𑒣𑒢 𑒥𑒱𑒪𑓂𑒪𑒏𑒾𑒢 𑒕𑒲। 𑒮𑒏-𑒥𑒴𑒗𑒰 𑒪𑒑𑒥 𑒢 𑒏𑒩𑒻𑒕, 𑒏𑒏𑒰 𑒠𑒱𑒢𑒑𑒢 𑒏𑒰𑒖 𑒏ऽ 𑒠𑒹𑒥𑒜𑓃। 𑒁𑒯𑒲 𑒐𑒰𑒞𑒱𑒩 𑒯𑒧𑒩 𑒒𑒩𑒫𑒪𑒰 𑒂𑒢O𑒰𑒧 𑒏𑒰𑒖 𑒏𑒩𑒻𑒕 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒯𑒫𑒪𑒲𑒏 𑒏𑒰𑒖 𑒢𑒻 𑒏𑒩𑒻𑒪 𑒖𑒰𑒕 𑒔𑒰𑒯𑒻𑒕।"

𑒧𑒠𑒲𑒢𑒰 𑒠𑒰𑒠𑒲 𑒥𑒖𑒪𑒲-

"𑒂𑒥 𑒞𑒳𑒿 𑒥𑒴𑒗𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒯, 𑒥𑒰𑒜𑓃𑒢 𑒂𑒢𑒻𑒧 𑒞𑒢𑒯 𑒞𑒱𑒥𑒱𑒨𑒰 𑒞𑒪 𑒖𑒢𑒱 𑒖𑒰𑒯। 𑒯𑒧𑒩 𑒒𑒩𑒫𑒪𑒰 𑒋 𑒏𑒧𑒰𑒞𑒱𑒨𑒰 𑒯𑒫𑒪𑒲𑒏 𑒁𑒜𑓃𑒾𑒞𑒲 𑒂 𑒥𑒑𑒰𑒢𑒲 𑒐𑒙𑒻𑒞-𑒐𑒙𑒻𑒞 𑒠𑒳𑒢𑒱𑒨𑒰𑒿𑒮𑒿 𑒔𑒪𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒰। 𑒋𑒏 𑒧𑒢 𑒧𑒢𑒳𑒂 𑒂 𑒠𑒳 𑒧𑒢 𑒡𑒰𑒢 𑒏𑒩𑒖𑒧 𑒢𑒢 𑒢𑒯𑒲 𑒞𑒏𑒢 𑒮𑒳𑒠𑒱𑒏 𑒮𑒳𑒠𑒱 𑒖𑒰𑒞𑒱 𑒏ऽ 𑒏𑒩𑓂𑒖 𑒞𑒢𑒧 𑒠𑒮 𑒏𑒙𑓂𑒙𑒰 𑒔𑒾𑒧𑒰𑒮 𑒂 𑒠𑒳 𑒏𑒙𑓂𑒙𑒰 𑒥𑒰𑒮𑒞𑒲𑒯 𑒪𑒱𑒐𑒰 𑒯𑒢𑒻𑒨 𑒪𑒪𑒏। 𑒋𑒜𑓃𑒲 𑒖 𑒯𑒧𑒩 𑒞𑒲𑒯𑒥𑒰𑒮 𑒠𑒐𑒻 𑒕𑒯𑒏 𑒮 𑒮𑒢𑒏𑒰𑒢𑒲𑒕 𑒨𑒢𑒞𑒲 𑒕𑒱𑒋। 𑒒𑒩𑒫𑒪𑒰𑒏 𑒧𑒴𑒜𑓃𑒪𑒰 𑒨𑒕𑒰𑒜𑓃𑒑 𑒖𑒐𑒢 𑒥𑒰𑒮 𑒞𑒲𑒯𑒨𑒢 𑒮𑒿 𑒦𑒑। 𑒠𑒪𑒏 𑒞𑒐𑒢 𑒯𑒧𑒩 𑒠𑒳𑒢𑒳 𑒥𑒙𑒰 𑒧𑒰𑒟𑒨𑒢 𑒕𑒱𑒙𑓂𑒙𑒰𑒧 𑒧𑒰𑒙𑒱 𑒅𑒒𑒱-𑒅𑒒𑒱 𑒦𑒢𑒱 𑒏ऽ 𑒥𑒰𑒿𑒮-𑒐𑒳𑒙𑓂𑒙𑒰 𑒋 𑒮𑒧𑒰𑒖𑒮𑒿 𑒧𑒰𑒿𑒑𑒱-𑒔𑒰𑒿𑒑𑒱 𑒏ऽ 𑒒𑒩 𑒥𑒢𑒻𑒪𑒏 𑒂 𑒯𑒧𑒯𑒴𑒿 𑒥𑒴𑒜𑓃𑒰𑒢𑒲𑒧 𑒢𑒰𑒞𑒱 𑒠𑒱𑒢 𑒮𑓀𑒑 𑒠𑒪𑒱𑒋। 𑒠𑒳𑒢𑒳 𑒥𑒙𑒰 𑒏𑒧𑒰𑒞𑒱𑒨𑒰 𑒯𑒫𑒪𑒲 𑒂𑒜𑓃 𑒡𑒢𑒱 𑒒𑒴𑒧𑒱 𑒢𑒻 𑒑𑒹𑒪। 𑒏𑒰𑒖 𑒢 𑒋𑒞𑒏 𑒮𑒲𑒐𑒻𑒢 𑒕𑒲 𑒖 𑒏𑒯𑒱𑒨𑒰 𑒥𑒻𑒮 𑒢𑒻 𑒐𑒰𑒜𑓃𑒕। 𑒏𑒰𑒖𑒏 𑒪𑒴𑒢𑒱 𑒢𑒯𑒢 𑒏𑒰𑒖 𑒔𑒜𑓃𑒪 𑒢𑒯𑒻𑒕। 𑒞𑒳𑒿 𑒯𑒫𑒪𑒲𑒏 𑒦𑒢𑒧 𑒪𑒑𑒪 𑒕𑒯।"

विक्रम जानकी बजली-

"दादी, हम कमलहा बाइन नै छोड़बै। हमरासँ सूदिक सूदि जोड़ि लैत अछि। आइ जँ हमहूँ करिय देलिऐ त बाइन नाखु दु मनक तीन मन असूल कऽ लेब, अहाँक अन्ना-यानि दूना-तिगुना बढ़ि जाइत आ गरीबक बाइन त छह मास, साल दिनक पछाइत देबै तँ ओकर सूदि नइ होइ। हमहूँ सूदि लगा कऽ लेब।"

मदीना दादी बजली-

"सूना कऽ कहलहक की नहि?"

जानकी बजली-

"सूना कऽ! बिकौन कऽ कहलिऐ। जहाँ न कि सूनलक कि जना बिढ़नी कटलायन लोक छिटयिटा उठैत गहिना छिटयिटा लगल। मूदा किछु कहैक साहस नै होलइ। जँ किछु बजित तँ समाजसँ दस बकीलँ बजा यानि उठाइन देतिऐ।"

मदीना दादी बजली-

"साँझ यति गेल। छाउह अखेन हबलीक गय-सय्या। जगा काल उमनाइल नहब गा काल घनक काज याछु यति जाइत। सौंसूका यहन बीतल जाइत, यहिन घनम साँझ-बाती देखा लइ छी।"

जानकी बजली-

"दादी, हमहूँ जाइ छी साँझ-बाती देबइ। अबन देऽ गेल। बिहुका

सम्भानव आ रानस-राग करव। काजयन सँ घरवला अवै छैथ गँ सवन खा कऽ सुतै छैथ। मुदा कमगिया रवलीक किनदानी कहिया रुलिसँ सूना दव।"

मदीना दादी वजली-

"कहिया किछ वजलह, आऽ अवन रऽ गेल आ अखन गयक वन नै काजक वन छी गँछ, अखन गहुँ जा काल्हि दुयरुनियाम अविरुह रुलिसँ सर गय सूना दवह।"

मदीना दादीकँ गोन लागि जानकी अयन घन दिस विदा रली। कमगिया रवलीक किनदानी वूसैक जिज्ञासा मनम वढिय गेल छलैन। मनम रहऽग नहैन जे कखनी नागि विगा जे काल्हि दुयरुनम दादी लग जाछव। सर काज सम्हानि रानस-राग कऽ यगिकँ खीआ अयना खा कऽ सुगि नहली। रिनसन उठि रहँऽ-रहँऽ काज कऽ यनयिआऽ आ खनाऽ वना काजसँ निवृत रऽ गेली। विहुका नन दुयरुनियम दादी लग यहुँचली।

मदीना दादी नहा-खा हुक्काम चिलम वामि सांट मानि सूनगवै छली। दादी जानकीकँ अवैग दख वजली-

"कनियाँ, यूवनिय उासनायन वैसह। किछ गँ गाना कानाम विहुका छह छगछ वद्याकँ हुक्काक धूऽयाँ लगि जाह। रुमहुँ उठि कऽ यूवनिय उासनयन अवै छी। अखैन काना काजा नहियँ अछि। निघनसँ गय-सय्य करव।"

जानकी बजली-

"दादी, अहाँ त काजसँ निवृत छी मुदा हम तँ असगरुआ छी, बहुत काज पड़ुआएल अछि। तहुम अपन परदेश जाइबला छैथ। हुनका उरियान करए पड़त। हम तँ कमतिया हवेलीक किरदानी जनैल अहाँ लग एलौं हेन। काल्हि न हमरा आ न अहाँकेँ समय रहत ज बता दइयौं।"

मदिना दादी बजली-

"बटपट नै करु कनियाँ, पहिन करी हुक्का पीअ देउ तखन निवृतसँ तय करब।"

मदीना दादी जान-जानसँ सांट मानि हुक्का पीबए लगली। बिलमक कंकन जनि गेल तखन हुक्का माख लग तए लगा ०।८ कs पूबनिया उसानपन आबि बटकुनी बिछा बैसली।

हुनु गोरम बौवतलीक तय-सत्य शुनु एल। जानकी चानु कातक तयक हूमिका बान्हि कमतिया हवेलीक कछ्र बिछु बना मदीना दादीसँ पूछि देलखिन।

मदीना दादी बजली-

"जखन हातराक कथा जकाँ करुबरु तँ सुनबरुक तँ मुदा एक कानसँ सुनबरुक आ दोसर कानसँ बाहि जाए। स नहि तँ तपसी जकाँ धियान लगा सुनबरुक तखन किछु जानबा करबरुक आ हमरा मुह्ला पछाइत तामम ताहु न दादी हबरुक, जना आइ हम छी।

गाममे कहुन-कहुन कानमामा सर एल मुदा लोक सेहो नहल, न किया बूझल गेयान आ न किया विरोध कएलक। मुदा आजुक दिन किछु बदलि गेल आ लोकमे विचार बदललैए। जे नवयुवककेँ विरोध करए लगलैए। गाम समाजमे पढ़ल-लिखलकेँ सोझाँ काज छै जे विरोध करए। अखनो गरीब लोकक ठग-ठगाइन शोषण होइ छै आ ओ डरे लग। सेहो नहिए, ओकर संगी दुनूवला किया न गेयान होइ छइ।"

कनखनल जानकी विभ्रम पूछि देलखिन-

"दादी, की गरीबक मूँहमे बोली नै छै, की विवेकक कमी छै जे ओकर दुख सहिते शोषित होइए। आखिर एकर कारण की अछि?"

मदीना दादी जानसँ हुँकार भरैत बजली-

"सुनह एकर कारण कोनो एकटा छै जे सब-द कहि देबह। बहुत रास कारण छै। एकरा लग महाराजाक हाल अछि। मुदा हमरा जे बूझल आ अनुभव कएल अछि एकर एकटा अंश कहै छिअ। पहिने- राजा महाराजाक शासन बनै छलै हुनका सबहक कानून बड़ कठोर! छोट-छोट गलती करैवलाकेँ नमहर-नमहर सजा दैत छलै। लोक डरे कठोर दण्डक डरसँ विरोध बनल नहि छल। खेतक मालगुजारी बड़ कठोर छलै। जइ साल उपजा होइ छलै ताइ साल गाँ कहुना लोक मालगुजारी दैत छलै मुदा जइ साल रौदी वा दाही होइ छलै गाँ मालगुजारी बुझाना नै कऽ पबै छलै। पहिने खेतीक अलावा न दोसर कोनो साधन छल आ न

कोनो रोजगार, जाहिसँ लोक कमा कऽ पेट भरैत। गामक गाममे भुखमरी होइत छलैक। गरीब लोक सभ बाल-बच्चा आ अपन घर-परिवार छोड़ि ढाका-मुंगेर, मोरंग कमाइले चलि जाइत छल। गामक जमीनदार कर्ज तरम गरीबक सभटा जमीन लिखवाय लेलक। मलगुजारी नहि देलापर राजा सभ खेत सभकेँ निलाम कऽ लैत छल। ओ जमीन सभ अपन लगुआ-भगुआ सभकेँ दऽ दैत छल। ओहि निलामीवला जमीनक जागीर बना कतेको जमीनदार बनल। किछु लोक मुंशी-मनेजर आ सर्किलक हाकीमसँ मिलि कऽ गरीब आ किसानक जमीन ई निलाम होइत छलै ओ कनी-मनी रुपैआ दऽ अपना-नामसँ जमीनक पट्टा बना लैत छलैक। ऐ तरहेँ मिथिलांचलक मूलवासी गरीब भऽ गेल। बहुतो डीहवास सभ भूमिहीन बनि विलेट गेल। ई जमीनवला छलै से गरीब मजदूर भऽ गेल आ बाहरसँ आबि कमतिया सभ जमीनदार भऽ गेल। ओ सभ अपन-अपन काम बना रहल लगल। ओठामक भूमिहीन मजदूर पेटक खातिर कमतिया सभहक खेतमे मजदूरी, बकारी, नोकरी-चाकरी करै छल। कमतिया सभहक धिया-पुता पढ़ि-लिख आनठाम हाकिम-हुकाम बनि शहरमे रहैत आ गामक जमीनक उपजासँ निहाल भऽ गेल। तैयो संतोख नै भेलै। ओठामक गरीब-मजदूरकेँ कर्जार बगारी खटैत-खटैत कहियो पार नहि भेलै ई निरोध करैत। जखन देश अजाद भेल तकर किछु बर्खक पछाइत गरीब-मजदूरक यूनियन बनलै। कम्युनिष्ट पार्टीक लोक सभ देलकै। गाम-गाम कमतिया सभहक जमीनपर लाल झंडा गाड़ि डंका बजा-बजा चुनौती देलकै। खेतक उपजाकेँ लुटिस करौलक। तखन किछु कमतियाकेँ कमदाममे जमीन बेचए पड़लै। मुदा ई कमतिया अपना सभहक समाजमे

हिल-मिल नहुँ लगल उा सए काOा-साहु वना ठीहुवास् एऽ (गेल। मुदा चालि-चलैन पूर्णत: नै वदललै। कहुवी छै- चालि, प्रकृति आ वमाउ ॐी गीनू मूॐन जाउ। लाक सए ज कहौ मुदा हुम गँ सए दिन कमगिया कहलिउ आ अखना कहै छिउ। गुँ सए न धनिक आ काOा-साहु दख हुवली कहै छहुका।"

विभ्रम जानकी वजली-

"दादी, अहाँक वाग सुनि वहुग जानलौं मुदा अहाँ कमगिया कहै छिउ आ हुम हुवली कहै दिउ, गखन दुनू जाति कऽ कमगिया हुवली वाजव नीक नै हुउग की?"

मदीना दादी वजली-

"वजवाक लल मुँहुक काना एाउा-खर्चा लगै छै, ज मन हुअ स वाजह मुदा उचिग वूमि वाजवह गखन न समाजाक लाक सीखग। ॐअह उनटा-पूनटा एन न आॐ मिथिलाक लाक आनOामसँ वसी गनीव अछि। जकान सुधि आॐ धनि किया न ललका।"

उ नवनायन अयन

मंगय editorial.staff.videha@gmail.com **यन यOाउा।**

३.२.राम विलास साहुक ७ टा कथा- कथा-२ अध्ययन सम्पादकीय समीक्षा अंग्रेजीमे सम्पादकीय पृष्ठ पर

विदेहक लेखकक आमंत्रित रचना आ अध्ययन आमंत्रित समीक्षकक समीक्षा सीरीजमे अखन धरि अहाँ पढ़लौं-

१. कामिनीक पांच टा कविता आ अध्ययन मधुकान्त झाक टिप्पणी

Videha_01_09_2016

२. जगदानन्द झा "मनु"क "मारिक वासन"यन गजन्द ०ाकून्क टिप्पणी

VIDEHA_353

३. मुन्नी कामतक एकांकी "जिनगीक मोल" आ अध्ययन गजन्द ०ाकून्क टिप्पणी

VIDEHA_354

ऐ शृंखलामे आगाँ समानान्तर धाराक किछु गद्यमाय कथाकारसँ हुनका नजरिमे हुनकर अपन सर्वश्रेष्ठ ५-५ टा कथा आमंत्रित कएल गेल अछि। कथाकार लोकनि छथि:-

१.कपिलेश्वर राउत

२.उमेश मण्डल

३.राम विलास साहु

४.राजदेव मण्डल

५.नन्द विलास राय

६.जगदीश प्रसाद मण्डल

७.दुर्गानन्द मण्डल

८.रामानन्द मण्डल

ऐ अंकमे प्रस्तुत अछि राम विलास साहुक ५ टा कथा, अध्ययन

हमर समीक्षा अंग्रेजीमे सम्पादकीय पृष्ठ पर अछि। - सम्पादक



राम विलास साहु केर पाँचटा कथा

कथा २

दुखबबनी

चलित्तर आ पवित्तर दुनू सँहोदरक समांग कमौआ परिवार अछि। माए-बाप पहिनहि स्वर्गवास भऽ गेलखिन। एकटा बहिन- नीता सयान अछि। बड़ लुरिगर-कमासुतनी सुन्नर अछि। मुदा पढ़ल-लिखल नै रहने विआहक गप न लगैए ऐ लग्न पेका।

नाम्हदिगरमे सम्पन्न परिवार हिरालालक छैन। हुनका एकटा बेटा-सोनलाल, परिवारो नीक गुणगर अछि आ धनक कोनो कमीए ना। मुदा बेटा मतिछिन्न, विआह हब न करए। चलित्तर-पवित्तरकेँ गप लगल, ओ अपन बहिनक विआह सोनलालसँ बिनु दहेजक कलक।

नीता सासुर बसए लगली। समय पाबि सासु-ससुरक सेवा टहल सेहो करए। ओझम बिचार मनमे रखने आ कनिया। दु बर्खक

पछाति बसन्त पंचमी दिन रीनाकेँ जौआँ दुटा बेटा भेल। परिवारमे सभ किओ खुशीक माहौल बनौने।

छठिहार दिन राज-रेणुकाक सनमान करए लगल। धूमधामसँ छठिहार मनौल गेल। गौआँ सभ कहए जे भगवान जकरा दैछ छथिन एकरा छप्पर फाड़ि कऽ।

मुदा रीनाक परिवारमे ई खुशी बेसी दिन नै रहल। पाँचम बरखक पछाति सासुरालक मणि आमा बिगड़ए गेल। दवा-दारूक ईलाज आ सिद्ध ओझा-गुनीसँ झाड़-फूक करौलक मुदा सुधरल नहि, मरि गेल। पुत्रक सोगमे हिरालाल दुनू परानी सेहो मरि गेला। पहि, सासु-ससुरक ईलाज श्राद्ध-कर्म आ राज-रोगमे लाग न खर्च भेल जे रीनाक धन हेरैन गेल। बेटा घरक समान आ जमीन-जत्था बीकि गेल। न घरमे बूढ़-बुजुर्ग रहला आ न गार्जन। मसोमाती नारि, न किया कहनिहार न सुननिहार। एखा रीना दीन-हीन बनि अपन सुख-दुखसँ परिवारकेँ आगू मुहेँ ससारैत रहली।

दुनू बेटाक लालन-पालनमे कोनो कोताही नहि हुअए देलक। पाँच बरखक पछाति दुनूकेँ गामक स्कूलमे पढ़बए लगल। घर-गिरहस्ती आ खेतीक काजक लूरि रीना नैहरमे सीखने छली, तेँए घर भरल-पूरल रखने। मुदा 1954 ईस्वीमे कोसीक बाढ़ि-पानि गामक न आएल जे सम्पूर्ण नागदिगनकेँ तहस-नहस कऽ देलक।

रीनाक जमीन कोसीक पेटमे समा गेल आ जे बचल से बालुक ढ़ेर बनि गेल। खेत, काश, पटेर आ झौआक बानक अलाव किछु न

दुख पड़ैत। नीताक चास बिलैट गेल। अल्लुआ, सुथनी, मनुआ, कौठन आ कादो उपजा कऽ नीता जीवन चलबए लगली। दुख-पर-दुख बढ़ैत नीता जिनगीसँ हारि नै मानली। किछु दिनक पछाति जन- मजूरी कऽ घरक खर्च चलबए लगली।

नीताक मन मटिया कऽ घुमियाए लगल। मटियाइते मन घुमि कहलकै- दू-चारिटा लगहरि गाए-महींस पासब।

नीता अपन गहना बेच दूटा महींस आ तीनटा गाए कीनि सेवा करए लगली। घासक कोनो कमीए नै छल। घास काटि-काटि गाए-महींसक आगू लगानबो करए आ एक साँझ चरबो करए। दूध बेच कऽ गुजर करए लगली। नीक आमदनी हुअए लगल। दूधक कारोबार देख नीताकेँ लोक दुधबेचनी कहए लगल। दुधबेचनी सुनि नीताकेँ खुशीए होइत। मनमे होइत नहि घुसखानी आकि घुसखोरीसँ साए गुना नीक अछि किने।

बेटाकेँ पढ़बै खातिर नीता दिन-राति अपन काजमे मनसँ लागल रहै छली। दुनू बेटा जहिना देखै-सुनैमे नीक तहिना पढ़ैयोमे चनसगर। वयसगर होइते दुनू बेटाकेँ नीता दरभंगामे राखि पढ़बए लगली। कोनो दिक्कत नै रहल हुसु तिनिजनसँ पास करैत एक गोटे बी.एस-सी आ दोसर बी.कॉम कऽ नोकरी तलाशए लगल।

नोकरीक कम्पटिशन परीक्षामे एक गोटे रेलवेमे आ दोसर गोटे बैंकमे कम्प्लिट कलक। दुनू बेटाकेँ आन प्रदेशमे नोकरी रहल। दुनू

सेँहो अपन-अपन विचार अपन मन परदेशमे क' लेलक आ परिवार बसा-बसा दुनू सेँहो सुख-मौजसँ रहए लगला।

बूढ़ माएकेँ के देखैत। दुनू सेँहो अपन-अपन काज आ परिवार लऽ कऽ उगए-डूमए लगला। धीरे-धीरे अपन गरीबीकेँ जहिना बिसरए लगल तहिना माइयोक कष्टकेँ सेहो बिसरैत गेला।

मुनकूट बूढ़ भेल रीताक समांग खसि पड़ल। समांग खसने रीताकेँ ने काज करैक शक्ति आ ने गाए-महींसक सेवा-टहल करैक इच्छा-शक्ति रहल। अपन आगुक जिनगी केना चलत आ के सहारा करत तेकर चिन्ता बढ़ि गेल।

शारीरिक शक्ति घटने रीता सोचए लगली जे अपन कर्त्तव्य तँ हम इमान राखि बेटा लेल केलौं मुदा बेटाक धरम ने चाही जे अपन माइयोक दुखकेँ मोन राखत। जे बेटा दुखक कर्ज ने चुका सकैए ओ...।

बेटा लेल जे केलौं से तँ समाज लेल करितौं तँ अपन कल्याण संगे समाजोकेँ कल्याण होइतए। बेकती खराप भऽ सकैए मुदा समाज नहि। तखन समाजक शरणमे जा कहि कऽ पकड़ब सही हएत। ओना, समाजोमे तँ अपन प्रतिष्ठा अछिए। ने केकरो धारने छी आ ने केकरोसँ उकटा-पुकटी कहियो भेल। हम अपन जिनगीकेँ काजमे लगौने छी तखन के हमरा अपकार की अपराध करत। हम की कोना जिनगीकेँ उखाड़ बनौने छी जे किया जरत-मरत। अपन जिनगी तँ सफल सरस अछिए, जरूर समाज संग देत करत।

𑒢𑒲𑒩𑒰 𑒮𑒼𑒔𑒱 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩𑒱 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒠𑒱𑒢 𑒮𑒧𑒰𑒖𑒏 𑒪𑒼𑒏 𑒮𑒦𑒏𑒹𑒿 𑒥𑒻𑒮𑒰 𑒥𑒖𑒪𑒲-

"𑒯𑒧 𑒮𑒧𑒰𑒖𑒏 𑒥𑒲𑒔 𑒢𑒯𑒱 𑒖𑒱𑒢𑒑𑒲 𑒥𑒱𑒞𑒹𑒪𑒾𑓀। 𑒁𑒣𑒢 𑒬𑒩𑒲𑒩𑒮𑒿 𑒏𑒧𑒰 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩𑒏𑒹𑒿 𑒂𑒑𑒴 𑒮𑒮𑒰𑒩𑒪𑒾𑓀। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒯𑒧𑒩 𑒮𑒧𑒰𑓀𑒑 𑒐𑒮𑒱 𑒣𑒛𑓃𑒪। 𑒥𑒹𑒙𑒰-𑒣𑒳𑒞𑒼𑒯𑒳 𑒮𑒦 𑒖𑒹 𑒏𑒩𑒻𑒋 𑒮𑒹 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒮𑒦𑒏 𑒮𑒰𑒧𑒢𑒹 𑒁𑒕𑒱। 𑒖𑒐𑒢 𑒥𑒹𑒙𑒰 𑒪𑒹𑒪 𑒋𑒞𑒹 𑒏𑒹𑒪𑒾𑓀 𑒞𑒿 𑒯𑒧𑒩 𑒡𑒩𑒧 𑒥𑒢𑒻𑒋 𑒖𑒹 𑒮𑒧𑒰𑒖𑒏 𑒪𑒹𑒪 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒏𑒩𑒲।"

𑒑𑒼𑒥𑒲𑒔 𑒥𑒔𑒢 𑒥𑒰𑒖𑒪-

"𑒁𑒣𑒢𑒏 𑒃𑒔𑓂𑒕𑒰 𑒏𑒲 𑒁𑒕𑒱 𑒮𑒹 𑒐𑒼𑒪𑒱 𑒏𑓄 𑒂𑒑𑒴 𑒥𑒰𑒖𑒴।"

𑒢𑒲𑒩𑒰 𑒥𑒖𑒪𑒲-

"𑒯𑒧𑒩 𑒁𑒢𑓂𑒞𑒱𑒧 𑒃𑒔𑓂𑒕𑒰 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒹 𑒁𑒣𑒢 𑒐𑒹𑒞-𑒣𑒟𑒰𑒩-𑒛𑒲𑒯-𑒛𑒰𑒥𑒩𑒏 𑒮𑓀𑒑 𑒑𑒰𑒋-𑒧𑒯𑒲𑓀𑒮 𑒮𑒦 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒮𑒧𑒰𑒖𑒏𑒹𑒿 𑒮𑒾𑓀𑒣𑒱 𑒠𑒲। 𑒖𑒃𑒮𑒿 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒑𑒼𑒬𑒰𑒪𑒰 𑒂 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒮𑓂𑒏𑒴𑒪 𑒥𑒢𑒰 𑒠𑒱𑒎, 𑒖𑒏𑒩 𑒏𑒰𑒑𑒖 𑒯𑒧 𑒮𑒧𑒰𑒖𑒏𑒹𑒿 𑒥𑒢𑒰 𑒠𑒹𑒥।"

𑒮𑒧𑒰𑒖𑒏 𑒮𑒦 𑒏𑒱𑒨𑒰 𑒮𑒩𑓂𑒫-𑒮𑒧𑓂𑒧𑒞𑒱𑒮𑒿 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩 𑒧𑒰𑒢𑒱 𑒪𑒹𑒪𑒏। 𑒑𑒼𑒥𑒲𑒔𑒧 𑒢𑒰𑒧𑒢𑒲𑒢 𑒂𑒑𑒴 𑒂𑒥𑒱 𑒥𑒰𑒖𑒪-

"𑒑𑒼𑒬𑒰𑒪𑒰 𑒂 𑒮𑓂𑒏𑒴𑒪, 𑒠𑒳𑒢𑒴𑒏 𑒐𑒑𑒞𑒰 𑒮𑒧𑒰𑒖𑒧 𑒁𑒕𑒱। 𑒑𑒼𑒬𑒰𑒪𑒰𑒏 𑒂𑒧𑒠𑒢𑒲𑒮𑒿 𑒑𑒩𑒲𑒥𑒏 𑒡𑒱𑒨𑒰-𑒣𑒳𑒞𑒰 𑒣𑒜𑓃𑒥𑒼 𑒏𑒩𑒞 𑒂 𑒑𑒰𑒋-𑒧𑒯𑒲𑓀𑒮𑒏 𑒮𑒹𑒥𑒰 𑒏𑒩𑒞।"

𑒫𑒱𑒬𑓂𑒩𑒰𑒧 𑒋𑒏 𑒥𑒹𑒩𑒲 𑒚𑒰𑒜𑓃 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒥𑒰𑒖𑒪-

"𑒥𑒛𑓃 𑒮𑒳𑒢𑓂𑒠𑒩 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩। 𑒖𑒐𑒢 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒠𑒴𑒡𑒥𑒹𑒔𑒢𑒲 𑒋𑒞𑒹𑒏 𑒞𑒱𑒨𑒰𑒑 𑒏𑒩𑒻𑒞

गेयान अछि समाजक खातिर तँ हम समाज मिलि हिनकर सए सता-टहल जिनगी रहि निमाहब। दुःखबचनी गामक ॐज्ञाकेँ बढ़ौलक। धन आ ज्ञान दुनूकेँ बढ़बैत ओ प्रश्न लली अछि ओ साओन् लक्ष्मी-सरस्वतीक रूपी रहली किना।"

समाजक लोक रूपी नूपम दुःखबचनी- नीताकेँ माला पहिरा समाजमे घुमबए लगल।

-

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

३.३.राम विलास साहुक ७ टा कथा- कथा-३ अध्ययन सम्पादकीय समीक्षा अंग्रेजीमे सम्पादकीय पृष्ठ पर

विदेहक लेखकक आमंत्रित रचना आ अध्ययन आमंत्रित समीक्षकक समीक्षा सीरीजमे अखन धरि अहाँ पढ़लौं-

१. कामिनीक पाँच टा कविता आ अध्ययन मधुकान्त झाक टिप्पणी

Videha_01_09_2016

२. जगदानन्द झा "मनु"क "माटिक बासन"पर गजेन्द्र ठाकुरक टिप्पणी

VIDEHA_353

३. मुन्नी कामतक एकांकी "जिनगीक मोल" आ अध्ययन गजेन्द्र ठाकुरक टिप्पणी

VIDEHA_354

ई शृंखलामे आगाँ समानान्तर धाराक किछु प्रमुख कथाकारसँ हुनका नजरिमे हुनकर अपन सर्वश्रेष्ठ ७-७ टा कथा आमंत्रित

कएल गेल अछि। कथाकार लोकनि छथि:-

१.कपिलेश्वर राउत

२.उमेश मण्डल

३.राम विलास साहु

४.राजदेव मण्डल

५.नन्द विलास राय

६.जगदीश प्रसाद मण्डल

७.दुर्गानन्द मण्डल

८.रामानन्द मण्डल

ऐ अंकमे प्रस्तुत अछि राम विलास साहुक ५ टा कथा, अध्ययन हेतु समीक्षा अंग्रेजीमे सम्पादकीय पृष्ठ पर अछि। - सम्पादक



राम विलास साहु कर पाँचटा कथा

कथा ३

स्वर्गिक सुख

कोसी नदीक छाड़नमे बौकु सदाय खोपड़ी बना रहै छल। अगल-बगलमे आनो लोक सभ काश-पटेरक खोपड़ी बना रहै छल। कोसीक कटनियाँ सँ मुसहरी टोल उजैड़ गेल।

माघ मासक समए। दसमीक अराबसँ जाड़क मारल बौकु १०० बेर घूर तापै छल। जखन घूरमे आगि रहलै आकि बौकुक बड़ा-बड़ी सटि कऽ बैस आगि खानि-खानि तापए लगल। पत्नी बलवाबाली खोपड़ीसँ बकरी निकालैत जानसँ बजली-

"जाड़ियाँ सिदहाक अराबमे सभ काँपैत मुइल सुनि रहलौं, आब दिनामे बाल-बच्चा की खाएत। दुखसँ मरैय की बाल-बच्चाक संग कोसीमे डूमि मरब।"

बौकु सदाय बाजल-

"राम-राम एहन अशुभ बात नहि बाजू। भीखलहनी रनि कोना ताहुँ पताल बँचाउ। पताल बँचा गँ लोका उपए करब। कतिक्का समए रहनिब हरौ गँ खाइ-पीबैक ओगार करब। एक गँ कोसी मैयाक मारल छी दासन रगनाना बमुख अछि।"

भीखलहनीक कोना एकाल नहि अछि मुदा दुख गँ समैयन लगिय जाइए। बड़ा-बड़ी जाडिम किछु न खलका। दिनसन हाइक जान-जानसँ खाइल माँगए लगल।

बलवाबाली पड़सीसँ दु सन अलहुआ पैंच आनि घूरक आगिमे पका-पका बड़ा-बड़ीकँ दलका। अपना दुनू पनानी खलका। जपनसँ

यानि यीव-यीव रुख मरलक।

कृरुस कमिग नौदक दर्शन रुल। वलवानाली यगिकँ करुलकैन-

"दु दिनसँ सूखल नारी आ अलदुआ खा कS काना गनहँ दिन करलौं मुदा आ्ज्ञ रागक काना जागान कनु।"

वौकु जाठक काना यनवारु नज्ञ कनैग ध्वागीक गन-जयना उाठेग वाजल-

"सव मिलि चलु यनसा चौनीम धाना लाठव आ घांघी-ताका सह्य वीछि आनवा।"

साविकसँ यनसा चौनीक सिंगना-वलौठ आ सगनाज धान नामी अछि।

चौनी यदुँचग वौकु वटा-वटीकँ करुलक-

"गुँ सर घांघी-ताका वीछि-वीछि छिड्राम नाख आ रुम दुनू ध्गान धान वीछै छी।"

दुनू ध्गान मिलि कनीव यसनी रुनि धान लाठलक। वटा-वटी घांघी-ताका छिड्राम उठौलक।

जखन घन वलैल गैयान रुल गँ वौकुक यत्नी वजली-

"सूगैल ठकटा ध्गानैन अछि। किछ नान सह्य नन चलु। विछौना माटसँ दवौ। "

नान वीछैकाल वौकू ७करा ७ऽैया र्तनिक कौछकँ दखलक। दखण वौकू कौछकँ उनटौलक।

कौछकँ उनटा दन रागल न०० हा०० छ००। ३0। कs गौनीम वान्हलक। धान ७ा नान यन्नीक माथयन दलक ७ा ७यन वौकू घांघी-कौछ लs वटा-वटीकँ संग कन निदा रल।

घन यहुँचण धान नौदम यसानलक। यजासीसँ उक्खेन-समा0 ७ानि धान-कूटि कs चाउन गैयान कलक। कौछक मासू वना नान्हलक। दासन वनणनम राण नान्हलक। सर का०० संग खना०० खा००ल वैसल।

जा७क समयम सिंगना-वलौ७ ७ा दसहनिया धानक चाउनक लाल-लाल राण गलगन ७ा स्नादिष्ट हा००ण ७छि। गैयन सँ कौछक मासू ७यन गलसँ ३0ल-३0ल, राणयन यजिण राण। गलसँ गन-वणन रs गेल। वौकू वमनारिया हाथसँ राण-मासू वँटवा कन७ ७ा खवा कन७। खना०० ७धयरा रल गँ यानि यीव यियास मिसा नहमन साँस लैण वाजल-

"७हन खना०० रागशाली७ लाक खा००७। नाजा-महनाजाकँ नशीन न०० हा०० छ००। ००ी खना०० दखण कहन-कहन साधू-ववाजीकँ सदा मन ललिचा जण००।"

राजन कलायन वौकू घुन यजानि दह टनकौलक। वलवानाली ७नामसँ सुगैल (0हन रनि नान विछौलक ७ा वाल-वच्चाक संग डा००यन सुगल। ७ा जयनसँ (गौनेन डाढि ललक। कनीकालक यछा००ण

सबहक देह गरमा गेलहुँ।

बलवानाली हरिणी कनेक थम्हिकेँ कहली-

"ईश्वरक महान सहारा रहल। ओहन विकट समयमे ओहन खेनाइ आ ओहन ओढ़ना बिछौना मिलल।"

नीलक आनन्द देख बौआ बाजल-

"ई छी स्वर्गक सुख। ओहन सुख नबा-नबवानकेँ सुन्दर महल आ सजल पलंगपर नहि भेटत। अपना दखिया गन नानायच। आ अपन गोविन्द छै आ बीचमे बौआक पनिवान अनामसँ सुतल छथि। नहि काना जन-रन छै आ बगलमे कासी मैयाक दिन-नाति पहुना पउ छथि।"

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

३.४.राम विलास साहुक ७ टा कथा- कथा-४ अध्ययन सम्पादकीय समीक्षा अंग्रेजीमे सम्पादकीय पृष्ठ पर

विदेहक लेखकक आत्मविश्लेषण रचना आ अध्ययन आत्मविश्लेषण समीक्षकक समीक्षा सीरीजमे अखन धरि अएल पढ़लौं-

१. कामिनीक पांच टा कविता आ अध्ययन मधुकान्त झाक टिप्पणी

Videha_01_09_2016

२. जगदानन्द झा "मनु"क "माटिक बासन"पर गजेन्द्र ठाकुरक टिप्पणी

VIDEHA_353

३. मुन्नी कामतक एकांकी "जिन्दगीक मोल" आ अध्ययन गजेन्द्र ठाकुरक टिप्पणी

VIDEHA_354

ऐ शृंखलामे आगाँ समानान्तर धाराक किछु गद्यमाद्य कथाकारसँ हुनका नजरिमे हुनकर अपन सर्वश्रेष्ठ ५-५ टा कथा आमंत्रित कएल गेल अछि। कथाकार लोकनि छथि:-

१.कपिलेश्वर राउत

२.उमेश मण्डल

३.राम विलास साहु

४.राजदेव मण्डल

५.नन्द विलास राय

६.जगदीश प्रसाद मण्डल

७.दुर्गानन्द मण्डल

८.रामानन्द मण्डल

ऐ अंकमे प्रस्तुत अछि राम विलास साहुक ५ टा कथा, अध्ययन हमर समीक्षा अंग्रेजीमे सम्पादकीय पृष्ठ पर अछि। - सम्पादक



राम विलास साहु केर पाँचटा कथा

कथा ४

घूसहा घर

मुखियाजी पंचायतक गाम-गाम आम सभाक बैसार लेल ढोलहा दियौलैन। गामक लोक सभ एकजुट भऽ आम सभामे पहुँचला। सभाकेँ सम्बोधित करैत मुखियाजी बजला-

"ऐ बैसारमे सभ मिलि निर्णय लिअ जे पंचायतक गरीब आ असहाय, जिनकर घर टूटल-फाटल होइ वा रहबा जोग नै होइ, ओइ व्यक्तिक सूची बनाओल जाउ। हुनका सभकेँ सरकार तरफसँ घर बनबैले इन्दिरा-आवास योजनासँ रुपैया भेटतैन।"

वार्ड सदस्यक सहयोगसँ मुखियाजी लग इन्दिरा आवासवला सूची पहुँचल। बिहानसँ मुखियाजीक दलाल सभ सूचीमे नामांकित व्यक्तीसँ भेँट कऽ एक-एकटा फार्म दऽ कहि देलक जे फार्म भरि कऽ मुखियाजी लग जमा करै जाउ आ बैंकमे खाता सेहो खोलवा लेल जाउ। संगे संग पाँच हजार रुपैआ सेहो दिअ पड़त। तखन

इन्दिरा आवास रुपैआ बढ़ल गेलै तँ अपन गाय-महींस-बकरी-छकरी-गहना-जेवर जकरा जे गत लगलै बेचि कऽ रुपैआ दऽ रुपैआ उठेलक। किछु आदमी एहेन छल जकरा सकता नै रहलै ओ बंचित रहि गेल। बदलामे पाइवला लोक अपना नाम उठा लेलक।

किछु दिनक बाद नधिया मसोमात इन्दिरा-आवासक लेल फार्म भरि मुखिया जी लग पहुँचली। मुखियाजी फार्म पढ़ि बजला-

"पहिल इन्दिरा आवासमे पचीस हजार रुपैआ छलै आब चालिस हजार रुपैआ छै मुदा आगूसँ साइठ हजार रुपैआ। जइमे पच्चीसमे पाँच हजार आ अखन चालिसमे दस हजार खर्चा लगै छै मुदा आगू साइठमे पनरह हजार लगतै।"

नधिया सुनिते कानि-कलपि कऽ अपन मजबूरी सुनौलकैन। मुखियाजी मुड़ी डोलबैत बजला-

"यइ काकी, हमरा कहने नै न हेतइ छै, ऊपर-ऊपर हाकिम-हुकुम बैसल छइ। ओहो तँ कतिया सानहो कऽ नखन नहै छै सकता की हएत। आ हमरा कोना दनमाहा रुपैआ छै हमहूँ तँ उपरेमे निमहै छिऐ। तँ अहीं कहू जे हम अपनवला नै लेब।"

नधिया सभ बात सुनि घनिष्ठित बुझि आयस आबि गेली।

बुधनी बुढ़िया गाममे सभसँ उमेरगर। वृद्धापेंशन घरवला बाढ़िमे डूमि कऽ मरि गेलखिन। दुटा बेटाक संग बुधनी कहिया हिम्मत

नै हारली। संघर्ष करैत आत्म-निर्भरतापर धिया-पुताकेँ सशक्त बनौने छथि। हलाँकि आर्थिक रूप कमजोर छथि।

एक दिन मुखियाजीक नजरि बुधनी बुढ़ियापर पड़लनि आ हालत पुछलखिन-

"गामक बहुत लोक सब लाभ लेलक मुदा तूँ कोना फारम नै भरलीही? तोरा तँ दूटा लाभ भेटतौं। एकटा वृद्धा-पेंसन आ दोसर इन्दिरा आवासक।"

बधनी बजली-

"एम कोना खर्चा-बर्चा लगैए?"

मुखियाजी-

"हँ, वृद्धा-पेंसनमे पाँच सए आ इन्दिरा-आवासमे पनरह हजार।"

बुधनी-

"हम ई लाभ नै लेब।"

मुखियाजी-

"किए नै लेब?"

बुधनी-

"घूस दऽ कऽ धन बनाओब तँ आइ घूसहा धनमे नहेबला कहैत हेतै?"

मुखियाजी आ बुधनी बुढ़ियाक गप अपना घरक कोनचर लगसँ रधिया मसोमात सुनैत छली अपना मनकेँ बुझबैत बजली-

"इन्दिरा आवास किए घूसहा धन कहिया ना।"

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

३.७.राम विलास साहुक ७ टा कथा- कथा-७ अध्ययन सम्पादकीय समीक्षा अंग्रेजीमे सम्पादकीय पृष्ठ पर

विदेहक लेखकक आमंत्रित रचना आ अध्ययन आमंत्रित समीक्षकक समीक्षा सीरीजमे अखन धरि अहाँ पढ़लौं-

१. कामिनीक पाँच टा कविता आ अध्ययन मधुकान्त झाक टिप्पणी

Videha_01_09_2016

२. जगदानन्द झा "मनु"क "माटिक बासन"पर गजेन्द्र ठाकुरक टिप्पणी

VIDEHA_353

३. मुन्नी कामतक एकांकी "जिन्दगीक मोल" आ ओहिपर गजेन्द्र ठाकुरक टिप्पणी

VIDEHA_354

ई शृंखलामे आगाँ समानान्तर धाराक किछु गणमान्य कथाकारसँ हुनका नजरिमे हुनकर अपन सर्वश्रेष्ठ ५-५ टा कथा आमंत्रित कएल गेल अछि। कथाकार लोकनि छथि:-

१.कपिलेश्वर राउत

२.उमेश मण्डल

३.राम विलास साहु

४.राजदेव मण्डल

५.नन्द विलास राय

६.जगदीश प्रसाद मण्डल

७.दुर्गानन्द मण्डल

८.रामानन्द मण्डल

ई अंकमे प्रस्तुत अछि राम विलास साहुक ५ टा कथा, जाहिपर

हमन समीआ अंग्रजीम सम्पादकीय पृष्ठ यन अछि। - सम्पादक



नाम बिलास साहु कन पाँचटा कथा

कथा ा

भिआक मरुा

जीवछ घनजमैया छला। हुनकन यत्नी नधिया, माउ-वायक उकलौगी वटी व७ दुलानि छला। नधियाक यिाकँ चानि वीघा चास-वास, कलम-वाँस आ गाउ-व७द छला। खनी-वाउीसँ जिनगी चलै छलैन। सामगिया नहुन काना छल-कयट नै नहैन। यिामनु छला। यनिवानम अउनक वाध ककना नै नहैन खाली जीवछ ट-व कउ कs साउन छला। नधियाक यिा जनुना य७लायन जखन समाजम काना लन-दन कनै छला गँ जोँ(0क निशान द०० छला।

उक साल उहुन समउ एलै ज ००लाकाक ००लाका वाढि-यानिसँ दहि (गलऽऽ। न ननान कनैल अन्न आ न दाँग खादहैल नान-यूआन एलऽऽ। दासन साल नौदी एs (गलऽऽ। उक गँ वाढिक मानल, दासन नौदीक जनल। गनीव-गुनवाकँ गुजन कटनाऽऽ यहा७

भऽ गेलन्हि। काका परिवार सँ आन-आन गाम अपन-अपन कुटुमैती जा किछु दिन समए कटलक। मुदा ओही सुविधा सबहक नसीब नै छलन्हि। गामक नमहर जमीनदार, मालिक-गुमस्ता जे छला हुनका सँ पहिलुक सालक पुरना अन्न बखारीक-बखारी भरल छलैन। हुनका सभकेँ कोनो चिन्ता नै छलैन। नथियाक माए-बाप बूढ़ तहन आन गाम जा कमा काज करए। ओ दुनू गाममे मालिकसँ कहियो मजुरा सँ कहियो धान सँ कहियो छाँटी चाउर कर्जा लऽ समए काटै छल। कर्जा देनिहार मालिक सभ निश्चित समयमे गरीबक शोषण सहज करैत। एक मन अन्नक बदला दू मन आ दोसर साल चुकेलापर तीन मनक करारीपर कर्जा लगबैत। तकर बाद औंठाक निशान एकटाकेँ कऽ करुए जे तीन-तीनटा छाप कागतपर लऽ छलखिन। गरीब अपन परान बँचाएत आकि छापक परवाह करत। कर्जा खेनिहार थोड़े बूझै छल कि छाप देबै कागतपर आ हुनर जमीन जत्था चलि जेतै तक्कापर।

एक दू साल समए बितलै। जीबछ अपन सासुरेमे सासु-ससुरक सेवा आ खेती-बाड़ी कऽ गुजर-बसर करै छल। किछु समए पछाति सासु-ससुर मरि गेलखिन। श्राद्ध-कर्मसँ निवृत भेल छल आकि गामक मालिक-गुमस्ता लोकनि अपन-अपन कागत लऽ जीबछ ओतऽ पहुँचए लगला। कर्जा सँ करारीपर देने रहैन। ओ समय बीति गेल छल। कर्जा खेनिहार पहिल कागतपर छाप देने रहैन। ओहि कागतपर मालिक-जमीनदार लोकनि जमीनक खाता-खेसरा नकल लिखि कऽ अपन नाओं कऽ लेलैन। गरीब सबहक जमीन मालिक-गुमस्ता हथिया लेलकैन। जाहिमे नथियाक जमीन सहो चलि

गेल। आब जीवछ-नधियाकेँ दूटा बेटी, एकटा बेटा आ परिवारक भरण-पोषण करनाइ कठिन भऽ गेल। जीवछ कमाइ खातिर बाहर चलि गेल। बाहरमे पढ़ल-लिखल आदमीकेँ नोकरी जल्दीए होइ छलै आ बेसी दरमाहा सेहो भेटै छलैक। जीवछ बेसी पढ़ल तँ नै मुदा साउन छल। जइसँ शिक्षाक महत्व जिनगीमे कतेक होइ छै से मोने-मन महसूस करै छल।

जीवछ ट-ब-ट काए कहुना कऽ चिट्ठी लिखि घर पठेलक। ओइमे बेटा-बेटीकेँ पढ़बैले नधियाकेँ प्रेरित करैत कहै छल जे पढ़ाइमे जते खर्च लगत, हम कमाए कऽ पठाएब मुदा अहाँ धिया-पुताकेँ पढ़बैमे कोनो कोताही नै करब। नधिया मोने-मन सोचै छली जे नीक लोक बनबाक लेल शिक्षाक बड़ महत्व छै। जे हम आ हमर माए-बाप ओँए नै पढ़ल छलौं तँए ने सभटा जमीन मालिक-गुमस्ता हड़पि लेलैन। जखन पढ़ल रहितौं तँ ई मुसीबत नै अबितए। हम सभ जे कलौं से कलौं मुदा धिया-पुताकेँ जरूर पढ़ाएब। अइले हमरा जे परिश्रम आ त्याग करए पड़त ओ करब। ओ सभ दिन अपन धिया-पुताकेँ समयपर संगे जा स्कूल पहुँचाबए लगली।

नधियाक टोलमे बुच्ची बाबू छला। बुच्ची बाबू अंचलमे बड़ाबाबू छथि। छुट्टीमे घर आएल छथि। हुनका काल्हि भोर ट्रेन पकड़ए ड्यूटीपर जेबाक छलैन से नधियाकेँ कहलखिन-

"नधिया, किछु समान अधिक अछि। गाममे कएक गोटेकेँ कहलिऐ जे काल्हि भोरका ट्रेन पकड़ब से कनी समान स्टेशनपर पहुँचा दिअ, मुदा किओ तैयार नै भेल। तूँ कनी पहुँचा दइ। हम तोहर

व७ उयकान मानवा। "

नधिया वाजल-

"ठीक छै, कअ्ञ वजे चलवा। कहि दिअ् हम समान यहुँचा दवा। "

वूव्वी वावू वजला-

"साग वज रानम चलवा। किञक गँ आ0 वजम द्रन छ्ऽ्। गीन-चानि किला मिटन स्शन दुना छ्ऽ्। "

नधिया रान उ0 सर काज कऽ जलखै वना धिया-यूनाकँ खाऽ्ल दऽ वजली-

"गुँ सर जल्दीसँ खा, आऽ् कनी यहिनहिय गाना सरकँ स्कूल यहुँचा दऽ् छियौ, गखन वूव्वी वावूक समान यहुँचवैल टीशन जाञवा। "

ञम्हन वूव्वी वावू गैयान रऽ नधियाक वाट गकै छला। याँच मिनट यछाऽ्ग नधिया यहुँचली। वूव्वी वावू गमसाऽ्ग वजला-

"नधिया, गाना कहन छलियौ साग वजे चलैल, दनी रऽ (गला। द्रन छुटि जाञगा। गाना काना विन्दा नहि। "

नधिया वजली-

"अयन गमसाउ नहि। धीन-धीन वढ़ हम समान लन लहनल यिछयन आवि नहल छी। कनी धिया-यूनाकँ स्कूल यहुँचवैम दनी लागि (गला। "

बूच्ची बाबू-

"पहिल समान पहुँचा देबौं, हमरा ट्रेन छुटि जाएत। एक दिन पाहुन बटा-बटी स्कूल नै जेतौ गँ की हेतौ। एक दिन काना पढि कऽ कलक्टर बनि जेतौ?"

नधिया मोने-मन सोचए लगली, कहै छथिन आगू बढ़ैत स उठिय न होएत छैन। हम गँ लहनल दिनकासँ पहिनहि पहुँच जाएब। ट्रेन (थोड़ छूटतैन। अपन बगना आनन्द छैथ। अनन्त गछलौं।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

३.६.कुमार मनोज कश्यप- १ टा लघुकथा- अनिश्चितता

**कुमार मनोज कश्यप**

१ टा लघुकथा

अनिश्चितता

सर्वश्रेष्ठ ब्लॉगर क पुरस्कार लऽ मंच सऽ उतरैत प्रसन्न कौशल क असंख्य चमक आ पत्रकार सभ स' घेरा गेलाह। प्रश्नक झड़ी मे एकटा प्रश्न एलै- 'अहाँ ब्लॉग लिखबा लेल कोना प्रेरित भेलहुँ?' किछु पल गुम्म रहि भेलाह फेर बाजब प्रारम्भ केलनि- 'सत्य पूछी .... तऽ हमर अनिश्चितता .... मजबूर कऽ कऽ .... धकेलि देलक हमरा एहि दिस। हमर जीवन-संगिनी ...... जीवन भरि हमर संग नहिं दऽ .... बिच्चे मे .... असगर छोड़ि चलि गेलीह। बेटा-बेटी क .... अपन-अपन परिवार; अपन-अपन दुनियाँ! .... जनतब भेल स हमरा...... आ स्वतंत्रता! हमर क सुनय? सेवा-निवृत्ति

यछाणि.... हमन संपूर्ण दुनियाँ म नहि (गल एकमात्र हनथा! ....उाहा नहिं जानि पूर्व जन्मक हमन मृथी छल वा की...... स नहिं कहि! वोह हमन मित्र, हमन सनक, हमन सहव न...... उ वूमी.......सर किछ! उा हानस वनवेयै.... आ मैं हम खाण्णीग छी। कान सs उा ऊँच सुनेये.... मैं उाकना संग गय्य कण्णीय न सकैण छी। मैं .... दिन कटवा लल ब्लॉग अनमना वनल.........!'

गहींन निसाँस छाडि शून्य म उा किछ गाकय लगलाह।

आव प्रश्न आ उत्तन दुहु वोक छल।

-कुमान मनाज कश्यप, सम्प्रति: हानण सनकान क उप-सचिव, **संपर्क:** सी-11, टावन-4, टाण्णय-5, किदवण्णी नगन पूर्व (दिल्ली हाट क सामन), नण्णी दिल्ली-110023 मो. 9810811850 / 8178216239 ण्णी-मल : writetokmanoj@gmail.com

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पन पठाउ।**

३.१.जगदीश प्रसाद मण्डल- थाल्ह संगी

**जगदीश प्रसाद मण्डल**

थाल्ह संगी

सुग्रीव काका निधनक बाद दुनियाँक पहुँचल लोक, जेहने पहुँचला पहिनहि नहि बुझि पड़ैत जे ई दोस्त-दुश्मनक बीच छैथ कि दुश्मनक बीच छैथ आकि दोस्तक बीच छैथ। आनकेँ बुझैत जे होनि मुदा सुग्रीव काकाकेँ अपनो तँ बुधि-विवेक छैन्हि। अपन बुधि-विवेक ने अपन दोस्त छी आ दुश्मनो छीहे। नीकक बाट पकड़ि दोस्त बनैत आ अधला बाट पकड़ि चलने दुश्मन बनैत। तँए, सुग्रीव कक्काक अपन जीवनो छैन आ जहानो छैन्हि। जीवनो तँ जीवन छीहे, असगरक होइत आ समूहक होइत। एलेँ दुनू अंगक किछु ने हुअए मुदा दुनूक बीच अपन-अपन सीमा सदा अछिए।

आन दिन जकाँ सुग्रीव कक्काक दरवज्जा लोकसँ भरल रहैन। अपन पहुँच देखलौं तँ बुझि पड़ल जे आशासँ बसी लोक ताकैत छैथ जे एनि दिन, पहिनहि अदखाइ-बदखाइ सुग्रीव कक्काक बजै छैथ आ जेहने ठहाका मारि हँसबा करै छैथ आ एनि मुँह गप्पा-सप्प करैत छैथ। मन-मन सुग्रीव काकापर तामस तँ रहल छल जे जहिना काना बाल-बाधकेँ बच्चगन सियान झूठ-फूस बाजि पाल्हवा करै छैथ आ प्रबोधनो तँ करैत छैथ, सएह स्थिति छैन। मुदा बजलौं किछु ने। महादेव जकाँ मन-मन अपन बीख पीब लेलौं।

अखन तक ठाढ़-ठाढ़ सए तमासा देख रहल छलौं। बजैत-बजैत सुग्रीव काका मुड़ी ठाढ़ तकलैन तँ सामने ठाढ़ देखलैन। अपना निधनक कतेकेँ मुँहक शब्दसँ जानतहि रहला मुदा हाथक इशारासँ लगमे आबि बैसैल कहलैन। आगू बढ़ि सुग्रीव कक्काक लगमे जा कऽ बैसलौं। मुदा मन चकोना होइत रहए। नजैरकेँ दौड़-दौड़ सरपट दी, मानि जे ओतए सुग्रीव कक्काक दरवज्जापर बैसल रहैथ, रंग-बिरंगक बहुना बुझि पड़ैत। किया घनिष्ठ संगी सुग्रीव कक्काक

बूझि पड़ैत तँ किया ध्यान-निनाधी। देख-देख मन कठमठाइत छल जे एहनाठाम किछु बाजब केना? देखैत छी जे गाममे नीको काज होइत आ अधला काज होइत। नीकक फल नीक होइत आ अधलाक फल अधला होइत। कहल गेल अछि जे पाप पुण्य फल होइत अछि। एठाम तँ नीको करनिहार छथि आ अधला करनिहार छथिए। नीक करनिहारकेँ नीक कहबे अछि मुदा 'अधला करनिहारकेँ की कहब? जँ 'अधला' कहबै तँ अनेरे नक्का-टाकी होएत। नक्का-टाकीक की जाति-मति अछि जे कखन होएत। संयोग भेल, गौरीक सुजीत काका कबीर दासक विचारमे पहुँच बजला-

"कबीर बाबा कहने छथि, बिना साबुनक धुआइयेँ, लगमे निनाधीकेँ रहने मनक धुआइ होइत।"

ओना, सभ दिन सुजीत काका लग ७८-२ घन्टा बैस, अपना जे रहै बूझै छी से पूछि लइ छिऐन आ आन-आनक संग सुजीत कक्काक विचार सेहो सुनै छी।

सुजीत कक्काक विचार सुनि मनमे भेल जे पूछिऐन, मनक धुआइ भेने क्रिया-कलापक सेहो धुआइ भऽ सकैए। जँ मन साफ अछि मुदा क्रिया-कलाप गन्दा, तखन एक-दोसराक सम्बन्ध-सूत्र कहने बनत? आ जँ सम्बन्ध-सूत्र ढील-ढीलाह बनत तखन मजगूत जीवन केना बनि सकैए? मुदा लगले फेर अपन मनमे भेल जे अपन तँ पाछूकऽ एलौं हेन, जँ कहीं बेगला एनिहारक विचारक क्रमम सुजीत काका हथि, गौरीक जँ अपन जीवनक दोकान जकाँ पैठला एनिहार पहिने लिअ चाहत तँ संसार हब कनए किन। ओह! जानिकऽ दोखी बनब नीक नहि। चुप रहलौं। ओना, जानि-अनजानि लोक अपना दोखी बनैक अधिकारी अछिए मुदा दोखी बनैसँ पहिनौं बहुत

𑒣𑓂𑒩𑒏𑓂𑒩𑒱𑒨𑒰 𑒁𑒕𑒱। 𑒞𑒯𑒳𑒧 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒏𑒵𑒞𑒱𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒼𑒣 𑒮𑒿 𑒂𑒑𑒰 𑒥𑒮𑒲 𑒁𑒕𑒱। 𑒠𑒹𑒐𑒻𑒞 𑒕𑒲 𑒖𑒹 𑒋𑒞𑒯𑒳 𑒠𑒳𑒢𑒱𑒨𑒰𑒿 𑒕𑒲 𑒖𑒐𑒢 𑒪𑒼𑒏 𑒣𑒟𑒩𑒏𑒹𑒿 𑒣𑒟𑒩𑒣𑒩 𑒒𑒿𑒮𑒱-𑒒𑒿𑒮𑒱 𑒯𑒟𑒱𑒨𑒰𑒩 𑒥𑒢𑒰 𑒬𑒱𑒏𑒰𑒩 𑒏𑒩𑒻 𑒕𑒪, 𑒣𑒕𑒰𑒞𑒱 𑒪𑒰𑒐𑒼 𑒥𑒩𑓂𑒐𑒏 𑒥𑒲𑒔 𑒏𑒲 𑒮𑒦 𑒦𑒹𑒪 𑒂 𑒋𑒐𑒢 𑒠𑒹𑒐𑒻𑒞 𑒕𑒲 𑒖𑒹 𑒪𑒰𑒚𑒲-𑒯𑒢𑒰𑒚𑒲 𑒏𑒧𑒱 𑒑𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱 𑒂 𑒥𑒧-𑒥𑒰𑒩𑒴𑒠 𑒥𑒮𑒲 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒞𑒯𑒳𑒧 𑒛𑒯𑒢-𑒛𑒯𑒢 𑒖𑒞𑓂𑒞𑒮𑒿 𑒑𑒼𑒂𑒿-𑒒𑒢𑒴𑒂 𑒂 𑒁𑒞𑒮𑒲-𑒣𑒞𑒮𑒲𑒏 𑒏𑒰𑒢 𑒥𑒰𑒞 𑒖𑒹 𑒯𑒖𑒰𑒩𑒼 𑒏𑒼𑒮 𑒯𑒙𑒪 𑒠𑒹𑒬 𑒠𑒰𑒮𑒢 𑒠𑒹𑒬𑒏𑒿 𑒒𑒩𑒻𑒨𑒰 𑒬𑒱𑒏𑒰𑒩 𑒖𑒏𑒰𑒿 𑒬𑒱𑒏𑒰𑒩 𑒏𑒩𑒱𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒁𑒣𑒢 𑒥𑒲𑒞𑒪 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒥𑒰𑒞, 𑒧𑒼𑒢 𑒁𑒣𑒢 𑒖𑒹 𑒑𑒰𑒧𑒧 𑒦𑒹𑒪, 𑒧𑒼𑒢 𑒣𑒛𑓃𑒱 𑒑𑒹𑒪। 𑒦𑒹𑒪 𑒋𑒯𑒱 𑒕𑒪 𑒖𑒹 𑒋𑒏𑒑𑒼𑒙𑒹𑒏𑒿, 𑒠𑒰𑒮𑒢𑒰𑒏 𑒮𑓀𑒑 𑒑𑒪𑒞𑒲 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒠𑒹𑒐 𑒧𑒴𑒯𑒿𑒣𑒩 𑒏𑒯𑒱 𑒠𑒹𑒪 𑒢𑒯𑒱𑒌 𑒖𑒹 𑒋𑒯𑒢 𑒕𑒳𑒕𑒳𑒂𑒣𑒢𑒰 𑒏𑒰𑒖 𑒏𑒱𑒋 𑒏𑒩𑒻 𑒕𑒯। 𑒋𑒐𑒢 𑒞𑒏 𑒁𑒣𑒢 𑒥𑒳𑒗𑒥 𑒢 𑒏𑒩𑒻 𑒕𑒪𑒾𑓀 𑒖𑒹 𑒬𑒥𑓂𑒠𑒏 𑒧𑒱𑒪𑒰𑒢𑒲 𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩𑒮𑒿 𑒮𑒧𑒰𑒖𑒼 𑒂 𑒮𑒦𑓂𑒨 𑒥𑒢𑒻𑒞। 𑒣𑓂𑒩𑒲𑒞𑒧𑒪𑒰𑒪 𑒧𑒼𑒢 𑒖𑒏𑒩𑒰 𑒏𑒯𑒢 𑒢𑒯𑒱𑒌, 𑒑𑒰𑒧𑒏 𑒕𑒁𑒔𑒏𑓂𑒏𑒲 𑒪𑒼𑒏, 𑒏𑒵𑒭𑓂𑒝 𑒖𑒏𑒰𑒿 𑒮𑒳𑒠𑒩𑓂𑒬𑒢 𑒔𑒏𑓂𑒩 𑒢𑒯𑒱, 𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒛𑒝𑓂𑒛𑒧 𑒕𑒥𑒙𑒰 𑒞𑒰𑒿𑒢𑒱 𑒐𑒱𑓀𑒔𑒪 𑒕𑒻, 𑒮𑒹 𑒦𑒹𑒪 𑒕𑒯𑒔𑒏𑓂𑒏𑒲। 𑒞𑒩-𑒞𑒩 𑒏𑒱 𑒏𑒩𑒰 𑒦𑒹𑒪, 𑒮𑒹 𑒖𑒐𑒢 𑒞𑒲𑒢 𑒧𑒰𑒮𑒏 𑒖𑒯𑒪 𑒏𑒙𑒪𑒾𑓀 𑒞𑒐𑒢 𑒥𑒳𑒗𑒪𑒾𑓀। 𑒁𑒣𑒢𑒙𑒰 𑒥𑒰𑒞 𑒢𑒘𑓂𑒘 𑒏𑒯𑒻 𑒕𑒲, 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒮𑒢-𑒮𑒢 𑒏𑒞𑒹𑒏𑒼 𑒪𑒼𑒏 𑒑𑒰𑒧𑒧 𑒋𑒯𑒢 𑒖𑒯𑒪 𑒏𑒙𑒢𑒹 𑒕𑒻𑒟।

𑒂𑒖𑒳𑒏 𑒣𑒢𑒱𑒥𑒬 𑒛𑒝𑓂𑒛 𑒧𑒰𑒞𑒣𑒢 𑒂𑒥𑒱 𑒚𑒰𑒜𑓃 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱, 𑒍𑒚𑒰𑒧 𑒥𑒱𑒢𑒰𑒮-𑒥𑒱𑒏𑒰𑒮 𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒁𑒕𑒱। 𑒧𑒢 𑒞𑒢𑒰 𑒁𑒣𑒢 𑒒𑒴𑒢𑒱𑒨𑒰-𑒧𑒴𑒞𑒱𑒨𑒰 𑒑𑒹𑒪 𑒖𑒹 𑒢𑒮-𑒢𑒮 𑒠𑒵𑒜𑓃 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪 𑒖𑒹 𑒁𑒥𑒢-𑒮𑒥𑒢𑒏 𑒥𑒱𑒔𑒰𑒩 𑒏𑒢 𑒥𑒱𑒢𑒰 𑒮𑒳𑒖𑒲𑒞 𑒏𑒰𑒏𑒰 𑒍𑒚𑒰𑒧𑒮𑒿 𑒢𑒯𑒱 𑒖𑒰𑒋𑒥। 𑒣𑒰𑒕𑒴-𑒏 𑒋𑒪𑒾𑓀, 𑒮𑒿𑒋 𑒯𑒧𑒢 𑒧𑒢𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒬𑓂𑒢 𑒣𑒕𑒳𑒂 𑒑𑒹𑒪, 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒂𑒫𑒬𑓂𑒨𑒏 𑒞𑒿 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒹 𑒥𑒱𑒢𑒳 𑒥𑒳𑒗𑒢 𑒁𑒢𑓂𑒢-𑒞𑒲𑒧𑒢𑒏 𑒮𑒳𑒂𑒠 𑒟𑒼𑒛𑓃 𑒥𑒳𑒗𑒥, 𑒮𑒰𑒟 𑒞𑒲𑒢 𑒪𑒥 𑒯𑒋𑒞। 𑒛𑒼𑒢𑒰, 𑒧𑒢 𑒕𑒲𑒯𑒰 𑒏𑒯𑒻𑒞 𑒢𑒯𑒋 𑒖𑒹 𑒋𑒐𑒢 𑒅𑒔𑒏𑓂𑒏𑒰 𑒮𑒦 𑒪𑒑𑒧 𑒁𑒕𑒱, 𑒖𑒿 𑒮𑒰𑒮𑒰𑒧 𑒥𑒰𑒖𑒲 𑒂

एना जहल करबैक ओनियान कs देत, तेँ नीक जे अपन निचान याछ काल-क नाखव। जखन निचान यछआएत तखन कछ-मछ करैवला सए यतएत। अपन निचानक प्रश्न छी अपन मूहसँ काकाकेँ पूछवैन, अपन कानसँ हुनक निचान सूनव, यछाएत समयानुकूल तत उतएव।

साँझक आठ वजि गेल। साँझुका पूजाक घड़ीघण्ट कतका देवस्थानमे वजि गेल। वनूका मदरजी सएक मदक खुमान सहो कमि गेलैन। तेँ राजन कला-यछाणिक आनाम कनैक निचान मनमे उठि गेलैन। गामक वैसान कि कात-कवहुनीक वैसान छी जे निसचित समययन चलत, उा तँ गमैया धान जकाँ अछि जे छअ मास सूखल नहत आ छअ मास वहैत चलत। दुहूय गोन नहलौं, मान अपन आ सुजीत काका नहला। मनमे एल जे अपन तँ जवान छी, तँए देहो उात शक्ति येदा कनित अछि, तेँ एकाध घन्टा निर्लोमियाँ सकै छी, तद्‌ुमे मनक जिज्ञासा प्रवल नहव कनए। मुदा सुजीत काका तँ स नहि छैथ। श्रेष्ठ छैथ, उमनदान छैथ, तेँ शिष्ययनसँ मानित छिऐन, मुदा एत तँ पूछल जा सकैए जे 'काका, वड़ीकालसँ वैसल छी, पियास लगि गेल हएत।' मुदा सुजीत काका तँ अपन शिकानी छैथ, उा मन-मन वूझि गेला जे किछु एहन निचान मनाहनक मनमे उठि गेल अछि जकन जवाव सूनैल मन कछए काटि नहल छन्हि। अपना मन मानियँ नहल छलैन जे जखन जिनगीक काना ठकान न अछि तखन तँ जे कs लव तकाकक हकदान तँ हव कनव। सए जनित छी जे किया कन आय ल माए ल न वाय ल। संयाग नीक वनल, वूधियानि काकीकेँ जना वूझल नहैन आकि की, दु-दुटा विस्कुट दुटा ग्लासमे आँगनसँ दनवज्जायन यानिक

संग पहुँचा गेली। जाबत दूनू बापूत बिस्कुट खा पानि पीलौं, ताबत दू कप चाह बुधियानि काकी पहुँचा गेली।
अपना बूझि पड़ल जे चाह-बिस्कुट खेला पछातिये दूनू गोटेक मन, मन अपना आ सुग्रीव कक्काक, एकरंग भऽ गेल। एकरंग भेलापर बजलौं-
"काका, हमरा भ्रम भऽ रहल अछि आकि अहाँ बदलि गेल छी, से बूझिये ने पाबि रहल छी।"
ओना, सुग्रीव काका बूझि गेला मुदा बूझल बातकेँ मनमे दाबि बजला-
"से की भेलहन?"
बजलौं- "काका, अहाँ एतेँ बिसरि गेल छलौं, मुदा अपन तँ गुरुभागी छी तँए जीवनमे कखनो बिसरब।"
सहए देखि सुग्रीव काका बजला- "हूँ, से बिसरबाक नहियेँ चाही।"
सुग्रीव कक्काक विचार सुनि मन आगाँ ससरए गेल। ससरलापर बजलौं-
"काका, कनिये पहिने, जहिना गोटेकेँ ससरबाक बात सेहो रखलौं, तहिना आधारेँ बनी ओहन लोक छथि जे धोखाबाज अछि। एहन लोक कखन संग रहत आ कखन बीचमे धोखा दऽ पड़ा जाएत, तेकर ठेकान नहि।"
ओना, अपन विचारकेँ सुग्रीव काका कम कलैन मुदा अपन जीवन आ विचार बीच कएल ठाढ़ भेल छैन जेहिमे एहन-एहन विचारो आ काजकेँ गुप्त मानल जाइए। गुप्त मानब सामाजिक अछिए। किया एकदिना जरल जाइए आ किया नवजन मंगला जकाँ तीस बरख जरल काटैए, तेहिमे दूनू गोटेक जरल काटब ठीक एकरंग हुएत।

मूर्छा मानि सुजीत काका बजला-

"मनोहर, किया बात अछि कि तेहेन अछि कि मुँह-फुस बजनिहार लबरा-लुच्चा अछि आकि छल-प्रपंची धोखबाज किछु न अछि, एकर दुख-सुख अपन लागत कि आन, हमरा की लेत।"

ओना, बहुत दोसीस सुजीत कक्काक विचार नीक लागल मुदा अपन तीन मासक जड़ल मनक मनोहरि करैत रहल जे ओठम सुजीत काका विचारकेँ माँथिकs बजला अछि। बीतल दिनक प्रमाण सबकेँ मन-मन एकत्रित करैत बजलौं-

"काका, अपना मानै छी जे पूर्वज सभ कष्ट हानि-हानि करैत छथि जे जे जरूर करत से गहन थोड़। न्याय गुण रूल हाथ अछि। मुदा...।"

अपन सभ विचारकेँ हाँनि-हाँनि सुजीत काका बजला-

"मनोहर, एना अखन दुर्लभ वायुत छी, तँए जीवनक मूल मर्मकेँ कहि दैत छिअ।"

सुजीत कक्काक विचार सुनि मनक जिज्ञासा एना रूनरूनाकs जगि गेल जे हुअए कखन सुजीत कक्काक मुँहक बात सुनी। बजलौं-

"की मर्म कहलिऐ काका?"

सुजीत काका बजला-

"मनोहर, अपन जीवनधार ओहन बना प्रवाहित करी जे स्वयं निर्मित हुअए। जखन अपन प्रवाह अपना अनुकूल चलत तखन दुनियाँक आन-बीनानक रूप मरा जाएत। रहत मात्र अपन कर्म (काज)। से तँ अपन-अपन विराजित रहब करत। एकटा नमहर काज मान एकसँ अधिक गोटेक बीचक, रहैत जे नीक हाथ आ अधला हाथ मुदा करनिहारक सिर किछु न करल जाए, सभ

बात नहियेँ अछि। सह कहल जाइत अछि।"

-जगदीश प्रसाद मण्डलजीक जन्म मधुबनी जिलाक बेरमा गाममे 5 जुलाई 1947 ईस्वीमे भेलैन। मण्डलजी हिन्दी एवं राजनीति शास्त्रमे एम.ए.क अहर्ता पाबि जीविकोपार्जन हेतु कृषि कार्यमे संलग्न भऽ रुचि पूर्वक समाज सेवामे लागि गेला। समाजमे व्याप्त रुढ़िवादी एवं सामन्ती व्यवहार सामाजिक विकासमे हिनका बाधक बुझि पड़लैन। फलत: जमीन्दार, सामन्तक संग गाममे पुरजोर लड़ाइ ठाढ़ भऽ गेलैन। फलत: मण्डलजी अपन जीवनक अधिकांश समय केस-मोकदमा, जहल यात्रादिमे व्यतीत केलाह। 2001 ईस्वीक पछाइत साहित्य लेखन-क्रम भेला। 2008 ईस्वीसँ विभिन्न पत्र-पत्रिकादिमे हिनक रचना प्रकाशित हुअए लगलैन। गीत, काव्य, नाटक, एकांकी, कथा, उपन्यास इत्यादि साहित्यक मौलिक विधामे हिनक अनवरत लेखन अद्वितीय सिद्ध भऽ रहलैन अछि। अखन धरि दर्जन भरि नाटक/एकांकी, पाँच साएसँ ऊपर गीत/काव्य, उन्नैस गोट उपन्यास आ साढ़ आठसाए कथा-कहानीक संग किछु महत्वपूर्ण विषयक शोधालेख आदिक पुस्तकाकार, साएसँ ऊपर ग्रन्थमे प्रकाशित छैन। मिथिला-मैथिलीक विकासमे श्री जगदीश प्रसाद मण्डलजीक योगदान अविस्मरणीय छैन। ई अपन सतत क्रियाशीलता आ रचना धर्मिताक लेल विभिन्न संस्थासभक द्वारा सम्मानित/पुरस्कृत होइत रहला अछि, यथा- विदेह सम्पादक मण्डल द्वारा गामक जिनगी' लघु कथा संग्रह लेल 'विदेह सम्मान- 2011', 'गामक जिनगी व समग्र योगदान हेतु साहित्य अकादमी द्वारा- 'टैगोर लिटिरेचर अवार्ड- 2011', मिथिला

मैथिलीक उन्नयन लेल साऊन दनरंगा द्वारा- 'वैदह सम्मान- 2012', विदह सम्पादक मण्डल द्वारा 'नै धारैछ' उपन्यास लेल 'विदह वाल साहित्य पूनस्कान- 2014', साहित्यम समग्र यादान लेल एस.एन.एस. (ग्लावल समितनी द्वारा 'कौशिकी साहित्य सम्मान- 2015', मिथिला-मैथिलीक विकास लेल सतग क्रियाशील नहवाक हेतु अखिल रानगीय मिथिला संघ द्वारा- 'वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' सम्मान- 2016', नचना धर्मिताक ऊप्रम अमूल्य यागदान हेतु ख्यात्रा-मण्डल द्वारा- 'कौमूदी सम्मान- 2017', मिथिला-मैथिलीक संग अन्य उत्कृष्ट सना लेल अखिल रानगीय मिथिला संघ द्वारा 'स्व. वावू साहेव चौधनी सम्मान- 2018', वानगा समिति, यटनाक प्रसिद्ध 'यात्री वानगा पूनस्कान- 2020', मैथिली साहित्यक अहर्निश सना आ सृजन हेतु मिथिला सांस्कृतिक समन्वय समिति, गुवाहाटी-असम द्वारा 'नाजकमल चौधनी साहित्य सम्मान- 2020', रानग सनकान द्वारा 'साहित्य अकादमी पूनस्कान- 2021' तथा साहित्य ऊा संस्कृतिम महत्वपूर्ण अवदान लेल अमन शहीद नामहल मंडल विचान मंच द्वारा 'अमन शहीद नामहल मंडल नाष्ट्रीय पूनस्कान- 2022'

नचना संसान : 1. ॐब्रधनूषी अकास, 2. नागि-दिन, 3. गीन ऊ0 एगानहम माघ, 4. सनिता, 5. गीतांजलि, 6. सूखाएल पाखनिक जाॐ0, 7. सगवध, 8. चूनौगी, 9. नहसा चौनी, 10. कामधेनू, 11. मन मथन, 12. अकास गंगा - कविता संग्रह। 13. पंचवटी- एकांकी संचयन। 14. मिथिलाक वटी, 15. कम्प्रामाॐज, 16. समलिया विआह, 17. नग्नाकन उकौग, 18. स्वयंनन- नाटक। 19. मौलाॐल गाछक फूल, 20. उत्थान-पगन, 21. जिनगीक जीग, 22.

जीवन-मरण, 23. जीवन संघर्ष, 24. नै धाड़ैए, 25. बड़की बहिन, 26. भादवक आठ अन्हार, 27. सधवा-विधवा, 28. ठूठ गाछ, 29. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं, 30. लहसन, 31. पंगु, 32. आमक गाछी, 33. सुचिता, 34. माड़पन, 35. संकल्प, 36. अन्तिम क्षण, 37. कुण्ठा- उपन्यास। 38. पयस्विनी- प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना। 39. कल्याणी, 40. सतमाए, 41. समझौता, 42. तामक तमघैल, 43. बीरांगना- एकांकी। 44. तरेगन, 45. बजन्ता-बुझन्ता- बीहैन कथा संग्रह। 46. शंभुदास, 47. रटनी खढ़- दीर्घ कथा संग्रह। 48. गामक जिनगी, 49. अर्द्धांगिनी, 50. सतभैंया पोखैर, 51. गामक शकल-सूरत, 52. अपन मन अपन धन, 53. समरथाइक भूत, 54. अप्पन-बीरान, 55. बाल गोपाल, 56. इंकलाब, 57. उलबा चाउर, 58. पतझाड़, 59. गढ़ैनगर हाथ, 60. लजबिजी, 61. उकड़ू समय, 62. मधुमाछी, 63. पसेनाक धरम, 64. गुड़ा-खुद्दीक रोटी, 65. फलहार, 66. खसैत गाछ, 67. एगच्छा आमक गाछ, 68. शुभचिन्तक, 69. गाछपर सँ खसला, 70. डभियाएल गाम, 71. गुलेती दास, 72. मुड़ियाएल घर, 73. बीरांगना, 74. स्मृति शेष, 75. बेटीक पैरुख, 76. क्रान्तियोग, 77. त्रिकालदर्शी, 78. पँचीस साल पछुआ गेलौं, 79. दारुनी हाक, 80. स्वाभिमानी जिनगी, 81. देखल दिन, 82. गपक पिपाहुल लोक, 83. दिवालीक दीप, 84. अप्पन गाम, 85. खिलतोड़ भूमि, 86. चितवनक शिकार, 87. बौनस खेतक बौनस उपज, 88. समयसँ पहिने चेत किसान, 89. रौक, 90. गामक आशा टूटि गेल, 91. पसेनाक मोल, 92. कृषियोग, 93. हारल चेहरा जीतल जूआ, 94. नहि जाकर परिवार, 95. कर्मक नंग कर्मक संग, 96. गामक सूरत बदैल गेल, 97.

अन्किम यनीआ, 98. घनक खर्व, 99. नीक Oकान Oकलों, 100. जीननक कर्म जीननक मर्म, 101. संचनध, 102. रनि मन काज, 103. आठल आशा चलि गेल, 104. जीनन दान तथा 105. अयन सानी- लघु कथा संग्रह।

ऊनचनायन **अयन**

मंगाय editorial.staff.videha@gmail.com **यन यOाउ।**

३.६.जगदीश प्रसाद मण्डल- माएपन (धारावाहिक उपन्यास)

जगदीश प्रसाद मण्डल

माएपन (धारावाहिक उपन्यास)

पहिल पड़ाव

पिताक विचार सुनि रघुनक मनमे जीवनक उत्साह प्रेम जगल जहिना अपन स्वतंत्र जीवन हटलापन जगैए। अपन कमाइपर ओ करब सएह ने रहल अपन जीवनक कमी। माता-पिताक संग बाल-बच्चाक सदा करब सहज जएन अछि। किए तँ हम सभ पारिवारिक जीवन जीबैक अभ्यासी छी। विचार तँ आसान अछिए सदा करब,

करैत। मुदा सभाक जखन विचार नुय सामाँम आबैत तखन मनम थनथनी आबित अछि। ओना थनथनिया दु नंगक होइत, पहिल होइत एनक थनथनी आ दोसर होइत निर्धनक थनथनी। निर्धनक थनथनीक विकल्प पछैत न एऽ सकैत जे अपन जते शक्ति अछि तइ अनुकूल सभा करब। मानि लिअ् जहिना युग-युगान्तरसँ गुलामी शासनक संग गुलामी वनस्थाम यनिवारक यनवनिस एल अछि, तही अनुकूल न सएक जीवन वनल अछि। ओही सीमाक दायराम न अपन जीवनक संचालन करब। ढननक मनम उठल जे बाबू करैला अछि जे जाब तक मनुक्खकेँ अपन हाथ-पएर चलबै-जाकर साधन नइ एऽ जाइत, ताब धरि ओकर हाथ-पएर ओहिना छटपटाइत जना पानि बिनु माछ। एकाएक ढननक मनम कलकत्ताक प्रति राग जगल जइसँ यनिवारसँ विराग एल। विराग जगिते ढननक मन मन-मन करैलक- 'बाबूकेँ देखा देबैन जे ढनन करैन ठहलल-बकालल अछि। जखन देह धुनन सएर कथूक प्राप्ति लाक करिते अछि तखन ढनना किए न करत। कमाइल जखन घरसँ निकैल गइल छी, तखन कमा कऽ गामबला सएकँ देखा देबैन जे ढनना सन लाक गामम अछि।'

ओना, वैवाहिक नुयम ढनन पछुआएल अछि, मुदा कलकत्ता जा कमबाक विचार जहियासँ मनम जगलै आ नस-नस बढ़ैत लगलै तहियासँ जना ढननक मन छलाँग मानि दौड़क कोशिश करैत लगल। प्रात: काल, मान दोसर दिन, सूर्यक दर्शन होइते ढननक मन ओहिना ललौन एऽ गेल जहिना दुनागमन दिन करियाँकेँ होइत। एाय, मन ललौन हव न करौन, यनिवार गड़क एान न कह्मायन लऽ निकैल गइल छैथ। ओना, जलसनी मान माइ, बटाकेँ लगल

बिसैन गेली जे दलन आइ घरसँ निकैल कलकत्ता जाएत। बिसनैक कानमे एलैन जे जहिना उएन्ही सुनने छली जे दलन कलकत्ता जाएत तहिना पतिक मुहसँ सुनि पुनकी सन्हा एलैन्ह गेल छलैन मुदा दलनकेँ लगमे देख बिसैन गेली। ओँ मन नहियेँन तँ खानसँ जहिना निदागनी कनियाँक राजनक उनियानमे माए लगि जाइ छैथ तहिना ने जलसनिया लागि गेल नहियैथ, मुदा से नहि एलैन। जलखे बनमे दलन बाजल-

"माए, आइ हम चलि जेबौ।"

दलनक मुहसँ 'जाएब' सुनि जलसनीक मन एकाएक चौंकलैन जे हाइ ने ना! दलनकेँ त नएह जलखे देलिउ जे सए दिन दइ छलिउ..! अपन बिसनबपन जलसनीक नजनिप ने पड़लैन। नजैन पटि गेलैन सामाम बैसल दलनपर। बजली-

"से जे ताना जाइ-क छलह त खान कहि दइतह ने?"

खानक माइक बिचार सुनि दलनक मनमे उठल जे मुँहतान चावक मानब उचित नहि, बाजल-

"बिसैन गेल छलौं, तँए ने कहलियौ।"

उपदेशक बनि जलसनी बजली-

"एना किया बिसनै। एहन बिसननिहानकेँ ने लाक गुसकौल कहै छै।"

उपदेशी माएकेँ दलन उत्तर देलकैन-

"माए, घर-आँगनमे किया थोड़े गुसकौल हाइ छै, ओही तँ काज कनैक जगह छी। गुसकौल हाइ छै लाक इसकुल-कौलेजमे।"

दलनक बिचार नीक जकाँ जलसनी नहि सुनली। किए तँ मनमे नबे छलैन जे जलखे बनमे जे दलनकेँ एल, से एल मुदा कलौ खाइ बनमे पाँचटा तरुआ बराकेँ खाइल नहि देब, एहन अपन माए

की हमहीं छी। अपन चुक मटवौ जलसनी वजली-

"वौआ, की हाऊ अपन घन छिअ। ज किछु खाऊल दलियह ऊ विसैन जऊहह ज माउ हमना घनसँ निदा हवा दिन उहन खाऊल दन छल। हगवान नीक कनथून ज जहिना हँसैत घनसँ जाऊ छह गहिना दुनियाँम कतौ नहिहह, अहिना हँसैत नहिहह।"

माऊक निवानकँ असिनवाद वुमि दनन किछु न वाजल। वाजल गँ किछु न दनन, मुदा दुखल गाऊयक वच्चा जकाँ गाउ दिस मान माउ दिस, जनुन गकलक। वटाक दखवकँ जलसनी दनी जकाँ विच७उ लगली-

"वौआ, हम दुनू यनानी गँ वुढ हलयह। वुढक (0कान कान.! कहिया आँखि दखव छाडि दग, गँ कहिया कान सुनव, मुदा यनिवानक गँ गुँ स नहि हलह। गाहीं न अपन हान वुमि श्रवणकुमान जकाँ माना-यिनाकँ सानी धाम कह्वायन हान वना दखवह।"

माऊक वान सुनि दननक मन हीनन-हीनन हिल (गल, मुदा हिलवकँ थीन कलक। हिलव मान मनक हिलव ज दु नंगक हाऊउ, उकटा हाऊउ नीक हिलव मान जीवनायगी आ दासन हाऊउ अनुयगी। काजक वान ज मनकँ संकल्यिन कनैउ ऊ हल जीवनायगी आ दासन हल काना अधला काजम अपन जीवनक समयकँ नष्ट कनव जऊसँ जीवन गमा हिलव। जकान हनयाऊ जीवनम नहि हS यवैउ जऊसँ जीवन खलियाउल जकाँ नहि जाऊउ। उहन हिलव दासन हल। स गँ दननम छल नहि।

माऊयक निवानकँ अंगीकान कनैत दनन वाजल-

"माउ, जखन ज मनम नीक-अधला हाउ, कहिहँ। हमनासँ ज काज हS सकत हम सउह न यूना यवौ, मुदा नागक हाग जहिना सहकँ

रागत यड़ै छै स गँ रागत यतौ। किया ककरा (थात बाँटि यवैत। "

अयना जनो अयन बिवाहक रान ददन माजयन हकलक, मुदा माऽऽया गँ माऽऽय न यनिवानक हली। माज वजली-

"बौआ, आब गाहुँ ड़आन-जहान हलह, कमवह-खरवह यनिवानकँ दखवह गखन न अयना मनम विसवास हजग। गाना विआह-दान हगाह। वाल-बच्चा हगाह, सरक निमनजना गान न कनत यतगाह। "

ओना, जलसनी यनिवेशक प्रभावम वाजल छली, मुदा अयन यनम्यनाक ज दायित्व माता-यिताक निर्धारित हल चलि आवि नहल अछि, ओ अछि, वरा-वरीक घन वसा मान विआह-दान हला यछाऽऽग, अयनाकँ वरा-वरीक रान ना कर्जसँ मुक्त हजव।

ददनक मनम कलकछाक नंग-विनंगक नुय नाचिय नहल छल, जऽऽसँ मन प्रस्फुटित प्रफुल्लित हऽऽय नहल छल, वाजल-

"माज, जहिना कुलेसन हैया याँच वर्खक कमाऽऽम ऽऽीराक घन वना ललैन आ वहिनक विआहा कऽ ललैन गहिना हमहुँ कमा कऽ दखा दवौ। अयना गँ वहिनक विआह अछि नहि, गँज दस कट्ठा खग कीनि लव। "

अखन धनि वानिहानिन जलसनीक मनम सयना वनल छलैन ज अयना दस कट्ठा खग हाजग जऽऽसँ यनिवानक यननसिस अयना आगिय-यानियँ निमाहि अयन जीवन शिखनयन चढ़िगौं मान किसानक जीवन यविगौं, मुदा जिनगीक अन्तिम यडावम मान वूढ़ाढ़ीम जखन वटाक मुहसँ जलसनी सुनलैन गखन मनम ओहन विसवास जगलैन जहन रानक सयना (कल्पना) दख किया अयन सयना पूर्तिक दिशाम वढ़ि क्रियाशील हाऽऽ छैथ। जलसनी वजली- "बौआ,

अपना जँ ठाकबा खेत-पथार होइत जइसँ साग-पात खा गुजर करितौं मोर जीवन चलबितौं, तँ अपना परिवारकेँ न किसान परिवारक मान-प्रतिष्ठा होइत आ अपना मान-मरजादा बढ़ैत।"

देवनक मन तेना उठल छल जे माइक बात सुनब न कलक। मुदा माइयक प्रश्नक उत्तर तँ बताकेँ देब छल। बाजल-

"माए! ई हाथ-पएर सँ जे हेऽ सकत, तइमे हम थोड़ बइमानी करब जे तूँ बेमान कहमाँ। जे कमबो तोरा हाथ-क देबउ।"

बेटा कमाएल पाइक आशा देख जलसरीक मनमे उठैत आशाक आश लागि गेलैन जेना निर्बलकेँ कएल सकानमे मनमाना कएल लइक अधिकार रहैए। वृन्दावनक कदमक गाछक मूलाक आश जहिना कृष्णकेँ तहिना ब्रजबालाकेँ जे लगे छलैन तहिना देवनक आश जलसरीकेँ आ जलसरीक आश देवनकेँ लागि रहल छल। सए जनित छी जे कृष्ण ठहरन न गोपालक छला जहरन एकटा ठहरन लोक जे गाइयक जीवन सदृश अपन जीवन धारण कए पंचामृत दइए आ अपन पंचामृतक सिरजन करैत अपना जीवनक दिनचर्या निमाहैत अछि। अपन रान उठबैत जलसरी बजली-

"बौआ, मनेकाल नानी जहिना कहली तहिना हम ठाकना आँचरक-खूटमे गीरह बान्हि मनमे रखने छी। कोन दिन ल राखब। कहूना हम रहलियह त माइय बाय न रहलियह। अपना मूहसँ जँ अनाच निकालब आ तोरा निसा जा, तँ एहन कि हमहीं गो-खोक माए हएब जे तोरा अधला हूअ देबह।"

माइक बात सुनि देवनक मन मानि गेल जे माइया अपन स्वीकृति निचान दए रहली अछि। देवन बाजल-

"माए, घाट-बाट जाइक अछि तँ सए चीज तूकपन मोर

समयानुसार काज करू। खेला पछाति करी ओछाओनपर हाथ-पएर नहि मारि लब सेहो नीक होएत।"

जलसरी बिना किछु बजने अपना काज दिस बढ़ि गेली। दुनूक मनमे उठल जे पितासँ किए ने मूँह-मिलानी कएने घरसँ निकली। ओना, जलसरी दुनू लगसँ हटि अपन भानसक ओरियानमे लागि गेली मुदा मन जेना सीकपर लटकि गेल होनि तहिना रहलैन। मनमे इहो उठलैन जे जहिना अण्डा बचनिहारकेँ अण्डाक लाभसँ बकरी कीनैक मन रहलैन जे बकरीक पासक लाभसँ गाए कीनब। मुदा जलसरीक मनमे से नहि उठलैन। उठबा केना करितैन? जीवनक अन्तिम पड़ावमे मार बुढ़ापामे पहुँच जलसरी देख रहल छथि जे एक दिन तँ अपना दुनू परानीक देहमे हुबा छल जे नस-नस निचुँ मुहेँ ससरैत रहल अछि। एकटा बेटा दुनू अछि, सेहो बकलल-ढहलल अछि तेकर आशा की करब। लगल रहैत अपन मन कहलकैन जे किछु अछि अपने तँ आशा रहए अछि। किया नीक अछि आकि सुन्नर अछि, ओ अपना की काज देत। मुइला पछाति मूँहमे मुखबारी रहए ने लगौत..! भगवानसँ अपन जर्जर जीवन देख जलसरीक मनमे उठलैन जे कहुना दुनू एतबा कमा लिअए जे दुनू परानीकेँ मार माता-पिताकेँ मनोबल तक सुख पर रहै तैयो दिअए। घर बनाएत आकि खेत कीनत आकि अपन विआह-दान करत, ओ तँ अपन करत, अपना ले करत। ओना, माता-पिताक सेवा सेहो अपन कर्तव्यक सीमामे अछि मुदा तेकर हलाहल तँ दासनकेँ ने भाग पड़ै छै। अखन तक जइ आशासँ दुनूक सेवा कलौं तइमे जे ओ जीबैत रहि रोग-बियाधि आ दुखसँ तरसए नहि दिअए तँ बूझब जे बेटा निमित जे सेवा कलौं तेकर

हुलाहुल अपना मना हृदय करैल।
अपन आशाक फूल देख उत्साहीक मनमे मातृत्व शक्ति जगि गेलैन। तहिसँ निदान उठलैन जे भगवान बेटाकेँ सुमति देथुन जे जाबे ओकरा कमाइक लूरि नीक जकाँ नहि भेल अछि से पहिने सीख लिअए। जखन काज करैक लूरि भऽ जाए तखन ने ओ लूरि ओकरा हाथ पकैड़ करबा करत। काज ने लाज छी, लाज ने काज छी। जखन ओकरा कमाइक लूरि भऽ जाएत तखन ओकरा ओहि जाकर अपन बुधिया ने भऽ जेतैक। जखन से भऽ जाएत तखन ओ अपन बुधि-विवेकसँ निदान करत जे बेटा छँ तखन ने बेटा जखन ओ बेटा-धर्मक पालन करत। जखन से करए लगत तखन ने अपन विवेका कहतै जे जाबे जीवैक साधन नहि छल ताबे बाहर जाइक खगता छल मुदा जखन से भऽ गेल तखन ओकर द्रव्य धनमाविक नहि करब छँ ओकरा मान साधनकेँ ने याथाविक उपयोग हएत। दुनियाँक करोड़ बासी किए ने होथु आ करोड़सँ करोड़ बास किए ने करी, मुदा जखन जीवनक (मनुक्खक जीवनक) बीच बास करए लगब, तखन बुझए ने अपन बासभूमि मातृभूमि बुझमे सहज लगत-चालत। मन बहलबैक खियाल अलग छी, मुदा छँए सही क्रिया नहि छी सहज नहियेँ कहल जा सकैए। कहैत अपना सभ छँ कहैत छी जे सुख-दुखमे सभ संग छी, मुदा दुख करा सुख बनत मान दुखक संचयसँ सुखमे जे हएत, तइ बीचक जे प्रक्रिया अछि तहिमे क करए छी, सहज ने देखए पड़त। ओना, सभ जनैत छी जे जे जन्म लेलक से मरब करत। तहिमे मनुक्खक जिनगीए कते अछि। तहिमे कते कालक गारंटी अछि? उपरोक्त उपायक छँ होइत अछि। एकटा वैदिक विश्वासकेँ उँ ताकए निकलब छँ देमाइन जकाँ पन्ना-

भ-पल्ला आ दिन-भ-दिन तत हँसी ई सही सलामत रमाकेँ उखाड़ि रखैत छौन पाबैतम ताल-ताली साजि लए, बाल-बाधक खेल खेलाइत छथि। हिनी मानि लए ई लौकिक विज्ञानक पूर्ण पीठ अध्यात्म विज्ञान छी। एकरा जीवन विज्ञान सेहो कहै छथि, मुदा ई लगल खेलाइत बुझिम पड़ैए। खाएत ई आबए मुदा जलसंगीक मनम एत तँ खुशी उठाय खेलैत अछि ई बन्हानिक जीवनम नारी मात्र बेटी, तीन तरहक सहयोगीक जीवनक संग जीवन बितबैए। मात्र भेल माता-पिताक बीच जन्मसँ लऽ कऽ जाबत विआह-दान नहि भेल रहल। विआह-दानक पछाति माता-पिताक रूपम सासु-ससुरकेँ पबै छथि आ सहयोगीक रूपम पतिकेँ। तथा, अलग-अलग लोकम अलग-अलग जीवनक संग अलग-अलग रूप-विधान सेहो अछिए मुदा अखन से नहि। अखन एतब ई साधारण दृष्टिए ई जीवन चलि रहल अछि, बस एतबा।

माता-पिताक बीचक ई बेटीक जीवन अछि ई सभा रूपम रहनक अछि जकरासँ ई अधिकारकक बन्हान बनल अबैए, मात्र बेटीक जीवनम ई अधिकारकक बन्हान रहैए, सासुर एला पछाति उतहुम अनका दिशा दिस पतिबानक बन्हान अबित अछि। मात्र किछु एहन पतिबान अछि जकरम पुतहुकेँ बेटी सदृश बुझि-मानि माता-पिता मात्र सासु-ससुर अपन उहन आचरण बना चलै छथि जकरासँ पतिबानम बेटा-पुतहुक बीच प्रेम बढ़ैत विवाद कम अछि। मुदा दोसर तरहक ई पतिबान अछि, मात्र उहन पतिबान जकरम बेटाकेँ तँ अपन रक्त-बीज बुझि एक तरहक बन्हान रखनौं छथि मुदा पुतहुकेँ आन बीज रूप बुझि तेहन रूपम नहि बुझै छथि, जकरासँ पतिबानक गहीँर-सँ-गहीँर दायपूर्ण नातानाक सेहो सृजन होइत

अछि। ओना, बहुसंख्य परिवार गाम-समाजक एहन अछि, जइमे माता-पिता अपना खुशीसँ बेटा-पुतोहुक सम्बन्ध तेँ हीन-हीनोज भऽ जीवन भनिक अपन सभ रीति-नीति त्यागि दइत छथि। खाएन गामा-गामक आ गामा-घनक अपन-अपन लीला अछिए आ सभ अपन-अपन लीलाक लीलाधर छथि, किया अपन-अपन जीवन लीला पसाइन वृन्दावनक कृष्ण जकाँ रास रचौने रहथु। जलसभीकँ तइ सभसँ कोन मतलब छैन। लोककँ रचौने देखै छथिन तँ जलसभीकँ अपना मनमे होइ छैन जे जहिना सभ रचौने तहिना अपना मनब। इ (थोड़ बुझै छथि जे ककर मृत्यु कहुन भेल? सास प्राण त्यागकँ मृत्यु बुझै छथि। लगल रहन इहेरा आशा मात्र जीवनक आशा, सएह देखलासँ मात्र जीवितकँ देखलासँ, जागिय जाइ छैन जे जान-प्राण पव जखन जिनगी पलौं तखन मरब किए। जइसँ मृत्युक डर मनसँ हटिय जाइ छैन आ सामाम जे दुनियाँ देखै छथि तइमे अपन आस-वास-चास तकौने जिनगी दिस बढ़ए लगै छथि। तखन इ आशा, मात्र जिनगीक आशा, ओहिना जीब जाइ छैन जेना कहिया मरब ने करब। जहिना सभ जीबैए तहिना हमहूँ जीब करब। बचानी जलसभी बुझिया कना पबनी जे जीवनक मृत्यु सिर्फ चान शक्ति हटि चान शून्य बनब टा मृत्यु नहि छी। इ तँ पंचभौतिक शरीरक क्रियाक बीचक भेल। जे अखन तक आँखि ताकि दुनियाँ देखै छिऐ, कानसँ किछु सुनिता छी आ हाथ-पएर लाति-चाति भूखा-पियास मटवै छी।

शरीरक संग मनुक्खम आत्माक वास सेहो अछिए। जकर अपन दुनियाँक रंग आ रीति-नीति सेहो छइहे। जकरा पकैत मनुख अपन मानवीय जीवनक सार्थकताकँ पकड़ै छथि। आँखि बन्न कलाक

पछातिया दुनियाँ देखै छैथ आ कान बन्न कऽलाकऽ सेहो किछु सुनै छैथ। खाएत जे छैथ, तेँ सभसँ जलसनीकेँ कान मारल छैन। मारल एहेन छैन जे आइ देवन घरसँ निकैल परदेश जा रहल अछि, काएत रहत, की खाएत-पीअत आ कता सुतत-बैसत? ओतए आबि जलसनीक मन हानिकऽ रहैत लगै छैन। मुदा लगल मन ओहिना कहै छैन जे देवन किछु छी, कहुना बकलल-ठहलल किए न अछि मुदा छी तँ अपन कामिक सम्मान न..! ओकरा जँ कोना रानक मन वा देहम चाट-कचाट लगतै आ देहक नुइयाँ रहतै तँ ओइसँ की अपन मन नहि रहत? ओतए अबैत-अबैत जलसनीक मन देवनक ओइ आशा रहल जीवन लग पहुँच गेलैन, जे अखन तक सुतल छलैन। जलसनीक मनम उठलैन जे जैसुक दिनक रोजन (खाएब) देवनकेँ गामा मान याउन रहत। जखन गाम मनम जैत तखन ने माता-पिता आ सभा-समाज मान रहतै। तँए आइ देवनकेँ ओकर खनाइ ओइ नुयँ खुआएब जे सभ दिन मान रहतै। मान टा नहि रहतै, कलकत्ताम रंग-रंगक मिठाइ तँ देखत मुदा रंग-रंगक तरुआ-बघरुआ मिथिला जकाँ थोड़े देखत। जँ स रहैत तँ एकाटा चाहु कलकत्तावला अनका खाए देइत। गुप्त अछि जे तरुआक महिमा न बुझैत।

देवन अपन विवाहक अनुकूल साम पिता लग पहुँचल। पिताक हाथ तँ काजम लागल छलैन मुदा मनम देवनक जीवनक गति मता नाचि रहल छलैन जे विवाह घनघना रहल छलैन। ओना, अपयम्ह जीवन रहल धनुषधानीक काज तँ अपना ढंगेँ चलि रहल छलैन, मुदा यानशून्य जकाँ चलै छलैन। मान ओहो जे मन कने छलैन मान देवनक जीवन देख रहल छलैन आ दैनिक क्रिया, दिन-दिनक काज, हाथ

कए रहल छलैन। अभ्यासो तँ अभ्यास छीहे। जखन अभ्यास करैत तखन अभ्यासी जीवन करैत अभ्यस्त बनियेँ जाइत। जखन अभ्यस्त कर्म समयक संग पकड़ैत आगू बढ़ैत चलैत तखन ने ओ एल समयक गतिक संग गति पकड़ैत गतिशील जीवन बनि चलब।

ओना, जाबे तक देवन माइक संग गप-सप्प करैत छल ताबे तकक बाला-बाढ़ी आ विचारक ओ नुआ छल ओ पिता दिस मुड़ि नस-नस नसाइत नस बनि निसैत लगलै। अखन धनिक पिताक सिनेहक स्नेहुए देवनक मनकेँ तेना मथि देलकै जे एयानहि नुए बनि देखत देवनकेँ मनमे बघजन जकाँ लागिये गेल। जइसँ कोनो तेहेन किछु विचार मुँहसँ निकलब ने कएल।

देवनक मनकेँ जहिना अपन बधपल विचार पकड़ैत नेने छल, जइसँ बकार बन्न छलै, तहिना धनुषधारीकेँ सेहो देवनपर नजैर पड़ैत बधजल जकाँ मनमे कुदए लगलैन। धनुषधारीक बधजलक कारणसँ अपन मनमे ग्लानि उठए लगलैन जइसँ अपना उपर तामसो उठैन आ एयानहि नुए देख तेना होइन। ग्लानिसँ गलैत होइत मन कहलकैन, 'की अपन अखनो तक अपन सीमा बूझि सकलौं अछि। एकटा बटा अछि सेहो गाम-घर छोड़ि कलकत्ता जा रहल अछि। नहि जाएत तँ खाएत की आ जीवन केना चलतै। तहूमे तेहेन बकलल-ठहलल अछि जे विश्वास-दान होएत की नहि होएत। अखन अपन दूनू परानी जीबै छी तँ कहुना-क संग मिलि जीवन बीता लइ छी। मुदा जखन पराछ हएत तखन केना जीवन चलत।'

धनुषधारीक मन विचारसँ तेना भरा गेल छलैन जे अपनहि बकाबू बनि गेल छलैन, तँए मुँहसँ कोनो विचार निकालब, उचित-अनुचितक बीच फँसि गेल छलैन। तेबीच मनमे इतिहा एय हानि जे जइ

देवनकेँ गामक लोक बकलेल-ढहलेल बुझैत छल कना कलकत्ता सन शहर-बाजारमे नहि घौंटा। पता गाड़ी-सवारी चलैत ई बुधियारोकेँ जान बँचब कठिन रहैत, देवन तँ सहज देवन छी..! आगू बढ़ि अपन मन कहलकैन माए धनुषधारीक मन कहलकैन- जखन देवन कलकत्ता पहुँच जाइत तखन चिट्ठी पठबैत सहो कहि देबै आ शीहो कहि देबै जे सप्ताहमे नहि तँ पखा-पख जरूर चिट्ठी लिखत।

एकाएक धनुषधारीक धियान अपन वंशपर गेल छोटपनमे पहुँच गेलैन जेठामसँ अपन जीवनक बाट माए पकड़लैन। अपन पैछला पीढ़ी माए बाबासँ जयन, बिनु देखल छलैन, तँए जहिना मनमे जगलैन तहिना विलीन हएब होना गेल छलैन। जहिना काशी सूतल देवस्थान आकि तीर्थस्थान मनसँ होना जाइत माए बिसैर जाइ छी, मुदा आँखिक देखल ना-जिनगी थोड़ हेनाइत, छा तँ छठियारीक दुध जकाँ मृत्युक सीमा धनि मान रहैत। जखन धनुषधारी पाँच बर्खक हेला तखन बाबाक संग पिता आ दादीक संग माइयोकेँ संगे-संग खाक आठियन जा खलाइ छला आ सभ किया काज करै छला। ओही जीवनमे बाबा आ दादियाक मृत्यु देखलौं। पछाइत पिताक संग अपना ओहिना जीवन बितबए लगलौं जहिना बाबाक संग पिताकेँ बीतल छलैन। आइयो ओहिना पट-बनिया बनि जीवन जीब रहल छी। अहीठाम सँ न देवन पनिनानक नुखिकेँ माउत चाहैत। खगता छइहे। तइले त जाइत-जाइत पनिनान घूरैछ गेल अछि पाइत-पाइत बिनु माउ देन काजा चलब तँ कठिन अछिए।

एकाएक धनुषधारीक मनमे जगलैन जे किए न आइ देवनसँ सभ किछु पूछि अपन हिसाब माए पिताक दायित्वक हिसाब, होइछवैत चली। जिनगी की छी आ एकर मुक्ति कना हएत? पहिने न जे

नहि हमर बकियौत दुनियाँपर रहल आ ने दुनियाँक हमरा ऊपर रहलै। जहिना खाली हाथ आएल छी तहिना सिकन्दर जकाँ दुनू हाथ झुलबैत चलि जाएब। तइल किए ककरा लटपटीमे लटपटाएल जिनगीक हिसाब राखब। धनुषधारी बजला-

"बौआ, कलकत्ता जब करबहक?"

धनी दिस गेल दमन अपन नजरि (आँखि) उठ। अकास दिस ताकि बाजल-

"बाबू, कृतेसन गेयाकेँ कहि देलथिन, ओहो लऽ जाइल गेयान भेला। तखन?"

धनुषधारी-

"तोरा बूते काज कोन कएल हएत?"

जहिना कृतेसनक मुहेँ सुनल छल तहिना दमन बाजल-

"जखन दुनियाँक आन मनुख जकाँ अपना जन्म भेल अछि तखन दुनियाँमे कोन काज एहन मनुक्खक अछि जे अपना बूते नहि हएत।"

दमनक बात धनुषधारी बुझि गेला जे बिनु बुधिक सुगा। जखन सीतानाम, सीतानाम राधेश्याम, राधेश्याम करैत अछि, चिट्ठी-पत्री सेहो एक राज्य-सँ-दोसर राज्य उड़ैत अछि तखन दमना ओही कृतेसनक सिखौलहा सुग्गा जकाँ बाजि रहल अछि। मन मानि गेलैन मुदा धनुषधारीक मन मानि गेलैन जे दमन कलकत्ता जब करत। धनुषधारी बजला-

"बौआ, जखन गाम छोड़ि जाइ छह, तखन सबर-सकाल गामक सीमा छोड़ि आन गामक सीमा पकड़ि लएह। जएह अपन गाम वा परिवारक सीमा छी, सएह ने दोसर गामो आ दोसर परिवारक

सीमा रहल।"

कलकत्ता जेबाक एक-एक बातक जनतबकेँ मान काजक बातकेँ हुनका अखियासय लगल। अखन धनिक ओ समर्था, पतिवान वा समाजक प्रति, हुनकामे ओ किछु आबि नहि छल, ओ समटा एकाग्रक (कलकत्ता जेबाक विचार) बाट पकड़ने छल। पिता लगसँ उठि हुनका माए लग आबि बाजल-

"माए, अखन बहुत काज बाँकी अछि गाँए पहिने खा लेल दS दा। त गाँ काजक धूमसाहीम जखन पड़ि जाएब तखन खनाइय बिसरि जाएब।"

जलसनीक अपना मन मानियँ नहि छलैन ओ किछु उधा ल हुनका घनबेया अछि, त गे ओ आब बहुतबइय रहल किना। अखुनका खनाइ बटा जकाँ अपना सासाम खुआएब मुदा नौतुका थोड़ खुआ पएब।

अपन नुटिंगक हिसाब हुनका घनपन सँ विदा रS गेल। जहिना मनुखहुना चढ़ल लाकक हाथा-पएल बिनबिना लगै छै आ बुधिया-विचार सुनसुना लगिग छै, तहिना हुनाक रहइय गेल छल। काज आ मजदूरी मनसँ हटि हुनकक मन उदाइराम अँटैक गेल छल, ओराम अपन सन राइ राइयक दशा नहिता मान कुशेसनक जीवन पाँच वर्खमे एगो काज कS ललक पानिवानिक काज, जइसँ जहिना माए-बाबू बैनसँ नहि छैन, तहिना त अपना माए-बाबू छैथ। नीक-बजा सावैक सीउम हुनकक नाम्हा करि गेल। हुनकँ हुखग कुशेसनक मनमे खुशीक लहरि उठि गेल। एकटा संगी उँ रहट जाए गँ दुनियाँक ग्रमल नाम्हा ति गामा जकाँ कइय सकै छी।

कुशेसन बाजल-

"बढ़ियाँ कएलहुँ जे समयसँ पहिने चलि गेलहुँ।"

-

-जगदीश प्रसाद मण्डलजीक जन्म मधुबनी जिलाक बेरमा गाममे 5 जुलाई 1947 ईस्वीमे भेलैन। मण्डलजी हिन्दी एवं राजनीति शास्त्रमे एम.ए.क अहर्ता पाबि जीविकोपार्जन हेतु कृषि कार्यमे संलग्न भऽ रुचि पूर्वक समाज सेवामे लागि गेला। समाजमे व्याप्त रूढ़िवादी एवं सामन्ती व्यवहार सामाजिक विकासमे हुनका बाधक बुझि पड़लैन। फलत: जमीन्दार, सामन्तक संग गाममे पुरजोर लड़ाइ ठाढ़ भऽ गेलैन। फलत: मण्डलजी अपन जीवनक अधिकांश समय केस-मोकदमा, जहल यात्रादिमे बीतौलैन। 2001 ईस्वीक पछाति साहित्य लेखन-क्षेत्रमे एला। 2008 ईस्वीसँ विभिन्न पत्र-पत्रिकादिमे हुनक रचना प्रकाशित हुअ लगलैन। गीत, काव्य, नाटक, एकांकी, कथा, उपन्यास इत्यादि साहित्यक मौलिक विधामे हुनक अनवरत लेखन अद्वितीय सिद्ध भऽ रहलैन अछि। अखन धरि दर्जन भरि नाटक/एकांकी, पाँच साएसँ ऊपर गीत/काव्य, उन्नैस गोट उपन्यास आ साढ़े आठसाए कथा-कहानीक संग किछु महत्वपूर्ण विषयक शोधालेख आदिक पुस्तकाकार, साएसँ ऊपर ग्रन्थमे प्रकाशित छैन। मिथिला-मैथिलीक विकासमे श्री जगदीश प्रसाद मण्डलजीक योगदान अविस्मरणीय छैन। ई अपन सतत क्रियाशीलता आ रचना धर्मिताक लेल विभिन्न संस्थासभक द्वारा सम्मानित/पुरस्कृत होइत रहला अछि, यथा- विदेह सम्पादक मण्डल द्वारा 'गामक जिनगी' लघु कथा संग्रह

लेल 'विदेह सम्मान- 2011', 'गामक जिनगी व समग्र योगदान हेतु साहित्य अकादमी द्वारा- 'टैगोर लिटिरेचर एवार्ड- 2011', मिथिला मैथिलीक उन्नयन लेल साऊर दरभंगा द्वारा- 'वैदेह सम्मान- 2012', विदेह सम्पादक मण्डल द्वारा 'नै धारैए' उपन्यास लेल 'विदेह बाल साहित्य पुरस्कार- 2014', साहित्यमे समग्र योदान लेल एस.एन.एस. ग्लोबल समिरनी द्वारा 'कौशिकी साहित्य सम्मान- 2015', मिथिला-मैथिलीक विकास लेल सतत क्रियाशील रहबाक हेतु अखिल भारतीय मिथिला संघ द्वारा- 'वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' सम्मान- 2016', रचना धर्मिताक उत्तम अमूल्य योगदान हेतु ग्राम्या-मण्डल द्वारा- 'कौमुदी सम्मान- 2017', मिथिला-मैथिलीक संग अन्य उत्कृष्ट सेवा लेल अखिल भारतीय मिथिला संघ द्वारा 'स्व. बाबू साहेब चौधरी सम्मान- 2018', चेतना समिति, पटनाक प्रसिद्ध 'यात्री चेतना पुरस्कार- 2020', मैथिली साहित्यक अहर्निश सेवा आ सृजन हेतु मिथिला सांस्कृतिक समन्वय समिति, गुवाहाटी-असम द्वारा 'राजकमल चौधरी साहित्य सम्मान- 2020', भारत सरकार द्वारा 'साहित्य अकादमी पुरस्कार- 2021' तथा साहित्य आ संस्कृतिमे महत्वपूर्ण अवदान लेल अमर शहीद रामफल मंडल विचार मंच द्वारा 'अमर शहीद रामफल मंडल राष्ट्रीय पुरस्कार- 2022'

रचना संसार : 1. इन्द्रधनुषी अकास, 2. राति-दिन, 3. तीन जेठ एगारहम माघ, 4. सरिता, 5. गीतांजलि, 6. सुखाएल पोखरिक जाइठ, 7. सतबेध, 8. चुनौती, 9. रहसा चौरी, 10. कामधेनु, 11. मन मथन, 12. अकास गंगा - कविता संग्रह। 13. पंचवटी- एकांकी संचयन। 14. मिथिलाक बेटी, 15. कम्प्रोमाइज, 16.

समालिया विआह, 17. नन्नाकन उकौग, 18. स्नयंनन- नाटक। 19. मौलाऽऽल गाछक कूल, 20. उठान-पतन, 21. जिनगीक जीत, 22. जीवन-मरण, 23. जीवन संघर्ष, 24. नै धाउत, 25. वउकी वहिन, 26. रादनक आO अन्नान, 27. सधवा-विधवा, 28. QO गाछ, 29. ऽऽजाग गमा ऽऽजाग वँचलौं, 30. लहसन, 31. पंगु, 32. आमक गाछी, 33. सुचिता, 34. माउयन, 35. संकल्प, 36. अन्तिम ऊध, 37. कृष्ठा- उपन्यास। 38. पयस्विनी- प्रवन्ध-निवन्ध-समालोचना। 39. कल्याणी, 40. सगमाउ, 41. समभौगा, 42. गामक गमघेल, 43. वीनांगना- उकांकी। 44. गनगन, 45. वजन्था-वृसन्था- वीहैन कथा संग्रह। 46. शंगुदास, 47. नटनी खड- दीर्घ कथा संग्रह। 48. गामक जिनगी, 49. अर्द्धांगिनी, 50. सागरैया पाखेन, 51. गामक शकल-सूनग, 52. अपन मन अपन धन, 53. समनथाऽऽक रूग, 54. अप्पन-वीनान, 55. वाल गोपाल, 56. रकमाउ, 57. उलवा चाउन, 58. पगमाउ, 59. गड़ैनगन हाथ, 60. लजविजी, 61. उकउ समय, 62. मधूमाछी, 63. पसनाक धनम, 64. गुउ-खुद्धीक नाटी, 65. हलहान, 66. खसौग गाछ, 67. उगहा आमक गाछ, 68. शुरचिन्हक, 69. गाछपन सँ खसला, 70. उरियाउल गाम, 71. गुलगी दास, 72. मूतियाउल घन, 73. वीनांगना, 74. स्मृगि शेष, 75. वटीक पैनूख, 76. क्रान्तियाग, 77. त्रिकालदर्शी, 78. पैंगीस साल पछुआ गेलौं, 79. दाहनी हाक, 80. सुरिमानी जिनगी, 81. दखल दिन, 82. गपक पियाहूल लाक, 83. दिवालीक दीप, 84. अप्पन गाम, 85. खिलगाउ रूमि, 86. चिगननक शिकान, 87. वौनस खगक वौनस उपज, 88. समपसँ पहिन चग किसान, 89. सौक, 90. गामक आशा टूटि गेल, 91. पसनाक माल, 92.

कृषियाग, 93. हानल चरुना जीगल नुय, 94. नहे जाकन यनिजान, 95. कर्गाक नंग कर्मक संग, 96. गामक सूनग वदैल (गल, 97. अन्किम यनीऊा, 98. घनक खर्च, 99. नीक 0कान 0कलौं, 100. जीननक कर्म जीननक मर्म, 101. संचनध, 102. रनि मन काज, 103. आतल आशा चलि (गल, 104. जीनन दान गथा 105. अयन सागी- लघू कथा संग्रह।

अयन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **यन यठाउ।**

३.६.रमाकान्त चौधरी- मधुमेह



रमाकान्त चौधरी, सेवानिवृत्त चीफ मैनेजर, राष्ट्रीय स्टेट बैंक

मधुमेह/ ग्लायसेमिक इंडेक्स आओर ग्लायसेमिक लोड/ मधुमेह बिमारीक प्रथम चरण स्थिति/ मधुमेह बिमारी कोन दोसर चरण (stage)/ मधुमेह बिमारीक तेसर चरण/ मधुमेह बिमारीक चारिम

अवस्था(stage)/ मधुमेह बिमारीक पाँचम अवस्था(stage)/ मधुमेह बिमारीक छठम अवस्था (stage)

१

मधुमेह

आइ हम मधुमेह बिमारी पर किछु आवश्यकीय बात बता रहल छी। सामान्यतः लोक सभ ई मानि रहल छथि जे, ई मधुमेह बिमारी भ' गेल त ओ कहियो जड़ि सँ ठीक नहि होयत आ सभ दिन दवाइ खाइये पड़त। ई बात किछु हद तक सत्य मानल जा सकैत अछि, कारण अधिकतर लोक अपन स्वास्थ्य लेल नहि त जागरूक होमय चाहैत छथि आ न अनुशासित। आइ देखि रहल छी जे ई मधुमेह बिमारी दिन प्रति दिन अपना आगोश मे क्रमिक रूपसँ अधिक सँ अधिक लोक के ले रहल अछि। हमरा जानतब मधुमेह बिमारीक विषय मे पूर्ण जानकारी वैज्ञानिक दृष्टि सँ हासिल करबाक चाही। ओकर पूर्णतया उन्मूलन हेतु खान-पान मे और रहन-सहन मे अनुकूल परिवर्तन करनाय आवश्यक अछि। एहि लेल जानकारी संग खान-पान आ रहन-सहन लेल स्वयं मे अनुशासित रहब सेहो परम आवश्यक अछि। ई बिमारी आइये नहि भेल अछि। ओकर इतिहास पुरान अछि। तखन आधुनिकता आओर विकासक क्रम खान पान मे परिवर्तनक फलस्वरूप ओकर बढ़ोतरी मे वृद्धि भेल अछि। आधुनिकताक क्रम विज्ञानक क्षेत्र मे सेहो अधिकाधिक विकास भेल अछि। स्वास्थ्य विज्ञान मे शोध आओर अनुसंधानक फलस्वरूप अनेकानेक जटिल आओर गंभीर बिमारीक

इलाज सहज आ बिमारी जड़ि सं उन्मूलन योग्य अछि। ओहि मे एकटा दूसर मधुमेह बिमारी सेहो उन्मूलन योग्य अछि। बहुत पूर्व मे वैद्य लोकनि बिमारी सभक इलाज जड़ी - बूटी, विभिन्न तरहक रसम आ पथ परहेज सं करैत छलाह। ओ लोकनि मुख्यतया लक्षण आधारित इलाज करैत छलाह। बहुत पहिल मामूली संक्रमण आओर दुर्घटना सं लोक सभ बीमार होइत छलाह। कतना कतना संक्रमण ओहेन होइत छल जे गामक गाम साफ भ जाइत छल। स्वास्थ्य विज्ञान मे प्रगति भेला सं ई सभ नियंत्रित भ गेल। ओही तरहें मधुमेह बिमारी केँ सेहो वैज्ञानिक लोकनि सकारात्मक दिशा मे आगां बढि रहल छथि। सर्वप्रथम ई देखल गेल जे ओहेन मरीज जे खूब पानि पिबैत छलाह ओना हुनका अधिक पेशाब होइत छल। शरीर क तौल धीरे धीरे कम भ जाइत छल। किछु महिना मे हुनक मृत्यु भ जाइत छलनि। तत्कालीन चिकित्सक लोकनि हुनका उपवास करा, कम पानि पिब राखि, मात्र हविष्यान तरकारी इत्यादि खुआ लक्षण आधारित इलाज करैत छलाह। बाद मे पाओल गेल जे ओहेन मरीज क पेशाब मे चुट्टी लुधकैत अछि। तखन चिकित्सक लोकनि ओहि बिमारी केर नाम मधुमेह रखलनि। एहि बिमारीक कारण केँ ओहि समय मे तरह तरह क अनुमान लगायल गेल। किया अनुमान लगेलनि जे ई पाचन तंत्र केर खराबी सं, किया कहलनि किडनी क खराबी सं, किया कहलनि मस्तिष्क क खराबी सं। क्रमिक शोध मे अन्वेषण भेल गेल आ वैज्ञानिक लोकनि ओहि निष्कर्ष पर पहुँचलाह जे अग्न्याशय (Pancreas) मे इन्सुलिन नामक हॉर्मोन होइत अछि तकर कमी सं मधुमेह बिमारी होइत अछि। बाद मे त ई हॉर्मोन वैज्ञानिक लोकनि प्रयोगशाला मे बनना

लेल सफल भेलाह। ओहि सिद्धांत पर मरीज क इलाज केलनि, किछु हद्द तक सफलता जरूर भेटल परंच ई स्थायी इलाज संभव नहि भ सकल। वैज्ञानिक अन्वेषणक क्रम मे कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन, वसा, खनिज और विटामिन एहि सभक भूमिकाक संदर्भ मे निश्चित स्थान छल आओर पाओल गेल जे खान पान मे उपलब्ध कार्बोहाइड्रेट और चीनी केर अधिकता शरीरक रक्त मे चीनीक परिमाण बढ़ैत अछि। मधुमेह बिमारीक संदर्भ मे पूर्ण जानकारी लेबा सँ पूर्व किछु निम्नलिखित जानकारी आवश्यक अछि।

कार्बोहाइड्रेट

शरीर संचालन हेतु शक्ति (Energy) केर आवश्यकता होइत छैक जे कार्बोहाइड्रेट सँ भेटैत अछि। हम सब जे किछु भोजन करैत छी, ओकर कार्बोहाइड्रेट अंश पाचनतंत्र मे विखंडित भ शक्ति केर सरलतम भाग ग्लूकोज मे परिवर्तित होइत अछि आओर ओ शोणित मे चल जाइत अछि। शोणित क माध्यम सँ शरीर क प्रत्येक अंग मे शक्ति प्रदान करैक हेतु ग्लूकोज पहुँचि जाइत अछि। शोणित मे एहि ग्लूकोज क परिमाण सामान्य सँ जखन अधिक होइत अछि त हम कहैत छियैक जे ई मधुमेह थिक। रक्त परीक्षण मे जँ परिमाण ७० स १०० मिली ग्राम प्रति डेसी लिटर अछि त ई सामान्य अछि। कखनो काल ग्लूकोज स्तर सामान्य सँ नीचा सेहो आबि जाइत अछि जकरा निम्न रक्त शर्करा कहल जाइत अछि। अर्थात शर्करा असंतुलन मधुमेह बिमारी थिक।

𑒃𑒢𑓂𑒮𑒳𑒪𑒱𑒢

𑒖𑒐𑒢 𑒬𑒼𑒝𑒱𑒞 𑒧𑒹 𑒑𑓂𑒪𑒴𑒏𑒼𑒖 𑒏 𑒂𑒫𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒩𑓀𑒦 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱, 𑒍𑒏𑒩𑒰 𑒬𑒩𑒲𑒩 𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒞𑓂𑒨𑒹𑒏 𑒁𑓀𑒑𑒏 𑒏𑒼𑒬𑒱𑒏𑒰 𑒧𑒹 𑒣𑓂𑒩𑒫𑒹𑒬 𑒏𑒩𑒥𑒻𑒏 𑒪𑒹𑒪 𑒫𑒰𑒯𑒏 𑒏 𑒩𑒴𑒣 𑒧𑒹 𑒃𑒢𑓂𑒮𑒳𑒪𑒱𑒢 𑒏 𑒏𑒰𑒖 𑒣𑒛𑓃𑒻𑒞 𑒕𑒻𑒏। 𑒋𑒯𑒱 𑒣𑓂𑒩𑒏𑓂𑒩𑒱𑒨𑒰 𑒪𑒹𑒪 𑒯𑒧𑒩 𑒁𑒑𑓂𑒢𑓂𑒨𑒰𑒬𑒨 𑒮𑒏𑓂𑒩𑒱𑒨 𑒦 𑒍𑒯𑒱 𑒪𑒹𑒪 𑒃𑒢𑓂𑒮𑒳𑒪𑒱𑒢 𑒏 𑒂𑒣𑒴𑒩𑓂𑒞𑒱 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒻𑒏।

𑒧𑒡𑒳𑒧𑒹𑒯𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒩

𑒙𑒰𑒃𑒣 -𑓑 𑒧𑒡𑒳𑒧𑒹𑒯: 𑒖𑒐𑒢 𑒂𑒢𑒳𑒫𑒰𑓀𑒬𑒱𑒏 𑒨𑒰 𑒁𑒢𑓂𑒨 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒏𑒰𑒩𑒝 𑒮𑓀 𑒬𑒩𑒲𑒩 𑒏 𑒁𑒣𑒢 𑒃𑒢𑓂𑒮𑒳𑒪𑒱𑒢 𑒂𑒫𑒬𑓂𑒨𑒏𑒞𑒰 𑒮𑓀 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒏𑒧 𑒥𑒢𑒻𑒞 𑒕𑒻𑒏 𑒞𑒐𑒢 𑒬𑒼𑒝𑒱𑒞 𑒏 𑒑𑓂𑒪𑒴𑒏𑒼𑒖 𑒃𑒢𑓂𑒮𑒳𑒪𑒱𑒢 𑒏 𑒁𑒦𑒰𑒫 𑒧𑒹 𑒏𑒼𑒬𑒱𑒏𑒰 𑒮𑒦 𑒧𑒹 𑒢𑒯𑒱 𑒖𑒰 𑒣𑒥𑒻𑒞 𑒕𑒻𑒏 𑒂𑒍𑒩 𑒩𑒏𑓂𑒞 𑒣𑒩𑒲𑒏𑓂𑒭𑒝 𑒧𑒹 𑒑𑓂𑒪𑒴𑒏𑒼𑒖 𑒥𑒜𑓃𑒪 𑒁𑒥𑒻𑒞 𑒕𑒻𑒏।

𑒋𑒯𑒱 𑒞𑒩𑒯𑒏 𑒥𑒜𑓃𑒪 𑒑𑓂𑒪𑒴𑒏𑒼𑒖 𑒮𑓂𑒞𑒩 𑒏 𑒙𑒰𑒃𑒣 -𑓑 𑒧𑒡𑒳𑒧𑒹𑒯 𑒏𑒯𑒪 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱।

𑒅𑒣𑒔𑒰𑒩 : 𑒋𑒏𑒩 𑒅𑒣𑒔𑒰𑒩 𑒪𑒹𑒪 𑒔𑒱𑒏𑒱𑒞𑓂𑒮𑒏 𑒮𑒧𑒲𑒔𑒲𑒢 𑒐𑒼𑒩𑒰𑒏 𑒧𑒹 𑒃𑒢𑓂𑒮𑒳𑒪𑒱𑒢 𑒠𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱।

𑒙𑒰𑒃𑒣 -𑓒 𑒧𑒡𑒳𑒧𑒹𑒯 : 𑒖𑒐𑒢 𑒬𑒩𑒲𑒩𑒏 𑒁𑒣𑒢 𑒃𑒢𑓂𑒮𑒳𑒪𑒱𑒢 𑒅𑒣𑒪𑒥𑓂𑒡𑒞𑒰 𑒣𑒩𑓂𑒨𑒰𑒣𑓂𑒞 𑒩𑒯𑒪𑒰𑒏 𑒥𑒰𑒫𑒖𑒴𑒠 𑒬𑒼𑒝𑒱𑒞 𑒧𑒹 𑒬𑒩𑓂𑒏𑒩𑒰 𑒨𑒰 𑒑𑓂𑒪𑒴𑒏𑒼𑒖 𑒮𑓂𑒞𑒩 𑒮𑒰𑒧𑒰𑒢𑓂𑒨 𑒮𑓀 𑒁𑒡𑒱𑒏 𑒁𑒥𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒞 𑒍𑒏𑒩𑒰 𑒙𑒰𑒃𑒣-𑓒 𑒧𑒡𑒳𑒧𑒹𑒯 𑒏𑒯𑒪 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱।

𑒅𑒣𑒔𑒰𑒩 : 𑒋𑒏𑒩 𑒅𑒣𑒔𑒰𑒩 𑒪𑒹𑒪 𑒔𑒱𑒏𑒱𑒞𑓂𑒮𑒏 𑒮𑒧𑒲𑒔𑒲𑒢 𑒐𑒳𑒩𑒰𑒏 𑒧𑒹 𑒠𑒫𑒰𑒃 𑒪𑒹𑒥𑒰𑒏 𑒯𑒹𑒞𑒳 𑒮𑒳𑒗𑒰𑒫 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱। 𑒈 𑒠𑒫𑒰𑒃 𑒮𑓀 𑒁𑒣𑒢 𑒁𑒑𑓂𑒢𑓂𑒨𑒰𑒬𑒨

सक्रिय भ' और अधिक इन्सुलिन आपूर्ति करैत अछि ताकि रक्त मे उपस्थित ग्लूकोज के शरीर के कोशिका सभ मे पहुँचा देल जा सकय आ रक्त मे उपस्थित सामान्य सँ अधिक ग्लूकोज अपन सामान्य स्तर पर आबि जाय।

विशेष गर्भित तथ्य: (१) जखन शरीर मे प्रचुर मात्रा मे इन्सुलिन उपलब्ध अछि तखन कोन कारण सँ टाइप-२ मधुमेह होइत अछि ?

एकर उत्तर अछि शरीर कोशिका मे इन्सुलिन प्रतिरोध उत्पन्न भ' गेलैक अछि, अर्थात कोशिका मे ग्लूकोज प्रवेश करयबाक हेतु अग्न्याशय द्वारा सामान्य रूपेँ उत्सर्जित इन्सुलिन हॉर्मोन सक्षम नहि भ' पाबि रहल छैक। दबाओ देला उपरान्त अग्न्याशय के सक्रियता बढ़ा और अतिरिक्त इन्सुलिन आपूर्ति होइत छैक। उहि सँ शोणित मे उपस्थित अधिक ग्लूकोज अग्न्याशय द्वारा प्रदत्त अतिरिक्त इन्सुलिन के सहयोग सँ कोशिका सभ मे चल जाइत छैक। फलस्वरूप शोणित केर ग्लूकोज स्तर सामान्य भऽ जाइत अछि।

(२) आखिर शरीरक कोशिका इन्सुलिन प्रतिरोध कोन कारण सँ करैत छैक?

कोशिका के आवश्यकता सँ अधिक ग्लूकोज नहि चाही। अगर जबरदस्ती अधिक ग्लूकोज कोशिका मे जाएत तखन लिपिड, कॉलेस्ट्रॉल और ट्राइग्लिसराइड्स अधिक बनय लगैक। एहि सब कारण सँ कोशिका प्रतिरोध करय लगैत छैक। अगर खान पान मे नियंत्रण नहि आ सिर्फ दबाओ पर निर्भर भऽ मधुमेह प्रबंधन करैत छी

ॐी उचित नहि। यँ मधुमेह क एक ग्राथसिन विमानी कहल गेल अछि। क्रमिक न्यून यहिल मधुमेह रून नक चाय रून लियित प्रचुनता रून हृदय,कितनी लिवन संबंधित अनकानक विमानी।

(३) की सम्भव अछि ज मधुमेह क यूना यूनी ठीक कयल जा सकैत अछि?

विल्कुल सम्भव अछि। खान यान सं अगन कायिका द्वारा ॐस्थुलिन प्रतिरोध शून्य कs लैत छी त संभव अछि ज मधुमेह यूर्णतया ठीक भs जायत। खान यान उाहन हवाक चाही जाहि म कार्वोहाॐड्रेट कम हाॐक आ प्रोटीन ॐत्यादि अधिक। एहि सव यन ध्यान दवाक लल काना खाद्य यदार्थ क ग्लाॐसीसमिक लात आउान ग्लाॐसीसमिक ॐंतक्स काक अछि ॐी वूमि प्रति दिन आहान लवाक चाही। अगन मधुमेह नहि हल हा यँ अधिकतम १०० ग्लाॐसीसमिक लात खाना प्रति दिन, ज मधुमेहयूर्व (Prediabetic)क स्थिति म छी यँ कुल ७० ग्लाॐसीसमिक लात खाना प्रति दिन आउान ज मधुमेह सं ग्रसित छी यँ कुल २७ ग्लाॐसीसमिक लात खाना प्रति दिन समुचित हायत।

एहि तनहँ मधुमेह यूर्णतया नियंत्रित भ सकैत अछि।

२

ग्लायसमिक ॐंतक्स ओन ग्लायसमिक लात

तात्विक म जेकर खाद्य पदार्थ उपलब्ध अछि, ओहि म कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन, वसा, खनिज एवं विभिन्न प्रकारक विटामिन सभ पाओल जाइत अछि। कार्बोहाइड्रेट सर्करा या ग्लुकोज केर मुख्य स्रोत होइत अछि। चीनी या ग्लुकोज शोणित म बहुत तेज रफ्तार सँ शोणित म प्रवेश करैत अछि। ई सर्करा एवं ग्लुकोज क प्रवेश रफ्तार क मानक मानल गेल अछि। अर्थात जँ किया १०० ग्राम चीनी ग्रहण करैत छथि त हुनक शोणित ग्लुकोज १०० क गति सँ बढ़ैत अछि। ओही मानक अनुसार प्रत्यक खाद्य म उपलब्ध कार्बोहाइड्रेट आओर ओहि म युक्त चीनी कतेक तेजी सँ शोणित म चीनीक स्तर बढ़बैत अछि ओ ग्लाइसेमिक इन्डेक्स कहल जाइत अछि। जाहि खाद्य क ग्लाइसेमिक इन्डेक्स कम होइत अछि ओ शोणित केर चीनी स्तर कम बढ़बैत अछि। ई मधुमेह युक्त व्यक्ति क कम ग्लाइसेमिक इन्डेक्स वला खाद्य क चुनाव कs खेबाक चाही। चाउर, गहूम, मकई इत्यादि क ग्लाइसेमिक इन्डेक्स ज्यादा अछि। करीब ७० सँ ८०। ई ओकर आटा म अलग कम ग्लाइसेमिक इन्डेक्स वला आंटा मिला देल जाय त श्रेयस्कर। जेना कि चना, सोया, ओट, बाजरा इत्यादि केर आंटा।

ग्लाइसेमिक लोड

एकर एकटा सूत्र अछि।

ग्लाइसेमिक लोड = (ग्लाइसेमिक इन्डेक्स x कार्बोहाइड्रेट)/१००

अर्थात भोजन खाद्य मे उपस्थित कार्बोहाइड्रेट और आदि खाद्य क कतेक ग्लाइसेमिक इन्डेक्स रहैत अछि ओहि रूपे एकर निर्धारण करैत अछि ग्लाइसेमिक लोड।

तँ भोजन खाद्य चयन सँ पूर्व उपस्थित विश्लेषण करबाक ठीक जे आदि खाद्य मे कार्बोहाइड्रेट कम रहैक आ उपस्थित ग्लाइसेमिक इन्डेक्स कम सेहो रहैक। ओहि सँ स्वास्थ्य शरीर मे आवश्यकतानुसार ग्लाइसेमिक लोड प्रति दिन खा सकैत छी।

३

मधुमेह बिमारीक प्रथम चरण स्थिति- भोजन - भोजन मधुमेह बिमारी क्रमिक रूप सं बढ़ल चल जाइत अछि।

जखन स्वास्थ्य हमर बिल्कुल ठीक रहैत अछि अर्थात मधुमेह नहि प्रारंभ भेल अछि, तखन जे भोजन करैत छी हम सभ, तखन हमर अग्न्याशय समीचीन मात्रा मे इन्सुलिन रक्त मे भेज दैत अछि। ई समीचीन इन्सुलिन रक्त मे प्र निहित ग्लूकोज/ चीनी का रक्त नलिका माध्यम सं विभिन्न अंगक कोशिका सभ मे शरीरक शक्ति उत्पन्न पूरा करैक लेल पहुँचा दैत अछि। कखनो नियमित, कखनो अनियमित खान - पानक कारणे भोजन सं प्राप्त चीनी

/𑒑𑓂𑒪𑒴𑒏𑒼𑒖 𑒂𑒅𑒩 𑒁𑒑𑓂𑒢𑓂𑒨𑒰𑒬𑒨 𑒮𑒿 𑒮𑓂𑒩𑒰𑒫𑒱𑒞 𑒃𑒢𑓂𑒮𑒳𑒪𑒱𑒢 𑒏𑒹𑒩 𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩𑒰 𑒁𑒮𑓀𑒞𑒳𑒪𑒱𑒞 𑒯𑒼𑒧𑒨 𑒪𑒑𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒬𑒩𑒲𑒩𑒏 𑒏𑒼𑒬𑒱𑒏𑒰 𑒮𑒦 𑒡𑒲𑒩𑒹 𑒡𑒲𑒩𑒹 𑒃𑒢𑓂𑒮𑒳𑒪𑒱𑒢 𑒪𑒹𑒪 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱𑒩𑒼𑒡 𑒏𑒩𑒨 𑒪𑒑𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒋𑒯𑒱 𑒮𑓂𑒟𑒱𑒞𑒱 𑒧𑒹, 𑒩𑒏𑓂𑒞 𑒧𑒹 𑒐𑒰𑒢 𑒣𑒰𑒢 𑒮𑒿 𑒥𑒢𑒪 𑒑𑓂𑒪𑒴𑒏𑒼𑒖 / 𑒔𑒲𑒢𑒲 𑒮𑒰𑒧𑒰𑒢𑓂𑒨 𑒩𑒴𑒣 𑒮𑒿 𑒏𑒼𑒬𑒱𑒏𑒰 𑒮𑒦 𑒧𑒹 𑒢𑒯𑒱 𑒖𑒰 𑒣𑒥𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒞𑒐𑒢 𑒩𑒏𑓂𑒞 𑒧𑒹 𑒔𑒲𑒢𑒲 𑒏𑒧 𑒥𑒹𑒮𑒲 𑒯𑒼𑒧𑒨 𑒪𑒑𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒩𑓀𑒦 𑒧𑒹 𑒞 𑒯𑒧𑒩 𑒁𑒑𑓂𑒢𑓂𑒨𑒰𑒬𑒨 𑒥𑒱𑒪𑓂𑒏𑒳𑒪 𑒚𑒲𑒏 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒏𑒠𑒰𑒔𑒱𑒞 𑒖𑒿 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒁𑒡𑒱𑒏 𑒏𑒰𑒩𑓂𑒥𑒼𑒯𑒰𑒃𑒛𑓂𑒩𑒹𑒙 𑒨𑒰 𑒁𑒡𑒱𑒏 𑒑𑓂𑒪𑒰𑒨𑒮𑒹𑒧𑒱𑒏 𑒪𑒼𑒛 𑒫𑒪𑒰 𑒐𑒰𑒢𑒰 𑒐𑒰 𑒪𑒻𑒞 𑒕𑒲 𑒞 𑒋𑒯𑒱 𑒮𑒿 𑒥𑒢𑒪 𑒁𑒡𑒱𑒏 𑒑𑓂𑒪𑒴𑒏𑒼𑒖 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒂𑒮𑒰𑒢𑒲 𑒮𑒿 𑒃𑒢𑓂𑒮𑒳𑒪𑒱𑒢 𑒠𑓂𑒫𑒰𑒩𑒰

𑒏𑒼𑒬𑒱𑒏𑒰 𑒮𑒦 𑒧𑒹 𑒔𑒪 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒏𑒰𑒩𑒝 𑒁𑒑𑓂𑒢𑓂𑒨𑒰𑒬𑒨 𑒁𑒡𑒱𑒏 𑒑𑓂𑒪𑒴𑒏𑒼𑒖 𑒁𑒢𑒳𑒩𑒴𑒣 𑒁𑒡𑒱𑒏 𑒃𑒢𑓂𑒮𑒳𑒪𑒱𑒢 𑒮𑓂𑒩𑒰𑒫𑒱𑒞 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒣𑒩𑓀𑒔 𑒄 𑒮𑒱𑒪𑒮𑒱𑒪𑒰 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒮𑒧𑒨 𑒥𑒰𑒠 𑒁𑒫𑒩𑒳𑒠𑓂𑒡 𑒦 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒏𑒰𑒩𑒝 𑒏𑒼𑒬𑒱𑒏𑒰 𑒃𑒢𑓂𑒮𑒳𑒪𑒱𑒢 𑒯𑒹𑒞𑒳 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱𑒩𑒼𑒡 𑒏𑒩𑒋 𑒪𑒑𑒻𑒞 𑒕𑒻𑒏 । 𑒏𑒼𑒬𑒱𑒏𑒰 𑒏𑒹 𑒂𑒫𑒬𑓂𑒨𑒏𑒞𑒰 𑒮𑒿 𑒁𑒡𑒱𑒏 𑒑𑓂𑒪𑒴𑒏𑒼𑒖 𑒢𑒯𑒱 𑒔𑒰𑒯𑒲 𑒞𑒻𑓀 𑒍 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱𑒩𑒼𑒡 𑒏𑒩𑒨 𑒪𑒑𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒄 𑒮𑓂𑒟𑒱𑒞𑒱 𑓔-𑓕 𑒮𑒰𑒪 𑒡𑒩𑒱 𑒩𑒯𑒱 𑒮𑒏𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒂𑒅𑒩 𑒦 𑒮𑒏𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒖 𑒏𑒼𑒢𑒰 𑒪𑒏𑓂𑒭𑒝 𑒮𑒿 𑒯𑒧𑒮𑒦 𑒁𑒢𑒦𑒱𑒖𑓂𑒘 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒢𑒯𑒲। 𑒏𑒼𑒬𑒱𑒏𑒰 𑒠𑓂𑒫𑒰𑒩𑒰 𑒃𑒢𑓂𑒮𑒳𑒪𑒱𑒢 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱𑒩𑒼𑒡𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒩𑓀𑒦 𑒧𑒡𑒳𑒧𑒹𑒯 𑒏𑒹𑒩 𑒣𑓂𑒩𑒟𑒧 𑒔𑒩𑒝 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱।

४

मधुमह विमानी कन दासन चनध (stage)

प्रथम चनध म ज शनीनक काशिका सन द्वाना ञ्ञन्सुलिन प्रणिनाध प्रानंद हाञ्ञा अछि गाहि सं नक नलिका म ञ्ञन्सुलिन अधिकाग हामय लगेग अछि। गं दासन चनध क हाञ्ञयनञ्ञन्सुलिनामिया सहा कहल जाञ्ञा अछि। नक म आवश्यकगा सं अधिक ञ्ञन्सुलिन हायव शनीन लल Oीक नहि। ञ्ञी वढल ञ्ञन्सुलिन यहिन छाट छाट नक नलिका ज प्रायः शनीनक सव महत्वपूर्ण अंग गक यहुंचैग अछि, डाकना ऊणि यहुंचनाञ्ञी प्रानंद क s दैग अछि। यागन - यागन नक नलिका मस्तिष्क म, आँखि म डीन अनक महत्वपूर्ण अंग म हाञ्ञा अछि। ञ्ञन्सुलिन कन कुप्रभाव सं ओहि यागन यागन नक नलिकाक आंगनिक भिल्ली, जकना ओन्डाथेलिअम भिल्ली कहल जाञ्ञा अछि डा ऊणिग्रस्त हामय लगेग अछि। डाहि ऊणिग्रस्त स्थान यन खञ्ञOी (Pl aque) यनि जाञ्ञा अछि। ओहि खञ्ञOी सं नकक सामान्य प्रवाह डाहि अंग म वाधिग हामय लगेग अछि।

मधुमह कन दासन चनध म किछु किछु लऊध सहा आवय लगेग अछि। अकानध थकान - थकान सनक अनुभूति ,वजन म वृद्धि, माटाया, गर्दैन ऊप्र म व

हुा हल्का हल्का कानीयन ॐ्यादि ॐ्यादि लउग्र सर आवि सकेंग अछि। ओहि दासन चनग्र कान यृष्टि नक्त यनीउग्र सं कॐल जा सकेंग अछि। मधुमह क दासन चनग्र स्थिति ३-४ साल धनि नहि सकेंग अछि। गं उहि चनग्र म अगन ख्यान दी आ गद अनुकुल अयन खान - यान नहुन सहुन म सुधान कञ ली ग s वहुग (श्रयस्कना। उहि सं मधुमह क प्रवश निषध र जाय ग। ज छाट माट समस्या आनय लागल छल उाह्य युर्ध नूयग्र ठीक रs जायग।

ञ

मधुमह विमानीक गसन चनग्र

ञखन गक क स्थिति म रs ॐी नहल छल ज असंयमित खान-यान क कानग्ग ञक गनह नक्त म शुक्राञ वढि नहल अछि आ दासन गनह ॐस्नुलिन सह्य। मगन शनीनक काशिका सर ॐस्नुलिन लल निनंगन प्रगिनाध क s नहल अछि। दिनानुदिन प्रगिनाध वढिय नहल अछि।

ञदी क्राम म अगग्याशय आउान उहि सँ श्रानिग हाॐी नला ॐस्नुलिन अनियंत्रित(unregul at ed) हामय लगेग अछि। अथाग

कखना कम्म आउान कखना आवश्यकता सँ अधिक ऽऽन्सुलिन श्रावित हामय लगैत अछि। कखना काल राजन उपनाध्य अग्न्याशय खुव अधिक ऽऽन्सुलिन श्रावित क दैत अछि।

ऽऽी ज स्थिति अवैत अछि ओहि म जखन नक्त म चीनी कन यनीऊध कनवैत छी त गुखल यट नला यनीऊध नियार्ट सामान्य सँ कम अवैत अछि आ राजन उपनाध्य जाक वढल अवैक चाही ओहि सँ वहुत कम। ओहना हाऽऽत अछि ज गुखल यट नला नक्त यनीऊध नियार्ट स्फन सँ राजन उपनाध्य नला नक्त यनीऊध नियार्ट यनिधाम कम्म अवैक।

डाहनका स्थिति ऊँ अवैत अछि त डाकना हाऽऽयाश्राऽऽसीमिया कहल जाऽऽत अछि। अर्थात ग्युन सर्कराक स्थिति। ओहि स्थिति म काना संदर्शित कुशल चिकित्सक सँ यनामर्श क लवाक चाही जाहि सँ सुनिश्चित र सकय कि आखिन की वात छैक।

मधुमह क गसन चनध म किछु लऊध सव सहा यनिलक्षित र सकैत अछि। जना कि दुख क वहुत तीव्र अनुभूति। कनिया दनी रला यन चिडचिडायन अर्थात अनावश्यक क्रोध। सदिखन किछु न किछु खाय लल मान छुछुवैत नहनी। नजन ओन माटाया वढि सकैत अछि। सदिखन विना कानध, थाकल - थाकल जकाँ लगैत नहनाऽऽ। नक्त चाय सहा वढल क क्रम म रऽ सकैत अछि। राजन कलाक उपनाध्य वहुत आनवक अनुभव । राजन उपनाध्य डांगही लागय लगैत अछि। मिठाऽऽी खवाक ऽऽच्छा हाऽऽत नहैत अछि।

एहि उमेर मे होइत ई अछि जे हम बूझैत छी। हमरा चीनी त कम अछि। (थोर मात्र मिठाइ या चीनी खायल करब त ओ अपने ठीक भऽ जायत। किछु लोक सभ सेहो ओहन परामर्श दैत छथि।

मगर ई बात बिल्कुल नहि। नीक परीक्षण और कुशल चिकित्सक सँ परामर्श आवश्यक अछि ओहि स्थिति मे। हँ, खान पीन ओहन जरूर होयबाक चाही जे कार्बोहायड्रेट कनी कम(प्रति दिनक लेल समुचित ग्लाइसेमिक लोड अनुरूप)। ओहन अनाज जाहि मे प्रोटीन इत्यादि ज्यादा होइक आ कार्बोहायड्रेट बहुत ज्यादा नहि। हरियर तरकारी सब, शुष्क फल सभ(नट्स)। जकर ग्लायसेमिक इंडेक्स और तदनुरूप शुद्ध ग्लाइसेमिक लोड कम होइक ओहन फल सभ सेहो खा सकैत छी।

मधुमेह बिमारी बिल्कुल छुटय तरह भऽ जा सकैत अछि हँ अपन खान पान ग्लाइसेमिक इंडेक्स और ग्लाइसेमिक लोड आधारित उपयुक्त डाइट लेनाइ प्रारम्भ करैत छी।

ओना कुशल चिकित्सक सँ परामर्श आवश्यक अछि एहि सभ लेल।

६

मधुमेह बिमारीक चारिम अवस्था(stage)

एखन तक रक्तक ग्लूकोज स्तर क्रमिक रूप सँ बढि रहल अछि, इन्सुलिन सेहो बढि रहल अछि कारण कोशिका द्वारा

प्रतिरोधक क्रम सदा बढ़ि रहल अछि। यद्यपि एखन तक कोनो खास अधिक गंभीर लक्षण परिलक्षित नहि अछि मुदा हम सब एकरा बिल्कुल हल्लुक म लैत छी।

आब एहन चरण क बाद रक्त परीक्षण म खाली पेट म शुगर स्तर १२७ तक मुदा नाश्ता भोजन उपरान्त २०० तक आबय लागल अछि। एहि परिस्थिति म अंदर -अंदर खराबी बढ़ि रहल अछि परञ्च एखनो ऊपर -ऊपर हल्लुक हल्लुक लक्षण देखा पड़ि रहल अछि। जेना कि रक्त चाप बढ़ल आबि सकैत अछि, थकान लागि सकैत अछि, भूख प्यास बेसी जाएत सँ लागि सकैत अछि , कोलेस्ट्रॉल सदा बढ़ल आबि सकैत अछि, मोटापा मुदा शरीरक वजन इत्यादि इत्यादि बढ़ि सकैत अछि। इहो स्थिति २-३ साल धरि नहि सकैत अछि।

वास्तविक म ई चरण बिल्कुल डायबिटिक चरण होबाक पूर्व क चरण कहल अछि। एहि स्थिति क उलटनाय(reverse करनाय) हेतु जे आवश्यक छैक ओ अवश्य प्रयास क देबाक चाही। ई पूर्व डायबिटिक स्थिति पहुँचबाक सीमा(बॉर्डर) अछि।

खान- पान, रहन सहन म अनुकूल परिवर्तन करनाय परम आवश्यक। कोनो चिकित्सक सँ परामर्श कय ई सुनिश्चित क लेबाक चाही जे वास्तविक म कोन चरण म ओ बिमारी अछि। ओ चिकित्सक परामर्श सँ खाली पेट शुगरक परीक्षण, भोजनक बाद शुगर परीक्षण, ३ घंटा वला जीटीटी इन्सुलिन सहित परीक्षण, एचबीए१सी परीक्षण करायल जाय त सुनिश्चित भेल जा

सकैत अछि जे आखिर कोन स्थिति धरि मधुमेह पहुँचल अछि। सही निर्धारक विश्लेषण कय चिकित्सक कहि सकैत छथि जे अहाँ अमुक वा अमुक स्थिति मे छी। एहिनिर्धारण हेतु अहाँ की सब करी, चिकित्सक उचित परामर्श अवश्य देताह।

ऊना कार्बोहाइड्रेट ओहि ग्लाइसेमिक लोड आधारित डाइट अर्थात कम कार्बोहाइड्रेट, कम ग्लाइसेमिक इन्डेक्स वला खाद्य पदार्थ अपन डाइट मे शामिल करी। ई ध्यान मे अवश्य राखल जाय जे रोनि दिनक आहार मे हमेशा कुल ग्लाइसेमिक लोड सम्बन्धि सँ विशेष नहि होइक।

ई हम वारम्बार पुनरावृत्ति क रहल छी कारण डायबिटीज हेतु मुख्य कारक चीनी ओहि कार्बोहाइड्रेट मे विद्यमान ग्लूकोज अछि। तँ एहि पर ध्यान देनाय अति आवश्यक अछि।

१

मधुमेह बिमारीक पाँचम अवस्था(stage)

मधुमेह बिमारीक पाँचम अवस्था, पूर्व मधुमेह स्थिति (prediabetic stage) क बादक अवस्था थिक।

एहि स्थिति मे आब रक्तक ग्लूकोजक स्तर खाली पेट १२६ सँ ऊपर तथा नास्ता खाना बाद २०० सँ ऊपर सामान्य लगैत अछि। कुशल चिकित्सक सँ देखलाक बाद डा(चिकित्सक) आब मानैत लगा। हेत

छथि अर्थात सुनिश्चित कऽ कहि दैत छथि जे मधुमेह भऽ गेल। निदानक हेतु चिकित्सक द्वारा सेहो प्रायः करबाक सुझाव दैत छथि। एहि अवस्था के नाम चिकित्सा जगत मे टाइप २ मधुमेह (Type-२ Diabetese Mlletus) कहल जाइत अछि।

मनोज बुझैत छथि जे हमरा आब मधुमेह बिमारी भय गेल आ आब हमरा सब दिन दवाइ खाय पड़त। किछु मनोज सोचैत सेहो भय जाइत छथि जे ई बिमारी त निरन्तर बढ़ै बला (Progressive) होइत अछि तँ आब हुनका निदान हेतु विशेष ध्यान देब आवश्यक भऽ गेल।

वास्तविक मे ई अवस्था एकाएक नहि आयल अछि। ओकरा एहि मे १०-१२ साल लागि गेल होयत। जखन ई बिमारी आयल अछि त ई बुझु जे बीस प्रतिशत हमर आँखि के क्षति पहुँचा देलक। आन आन महत्वपूर्ण अंग के किछु न किछु क्षति पहुँचल सेहो होयत।

आधुनिक शोध और अनुसंधान कर संकल्पना (concept) अनुसार एहेन अवस्था अयलाक उपरान्त विशेष चिन्ता करबाक बात नहि। आधुनिक शोध कहैत अछि जे ई बिमारी कोशिका सब द्वारा प्रति इन्सुलिन प्रतिरोधक स्थिति उत्पन्न कयला सँ उत्पन्न भेल अछि। जँ क्रमिक रूप सँ एहि प्रतिरोध के नियंत्रित कऽ लैत छी। तँ एहि स्थिति के पलटा (reverse) कऽ सामान्य अवस्था के प्राप्त कऽ सकैत छी।

कुशल चिकित्सक परामर्श अनुसार दवाइ संग - संग अपन डाइट क उँ अनुमोदित कार्बोहाइड्रेट और ग्लाइसेमिक लोड आधारित सुधार कऽ लेत ठी त सम्भव अछि जे एहि बिमारी सँ निजात पाबि जौ।

मात्र उँ दवाइ पर आश्रित रहैत छी आ खान पान पर ध्यान नहि दैत छी तँ क्रमिक रूप सँ शरीर मे इन्सुलिन बढ़ैत चल जायत जे कि धीरे धीरे शरीर मे आन आन तरहक अंग पर दुष्प्रभाव क्रम रखनहिय रहत। दवाइ सँ इ प्रबन्ध होइत अछि जे अग्न्याशय सक्रिय रहि इन्सुलिन श्रावित करय। एहि सँ (इन्सुलिन श्राव सँ) रक्त मे उपस्थित असामान्य ग्लूकोज कोशिका सब मे प्रवेश करै मे सक्षम रहि जाइत अछि। आ एहि तरहेँ शरीरक ग्लूकोज नियंत्रण दृष्टिगत होइत अछि।

ग्लूकोज त नियन्त्रित रहि जाइत अछि परञ्च दवाइ मदद श्रावित और अधिक इन्सुलिन त आन आन खराबी पहुँचा सकैत अछि। तँ हमु उँ खान पान सेहो समुचित करैत चल जायब तखन चिकित्सक कँ सुविधा होयतैक जे ओ दवाइ खुराक क कुशल प्रबन्धन कऽ सकता । ओ (चिकित्सक) समुचित आकलन कम स कम शक्तिक दवाइ आ कम सँ कम दवाइक खुराक कर सुझाव दऽ बिमारी क निदान करैक लेल परामर्श दऽ सकता।

एहि सँ इ होयत जे अग्न्याशय मे विद्यमान बीटा सेल जे इन्सुलिन श्रावित करैत ठीक ओकर क्रमिक ह्रास कम सँ कम होयत । अग्न्याशय बहुत जल्दी खराब नहि होयत।

ई एल पाँचम अवस्था अर्थात टाइप २ मधुमेह।

६

मधुमेह बिमारीक प्रथम अवस्था (stage)

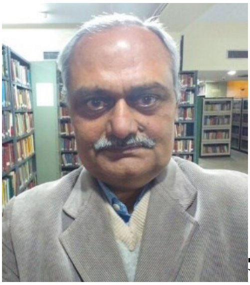
ई अवस्था थिक शरीर मे इन्सुलिन केर अभाव। जखन अग्न्याशय इन्सुलिन के लगातार स्राव करैत करैत अपन सामर्थ्य कम करय लगैत अछि आ बहुत कम इन्सुलिन स्राव क' पबैत अछि तखन प्रथम अवस्था केर आगमन प्रारम्भ भ' जाइत अछि। अग्न्याशयक बीटा कोशिकाक संख्या न्यून भ' जबाक कारणे ई होइत अछि। इन्सुलिनक निर्माण त बीटा कोशिकाक माध्यम सँ होइत अछि । ओ न्यून भ' गेल तँ स्वाभाविक: बहुत कम इन्सुलिनक निर्माण भ' रहल अछि एहि अवस्था मे। इन्सुलिन केर भूमिका रक्त सँ शरीरक कोशिका सभ मे ग्लुकोज के ऊर्जा ल' जैत अछि जाहि दिन प्रति दिनक आवश्यक शक्ति लेल परम जरूरी होइत अछि। अर्थात इन्सुलिन ग्लुकोज केर वाहक(carrier)थिक। शरीर मे अपन अनुकूल इन्सुलिनक अभाव मे आब चिकित्सक मरीज लेल बाहर सँ इन्सुलिन हेतु सुझाव करैत छथिन्ह । कारण ई जे आब बाहरी दबाइ अग्न्याशय के इन्सुलिन बनवा हेतु सक्रिय नहि क' पबैत अछि । आब अग्न्याशय इन्सुलिन सँ अभावग्रस्त भ' गेल अछि। ई जे अवस्था थिक ओ मधुमेहक प्रथम अवस्था कहबैत अछि। एहि मे निदानक हेतु एक मात्र विकल्प बाहर सँ इन्सुलिन लेब अछि।

ई अवस्था नहि आबय ताहि लेल पाँचम अवस्था, आ सम्भव हुअए तँ ओहि सँ पूर्वहि सँ अपन खान पान दिनचर्या के ठीक करबा हेतु निर्धारण करी। ई सकारात्मक सर्वोत्तम प्रयास होयत।

एहि ठामहुँ हम मधुमेह बिमारी आ ओकर सभ अवस्थाक विस्तृत चर्चा कयलहुँ अछि। पुनः देश मे जाहि ठामहुँ एहि मधुमेह बिमारीक द्रुत प्रसार भऽ रहल अछि ओ बहुत चिन्ताक विषय अछि। हमर एहि आलेखक मुख्य उद्देश्य ई अछि जे आम लोक सभ मे सजगता आनलि ताकि एहि बिमारी सँ पूर्ण रूपेण बाँचल जा सकय। विश्वास जरूर अछि जे एहि आलेख सँ किछु न किछु लाभ लोक के जरूर होयतन्हि।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

३.१०.नवीन्द्र नारायण मिश्र- मातृभूमि (उपन्यास)- १७म खण्ड



नवीन्द्र नारायण मिश्र

मातृभूमि (उपन्यास)- १७म खण्ड

१७

साँझमे सुधाकर बाबू लोकैक संगे पाठशाला लग पहुँचलाह । पाठशाला गाँ आ नामक छल । स्कूलक बनल ओकर बान खसबा हेतु उद्यत छल । कतेको सालसँ ओकर देख-रेख नहि भेल छल । पुस्तकालयक स्थापना गनकानी भायल छल । राजमनि,कदीमा,नामसिमनी ,टमाटर,काकी सन गनेक गनकानीक समावेस कन छलाह । सुधाकनक सालसँ गनकानी आदिपामसँ उपजि जाइत छलनि । कागजी नवाक गाछ गाक समटगन छल आ

सौंस साल नवा अपना खाइत छलाह आ हाटपर बेचैत छलाह। कोनपर टाङनवाक गाछमे बड़का-बड़का टाङना फड़ल छल । असलमे जहिआसँ जयन्त गाम अएलाह आ ओहि पाठशाला लग रहए लगलाह तहिएसँ सुधाकर परेसान छलाह । हुनका मोनमे तरह-तरहक बातसभ घूमए लगलनि ।

"कहुन बढ़िआँ जानकीधाममे पढ़ैत-लिखैत छलहुँ । एहिठाम की राखल छैक जे अनेरे अपसियाँत भेल छी।"-सुधाकर बजैत छथि ।

जयन्तसँ जरै छलखिन सुधाकर । दुनूक पिता सहोदर भाए रहथि । जयन्तकेँ गामसँ चलि गेलाक बाद पाठशालाक जमीनपर सालहो आना हक सुधाकरक कायम भए गेल रहनि । एहिमे आब जयन्त एतेक दिनक बाद आबि कए बाधा करथि से हुनका कोना नीक लगितनि?

सुधाकरक व्यवहारसँ जयन्तकेँ ततेक कष्ट भेलनि जे ओ गुम्म पड़ि गेलाह । तखनसँ पटकुनिआ देने पड़ल रहथि । बिना किछु खेने-पीने सौंस दिन बीति गेल । तकर कोनो चिंता सुधाकरकेँ नहि भेलनि । ओ तँ पाठशालाक जगह पर अपन कब्जा कायम रखबाक हेतु व्यग्र रहथि । सुधाकरक बाजब सुनि जयन्त छगुंतामे रहथि । बकर-बकर हुनका देखैत रहि गेलाह । तावतमे पानि होबए लगलैक । पाठशालाक घर तँ बुझू खसल छल । कोनपर नान्हिटा चार बाँचल छल जाहिमे कैकटा साँगर लागल छल जाहिसँ ओ कहुना कए लटकल छल। तकर तरमे जयन्त आइ एकमाससँ

पड़ल छलाह। एकटा बेर सुधाकर हाल-चाल लेबए नहि अएलाह। ई सुनितो कए जे हुनका आँखिमे समस्या छनि ओ हटल-हटल रहलाह। मुदा जखन पाठशाला हेतु बैसार भेल तँ ओ समस्त पुरुषार्थसँ प्रकट नहि भेलाह,अपन लोकक सहयोगसँ बैसारमे हड़बिड़ा मचा देलाह।

जयन्त सपनामे नहि सोचि सकल रहथि जे हुनकर पैतृक स्थानमे बनल पाठशाला पुनर्निर्माण करबाक हुनक प्रयासमे सबसँ पैघ बाधक हुनक पितिऔत सुधाकर भए जाएत। मुदा स्वार्थमे लोक आन्हर भए जाइत अछि। हुनि जखन अनकर संपत्ति भोगबाक आदति पड़ि जाइत तँ ओहिपरसँ बेदखल होएब बहुत कष्टकारी भए जाइत अछि। जयन्तक पिताक हिस्सामे पाठशालाक अतिरिक्त पाठशालासँ सटल मात्र पाँच कट्ठा जमीन रहनि। ओहीसँ ओ सालभरि गुजर करैत छलाह। कहिओ ककरोसँ किछु याचना करब हुनक स्वभावमे नहि छल। सुधाकर पाठशाला आ लगीचक जमीन कतेको सालसँ कब्जा कए लेने रहथि। पाठशालाक जगहपर एकदिस माल-जाल बान्हल करथि। खाली जगहमे तिमन-तरकारी उपजाबथि। मुदा सुधाकरकेँ आब बड़का चिंता भए गेल रहनि। "कहुना कए जयन्तक संसट खतम होअए तँ चैन होइ।"-सुधाकर सोचल करथि।

सुधाकरक लोकक संग आएल देखि जयन्तकेँ किछु नहि फुरेलनि। ओ अवाक भेल चारू दिस देखैत रहि गेलाह।

"आऊ नौ-छओ करू लेब। एही पार की ओही पार

। विद्वान छथि तँ अपना घरमे। हमरा पाहिसँ की मतलब? पढ़ि-लिखि कए नव-नव संसार बसाबि रहल छथि। ई कोन नीक बात छैक?"-सुधाकर मोने-मोन सोचथि। जखन जयन्त किछु नहि बजलाह तँ सुधाकर गमसाइत बड़बड़ाइत चलि गेलाह-

"कान खोलि कए सुनि लएह। ई संपत्ति हमर अछि। बाबा मरैत काल साह कए गेल रहथि जे ई सभटा बीज-वस्तु सुधाकरकेँ हएत। स्वाध्ययनयन सभटा लिखि गेल छथि। पाहियन जे तूँ अनुचित प्रयास करबह से नहि चलतह।"- से कहि सुधाकर लठैतसभक संग बाहर भए गेलाह।

जयन्त टुकुर-टुकुर देखैत रहलाह। सुधाकर अपन लठैत सभक संग आगू बढ़ि गेलाह।

"अहाँ कही तँ एकरा एकहि बेरमे धानक पान रकि आबी।"-एकटा लठैत बाजल।

"एकर सही इलाज तँ हमरा लग अछि।-दोसर लठैत बाजल।

"हमरा तँ होइए जे एना होइत-होइत ई अपन सोह भए जाएत। ककरो किछु करबाक काज नहि पड़त।" -तेसर लठैत बाजल।

"से की?"

" देखैत नहि छहक। ई बात कखनो खसि सकैत छैक

। जयन्तकेँ लेन-देन साफ।" -बाजिम लोटैत बाजल।

"तूँ सब सबदिन मूर्ख नहि गेलह। हमरा जयन्तसँ की मतलब अछि। जीवए-मरए, जाए जाए। हमरा बीज-बस्तुपर सँ हटि जाए। बसी लहनासँ कोन मतलब?"-सुधाकर बजलाह।

एहिना गप्प-सप्प करैत डाक्टर चलि गेलाह। जाइत-जाइत अपन-अपन लाठी जान-जानसँ पटकैत जयन्त दिस आँखि गुरैत पाठशालाक बाबक एकटा साँगन हटा देलक।

कहुना कए लटकल डा बाबा आङन एकहाथ आगू ससरि गेल। बीचक हाँकसँ पानि मरुन-मरुन खसए लागल। जयन्त अखनो डाढी बाबा पर बैसल नहथि। दासन कोना उपाय नहि छल।

बानसँ खसैत बनखाक पानिसँ सौंस देह तिति गेल छल।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

३.११.जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'- बिना बहर आ काफिया गजल कहना रहै



जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'

बिना बहर आ काफिया गजल कहना रहै

(मैथिली लेखक साहित्य अकादमीसँ मान्यता प्राप्त कथित लिटरेरी एसोसियेशन रचना समितिक पत्रिकाम काँट-छाँटक संग प्रकाशित

हएल छल। ओना ओहि आलेखक मूल आ प्रामाणिक संस्करण देल जा रहल अछि।- सम्पादक)

साहित्यमे गद्यमे कथा, नाटक, उपन्यास, संस्मरण, जीवनी, आत्मकथा, समीक्षा, आलोचना आदि लिखल जाइत अछि, पद्यमे दोहा, कविता, गीत, गजल, खंड काव्य आ महाकाव्य आदि लिखल जाइत अछि। सभ विधाक अपन-अपन विशेषता छै, जाहि कारणे ओ अस्तित्वमे अछि।

बच्चा सभ अपन माय-बाबू,दादा-दादी,कक्का-काकी,टोल पड़ोसक आन बच्चा सभसँ बजनाइ सिखैत अछि । बादमे शुद्ध बजनाइ आ लिखनाइ सिखैत अछि । व्याकरणक उपयोग क'क' शुद्ध बाजब आ लीखब संभव नहि भ' सकैत छैक। साहित्य सृजनमे व्याकरणोक महत्वपूर्ण योगदान छै ।

गजल सेहो रानीय भाषामे लोकप्रिय स्थान ग्रहण क' चूकल अछि । हिन्दीमे सेहो गजलक व्याकरण यवासा बनल पहिने आबि चूकल अछि ।

किछु पढ़िक' आ सुनिक' हम 1983 मे मैथिलीमे गजल कहब आरम्भ कएलहुँ । किछु रचना मिथिला मिहिर आ माटि-पानिमे छपबो कएल, मुदा अपना संतुष्टि नै भेल । हिन्दीमे सेहो लिखय लगलहुँ । किछु रचना काना-काना पत्रिकामे छपबो कएल, मुदा व्याकरणक जानकारीक अभाव खटकैत रहल । आर.पी.शर्मा 'महर्षि'क लिखल

हिन्दी गजलक व्याकरण देखलहुँ, मुदा मैथिलीमे गजलक जानकारी मैथिली गजल आ शेरो-शायरीक लेल समर्पित ब्लॉग 'अनचिन्हार आखर' पर पर्याप्त सामग्री देखि हर्षित भेलहुँ। एहि ब्लॉगपर एक ठाम तेरह खण्डमे गजेन्द्र ठाकुर द्वारा प्रस्तुत गजल शास्त्रमे गजलक विवेचन मैथिली भाषाक तन्त्रपर कएल भेल। तकर बाद 22.07.2011 आ 21.09.2011क बीचमे आशीष अनचिन्हार द्वारा बत्तीस खण्डमे मैथिली गजलक व्याकरण ओ इतिहास 'गजलक संक्षिप्त परिचय'क अंतर्गत प्रस्तुत कएल गेल । कतेक मास गजलकारकेँ एक मंचपर अनवरत काज केलक ई मंच। ई ब्लॉग मैथिली गजलक व्याकरणकेँ सहजतासँ लोकक समक्ष आनि शुद्ध गजल लिखबाक बाट प्रशस्त केलक।

जाहि समयमे मैथिली गजलक व्याकरण उपलब्ध नहि छल, तखनो शुरुआतमे स्वस्थ गजल कहल गेल छल जे कि ओहि समयक गजलकारक ज्ञानक परिचायक अछि। मुदा बीचमे किछु वसिए वर्ख मैथिली गजलक एहन अवस्था भेलै जाहिमे जकरा जाहि तरह भेलै ओ गजलकेँ तीति देलकै आ से कखनो क्रांतिक नामपर, कखनो कथ्यक नामपर तँ कखनो प्रगतिशीलताक नामपर। आब जखन गत बारह बरखसँ मैथिलीमे गजलक व्याकरण उपलब्ध अछि, तखन आब गजलक स्वास्थ्य सुनिश्चित करबाक आवश्यकता अछि। काल्हिया आ बहुतक लेल थोड़ेक अभ्यास आ सावधानी रखैत एहि लक्ष्यकेँ प्राप्त कयल जा सकैत अछि । हमरा गजलक व्याकरणक जे जानकारी अछि तकर मुख्य स्रोत मैथिली गजलक लेल समर्पित ब्लॉग 'अनचिन्हार आखर' अछि।

आशीष अनचिन्हार द्वारा प्रस्तुत 'मैथिली गजलक व्याकरण आ इतिहास' और 'मैथिली गजलक गती सकरम' मे सही विस्तारसँ मैथिली गजलक सब पक्षपर विचार प्रस्तुत कएल गेल अछि। हमरा ठाकर बहुत थोड़ जानकारी अछि।

हमरा गजल लिखब लेल जे न्यूनतम जानकारी अपेक्षित लागल अछि से एतय प्रस्तुत कएल जा रहल अछि :

1. गजल लेल मूल तत्व अछि (i)सही काफिया (II) एक समान बहर आ (iii) दमदार कथन।

बहर,काफिया आ रदीफ : एकटा गजलक शेर सब देखू :

लोक नीचाँ उगनि जाइए

मानि सरोँ बजनि जाइए

ई गजलक पहिल शेर अछि। एहि शेरक दुनू पाँतीक अन्तम समान शब्द अछि 'जाइए' आ एहि शब्दक पाछाँ पहिल पाँतीमे अछि शब्द 'उगनि' आ दोसर पाँतीमे अछि शब्द 'बजनि' अर्थात दुनू शब्दमे 'नि' आ ठाकरा पाछाँ 'अ' ध्वनि/ मात्रा समान अछि। अतः शब्द 'जाइए' भेल एहि गजलक रदीफ आ 'अ' ध्वनिक संग 'नि' भेल काफिया। पहिल शेरकेँ मतला कहल जाइत अछि, शेरक दुनू पाँतीकेँ अलग-अलग मिसरा कहल जाइत अछि।

दुनू पाँतीमे मात्राक्रम अछि :

2122-12-212

इएह बहर एहि गजलक वजन अर्थात छंद। आ ई वजन मतलामे लेल गेल अछि तकर निर्वाह पूरा गजलमे हेबाक चाही। तखनहि आन गजलमे ई वजन हो सएह वजनक निर्वाह हो। एकटा गजलमे एकसँ बेसी मतला भ' सकैत अछि। एहि गजलमे दोसर आ तेसर शेर सेहो पहिल शेर जकाँ दूनू पाँतीमे रदीफ, काफिया आ समान मात्राक्रमसँ युक्त अछि, आ ईं [illegible] दूनू शेर मतला अछि -

गाछ कहिया मजरि जाएत

फूल कहिया मखरि जाएत

आगि सगराँ पसरि जाएत

खेल सगरो उसरि जाएत

आब नीचाँक शेर सबहक दोसर पाँतीमे समान रदीफ, काफिया आ सब पाँतीमे समान मात्राक्रम देखल जाए :

पाइ राखू अहाँ बैंकमे

पाइ हाथसँ ससरि जाएत

मुनि नाखव कथी कानएँ

मुस सरटा कुनि जाइए

लोक कावा हूए जागल

एक दिन सए नवनि जाइए

अतः उपनाक गजलम 'जाइए' शब्द नदीफ अछि, 'अ' ध्वनिक संग 'नि' काफिया रल आ वहन रल मात्राक्रम 21-22-12-212.

गजलक अंतिम शेन जाहिम गजलकानक नाम / उपनाम नहैत अछि ताकना मकता कहल जाइछ । एखन धनि ऐही गजल विना मकताक गजल अछि । मकताक नमून ऐही शेन लेल जा सकैत अछि :

मास अगहन अवै छै 'अनिल'

लोक कातिक विसनि जाइए

उपनाक उदाहनणक संग नदीफ, काफिया आ वहनक निम्नलिखित पनिभाषा दल जा सकैछ :

नदीफ : गजलक मतलाक दूनू पाँतीक अन्तम आ वाद वला शेन सभक दोसन पाँतीक अन्तम कोना समान वर्ण अथवा शब्द अथवा शब्दक समूह होइत अछि ।

काफिया : गजलक मतलाक दुनू पाँती आ बादक सभ शेरक दोसर पाँतीमे रदीफसँ पहिने स्वर साम्य युक्त तुकान्तक प्रयोग अछि काफिया। ई कोनो ध्वनि(मात्रा)क संग कोनो वर्ण अथवा किछु वर्णक समूहक नियम अथवा मात्र कोनो ध्वनिक नियम रहैत अछि।

बहर : गजलक सभ पाँतिमे समान मात्राक्रमकेँ बहर अर्थात छंद कहल जाइत अछि।

2. मात्राक गणना :

ह्रस्व अथवा लघु मात्राकेँ 1 आ दीर्घ अथवा गुरु मात्राक 2 सँ प्रदर्शित कएल

जाइत अछि।

ह्रस्व वर्ण (1 मात्रा वला): अ,इ,उ,

क सँ ङ,

च सँ ञ,

ट सँ ण,

त सँ न,

प सँ म,

य सँ ह ध्वनि,

चंद्रबिन्दु बला वर्ण।

दीर्घ वर्ण (2 मात्रा बला) : आ,ई,ए,ऐ,ओ,औ,अं,अः, ऐकार,ओकार,औकार,अनुस्वार,विसर्ग बला वर्ण, संयुक्ताक्षरसँ पहिने बला वर्ण (से चाहे एक शब्दमे हो वा कि दू अलग-अलग शब्दमे)। एहिठाँ अरबिक गजलमे (मात्र गजलमे) कोनो शब्दमे एकै संग बाजल जाए बला दू टा लघुकेँ सेहो दीर्घ मानल जाइत छै जेना "गएबए" ई शब्द संस्कृतक हिसाबें 1111 छै मुदा गजलमे एकरा 22 मानल जाइत छै। संस्कृतक छंद एवं अन्य प्राचीन छंदमे गएबए शब्दकेँ 22 मानब निषेध छै। गजलक अनुजी सरल गजलमे प्रवाह अनबाक लेल एहन व्यवस्था कएल छथि।

3.सही काफिया-शब्दक उदाहरण :

पहिल शेर / मतलामे काफिया-शब्द	अन्य शेर सभलेल उपयुक्त काफिया
पागक / बाटक	बालक / पालक / चालक / हाथक
बाटपर / खाटपर	हाटपर / घाटपर / टाटपर
पानिक / आनिक	हानिक /
हाथमे / पागमे	बाटमे / रागमे / कागमे / चासमे

कलमसँ / पानसँ   गगनसँ / चलनसँ / मननसँ /यतनसँ

बसन्त / अनन्त   दिगन्त / हिमन्त / चलन्त

जीवन / पीमन   राजन / पहिरन / अनमन

धन / जन   हन / मन / बन /

अखबार / बाजार   संसार / उपहार / लाचार / व्यापार

4. (i) मात्राक गणनाक उदाहरण :

कमल / कान / सुनु / कहु / चलु / अहाँ / बिना : 12

सदाशिव / महाजन / निशाकर / दनादन / चकाचक : 122

दखल / सुनल / रागल / नाचल / काह्न / सदिखन / निश्चित : 22

ध्यान / नाम / मेघ / नाचि / अन्त / श्वास / लोक / : 21

प्रयाग : 221 / आवश्यक : 222

(i i) मात्राक्रमक उदाहरण :

'सदाशिव'- एहि शब्दमे सदा आ शिव शब्दक स्थान परिवर्तन कएलासँ कोनो शब्द अथवा शब्दक समूह बनि सकैत अछि आ तदनुसार ओकर

गनहक मात्राक्रम सहो। जेना निम्नलिखित शब्द-समूह आ ओकर मात्राक्रमक अवलोकन कयल जाए :

शब्द समूह मात्राक्रम

सदा शिव शिव 1222

सदा शिव सदा 12212

सदा सदाशिव 12122

एहि शब्द समूहक कय बेर आवृत्ति सहो एहि प्रकारेँ भ' सकैत अछि :

सदा शिव सदा शिव 122-122

सदा शिव सदा शिव सदाशिव 122-122-122

सदा शिव सदा शिव सदाशिव सदाशिव 122-122-122-122

सदाशिव शिव-सदाशिव शिव 1222-1222

सदाशिव शिव-सदाशिव शिव सदाशिव शिव 1222-1222-1222

सदाशिव शिव-सदाशिव शिव सदाशिव शिव सदाशिव शिव 1222-1222-1222-1222

सदा शिव सदा- सदा शिव सदा 12212-12212

सदा शिव सदा- सदा शिव सदा- सदा शिव सदा 12212-12212-12212

सदा शिव सदा- सदा शिव सदा- सदा शिव सदा- सदा शिव सदा 12212-12212-12212-12212

सदा सदाशिव सदा सदाशिव 12122-12122

सदा सदाशिव सदा सदाशिव सदा सदाशिव 12122-12122-12122

सदा सदाशिव सदा सदाशिव सदा सदाशिव - सदा सदाशिव 12122-12122-12122-12122

ऊपर अंकित विभिन्न मात्राक्रममे अर्थात विभिन्न बहरमे गजल कहबाक अभ्यास कयल जा सकैत अछि ।

पहिनसँ डेढ़ दर्जनसँ अधिक बहर चलनमे अछि ।

उदाहरण आ अभ्यास करबाक लेल किछु गजलक पहिल शेर प्रस्तुत अछि (उदाहरण सभ देबासँ पहिने ई स्पष्ट कऽ दी जे गजलमे बहरकेँ पालन करैत काल जे अनुशासित रहैत छथि तिनका लेल किछु नियम शैथिल्य (ना कि छूट) सेहो रहैत छनि आ एकर संपूर्ण जानकारी आशीष अनचिन्हारक "मैथिली गजलक व्याकरण ओ इतिहास" नामक पोथीमे रहत। उदाहरण दैत काल हम ई नियम शैथिल्य कर सेहो उल्लेख कलहुँ अछि जाहिसँ पाठककेँ बुझबामे सुविधा होइन।) :

(1)

जखन घुनि याछाँ नकै छी (122-122-122)

अहाँ मान हमना यउ छी (122-122-122)

(काफिया 'उ'क मात्रा अछि)

(2)

हसै छी कनै छी गजल गीतम हम (122-122-122-122)

अहीकँ नकै छी गजल गीतम हम (122-122-122-122)

अथवा

हमन मैथिली छी हुनक मैथिली छी (122-122-122-122)

अहँक मैथिली छी सबहक मैथिली छी (122-122-122-122)

(काफिया 'अ' ध्वनिक संग 'क' अछि)

(3)

मानम गाम अछि गामम आम अछि (212-212-212-212)

गाछयन आम अछि ददयन घाम अछि (212-212-212-212)

(काफिया 'आ' मात्राक संग 'म' अछि)

(4)

गामा कहय जय मैथिली (2212-2212)

शहरा कहय जय मैथिली (2212-2212)

(काफिया 'आ'क मात्रा अछि)

उपर्युक्त काफियाक संग एहि बहर पहिल शेरक अनुसार अन्य कम-सँ-कम चारिटा शेर कहि गजल पूर्ण कयल जा सकैत अछि । मुदा गजलमे कमसँ कम 5 टा शेर रहबाक चाही।

5. मीन-बहर : ई बहर एकटा नियम शैथिल्य कहि गेल बनल छै जकर उद्देश्य छै नव गजलकारकेँ सुविधा देबाक। उर्दू आ हिंदी दुनूमे सेहो एहि बहरक प्रयोग कएल जाइत छै। एहिमे गजलक पहिल शेरक दुनू पाँतिमे दुटा अलग-अलग शब्दक लघु वर्णकेँ मिलाकऽ एकटा दीर्घ मानल जा सकैए यदि आन सभ शेरक सभ पाँतिमे सेहो दीर्घक संख्या पहिल शेरक दुनू पाँतिक दीर्घक संख्याक समान रहए जाइ । एहि बहरकेँ मीन-बहर कहल जाइत अछि । अहिना आन बहर अथवा छन्द आन काफियाक जानकारीक लेल 'अनचिन्हार आखर'ब्लॉगपर स्थित गजल शास्त्र आ व्याकरणक अध्ययन कयल जेबाक चाही ।

6. अपन पसंदक बहर :

अपन पसंदक बहरमे सेहो गजल कहल जा सकैत अछि । अपना पसंदक एक पाँती लिखू जाहिमे रदीफ आ काफिया हो, ताकर

मात्राक्रम देखू, ओही मात्राक्रममे दोसर पाँती सेहो लिखू। गजलक पहिल शेर भेल। आब एही मात्राक्रममे कम-सँ-कम तीन चारिटा शेर लिखि कऽ गजल पूर्ण कऽ सकैत छी। उदाहरण :

माटि-पानि मिथिला केर बाजय जय मिथिला जय मैथिली

21 21 22 21 22 2 22 2 212

गाछ-पात मिथिला केर गाबय जय मिथिला जय मैथिली

बाजय आ गाबय केर अनुरूप पाबय, मानय,जानय, लाबय आदि शब्दक उपयोग काफियाक लेल कय 'जय मिथिला जय मैथिली' रदीफ रखैत एही मात्राक्रममे तीन चारिटा शेर पूर्ण कय गजल पूर्ण कएल जा सकैत अछि।

7. बिना रदीफक गजल भ' सकैत अछि। उदाहरण लेल एकटा गजलक पहिल शेर देखल जाए :

कौआकेँ कौआ कहि देल

बूझू बड़का गलती भेल

एहिमे 'देल' आ 'भेल' काफियाक शब्द अछि। दुनू पाँतीमे मात्रा क्रम 22222221 अछि। यैह भेल बहर। एहिमे रदीफ नहि अछि। आब आगाँ एहि गजलक दोसर,तेसर,चारिम,पाँचम शेर अर्थात चारिम छठम,आठम,दसम आदि पाँतीमे काफिया 'देल' आ

'भल' सँ मिलैत-जुलैत शब्द हेबाक चाही। एकर संगहि सभ पाँतीम मात्रा क्रम 22222221 रहबाक चाही। जेना

मुश्किला बड़का जन महगीसँ

आ हुनकर जान बचि गेल

उपराक दूनू पाँतीम सभहक मात्रा क्रम अछि : 22222221

अहिना सभ शेरम समान मात्रा क्रम रखैत काफियाक लल खल / जल / गल राखि गजल पूर्ण कएल जा सकैत अछि।

आब एकटा दोसर गजलक पहिल शेर देखल जाए :

अपन-अपन लाचारी छै

दुख सबहक बड़ भारी छै

एहिम दूनू पाँतीक अंतिम शब्द 'छै' अछि। यैह 'छै' रदीफ अछि। दूनू पाँतीम 'छै' सँ पहिने 'आ' मात्राक संग 'री' अन्तवला शब्द अछि, इएह काफिया भेल। आब दोसर,तेसर,चारिम,पाँचम शेरक दोसर पाँतीम रदीफ 'छै' रहबाक चाही तँए 'आ' उच्चारणक संग री' अन्त वला शब्दक काफिया हेबाक चाही जेना सरकारी / सवारी / अनारी / उधारी आदि। आब एहि शेरम बहर देखू :

अपन-अपन लाचारी छै (12-12-2222)

दुख सबहक बड़ रानी छै (222-2222)

पहिल पाँतिक मात्रा क्रम अछि : 12-12-22-22 एहिमे दुटा लघु छै(1-1) जकरा एक दीर्घ (2) मानल जा सकैत अछि । तखन एकरा मात्रा क्रम 222-2222 भ' जाएत । अहिना शेष सभ शेरक दुनू पाँतीमे मात्राक्रम 222-2222 भेटैत गजल पूर्ण कएल जा सकैत अछि ।

8. मैथिलीमे 'ग' आ 'ज' आदिमे नुक्ता नहि लगैत छैक, तँ मैथिलीमे गजल शब्दमे 'ग' आ 'ज' मे नुक्ता नै देल जाइ छै ।

9. गजलमे अर्द्ध-विराम अथवा विरामक उपयोग नै होइत अछि ।

10. गजलक कोनो शीर्षक नहि होइत अछि ।

11.पत्रिका सभमे गजलकेँ गजल जकाँ छापल जेबाक चाही, कविता जकाँ नहि । दुटा शेरक बीच स्थान देबाक चाही ।

12. बहरक नाम अथवा मात्राक्रमक उल्लेख देबाक चाही ।

13.अनुरोधी लोक सभक कहब छन्हि जे शब्द सबहक संग किछु दिन खेलाइत-धुपाइत रहू स्थिति अबैत छैक, जे जे पाँती मानमे उतरैत छै से बहरमे होइत छै ।

निम्नलिखित गजल सभमे आवश्यक तत्वक उपस्थितिक समीक्षा कयल जा

सकैत अछि ।

(1)

दूबि ओ धान छी अहाँ

पान आ मखान छी अहाँ

कूदि-फानि थाकि गेल छी

दून आसमान छी अहाँ

बन-बन ताकि देखलौं

नद आ पहाड़ छी अहाँ

टनकन सूर्य छी अहीं

नाविकन चान छी अहाँ

घोघ-घोघ बात मानस

एकटा निदान छी अहाँ

आँखि मुँह कान छी अहीं

देह हम प्रान छी अहाँ

अहि गजलमे

(i) रदीफ अछि 'छी अहाँ'

(ii) पहिल शेरक दुनू पाँति आ शेष सभ शेरक दोसर पाँतिमे काफिया अछि 'आ' ध्वनिक संग 'न' / 'ण' वर्णसँ अन्त भेल शब्द ध्यान, मखान,आसमान,पुराण,चान,निदान,प्रान ।

(iii) बहर अर्थात मात्राक्रम अछि 21-21-21-21-2

2.

आनन्दित नाचय जे सदिखन से नेना नहि देखल छल

दुखमे सुख छै सुखमे दुख छै से हमरा नहि बूझल छल

नीक सोची नीक बाजी नीक देखी से सिखलौं

नीकक फल नीक नहि होइछ से दुनियाँमे सूनल छल

हमरा लोकक निरमाण दोसर नै क्यो अपनहि छी हम

ऊ याखनिम तुवल छौ स अयनहि हाथं खुनल छल

ख्यानी थ्यानी आ निस्थानी कलनि लाकलय सरटा

स सरटा यौलक जीवनम ज ऊ खागिन रुखल छल

ऊलय सदिखन मगठा-माँटी स गाछी हमना सवहक

किछु हमना सवहक नायल अछि किछु वावाक नायल छल

अयन चूनलों हम अयनालय आमक टिकुला सन जीवन

सीखै छी सरदिन किछु नव-नव ज यहिन नहि सीखल छल

यहि गजलम-

(i) नदीफ अछि 'छल'

(ii) यहिल शेरक दूनू याँती आ शेष सर शेरक दोसर याँतीम काफिया अछि 'अ' ध्वनिक संग 'ल' वर्णसँ अन्त वला शब्द सर - दखल / वूसल / सूनल / खुनल रुखल / नायल / सीखल ।

(iii) वहन अर्थात मात्राक्रम अछि 2222 2222 2222 222

3.

कखना लाठी कखना टाला कखना तीन-कमान गजल

कखना लागय ढ़ीटा-याथन कखना यान-मखान गजल

कखना खुनयी कुतव्हनि खंगी ऊखडि ऊँन समाठ वनल

कखना वाठी कखना गाछी कखना रवल मचान गजल

कखना आढनम अनियन-सन कखना नान-यूआन जकाँ

कखना वाढनि कखना चालनि कखना सूय समान गजल

कखना गामक चौवटिया लग मंदिन ऊँन ढ़नान जकाँ

आ कखना सीमायन लतढ़ग दशक वीन जवान गजल

कखना मौनी आ योगीम साँठल जीन-मनीच जकाँ

कखना कासीम व्हलचल आ छटयट कारि यनान गजल

किनका खागिन मूनही कचनी जामून आम लगाम 'अनिल'

हमरा खातिर दीयाबाती छठि आ देव-उठान गजल

एहि गजलमे

(i) रदीफ अछि 'गजल'

(i i) पहिल शेरक दुनू पाँति आ शेष सभ शेरक दोसर पाँतिमे काफिया अछि 'आ' ध्वनिक संग 'न' वर्णसँ अन्त भेल शब्द :

कमान / मखान / मचान / समान / जवान / पचान / उठान
।

(i i i) बहर अर्थात सभ पाँतीमे मात्राक्रम अछि : 2222- 2222 - 22-21-121-12

(i v) एहिमे दू टा लघु (1-1) केँ बदला एक दीर्घ (2) सेहो लीखल जा सकैत अछि। एखन मात्राक्रम भ' जाएत 2222 2222 2222 222

(v) एहि गजलक अंतिम शेरमे गजलकारक नाम अछि। एहि अंतिम शेरकेँ मकता कहल जाइत अछि।

4.

गाम-घाम आ गाछ-वृच्छ चलित रहलै

अहंकार नव कीर्तिमान गढ़ित रहलै

छिति जल पावक गगन पवन सब धुँ धुआँ

ई दुर्दिनमे सबकेँ सब ठकैत रहलै

खाम न कहियो रहल महाराणा जगमे

पाण्डव आ कौरवक युद्ध चलैत रहलै

जकर पसेनासँ हाड़ धनी हनियन

स हकन्न अहिना सब दिन कहैत रहलै

महिषासुरक रूप मात्र बदलैत रहल

नयनसँ नाना निनरयाक भटैत रहलै

लाल किला गँ सबदिन गाल ठोकैत रहल

जन्म-मन्दनयन धनना पटैत रहलै

काँयय धनी नव नव असली नानकसँ

नकली नायक त सभ साल जनैत नहलौं

एहि गजलमे

(i) रदीफ अछि 'नहलौं'

(ii) पहिल शेरक दूनू पाँती आ शेष सभ शेरक दोसर पाँतीमे काफिया अछि 'ऐ' ध्वनिक संग 'त' सँ अन्त होबए बला शब्द सभ --------- चलैत / गढ़ैत / ठकैत / चलैत / कनैत / सतैत / पतैत / जनैत।

(iii) बहर अर्थात मात्राक्रम अछि 2222 2222 222

(iv)दू टा अलग-अलग लघुकेँ एकटा दीर्घ मानल गेल अछि।

(v)एसन शेरक पहिल पाँतिक अंतिम दीर्घक गिनती लघुमे भेल अछि।

(vi)अंतिम शेरक पहिल पाँतिक अंतिम लघुक गिनती दीर्घमे कएल गेल अछि।

(5)

माछ-दही ज्ञानालय की

ई दुनिया ककनालय की

ज दे छै देव कनै

नै कहै हमनालय की

किछु वाजए आ नहि जायए

वियटा आ लवनालय की

काहु वैसिकय खा लै

ओं-यीढी वगठालय की

एक ओं सुतवा कनै

मानि-गानि मगठालय की

देशक खागिन लतु-मनु

रैयानी वखनालय की

दुनियाँलय रंगुआ आ छौंद

वकनी आ वकनालय की

अहाँ राज कय नाम कनु

ज मूल्लै नकनालय की

ओहि गजलम

(i) रदीफ अछि 'की'

(ii) पहिल शेरक दुनू पाँति आ शेष सब शेरक दोसर पाँतिमे काफिया अछि 'अ' ध्वनिक संग 'नालय' सँ अन्त होबऽबला शब्द सब । (iii) बहर अर्थात मात्राक्रम अछि 2222 222

(iv) दू टा अलग-अलग लघुकेँ एकटा दीर्घ मानल गेल अछि ।

(6)

नउआ-ठाकुर रूनम यउवाक काज नै छै

रदवा आ दिगशूल सँ उनवाक काज नै छै

सब शास्त्र आ पुनाधक अमृत बवाक' नाखु

गन-मनम थाल-काया एनवाक काज नै छै

सए थिकाह अयन सदिखन स ख्यान नाखी

नामयन जाति-धर्मक लडवाक काज नै छै

यनमागमाक संगि अहीं दवना आ दवी

धन लल मानवाक आ मनवाक काज नै छै

यानन ओ भूमि मिथिला ओ मैथिलीक नैदन

अहि Oाँ काना माकदिमा कनवाक काज नै छै

गय याग डौन शीलक संस्कान अछि जनुनी

ओ स्वर्ण नस्क राज डौन मडवाक काज नै छै

निष थीक मांस-मदिना यायड अँवान चिन्नी

गिलकानकन गड्आ गडवाक काज नै छै

शब्दक नगाम हएत आनहुकेँ खजाना

संगीत बनाव खाढ़क धनवाक काज नै छै

स्नानक गंग-धारा गन-मन कतेक पावन

थिक आगि हय आ विद्या जनवाक काज नै छै

एहि गजलमे

(i) रदीफ अछि 'काज नै छै'

(ii) काफियावला शब्द सभ अछि जकर अन्तमे 'अ' उच्चारणक संग 'नवाक' अथवा 'ओवाक' वर्ण-समूह अछि : पओवाक / तनवाक / हनवाक / लओवाक / मनवाक / कनवाक / मओवाक / गनवाक / धनवाक / जनवाक।

(iii) बहर अछि : सरल वार्णिक बहर, प्रत्येक पाँतिमे वर्णक संख्या अछि : 17

उपरोक्त सभ उदाहरणसँ स्पष्ट अछि जे व्याकरण-सम्मत मैथिली गजल कहबाक मार्ग सामान्य अछि, जटिल नहि।

संपर्क : 8789616115

-

अ्यन मंगाव्य editorial.staff.videha@gmail.com यन यOाउ।

३.१२.निर्मला कर्ण- अग्नि शिखा (भाग- ६)

**निर्मला कर्ण** (१९६०-), शिक्षा - एम् ए, नैहर - खनाजपुर,दरभंगा, सासुर - गोढियारी (बलहा), वर्तमान निवास - राँची,झारखण्ड, झारखंड सरकार महिला एवं बाल विकास सामाजिक सुरक्षा विभाग मे बाल विकास परियोजना पदाधिकारी पद सँऽ सेवानिवृत्ति उपरान्त स्वतंत्र लेखन।

मूल हिन्दी- स्वर्गीय जितेन्द्र कुमार कर्ण, मैथिली अनुवाद- निर्मला कर्ण अग्नि शिखा (भाग - ६)

पूर्व कथा।

राजा पुरूरवा एक सय आठम अश्वमेध यज्ञ क लेल आवश्यक निर्देशन लेबय क वास्ते ऋषि अगस्त्य क आश्रम मे अपन प्रधान आमात्य क संग जाइत छथि,आ हुनका सँऽ निर्देशन लैत छथि ।

आब आगू

यज्ञक घोड़ा जंबूद्वीप क निर्विघ्न पार कऽ गेल छल । आब ओ शाकद्वीप मे आगू बढ़ल जाइत छल । ओहो द्वीप निर्विघ्न पार कऽ लेलक । एहि तरहें क्रौंच द्वीप,शाल्मल द्वीप,गोमेदक द्वीप आ पुष्कर द्वीप क पार करैत ओ श्याम कर्ण अश्व आब कुश द्वीपक सीमा

क अंतर्गत विशाल सागर क पार करैत आगू बढ़ल।
एतबा मे पाताल लोक सँ दानव राज बलि निकसि पड़ल। ओकर एक गोट सहयोगी विरोचन पुत्र क अश्व क लगाम थामि लेल,आ ओहि अश्व क लऽ कऽ पाताल लोक दिस विदा भेल। ओकरा पाछू पुरुरवा क सेहो पाछाँ लागल। तलवारक खनखनाहट संग हाथी धनुषक टन-टनाहट सँ दिग दिगंत् गुंजित भऽ उठल। देखिते देखैत दानवक झुंडक झुंड उमड़ि गेल। दानव राज बलि पुरुरवा क युद्धक निमित्त ललकारलक। दानव गणक सम्मिलित भयंकर निनाद सँ पृथ्वी एवं गगन मंडल गुंजित भऽ उठल। गदा लऽ पुरुरवा बलि राज सँ युद्धरत भेलाह। दानव राज बलि क्रोधित लऽ द्वंद युद्ध करऽ लागल।
एम्हर मूसल एवं प्रास लऽ शंकु दानव गण कैं रऽन सँ भीड़ भीड़ कऽ एहि प्रकारें नष्ट करय लगलाह किंवा न्यायप्रिय मंत्री कोना अनाचारी अपराधी क अन्त करैत होय। बलवान आ ढाल धारण करैत वीर पृथ्वु दंत दैत्य एवं दानव गण पर प्रहार कऽ रहल छलाह। ओ ककरा दु दु आ ककरा तीन-तीन टुकड़ी मे विभक्त करैत चलि गेलाह। कतेको दानव क अनेक खंड मे विभक्त कऽ देलथि ओ।
पिंगल दंत उठाकऽ जाहि-जाहि दौड़लथि,ओहि-ओहि दैत्य क शरीर टुटि लागैत गेल। पञ्चशिख मुद्गर घुमाऽ घुमाऽ बलपूर्वक शत्रु सबहक संहार करैत छलाह। ओ प्रबल वेगवान् गिरि सदृश थप्पड़क शीर्ष प्रहार कऽ ओकर आघात सँ सवार सहित हाथी एवं रथी सहित रथ क चूर्ण-विचूर्ण करऽ लगलाह। बलवान नाड़ी जंघ, पञ्चन, मुष्टि प्रहार एवं वज्र क समान ठेहुनक प्रहार सँ असुर

के मारय लागलाह । अपन असीम सेना दल के यमराज सँ तुलाएल कहि सेनापति बना जम्भ के पठौलक । ओकर सेनापतित्व मे युद्ध आर भयंकर भऽ गेल । जम्भ दानवी मायाक सहारा लेल । चहुँ दिश घनघोर अन्हार पसरि गेल । ई देख मणिमान आग्नेयास्त्रक प्रयोग कएलथि । चतुर्दिक् तीव्र प्रकाश सँ चमकि गेल छल । एहि मे अनेक मानव आ दानव दुनूक भीषण संहार भेल । जम्भक माया सँ आकाश मार्ग सँ मांसक लोथड़ा आ रुधिरक वर्षा होमय लागल ।

प्रद्युम्न के प्रासादन सँ कुमार कृत के सेनापतित्व मे सर्पास्त्रक प्रयोग कएल गेल,जाहि सँ सर्पक वृष्टि होमय लागल । अनेक सर्प दानवगण के अपन ग्रास बनबऽ लागल । एहन जम्भ जृम्भक अस्त्र कें प्रयोग कएलक । भेल स्वप्न सन मानव योद्धा मे आलस्य भाव आबि गेल,ओ निद्राक अनुभव करय लागल । ई देखि कुमार कृत सन वीर के प्रासादित कएलथि। हुनक प्रासादन के सकारात्मक प्रभाव पड़ल,निद्रा के झटकि प्रद्युम्नक पुनर्वीर नाराच सन पर प्रहार करय लागल । मायावी नाराच मायायुद्ध प्रारंभ कएलक, जाहि सँ आब एकहि गोट नाराच अनेक संख्या मे दृष्टिगोचर होमय लागल । एहि मायायुद्ध के कुजम्भ पओलथि । एहि प्रकारें ई मायावी युद्ध पच्चह दिन धरि होइत रहल ।

चक्रायण मे अपन असुर सैनिक के हताहत होइत देखि दानव राज कहि युद्ध छोड़ि कऽ समुद्र मार्ग सँ पाताल लोक चलि गेल । अपन राजा के एहि तरहेँ युद्ध भूमि सँ कायर सन पड़ाइत देख कऽ हताश भऽ शेष दानव योद्धा अपन राजा के अनुगामी भेल । ओहि सन ग्राम कर्ण अश्व के छोड़ि कऽ भागि पड़ायल ।

दानव राज बलि जे देवराज इन्द्र कें पराजित कएने छल,ओ पुरुरवा सँ हारि गेल।

यज्ञक अश्व आब निर्विघ्न कुश द्वीप मे आगु बढ़ए लागल। आब किनको ओहि अश्व के रोकबाक हिम्मत नहि रहलनि।

तत्पश्चात निर्विघ्न पृथ्वीक परिक्रमा कए ओ अश्व सात मास उपरान्त यज्ञ स्थल मे उपस्थित भेल। ऋषिगण विधिवत् यज्ञक पूर्णाहुति देलनि। तत्पश्चात विशाल रंगारंग कार्यक्रमक आयोजन भेल,जाहि मे राजा पुरुरवा के सातो द्वीपक चक्रवर्ती महान सम्राट घोषित कएल गेल। देवर्षि नारद विशेष रूप सँ प्रसन्नता व्यक्त कएलनि। ओ ऋषिगण के प्रति श्रद्धा ज्ञापित कएलनि। सम्पूर्ण महिपाल उचित व्यक्ति के सम्राट बनबै सँ ईर्ष्या रहित भाव सँ अत्यन्त प्रसन्न छलाह। एहि अवसर पर गंधर्व,किन्नर,अप्सरा,आदि आकाश के विभिन्न दिशा सँ आबि पुष्प वर्षा करए लगलाह।

भगवान विष्णु स्वयं आकाश मार्ग मे अपन रथ पर आरूढ़ भए स्तुति वाचन कएलाह। हुनका स्तुति वाचन करैत देखि ब्रह्मा एवम भगवान शंकर स्वयं आबि राजा पुरुरवा के आशीर्वाद देलनि। उत्सव समाप्त भए गेल। सब आगत अतिथि अपन-अपन निवास स्थलक दिशा मे चलि भेलथि। आइ पुरुरवाक मनोकामना पूर्ण भेल,भगवान विष्णु के कृपा सँ ओ सातो द्वीप सहित संपूर्ण पृथ्वीक सम्राट घोषित भए गेल छलाह। तीनू लोकक ऐश्वर्य हुनका भेट गेल छलनि।

क्रमशः

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

३.१३.डा. विपिन कुमार झा- महाकवि भास प्रणीत कर्णभारम् मैथिली अनुवाद (भाग-६)

महाकवि भास प्रणीत कर्णभारम् मैथिली अनुवाद
(षष्ठम भाग)



डा. विपिन कुमार झा
(संस्थापक आ सम्पादक- जाह्नवी संस्कृत ई-शोधपत्रिका)
महाकवि भास प्रणीत कर्णभारम् मैथिली अनुवाद
(षष्ठम भाग)
(एहि सँ पूर्व महाकवि भास कृत लिखल कर्णभारम् जे कर्णक मनोव्यथा पर लिखल गेल प्राचीनतम एकांकी अछि, संस्कृत मे लिखल एहि ग्रन्थक पांचम प्रभाग धरि मैथिली अनुवाद पढने रही अहाँ सब, आब एहि सं आगू)

कर्णः- भगवन्! किं तं वक्तव्यं दीर्घायुर्भवेति। अथवा भवतु शोभनम्। कुतः-

हे भगवन् ! दीर्घायु होउ सेहो कियाक नहि आशीर्वाद देलहुँ। अथवा येह ठीक अछि कियाक त-

धर्मो हि यत्नैः पुरुषेण साध्यो
भुजङ्गजिह्वाचपला नृपश्रियः।
तस्मात्प्रजापालनमात्रबुद्ध्या
हतेषु देहेषु गुणा धरन्ते ।। 17 ।।

व्यक्ति के धर्मक साधना विशेष रूप सँ करबाक चाही कियाक त राजलक्ष्मी त सर्पजिह्वा चंचल छथि ओहि कारणे प्रजापालननिमित्त जे राज करैत छथि ओ मरला पर गुणप्रदान सँ जीवित रहैत छथि।

भगवन्, किमिच्छसि। किमहं ददामि।

हे भगवन् ! अहाँ की चाहैत छी? हम की दए सकैत छी?

शक्रः- महत्तरं भिक्षां याचामि। (महत्तरां भिक्षा याचा।)

शक्रः : बहुत पैघ भिक्षाक याचना करैत छी।

कर्णः- महत्तरां भिक्षां तस्मै प्रदास्ये। श्रूयन्तां मद्विभवाः।

कर्ण : महत भिक्षा देब। हमर विभव सूनल जाउ ।

गुणवदमृतकल्पक्षीरधारानुवर्षि

द्विजवर! सुचितं ते तृप्तवत्सानुयात्रम्।

तरुणमधिकमर्थिप्रार्थनीयं पवित्रं

निहितकनकशृङ्गं गोसहस्रं ददामि ।। 18 ।।

गुणशालिनी ब्राह्मण द्वारा प्रार्थित सोना सँ मढल सिंघवाली अमृतमय दूध दनिहारि तृप्त बच्चा सहित हे द्विजवर यदि अहाँ क इच्छा हो त हजार गाय दय सकैत छी।

शक्रः- (गोसहस्सं त्ति। मुहुत्तअं खीरं पिबामि। णेच्छामि कण्ण! णेच्छामि। ((गोसहस्रमिति। मुहूर्तकं क्षीरं पिबामि। नेच्छामि कर्ण! नेच्छामि।)

ॐछ्र : ह्जान जाय... किछ दिन दुध यीयव.... नै चाही कर्ण .. नै चाही

कर्णः- किं नष्ठगि ग्लान्। ॐदमयि श्रूयगाम्।

कर्ण : की ॐी नै चाहैग छी अहां? ओैना सुनु

नविगुनगसमानं साधनं नाजलठ्म्याः

सकलनृयगिमाद्यं माद्यकाम्नाजजागम्।

सृगुधमनिलवगं यूद्धदृष्टायदानं

सयदि वह् सह्स्रं नाजिनां ग ददामि ।। 19 ।।

सूर्य किनध कन समान नाजलक्ष्मीक साधन समक्ष नाजा द्वाना माद्य कम्नाज कूल मं जनमल नायु समान वेग वला यूद्ध मं यी0 नै दखनिहान ह्जाना धाता सयदि दैग छी।

शक्रः- अस्र भि। मूह्फअं आ□ह्ामि। (धष्ठामि कगू! (धष्ठामि। (अश्व ॐगि। मूह्गिकमानाह्ामि। नष्ठामि कर्ण! नष्ठामि।)

विदूषक : घोड़ा.... कति दिन चढब.... नै चाही कर्ण नै चाही

कर्णः- किं नेच्छसि भगवान्। अन्यदपि श्रूयताम्।

कर्ण : की अहाँ नै चाहैत छी अहाँ? आओर सुनू

मदसलिलकपोलं षट्पदैः सेव्यमानं

गिरिवरनिचयाभं मेघगम्भीरघोषम्।

सितनखदशनानां वारणानामनेकं

रिपुसमरविमर्दं वृन्दमेतद् ददामि ।। 20 ।।

जिनकर मदचूबैत छै जकर कपाल बला, भौंरा स सेवित पर्वतीय भूमि मे सदृश दीखयबला मेघ जकाँ गर्जन करय बला अयन श्वेत नखदन्त सँ शत्रुसमूह क मर्दन करै बला हाथीसमूह दैत छी।

शक्रः- गज इति मृत्युरूपं आ□हामि। (प्रकाशम् कृष्ण! नेच्छामि। (गज इति। मृत्युरूपमावहामि। नेच्छामि कर्ण! नेच्छामि।)

विदूषक : हाथी.... कति दिन चढब... नै चाही कर्ण नै चाही...

कर्णः- किं नेच्छति भवान्। अन्यदपि श्रूयताम्। अपर्याप्तं कनकं ददामि।

कर्ण : की अहाँ नै चाहैत छी अहाँ? बेश सुनू अपर्याप्त सोना दैत छी।

शक्रः- गृहीत्वा गच्छामि। (किंचिद्गत्वा) नेच्छामि कर्ण! नेच्छामि। (गृहीत्वा गच्छामि। नेच्छामि कर्ण! नेच्छामि।)

इन्द्र : ग्रहण करब.... नै चाही कर्ण ...नै चाही

कर्णः- तेन हि जित्वा पृथिवीं ददामि।

कर्ण : त जीति कऽ पृथ्वी दैत छी

शक्रः- पृथिव्याः किं करिष्यम्। (पृथिव्या किं करिष्यामि।)

इन्द्र : धरती लऽ की करब?

कर्णः- तेन अग्निष्टोमफलं ददामि।

कर्ण : त अग्निष्टोमफल दैत छी।

शक्रः- अभिज्ञानशकु□ञ्ञ किं कय्यं। (अभिज्ञानशकुन्तलेन किं कार्यम्।)

रक्षी : अभिज्ञानशकुन्तल क कोन काज?

कर्णः- एन हि मछिका ददामि।

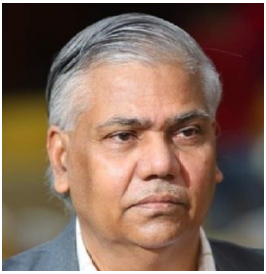
कर्ण : त हम अपन मुठी दिय?

क्रमशः...

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

४.पद्य खण्ड

४.१.राज किशोर मिश्र- कल्कि अहु



राज किशोर मिश्र, रिटायर्ड चीफ जनरल मैनेजर (टी), बी.एस.एन.एल.(मुख्यालय), दिल्ली,गाम- अन्दर ठाढ़, पो. अन्दर ठाढ़, मधुबनी

कहक' अछि

दुः खक' बादरि छाहि म न म,
उठैत नहैन अछि घूमि -घूमि ,
आ मघ ननल र' नयन सँ
बनि नान खसैन अछि मइनि -मइनि ।

यानि रनल सना ननन म,
कहाँ रिजैन अछि यूउनिक' यान,
बिनू रिजन अज्ञान सँ,
ञ्ञान बहनाञ्ञन अछि , बनि यनान।

छल क' निमंत्रण-यत्र यन,
हन शब्द अछि षडयंत्र,
आ', 'निवदन' बून नियफि क

लिखल हाथ सँ पत्र।

अंधविश्वास जे पसरल अछि ,
अछि, डाइन एक गामक अपराध,
र' जाइ एकर हलानसान ,
आ, सब मिलि कए दिऔ समाधा।

अनकर नियति क देखि कए,
होइत अछि मान हर्षित जिनकर,
मद्दति करबाक अधिकार नहि ,
दुःख आबए जखन, हुनकर सिर पर।

नहि समान होइत अछि , सरदिन
अलग-अलग छै ढंग,
श्रृंग, नसारल आ समारल,
जगहक सर अछि रंग।

मानल जाइत अछि शिष्टाचार,
काना सपना क राजदूत,
प्रथमहि सुहृन परिचय सँ,
भविष्य -छवि , होइत अछि मजबूत।

औपचारिकता आवश्यक,
मुदा, रहैछ यथार्थ सँ दूर,

हँसव, घूघना लटकल म,
कान्ह छै ठाढ़, मजबून।

ढंग यसानो अछि हारल,
वनि क' खुव, गउान,
हारंसा किछु न हाथ छै,
आ, अंग म हाथ दखान।

अजवानि लथि उा मान क,
जिनका म रनल अछि तारु,
नहि ग' कनाहि , धधकि -धधकि ,
अयनहि सर्वस्व सुताह।

…गिहास प्रमाध लउ 0।८ अछि ,
वूसवउ लल … वा ग,
अहनक 'जिनगी नहि नहलै,
वढि क' नागि सँ प्राग।

जाधनि , नहेग अछि …जा ग,
नहि आवि सकेग, अछि अह्न न,
मूदा, …जाग जखन चाहउ,
अह्नान क क' दैछ, वहान।

अयनेगी सँ जीगल जा…छ मान,

जीगल न जाऽऽछ वनजानी ,
माम घमेंग अछि यावि धा ह,
नहि घमग, कगवा खखानी ।

नहि जनेंग छी , रवि थ्र-का ख म,
अछि वकछाह, फूल कि काँट,
मूदा , प्रकृगिक नियम ऽऽवह अछि ,
अगव दुः ख न, यउ छ फाँट।

मृगु -लाक म कीर्गि टा ,
कवन अछि अमृग -यान,
माटि क' घट, फूटि जाऽग अछि ,
मूदा , कीर्गि न जाऽऽछ मसान।

दुःख क ह्नाना रुल निमंग्रध,
की कनगऽऽ कि उा स्नीकान?
मूदा , कृमगि , जिनकन यासल,
जा दैछ,नियग्हि , हकान।

सज्ञानगा -ब्यनहा न -यत्र,
अछि भि ष्ठा चा न-मा सि सँ लि खल।
सूनि चा नक, उयका नक आखन,
मा गी सन, उाहि यन अछि नि खनल।

सग्र -खग म उयजल, सूख क
दा ना म अछि नौग कगा -स्रा द,
हि गैषी आउान सदा मूदि गकन,
कल्या ध्का नी , नि र्वि ना द।

आञल जखन अह्न -वि हा नि ,
यकाउ ललहूँ हम (धेर्यक खा ह्र,
नचि ग आयस (गल, मूदा हम
स्लहूँ न टस-मस, अयन Oा म।

नि ना श, शां गि क दला न यन
आञल,कञ क' नि ध्वंस,
शां गि कहलि -'अञलहूँ वजवञ ,
जखन स्लहूँ नि नँश '?

वञन य(Oो लथि ज घन -घन म,
अयना यनक' उा आशी र्वा द,
वढि (गलौह्रि मां गल्य हुनक घन,
स्लौह्र न कहि उा, का ना हनमा द।

जि नकन कनगव -कनव उाहन,
ज, हा ॢ्ठ अदि नगा -घा ग, वका न,
वदलव जनौग छथि रा ग क नघा ,
लि खला ऊँ दुर्दि न, हुनक कया ना।

मना नथ ककन न हा ॢ्ा छै?
सदि खन नहृ सूख संग,
यन, छुड्ड सूख रुटलै ककना ?
सूर्या छथि , ग्रहु सँ गंग।

ॢ्जा ग सँ टूटि जा ॢ्ा अछि ,
अह्ला नक नमहृन अहुंका न,
प्ररा -यनि वि म हा नल गम यन,
ॢ्जा ग क' हा ॢ्ा अछि जयजयका ना।

नर-जलक नि षम वटवा ना सँ,
30ल मघ यन, नमहृन नि ना द,
कगहृ रुमि सूखा अल अछि
नौ दी कगहृ, कगहृ आवा द ।

रु यन सूखला हा मनूरुमि ,
ॢी ग' मघ लल अछि खि धां स,
अल्य -सीं चल, ब्रंथ, आ
जग 'युर्ग नृष्टि , स ग' यगां श।

अयन मंगव editorial.staff.videha@gmail.com**यन**
यOाउ।

𑓓.𑒮𑓀𑒮𑓂𑒏𑒵𑒞 𑒐𑒝𑓂𑒛

𑓓.𑓑.𑒛𑒰. 𑒠𑒲𑒣𑒱𑒏𑒰- 𑒔𑒧𑓂𑒣𑒴𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒮𑓂𑒨 𑒫𑒱𑒪𑒰𑒮𑓁 (𑒣𑒘𑓂𑒔𑒧𑒰𑒬𑓂𑒫𑒰𑒮𑓁)

𑒔𑒧𑓂𑒣𑒴𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒮𑓂𑒨 𑒫𑒱𑒪𑒰𑒮𑓁
(𑒣𑒘𑓂𑒔𑒧𑒰𑒬𑓂𑒫𑒰𑒮𑓁)



𑒛𑒰. 𑒠𑒲𑒣𑒱𑒏𑒰

(𑒮𑓂𑒫𑒞𑒢𑓂𑒞𑓂𑒩𑒪𑒹𑒐𑒱𑒏𑒰 𑒫𑒠𑒢𑒲-𑒧𑒯𑒰𑒫𑒱𑒠𑓂𑒨𑒰𑒪𑒨𑒮𑓂𑒨 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒏𑓂𑒞𑒢𑒣𑓂𑒩𑒰𑒡𑓂𑒨𑒰𑒣𑒱𑒏𑒰 𑒔)

[𑒔𑒧𑓂𑒣𑒴𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒢𑒰𑒧𑓂𑒢𑒱𑒫𑒱𑒪𑒰𑒮𑒮𑓂𑒨 𑒣𑒘𑓂𑒔𑒧𑒹𑓄𑒮𑓂𑒧𑒱𑒢𑓂 𑒩𑒞𑓂𑒢𑒰𑒢𑒰𑓀 𑒩𑒞𑓂𑒢𑒲𑒢𑒰𑓀 𑒔 𑒮𑒧𑒏𑓂𑒭𑓀 𑒯𑒰𑒩𑓂𑒠𑓀 𑒮𑓂𑒫𑒰𑒑𑒞𑓀 𑒫𑓂𑒨𑒰𑒯𑒵𑒞𑓂𑒨 𑒁𑒡𑓂𑒨𑒰𑒣𑒢𑒲𑒨𑒫𑒱𑒭𑒨𑒫𑒮𑓂𑒞𑒳𑒧𑒰𑒠𑒰𑒨𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒣𑓂𑒩𑒮𑓂𑒞𑒳𑒞𑒰𑓄𑒮𑓂𑒧𑒱। 𑒁𑒞𑓂𑒩 𑒧𑒯𑒰𑒏𑒫𑒱𑒩𑒰𑒖𑒩𑒰𑒖𑒏𑒵𑒞𑒔𑒧𑓂𑒣𑒴𑒢𑒰𑒧𑒰𑒨𑒝𑒫𑒱𑒭𑒨𑒹 𑒫𑒱𑒠𑒳𑒭𑒰𑓀 𑒞𑒞𑓂𑒩 𑒩𑒞𑓂𑒢𑒰𑒢𑒰𑓀 𑒩𑒞𑓂𑒢𑒲𑒢𑒰𑒘𑓂𑒔𑒧𑒰𑒠𑒩𑒧𑒰𑒠𑒰𑒨 𑒏𑒱𑒘𑓂𑒔𑒱𑒞𑓂𑒣𑓂𑒩𑒮𑓂𑒞𑒾𑒧𑒱।]

तत्रादौ सर्वप्रथमं महाकविभोजराजपरिचयः- महाकविः भोजराजः परमारवंशीयः क्षत्रियः आसीत्। सरस्वतीकण्ठाभरणे भोजदेवः स्वकीयवंशस्य परिचयं दत्तवान् अस्ति। परमारवंशः अग्नितः उद्भूतः इत्येवं मन्यते। अस्य अनेकानि ताम्रपत्राणि अथ च भूर्जपत्राणि प्राप्यन्ते येषां प्रकाशनं काव्यमालायां प्राचीनलेखमालानाम्ना मुद्रापितानि। भोजस्य राज्यकालः राजमृगाङ्केन सिद्ध्यति। राजमृगाङ्ककालः 1099 विक्रमाब्दः वर्तते। अलबरुनी अपि भोजस्य राज्यकालः एतमेव प्रस्तौति अनेन सहैव जयसिंहः अपि एतमेव स्वीकरोति। प्रथितः बल्लालपण्डितः भोजविषये लिखितवान् यत्

पञ्चाशत् पञ्चवर्षाणि सप्तमासं दिनत्रयम्।

भोजराजेन भोक्तव्यः सगौडो दक्षिणापथः॥

भोजराजः देशविशेषे देवमन्दिरं निर्मापितवान्। राजतरङ्गिण्यां महाकविकल्हणः वदति-

मालवाधिपतिर्भोजः प्रहितैः स्वर्णसञ्चयैः।

अकारयद्येन कुण्डयोजनं कपटेश्वरे॥

वस्तुतः भोजदेवः स्वकीय शासने विक्रमादित्यायाख्यायुतः आसीत्। तस्य राजद्वारे कवीनां सम्यक् सत्कारः आसीत्। एतस्मिन् सन्दर्भे एका भणितिः श्रूयते "प्रत्यक्षरलक्षं ददौ"। यद्यपि एषा भणितिः अत्युक्तिरूपा स्यात् किन्तु नैव निर्मूला।

भोजराजेन नैके रचनाः लिखिताः तासु कतिचन प्रसिद्धाः सन्ति-

क्रम.	ग्रन्थः	विषयः
1	आदित्यप्रतापसिद्धान्तः	ज्योतिषम्
2	राजमार्तण्डः	ज्योतिषम्
3	राजमृगाङ्कः	ज्योतिषम्
4	विद्वज्जनवल्लभः	ज्योतिषम्
5	आयुर्वेदसर्वस्वम्	वैद्यकम्
6	विश्रान्तविद्याविनोदः	वैद्यकम्
7	चाणक्यनीतिः	नीतिशास्त्रम्
8	नाममालिका	कोषशास्त्रम्
9	तत्त्वप्रकाशः	शैवशास्त्रम्
10	शिवतत्त्वरत्नमालिका	शैवशास्त्रम्
11	युक्तिकल्पतरुः	शैवशास्त्रम्
12	सिद्धान्तसंग्रहः	शैवशास्त्रम्
13	राजमार्तण्डः	पातञ्जलयोगसूत्रटीका
14	व्यवहारसमुच्चयः	धर्मशास्त्रम्
15	चारुचर्या	धर्मशास्त्रम्
16	शालिहोत्रम्	अश्ववैद्यकम्
17	शब्दानुशासनम्	व्याकरणम्
18	समराङ्गणसूत्रधारः	शिल्पशास्त्रम्
19	सुभाषितप्रबन्धः	सुभाषितम्
20	सरस्वतीकण्ठाभरणम्	अलङ्कारग्रन्थः
21	चम्पूरामायणम्	चम्पूकाव्यम्

22	हनूमन्नाटक (Catalogues Catalogarum ग्रन्थ)	-----

क्रमशः..

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।



६. विदेह सूचना संपर्क अन्वेषण

सूचना

१

"विदेहक जीवित साहित्यकार-सम्पादक आ रंगमंचकर्मी- रंगमंच-निर्देशक पर विशेषांक शृंखला"

३१ दिसम्बर २०२२ क लगाति आगामी नव विशेषांकपर निर्णय हएत। विशेषांकमे रचनाकार/ कलाकर्मीक काज, रचना-संपादन, संस्मरण आ अन्य रचनात्मक कार्यपर सेह प्रकाशक रचना (संस्मरण, आलोचना, समालोचना, समीक्षा आदि) देल जायत। अहाँसँ ऐ लेल सूचना सादर आमंत्रित अछि ई-मेल editorial.staff.videha@gmail.com पर।

-गजेन्द्र ठाकुर, सम्पादक विदेह, whatsapp no +919560960721 HTTP://VIDEHA.CO.IN/ ISSN 2229-547X VIDEHA

२

"विदेह मोनोग्राफ" शृंखला

विदेह अपन जीवित रचनाकार/ कलाकर्मी पर विशेषांक शृंखलाक अन्तर्गत (१)अरविन्द ठाकुर, (२)जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल, (३)रामलोचन ठाकुर, (४) राजनन्दन लाल दास, (५)रवीन्द्र नाथ ठाकुर, (६) केदार नाथ चौधरी, (७) प्रेमलता मिश्र 'प्रेम' आ (८)

शरदिन्दु चौधरी विशेषांक निकालल अछि।

अही सन्दर्भमे ओहि साहित्यकार पर "विदेह मानपत्र" शृंखला अन्तर्गत "मानपत्र" आमन्त्रित कयल जा रहल अछि।

"विदेह मानपत्र" शृंखलाक विवरण निम्न प्रकार अछि:

(१) इच्छुक लेखक उपरोक्त कोनो एक रचनाकारपर अपन मानपत्र लिखबाक इच्छा editorial.staff.videha@gmail.com पर पठा सकै छथि। मानपत्र लिखबाक अवधि सामान्यतः एक मास रहत।

(२) विदेह ओहि रचनाकारपर ओहि लेखकक नाम मानपत्र लिखबाक लेल चयनित कऽ ओकर सार्वजनिक घोषणा करत।

"विदेह मानपत्र" लिखबाक नियम:

(१) मानपत्र पूर्ण नूतन रचनाकारपर केन्द्रित होयत। साहित्य अकादमी, एन.बी.टी. आ किछु व्यक्तिगत नूतन लिखल मानपत्र/ बायोग्राफीमे लेखक संस्मरण आ व्यक्तिगत प्रसंग ज्ञात कय रचनाकारक बदला अपन-आत्म-प्रशंसा लिखैत छथि। "विदेह मानपत्र" हीरा बर्दे कप फुटबाल सन रहत। हीरा बर्दे कप फुटबाल एहन एकमात्र टूर्नामेण्ट अछि जतय कोनो "ओपनिंग" वा "क्लोजिंग" सेरीमनी नै होइत छै आ एकर कारण छै जे "ओपनिंग" वा "क्लोजिंग" मे टूर्नामेण्टमे नै खेला रहल लोक मुख्य अतिथि/ अतिथि होइत छथि आ लोकक खिलाड़ी सँ दूर चलि जाइत अछि। हीरा मात्र आ मात्र फुटबाल खिलाड़ीपर केन्द्रित रहैत अछि से एकर टूर्नामेण्ट "ओपनिंग सेरीमनी" नै वरन् सोझे "ओपनिंग मैच" सँ आरम्भ होइत अछि आ एकर समापन "क्लोजिंग सेरीमनी"सँ नै वरन् "फाइनल मैच आ ट्राफी"सँ खतम होइत

अछि आ लेखकक मात्र आ मात्र खिलाफ नहि छथि। तहिना "विदेह मानाग्रह" मात्र आ मात्र ओ "सामा रचनाकार"पर केन्द्रित रहत आ कोनो संम्बन्ध आदि जाति कऽ लेखक रचनाकारसँ अपनापन केन्द्रित करबाक अनुमति नै रहत।

(२) मानाग्रह लेल "विदेह पेटार"मे उपलब्ध सामग्रीक सन्दर्भ सहित उपयोग कयल जा सकैछ।

(३) विदेहमे ई-प्रकाशित रचना सभक कॉपीराइट लेखक/संग्रहकर्त्ता लोकनिक लगमे रहतन्हि। सम्पादक 'विदेह' ई-पत्रिकामे प्रकाशित रचनाक प्रिंट-वेब आर्काइवक/ आर्काइवक अनुवादक आ मूल आ अनूदित आर्काइवक ई-प्रकाशन/ प्रिंट-प्रकाशनक अधिकार रखैत छथि। ओ ई-पत्रिकामे कोनो रोयल्टीक/ पारिश्रमिकक प्रावधान नै छै।

(४) "विदेह मानाग्रह"क फॉर्मेट: रचनाकारक परिचय (रचनाकारक जन्म, निवास-स्थान आ कार्यस्थलक भौगोलिक-सांस्कृतिक विवेचना सहित) आ रचनावली (समीक्षा सहित)।

घोषणा: "विदेह मानाग्रह" शृंखला अन्तर्गत (१) राजनन्दन लाल दास जी पर मानाग्रह निर्मला कर्ण, (२) रवीन्द्र नाथ ठाकुर पर मुन्नी कामत आ (३) केदार नाथ चौधरी पर प्रेम मोहन मिश्र द्वारा लिखल जायत। मैथिली पुत्र प्रदीप पर "विदेह मानाग्रह" लिखबाक प्रेमशंकर मा "परन"।

शेष ७ लोकपर निर्णय शीघ्र कएल जायत।

घोषणा २: ताहि सँ मैथिली पुत्र प्रदीप पर विदेह विशेषांक नै निकालल अछि, मुदा हुनकर अवदान केँ देखैत प्रशंसक सभ "पहल"क हुनका ऊपर "विदेह मानपत्र" लिखबाक निर्णय आयल सँ हुनका स्वीकार कयल गेल।

-गजेन्द्र ठाकुर, सम्पादक विदेह, whatsapp no +919560960721 HTTP://VIDEHA.CO.IN/ ISSN 2229-547X VIDEHA

३

विदेह ब्रॉडकास्ट लिस्ट

विदेह WWW.VIDEHA.CO.IN सम्बन्धी सूचना लेल अपन whatsapp नम्बर हमर whatsapp no +919560960721 पर पठाउ, अहाँक प्रयोग मात्र विदेह सम्बन्धी समाचार देबाक लेल कएल जाएत।

४

विदेहक "साहित्यिक भ्रष्टाचार विशेषांक"

विदेह "साहित्यिक भ्रष्टाचार विशेषांक" लेल निम्नलिखित विषयपर आलेख ई-मेल editorial.staff.videha@gmail.com पर आमंत्रित अछि।

१.साहित्य, कला आ संस्कृति अकादमी:-

(क) पुरस्कारक राजनीति

(ख) सरकारी अकादमीमे पैरवीक गैर-लोकतांत्रिक विधान

(ग) सभागुट आ अकादमी कर काज करबाक तरीका

घ) सरकारी सभाक छद्म विरोधमे उपजल तात्कालिक समानांतर सभाक कार्यपद्धति

ङ) अकादमी पुरस्कारमे पाइ स्ट्रैकन: मिथक वा यथार्थ

२.व्यक्तिगत साहित्य संस्थान आ पुरस्कारक राजनीति

३.प्रकाशन जगतमे पसरल भ्रष्टाचार आ लेखक

४. मैथिलीक छद्म लेखक संगठन आ ओकर पदाधिकारी सबहक आचरण।

५.स्कूल-कॉलेजक मैथिली विभागमे पसरल साहित्यिक भ्रष्टाचारक विविध रूप-

(क) पाठ्यक्रम

(ख) अध्ययन-अध्यापन

(ग) नियुक्ति

६. साहित्यिक पत्रकारिता, विद्यु, मंच-माला-माइक आ लोकार्पणक खेल-तमाशा।

७.लेखक सबहक जन्म-मरण शताब्दी कर चुनाव , कैलेंडरवाद आ तकर पाछूक राजनीति

८.दलित एवं लेखिका सबहक संग भेद-भाव आ ओकर शोषणक विविध तरीका

९. कतेक आर विषय।

-गजेन्द्र ठाकुर, सम्पादक विदेह, whatsapp no

+919560960721 HTTP://VIDEHA.CO.IN/ ISSN 2229-547X VIDEHA



